

सहाइफ़-ए-हिकमत

असल इब्रानी मतन से
नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिन्क्स रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

The Wisdom Books and Psalms. Job-Song of Songs in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew
Urdu Geo Version (UGV)
© 2010 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broadstreet, #169, Glen Allen, Virginia
23060, United States of America

www.urdugeoversion.com

फ़हरिस्त-ए-कुतुब

सहाइफ़-ए-हिकमत और ज़बूर

अय्यूब	7	वाइज़	184
ज़बूर	45	ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात	196
अम्साल	150		

हर्फ-ए-आगाज़

अज़ीज़ क़ारी! आप के हाथ में किताब-ए-मुकद्दस का नया उर्दू तर्जुमा है। यह इलाही किताब इन्सान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इस में इन्सान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उस के लिए उस की मर्ज़ी और मन्शा का इज़हार है।

किताब-ए-मुकद्दस पुराने और नए अहदनामे का मज्मूआ है। पुराना अहदनामा तौरत, तारीखी सहाइफ़, हिक्मत और ज़बूर के सहाइफ़, और अन्बिया के सहाइफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजील-ए-मुकद्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इब्रानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेर-ए-नज़र मतन इन ज़बानों का बराह-ए-रास्त तर्जुमा है। मुतर्जिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतर्जिमीन को दो सवालों का सामना है: पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तर्जुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तर्जुमा करना मक्सूद हो उस की खूबसूरती और चाश्री भी बरकरार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतर्जिम को फ़ैसला करना होता है कि कहां तक वुह लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ तर्जुमा करे और कहां तक उर्दू ज़बान की सिहहत, खूबसूरती और चाश्री को मद्द-ए-नज़र रखते हुए क्रदरे आज़ादाना तर्जुमा करे। मुख्तलिफ़ तर्जुमों में जो बाज़ औक्रात थोड़ा बहत फ़रक़ नज़र आता है उस का यही सबब है कि एक मुतर्जिम असल अल्फ़ाज़ का ज़ियादा पाबन्द रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क्रदरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तर्जुमे में जहां तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुख़ियाँ और उन्वानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उन को महज़ क़ारी की सहूलत की खातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अन्बिया के लिए इज़ज़त के वुह अल्फ़ाज़ इस्तेमाल नहीं किए गए जिन का आज कल रिवाज है, इस लिए इल्हामी मतन के एह्तिराम को मल्हूज़-ए-खातिर रखते हुए तर्जुमे में अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताब-ए-मुकद्दस में मज़कूर जवाहिरात का तर्जुमा जदीद साएंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक्दारें क्रदरे बदल गईं इस लिए तर्जुमे में उन की अदाएगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहां रूह का लफ़ज़ सीगा-ए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहां उस से मुराद रूह-उल-कुद्स यानी खुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीगा-ए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजील-ए-मुकद्दस में बपतिस्मा देने का लुगवी मतलब गोता देना है। जिस शख्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में गोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़ल से इंजील-ए-मुकद्दस के कई उर्दू तर्जुमे दस्तयाब हैं। इन सब का मक्सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इन का आपस में मुकाबला नहीं है बल्कि मुख्तलिफ़ तर्जुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यूँ मुख्तलिफ़ तर्जुमे मिल कर कलाम-ए-मुकद्दस की पूरी तफ़हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तर्जुमा भी उस के ज़िन्दा कलाम का मतलब और मक्सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़ियादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

अय्यूब

अय्यूब की दीनदारी

1 मुल्क-ए-ऊज़ में एक बेइल्ज़ाम आदमी रहता था जिस का नाम अय्यूब था। वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता था। ²उस के सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। ³साथ साथ उस के बहुत माल-मवेशी थे : 7,000 भेड़-बकरियाँ, 3,000 ऊँट, बैलों की 500 जोड़ियाँ और 500 गधियाँ। उस के बेशुमार नौकर-नौकरानियाँ भी थे। गरज़ मशरिक के तमाम बाशिन्दों में इस आदमी की हैसियत सब से बड़ी थी।

⁴उस के बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी अपने घरों में ज़ियाफ़त करें। इस के लिए वह अपनी तीन बहनों को भी अपने साथ खाने और पीने की दावत देते थे। ⁵हर दफ़ा जब ज़ियाफ़त के दिन इख़तिताम तक पहुँचते तो अय्यूब अपने बच्चों को बुला कर उन्हें पाक-साफ़ कर देता और सुबह-सवेरे उठ कर हर एक के लिए भस्म होने वाली एक एक कुर्बानी पेश करता। क्योंकि वह कहता था, “हो सकता है मेरे बच्चों ने गुनाह करके दिल में अल्लाह पर लानत की हो।” चुनाँचे अय्यूब हर ज़ियाफ़त के बाद ऐसा ही करता था।

अय्यूब के किरदार पर इल्ज़ाम

⁶एक दिन फ़रिश्ते^a अपने आप को रब के हुज़ूर पेश करने आए। इब्लीस भी उन के दरमियान मौजूद था। ⁷रब ने इब्लीस से पूछा, “तू कहाँ से आया है?” इब्लीस ने जवाब दिया, “मैं दुनिया में इधर उधर घूमता फिरता रहा।”

⁸रब बोला, “क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब पर तवज्जुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और नहीं। क्योंकि वह बेइल्ज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है।”

⁹इब्लीस ने रब को जवाब दिया, “बेशक, लेकिन क्या अय्यूब यूँ ही अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है? ¹⁰तू ने तो उस के, उस के घराने के और उस की तमाम मिलकियत के इर्दगिर्द हिफ़ाज़ती बाड़ लगाई है। और जो कुछ उस के हाथ ने किया उस पर तू ने बरकत दी, नतीजे में उस की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पूरे मुल्क में फैल गए हैं। ¹¹लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर सब कुछ तबाह करे जो उसे हासिल है। तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”

¹²रब ने इब्लीस से कहा, “ठीक है, जो कुछ भी उस का है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

के बदन को हाथ न लगाना।" इब्लीस रब के हुजूर से चला गया।

¹³एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के मुताबिक़ ज़ियाफ़त कर रहे थे। वह बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे।

¹⁴अचानक एक क्रासिद अय्यूब के पास पहुँच कर कहने लगा, "बैल खेत में हल चला रहे थे और गधियाँ साथ वाली ज़मीन पर चर रही थीं ¹⁵कि सबा के लोगों ने हम पर हम्ला करके सब कुछ छीन लिया। उन्होंने तमाम मुलाज़िमों को तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

¹⁶वह अभी बात कर ही रहा था कि एक और क्रासिद पहुँचा जिस ने इत्तिला दी, "अल्लाह की आग ने आसमान से गिर कर आप की तमाम भेड़-बकरियों और मुलाज़िमों को भस्म कर दिया। सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

¹⁷वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा क्रासिद पहुँचा। वह बोला, "बाबल के कस्दियों ने तीन गुरोहों में तक्सीम हो कर हमारे ऊँटों पर हम्ला किया और सब कुछ छीन लिया। तमाम मुलाज़िमों को उन्होंने तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

¹⁸वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा क्रासिद पहुँचा। उस ने कहा, "आप के बेटे-बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे ¹⁹कि अचानक रेगिस्तान की जानिब से एक ज़ोरदार आँधी आई जो घर के चारों कोनों से यूँ टकराई कि वह जवानों पर गिर पड़ा। सब के सब हलाक हो गए। सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

²⁰यह सब कुछ सुन कर अय्यूब उठा। अपना लिबास फाड़ कर उस ने अपने सर के बाल मुंडवाए। फिर उस ने ज़मीन पर गिर कर आँधे मुँह रब को सिज्दा किया। ²¹वह बोला,

"मैं नंगी हालत में माँ के पेट से निकला और नंगी हालत में कूच कर जाऊँगा। रब ने दिया, रब ने लिया, रब का नाम मुबारक हो!"

²²इस सारे मुआमले में अय्यूब ने न गुनाह किया, न अल्लाह के बारे में कुफ़्र बका।

अय्यूब पर बीमारी का हम्ला

2 एक दिन फ़रिशते^a दुबारा अपने आप को रब के हुजूर पेश करने आए। इब्लीस भी उन के दरमियान मौजूद था। रब ने इब्लीस से पूछा, "तू कहाँ से आया है?" इब्लीस ने जवाब दिया, "मैं दुनिया में इधर उधर घूमता फिरता रहा।" रब बोला, "क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब पर तवज्जुह दी? ज़मीन पर उस जैसा कोई और नहीं। वह बेइल्ज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है। अभी तक वह अपने बेइल्ज़ाम किरदार पर क्राइम है हालाँकि तू ने मुझे उसे बिलावजह तबाह करने पर उकसाया।"

⁴इब्लीस ने जवाब दिया, "खाल का बदला खाल ही होता है! इन्सान अपनी जान को बचाने के लिए अपना सब कुछ दे देता है। ⁵लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर उस का जिस्म^b छू दे? तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।"

⁶रब ने इब्लीस से कहा, "ठीक है, वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।" ⁷इब्लीस रब के हुजूर से चला गया और अय्यूब को सताने लगा। चाँद से ले कर तल्वे तक अय्यूब के पूरे जिस्म पर बदतरीन क्रिस्म के फोड़े निकल आए। ⁸तब अय्यूब राख में बैठ गया और ठीकरे से अपनी जिल्द को खुरचने लगा।

⁹उस की बीवी बोली, "क्या तू अब तक अपने बेइल्ज़ाम किरदार पर क्राइम है? अल्लाह पर लानत करके दम छोड़ दे!"

¹⁰लेकिन उस ने जवाब दिया, "तू अहमक़

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

^bलफ़ज़ी तर्जुमा : गोशत-पोस्त और हड्डियाँ।

औरत की सी बातें कर रही है। अल्लाह की तरफ से भलाई तो हम क़बूल करते हैं, तो क्या मुनासिब नहीं कि उस के हाथ से मुसीबत भी क़बूल करें?" इस सारे मुआमले में अय्यूब ने अपने मुँह से गुनाह न किया।

अय्यूब के तीन दोस्त

¹¹अय्यूब के तीन दोस्त थे। उन के नाम इलीफ़ज़ तेमानी, बिल्दद सूखी और ज़ूफ़र नामाती थे। जब उन्हें इत्तिला मिली कि अय्यूब पर यह तमाम आफ़त आ गई है तो हर एक अपने घर से रवाना हुआ। उन्होंने ने मिल कर फ़ैसला किया कि इकट्ठे अप्रसोस करने और अय्यूब को तसल्ली देने जाएंगे। ¹²जब उन्होंने ने दूर से अपनी नज़र उठा कर अय्यूब को देखा तो उस की इतनी बुरी हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता था। तब वह ज़ार-ओ-क्रतार रोने लगे। अपने कपड़े फाड़ कर उन्होंने ने अपने सरों पर खाक डाली। ¹³फिर वह उस के साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अर्से में उन्होंने ने अय्यूब से एक भी बात न की, क्योंकि उन्होंने ने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

अय्यूब की आह-ओ-ज़ारी

3 तब अय्यूब बोल उठा और अपने जन्म दिन पर लानत करने लगा। ²उस ने कहा,

³"वह दिन मिट जाए जब मैं ने जन्म लिया, वह रात जिस ने कहा, 'पेट में लड़का पैदा हुआ है!' ⁴वह दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए, एक किरन भी उसे रौशन न करे। अल्लाह भी जो बुलन्दियों पर है उस का खयाल न करे। ⁵तारीकी और घना अंधेरा उस पर क़ब्ज़ा करे, काले काले बादल उस पर छाए रहें, हाँ वह रौशनी से महरूम हो कर सख़्त दशतज़दा हो जाए। ⁶घना अंधेरा उस रात को छीन ले

जब मैं माँ के पेट में पैदा हुआ। उसे न साल, न किसी महीने के दिनों में शुमार किया जाए। ⁷वह रात बाँझ रहे, उस में खुशी का नारा न लगाया जाए। ⁸जो दिनों पर लानत भेजते और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने के क़ाबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें। ⁹उस रात के धुन्दलके में टिमटिमाने वाले सितारे बुझ जाएँ, फ़ज़्र का इन्तिज़ार करना बेफ़ाइदा ही रहे बल्कि वह रात तुलू-ए-सुबह की पलकों^a भी न देखे। ¹⁰क्योंकि उस ने मेरी माँ को मुझे जन्म देने से न रोका, वर्ना यह तमाम मुसीबत मेरी आँखों से छुपी रहती।

¹¹मैं पैदाइश के वक़्त क्यूँ मर न गया, माँ के पेट से निकलते वक़्त जान क्यूँ न दे दी? ¹²माँ के घुटनों ने मुझे खुशआमदीद क्यूँ कहा, उस की छातियों ने मुझे दूध क्यूँ पिलाया? ¹³अगर यह न होता तो इस वक़्त मैं सुकून से लेटा रहता, आराम से सोया होता। ¹⁴मैं उन ही के साथ होता जो पहले बादशाह और दुनिया के मुशीर थे, जिन्होंने खंडरात अज़ सर-ए-नौ तामीर किए। ¹⁵मैं उन के साथ होता जो पहले हुक्मरान थे और अपने घरों को सोने-चाँदी से भर लेते थे। ¹⁶मुझे ज़ाए हो जाने वाले बच्चे की तरह क्यूँ न ज़मीन में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह क्यूँ न दफ़नाया गया जिस ने कभी रौशनी न देखी? ¹⁷उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से बाज़ आते और वह आराम करते हैं जो तग-ओ-दौ करते करते थक गए थे। ¹⁸वहाँ कैदी इत्मीनान से रहते हैं, उन्हें उस ज़ालिम की आवाज़ नहीं सुननी पड़ती जो उन्हें जीते जी हाँकता रहा। ¹⁹उस जगह छोटे और बड़े सब बराबर होते हैं, गुलाम अपने मालिक से आज़ाद रहता है। ²⁰अल्लाह मुसीबतज़दों को रौशनी और शिकस्तादिलों को ज़िन्दगी क्यूँ अता करता है? ²¹वह तो मौत के इन्तिज़ार में रहते हैं लेकिन बेफ़ाइदा। वह खोद खोद कर उसे यूँ तलाश करते हैं जिस तरह किसी पोशीदा

^aपलकों से मुराद पहली किरनें है।

खज़ाने को। ²²अगर उन्हें क्रब्र नसीब हो तो वह बाग़ बाग़ हो कर जश्र मनाते हैं। ²³अल्लाह उस को ज़िन्दा क्यूँ रखता जिस की नज़रों से रास्ता ओझल हो गया है और जिस के चारों तरफ़ उस ने बाड़ लगाई है। ²⁴क्यूँकि जब मुझे रोटी खानी है तो हाय हाय करता हूँ, मेरी आँहें पानी की तरह मुँह से फूट निकलती हैं। ²⁵जिस चीज़ से मैं डरता था वह मुझ पर आई, जिस से मैं ख़ौफ़ खाता था उस से मेरा वास्ता पड़ा। ²⁶न मुझे इत्मीनान हुआ, न सुकून या आराम बल्कि मुझ पर बेचैनी ग़ालिब आई।”

इलीफ़ज़ का एतिराज़ : इन्सान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

4 यह कुछ सुन कर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,

²“क्या तुझ से बात करने का कोई फ़ाइदा है? तू तो यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। लेकिन दूसरी तरफ़ कौन अपने अल्फ़ाज़ रोक सकता है? ³ज़रा सोच ले, तू ने खुद बहुतों को तर्बियत दी, कई लोगों के थकेमान्दे हाथों को तक्रवियत दी है। ⁴तेरे अल्फ़ाज़ ने ठोकर खाने वाले को दुबारा खड़ा किया, डगमगाते हुए घुटने तू ने मज़बूत किए। ⁵लेकिन अब जब मुसीबत तुझ पर आ गई तो तू उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता, अब जब खुद उस की ज़द में आ गया तो तेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। ⁶क्या तेरा एतिमाद इस पर मुन्हसिर नहीं है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ माने, तेरी उम्मीद इस पर नहीं कि तू बेइल्ज़ाम राहों पर चले?

⁷सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक हुआ है? हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर चलते हैं वह कभी रू-ए-ज़मीन पर से मिट नहीं गए। ⁸जहाँ तक मैं ने देखा, जो नाइन्साफ़ी का हल चलाए और नुक़सान का बीज बोए वह इस की फ़सल काटता है। ⁹ऐसे लोग अल्लाह की एक फूँक से तबाह, उस के क्रहर के एक झोंके से हलाक हो जाते हैं। ¹⁰शेरबबर की दहाड़ें ख़ामोश हो गईं, जवान शेर के दाँत झड़

गए हैं। ¹¹शिकार न मिलने की वजह से शेर हलाक हो जाता और शेरनी के बच्चे परागन्दा हो जाते हैं।

¹²एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास पहुँची, उस के चन्द अल्फ़ाज़ मेरे कान तक पहुँच गए। ¹³रात को ऐसी रोयाएँ पेश आईं जो उस वक्रत देखी जाती हैं जब इन्सान गहरी नींद सोया होता है। इन से मैं परेशानकुन खयालात में मुब्तला हुआ। ¹⁴मुझ पर दृशत और थरथराहट ग़ालिब आई, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ उठीं। ¹⁵फिर मेरे चेहरे के सामने से हवा का झोंका गुज़र गया और मेरे तमाम रोंगटे खड़े हो गए। ¹⁶एक हस्ती मेरे सामने खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न सका, एक शक्ल मेरी आँखों के सामने दिखाई दी। ख़ामोशी थी, फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया, ¹⁷“क्या इन्सान अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सकता है, क्या इन्सान अपने ख़ालिक के सामने पाक-साफ़ ठहर सकता है?” ¹⁸देख, अल्लाह अपने खादिमों पर भरोसा नहीं करता, अपने फ़रिश्तों को वह अहमक़ ठहराता है। ¹⁹तो फिर वह इन्सान पर क्यूँ भरोसा रखे जो मिट्टी के घर में रहता, ऐसे मकान में जिस की बुन्याद खाक पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह कुचला जाता है। ²⁰सुबह को वह ज़िन्दा है लेकिन शाम तक पाश पाश हो जाता, अबद तक हलाक हो जाता है, और कोई भी ध्यान नहीं देता। ²¹उस के ख़ैमे के रस्से ढीले करो तो वह हिकमत हासिल किए बग़ैर इन्तिक़ाल कर जाता है।

अल्लाह की तादीब तस्लीम कर

5 बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब देगा? कोई नहीं! मुक़द्दसीन में से तू किस की तरफ़ रुजू कर सकता है? ²क्यूँकि अहमक़ की रंजीदगी उसे मार डालती, सादालौह की सरगर्मी उसे मौत के घाट उतार देती है। ³मैं ने खुद एक अहमक़ को जड़ पकड़ते देखा, लेकिन मैं ने फ़ौरन

ही उस के घर पर लानत भेजी। 4 उस के फ़र्ज़न्द नजात से दूर रहते। उन्हें शहर के दरवाज़े में रौंदा जाता है, और बचाने वाला कोई नहीं। 5 भूके उस की फ़सल खा जाते, काँटिदार बाड़ों में मट्फ़ूज़ माल भी छीन लेते हैं। प्यासे अफ़राद हाँपते हुए उस की दौलत के पीछे पड़ जाते हैं। 6 क्यूँकि बुराई खाक से नहीं निकलती और दुख-दर्द मिट्टी से नहीं फूटता 7 बल्कि इन्सान खुद इस का बाइस है, दुख-दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता है। यह इतना यक़ीनी है जितना यह कि आग की चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।

8 लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो अल्लाह से दरयाफ़्त करता, उसे ही अपना मुआमला पेश करता। 9 वही इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उन की तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोज़िज़े कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। 10 वही रू-ए-ज़मीन को बारिश अता करता, खुले मैदान पर पानी बरसा देता है। 11 पस्तहालों को वह सरफ़राज़ करता और मातम करने वालों को उठा कर मट्फ़ूज़ मक़ाम पर रख देता है। 12 वह चालाकों के मन्सूबे तोड़ देता है ताकि उन के हाथ नाकाम रहें। 13 वह दानिशमन्दों को उन की अपनी चालाकी के फंदे में फंसा देता है तो होशियारों की साज़िशें अचानक ही खत्म हो जाती हैं। 14 दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता, और दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोल कर फिरते हैं। 15 अल्लाह ज़रूरतमन्दों को उन के मुँह की तलवार और ज़बरदस्त के क्रब्जे से बचा लेता है। 16 यूँ पस्तहालों को उम्मीद दी जाती और नाइन्साफ़ी का मुँह बन्द किया जाता है।

17 मुबारक है वह इन्सान जिस की मलामत अल्लाह करता है! चुनाँचे क़ादिर-ए-मुतलक़ की तादीब को हक़ीर न जान। 18 क्यूँकि वह ज़ख़मी करता लेकिन मर्हम-पट्टी भी लगा देता है, वह ज़र्ब लगाता लेकिन अपने हाथों से

शिफ़ा भी बख़्शता है। 19 वह तुझे छः मुसीबतों से छुड़ाएगा, और अगर इस के बाद भी कोई आए तो तुझे नुक़सान नहीं पहुँचेगा। 20 अगर काल पड़े तो वह फ़िद्या दे कर तुझे मौत से बचाएगा, जंग में तुझे तलवार की ज़द में आने नहीं देगा। 21 तू ज़बान के कोड़ों से मट्फ़ूज़ रहेगा, और जब तबाही आए तो डरने की ज़रूरत नहीं होगी। 22 तू तबाही और काल की हंसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी जानवरों से ख़ौफ़ नहीं खाएगा। 23 क्यूँकि तेरा खुले मैदान के पत्थरों के साथ अहद होगा, इस लिए उस के जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। 24 तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा मट्फ़ूज़ है। जब तू अपने घर का मुआइना करे तो मालूम होगा कि कुछ गुम नहीं हुआ। 25 तू देखेगा कि तेरी औलाद बढ़ती जाएगी, तेरे फ़र्ज़न्द ज़मीन पर घास की तरह फैलते जाएंगे। 26 तू वक़्त पर जमाशुदा पूलों की तरह उग्ररसीदा हो कर क्रब्र में उतरेगा।

27 हम ने तहक़ीक़ करके मालूम किया है कि ऐसा ही है। चुनाँचे हमारी बात सुन कर उसे अपना ले!"

अय्यूब का जवाब : साबित करो कि मुझ से क्या ग़लती हुई है

6 तब अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2 "काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया जा सके और मेरी मुसीबत तराजू में तोली जा सके! 3 क्यूँकि वह समुन्दर की रेत से ज़्यादा भारी हो गई है। इसी लिए मेरी बातें बेतुकी सी लग रही हैं। 4 क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़ के तीर मुझ में गड़ गए हैं, मेरी रूह उन का ज़हर पी रही है। हाँ, अल्लाह के हौलनाक हमले मेरे खिलाफ़ सफ़आरा हैं। 5 क्या जंगली गधा ढीनचूँ ढीनचूँ करता है जब उसे घास दस्तयाब हो? या क्या बैल डकराता है जब उसे चारा हासिल हो? 6 क्या फीका खाना नमक के

बग़ैर खाया जाता, या अंडे की सफेदी^a में ज़ाइका है? 7ऐसी चीज़ को मैं छूता भी नहीं, ऐसी खुराक से मुझे घिन ही आती है।

8काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी आज़ू पूरी करे! 9काश वह मुझे कुचल देने के लिए तय्यार हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ा कर मुझे हलाक करे। 10फिर मुझे कम अज़्र कम तसल्ली होती बल्कि मैं मुस्तक़िल दर्द के मारे पेच-ओ-ताब खाने के बावजूद खुशी मनाता कि मैं ने कुदूस खुदा के फ़रमानों का इन्कार नहीं किया।

11मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इन्तिज़ार करूँ, मेरा क्या अच्छा अन्जाम है कि सब्र करूँ? 12क्या मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा जिस्म पीतल जैसा मज़बूत है? 13नहीं, मुझ से हर सहारा छीन लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक हुआ है कि कामयाबी का इम्कान ही नहीं रहा।

14जो अपने दोस्त पर मेहरबानी करने से इन्कार करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता है। 15मेरे भाइयों ने वादी की उन नदियों जैसी बेवफ़ाई की है जो बरसात के मौसम में अपने किनारों से बाहर आ जाती हैं। 16उस वक़्त वह बर्फ़ से भर कर गदली हो जाती हैं, 17लेकिन उरूज तक पहुँचते ही वह सूख जाती, तपती गर्मी में ओझल हो जाती हैं। 18तब क्राफ़िले अपनी राहों से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए, लेकिन बेफ़ाइदा। वह रेगिस्तान में पहुँच कर तबाह हो जाते हैं। 19तैमा के क्राफ़िले इस पानी की तलाश में रहते, सबा के सफ़र करने वाले ताज़िर उस पर उम्मीद रखते हैं, 20लेकिन बेसूद। जिस पर उन्होंने ने एतिमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब वहाँ पहुँचते हैं तो शर्मिन्दा हो जाते हैं।

21तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम हौलनाक बात देख कर दहशतज़दा हो गए हो। 22क्या मैं ने कहा, 'मुझे तोहफ़ा दे दो, अपनी दौलत में से मेरी ख़ातिर रिश्वत दो,

23मुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाओ, फ़िद्या दे कर ज़ालिम के क़ब्ज़े से बचाओ?'

24मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मान कर ख़ामोश हो जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझ से ग़लती हुई है। 25सीधी राह की बातें कितनी तक्लीफ़दिह हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी मलामत से मुझे किस क्रिस्म की तर्बियत हासिल होगी? 26क्या तुम समझते हो कि ख़ाली अल्फ़ाज़ मुआमले को हल करेंगे, गो तुम मायूसी में मुब्तला आदमी की बात नज़रअन्दाज़ करते हो? 27क्या तुम यतीम के लिए भी कुरआ डालते, अपने दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?

28लेकिन अब खुद फ़ैसला करो, मुझ पर नज़र डाल कर सोच लो। अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे रू-ब-रू झूट नहीं बोलता। 29अपनी ग़लती तस्लीम करो ताकि नाइन्साफ़ी न हो। अपनी ग़लती मान लो, क्योंकि अब तक मैं हक़ पर हूँ। 30क्या मेरी ज़बान झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदिह बातें पहचान नहीं सकता?

अल्लाह मुझे क्यों नहीं छोड़ता?

7 इन्सान दुनिया में सख़्त खिदमत करने पर मजबूर होता है, जीते जी वह मज़दूर की सी ज़िन्दगी गुज़ारता है। 2गुलाम की तरह वह शाम के साय का आरज़ूमन्द होता, मज़दूर की तरह मज़दूरी के इन्तिज़ार में रहता है। 3मुझे भी बेमानी महीने और मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। 4जब बिस्तर पर लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ सकता हूँ? लेकिन लगता है कि रात कभी ख़त्म नहीं होगी, और मैं फ़ज़्र तक बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ। 5मेरे जिस्म की हर जगह कीड़े और खुरंड फैल गए हैं, मेरी सुकड़ी हुई जिल्द में पीप पड़ गई है। 6मेरे दिन जूलाहे की नाल^b से कहीं ज़यादा तेज़ी से गुज़र गए हैं। वह अपने अन्जाम तक पहुँच गए हैं, धागा ख़त्म हो गया है।

^aया ख़ल्मी का रस।

^bयानी शटल।

7ए अल्लाह, खयाल रख कि मेरी ज़िन्दगी दम भर की ही है! मेरी आँखें आइन्दा कभी खुशहाली नहीं देखेंगी। 8जो मुझे इस वक़्त देखे वह आइन्दा मुझे नहीं देखेगा। तू मेरी तरफ़ देखेगा, लेकिन मैं हूँगा नहीं। 9जिस तरह बादल ओझल हो कर ख़त्म हो जाता है उसी तरह पाताल में उतरने वाला वापस नहीं आता। 10वह दुबारा अपने घर वापस नहीं आएगा, और उस का मक़ाम उसे नहीं जानता।

11चुनाँचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो मेरे मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा हालत में बात करूँगा, अपने दिल की तलखी का इज़हार करके आह-ओ-ज़ारी करूँगा। 12ए अल्लाह, क्या मैं समुन्दर या समुन्दरी अज़दहा हूँ कि तू ने मुझे नज़रबन्द कर रखा है? 13जब मैं कहता हूँ, 'मेरा बिस्तर मुझे तसल्ली दे, सोने से मेरा ग़म हल्का हो जाए' 14तो तू मुझे हौलनाक ख़्वाबों से हिम्मत हारने देता, रोयाओं से मुझे दृशत खिलाता है। 15मेरी इतनी बुरी हालत हो गई है कि सोचता हूँ, काश कोई मेरा गला घूँट कर मुझे मार डाले, काश मैं ज़िन्दा न रहूँ बल्कि दम छोड़ूँ। 16मैं ने ज़िन्दगी को रद्द कर दिया है, अब मैं ज़्यादा देर तक ज़िन्दा नहीं रहूँगा। मुझे छोड़, क्योंकि मेरे दिन दम भर के ही हैं।

17इन्सान क्या है कि तू उस की इतनी क्रदर करे, उस पर इतना ध्यान दे? 18वह इतना अहम तो नहीं है कि तू हर सुबह उस का मुआइना करे, हर लम्हा उस की जाँच-पड़ताल करे। 19क्या तू मुझे तकने से कभी नहीं बाज़ आएगा? क्या तू मुझे इतना सुकून भी नहीं देगा कि पल भर के लिए थूक निगलूँ? 20ए इन्सान के पहरेदार, अगर मुझ से ग़लती हुई भी तो इस से मैं ने तेरा क्या नुक़सान किया? तू ने मुझे अपने ग़ज़ब का निशाना क्यों बनाया? मैं तेरे लिए बोझ क्यों बन गया हूँ? 21तू मेरा जुर्म मुआफ़ क्यों नहीं करता, मेरा कुसूर दरगुज़र क्यों नहीं करता? क्योंकि जल्द ही मैं

खाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश भी करे तो नहीं मिलूँगा, क्योंकि मैं हूँगा नहीं।"

बिल्द का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

8 तब बिल्द सूखी ने जवाब दे कर कहा, 2"तू कब तक इस किस्म की बातें करेगा? कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके निकलेंगे? 3क्या अल्लाह इन्साफ़ का खून कर सकता, क्या क़ादिर-ए-मुतलक रास्ती को आगे पीछे कर सकता है? 4तेरे बेटों ने उस का गुनाह किया है, इस लिए उस ने उन्हें उन के जुर्म के क़ब्ज़े में छोड़ दिया। 5अब तेरे लिए लाज़िम है कि तू अल्लाह का तालिब हो और क़ादिर-ए-मुतलक से इल्तिजा करे, 6कि तू पाक हो और सीधी राह पर चले। फिर वह अब भी तेरी खातिर जोश में आ कर तेरी रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल करेगा। 7तब तेरा मुस्तक़बिल निहायत अज़ीम होगा, ख़्वाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त क्यों न हो।

8गुज़श्ता नस्ल से ज़रा पूछ ले, उस पर ध्यान दे जो उन के बापदादा ने तहक़ीक़ात के बाद मालूम किया। 9क्योंकि हम खुद कल ही पैदा हुए और कुछ नहीं जानते, ज़मीन पर हमारे दिन साय जैसे आरिज़ी हैं। 10लेकिन यह तुझे तालीम दे कर बात बता सकते हैं, यह तुझे अपने दिल में जमाशुदा इल्म पेश कर सकते हैं। 11क्या आबी नर्सल वहाँ उगता है जहाँ दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ फलता फूलता है जहाँ पानी नहीं? 12उस की कोंपलें अभी निकल रही हैं और उसे तोड़ा नहीं गया कि अगर पानी न मिले तो बाक़ी हरियाली से पहले ही सूख जाता है। 13यह है उन का अन्जाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी तरह बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। 14जिस पर वह एतिमाद करता है वह निहायत ही नाज़ुक है, जिस पर उस का भरोसा है वह मकड़ी के जाले जैसा कमज़ोर है। 15जब वह

जाले पर टेक लगाए तो खड़ा नहीं रहता, जब उसे पकड़ ले तो काइम नहीं रहता।

¹⁶बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिन्द है। उस की कोंपलें चारों तरफ फैल जाती, ¹⁷उस की जड़ें पत्थर के ढेर पर छा कर उन में टिक जाती हैं। ¹⁸लेकिन अगर उसे उखाड़ा जाए तो जिस जगह पहले उग रही थी वह उस का इन्कार करके कहेगी, 'मैंने तुझे कभी देखा भी नहीं।' ¹⁹यह है उस की राह की नाम-निहाद खुशी! जहाँ पहले था वहाँ दीगर पौदे ज़मीन से फूट निकलेंगे।

²⁰यक्रीनन अल्लाह बेइलज़ाम आदमी को मुस्तरद नहीं करता, यक्रीनन वह शरीर आदमी के हाथ मज़बूत नहीं करता। ²¹वह एक बार फिर तुझे ऐसी खुशी बख्शेगा कि तू हंस उठेगा और शादमानी के नारे लगाएगा। ²²जो तुझ से नफ़रत करते हैं वह शर्म से मुलब्स हो जाएंगे, और बेदीनों के ख़ैमे नेस्त-ओ-नाबूद होंगे।"

अय्यूब का जवाब : सालिस के बग़ैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

9 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा, ²"मैं खूब जानता हूँ कि तेरी बात दुरुस्त है। लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इन्सान किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? ³अगर वह अदालत में अल्लाह के साथ लड़ना चाहे तो उस के हज़ार सवालात पर एक का भी जवाब नहीं दे सकेगा। ⁴अल्लाह का दिल दानिशमन्द और उस की कुदरत अज़ीम है। कौन कभी उस से बह्स-मुबाहसा करके कामयाब रहा है?

⁵अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और उन्हें पता ही नहीं चलता। वह गुस्से में आ कर उन्हें उलटा देता है। ⁶वह ज़मीन को हिला देता है तो वह लरज़ कर अपनी जगह से हट जाती है, उस के बुन्यादी सतून काँप उठते हैं। ⁷वह सूरज को हुक्म देता है तो तुलू नहीं होता,

सितारों पर मुहर लगाता है तो उन की चमक-दमक बन्द हो जाती है।

⁸अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह तान देता, वही समुन्दरी अज़दहे की पीठ को पाँओ तले कुचल देता है। ⁹वही दुबब-ए-अक्बर, जौज़े, खोशा-ए-पर्वीन और जुनूबी सितारों के झुर्मटों का ख़ालिक है। ¹⁰वह इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उन की तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मौजिज़े करता है कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। ¹¹जब वह मेरे सामने से गुज़रे तो मैं उसे नहीं देखता, जब वह मेरे करीब से फिरे तो मुझे मालूम नहीं होता। ¹²अगर वह कुछ छीन ले तो कौन उसे रोकेगा? कौन उस से कहेगा, 'तू क्या कर रहा है?' ¹³अल्लाह तो अपना गज़ब नाज़िल करने से बाज़ नहीं आता। उस के रोब तले रहब अज़दहे के मददगार भी दबक गए।

¹⁴तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस तरह उस से बात करने के मुनासिब अल्फ़ाज़ चुन लूँ? ¹⁵अगर मैं हक़ पर होता भी तो अपना दिफ़ा न कर सकता। इस मुखालिफ़ से मैं इल्लिजा करने के इलावा और कुछ नहीं कर सकता। ¹⁶अगर वह मेरी चीखों का जवाब देता भी तो मुझे यक्रीन न आता कि वह मेरी बात पर ध्यान देगा।

¹⁷थोड़ी सी ग़लती के जवाब में वह मुझे पाश पाश करता, बिलावजह मुझे बार बार ज़ख्मी करता है। ¹⁸वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता बल्कि कड़वे ज़हर से सेर कर देता है। ¹⁹जहाँ ताक़त की बात है तो वही क़वी है, जहाँ इन्साफ़ की बात है तो कौन उसे पेशी के लिए बुला सकता है? ²⁰गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी मेरा अपना मुँह मुझे कुसूरवार ठहराएगा, गो बेइलज़ाम हूँ तो भी वह मुझे मुजरिम करार देगा।

²¹जो कुछ भी हो, मैं बेइलज़ाम हूँ! मैं अपनी जान की परवा ही नहीं करता, अपनी ज़िन्दगी हक़ीर जानता हूँ। ²²खैर, एक ही बात है, इस लिए मैं कहता हूँ, 'अल्लाह बेइलज़ाम और

बेदीन दोनों को ही हलाक कर देता है।²³ जब कभी अचानक कोई आफ़त इन्सान को मौत के घाट उतारे तो अल्लाह बेगुनाह की परेशानी पर हँसता है।²⁴ अगर कोई मुल्क बेदीन के हवाले किया जाए तो अल्लाह उस के क्राज़ियों की आँखें बन्द कर देता है। अगर यह उस की तरफ़ से नहीं तो फिर किस की तरफ़ से है?

²⁵ मेरे दिन दौड़ने वाले आदमी से कहीं ज़्यादा तेज़ी से बीत गए, खुशी देखे बग़ैर भाग निकले हैं।²⁶ वह सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र गए हैं, उस उक्काब की तरह जो अपने शिकार पर झपट्टा मारता है।²⁷ अगर मैं कहूँ, 'आओ मैं अपनी आहें भूल जाऊँ, अपने चेहरे की उदासी दूर करके खुशी का इज़हार करूँ'²⁸ तो फिर भी मैं उन तमाम तकालीफ़ से डरता हूँ जो मुझे बर्दाश्त करनी हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह नहीं ठहराता।

²⁹ जो कुछ भी हो मुझे कुसूरवार ही करार दिया गया है, चुनाँचे इस का क्या फ़ाइदा कि मैं बेमानी तग-ओ-दौ में मसरूफ़ रहूँ? ³⁰ गो मैं साबुन से नहा लूँ और अपने हाथ सोडे^a से धो लूँ ³¹ ताहम तू मुझे गढ़े की कीचड़ में यूँ धंसने देता है कि मुझे अपने कपड़ों से घिन आती है।

³² अल्लाह तो मुझ जैसा इन्सान नहीं कि मैं जवाब में उस से कहूँ, 'आओ हम अदालत में जा कर एक दूसरे का मुक़ाबला करें।' ³³ काश हमारे दरमियान सालिस हो जो हम दोनों पर हाथ रखे, ³⁴ जो मेरी पीठ पर से अल्लाह का डंडा हटाए ताकि उस का ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। ³⁵ तब मैं अल्लाह से ख़ौफ़ खाए बग़ैर बोलता, क्योंकि फ़ित्री तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

मुझे अपनी जान से घिन आती है

10 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं आज़ादी से आह-ओ-ज़ारी करूँगा, खुले तौर पर अपना दिली ग़म बयान करूँगा।² मैं अल्लाह से कहूँगा कि मुझे

मुजरिम न ठहरा बल्कि बता कि तेरा मुझ पर क्या इल्ज़ाम है।³ क्या तू जुल्म करके मुझे रद्द करने में खुशी महसूस करता है हालाँकि तेरे अपने ही हाथों ने मुझे बनाया? साथ साथ तू बेदीनों के मन्सूबों पर अपनी मन्ज़ूरी का नूर चमकाता है। क्या यह तुझे अच्छा लगता है? ⁴ क्या तेरी आँखें इन्सानी हैं? क्या तू सिर्फ़ इन्सान की सी नज़र से देखता है? ⁵ क्या तेरे दिन और साल फ़ानी इन्सान जैसे महदूद हैं? हरगिज़ नहीं! ⁶ तो फिर क्या ज़रूरत है कि तू मेरे कुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की तहक़ीक़ करता रहे? ⁷ तू तो जानता है कि मैं बेकुसूर हूँ और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।

⁸ तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील दे कर बनाया। और अब तू ने मुड़ कर मुझे तबाह कर दिया है। ⁹ ज़रा इस का खयाल रख कि तू ने मुझे मिट्टी से बनाया। अब तू मुझे दुबारा ख़ाक में तब्दील कर रहा है। ¹⁰ तू ने ख़ुद मुझे दूध की तरह उंडेल कर पनीर की तरह जमने दिया। ¹¹ तू ही ने मुझे जिल्द और गोशत-पोस्त से मुलबबस किया, हड्डियों और नसों से तय्यार किया। ¹² तू ही ने मुझे ज़िन्दगी और अपनी मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल ने मेरी रूह को महफूज़ रखा।

¹³ लेकिन एक बात तू ने अपने दिल में छुपाए रखी, हाँ मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। ¹⁴ वह यह है कि 'अगर अय्यूब गुनाह करे तो मैं उस की पहरादारी करूँगा। मैं उसे उस के कुसूर से बरी नहीं करूँगा।'

¹⁵ अगर मैं कुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़सोस! और अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर उठाने की ज़ुरअत नहीं करता, क्योंकि मैं शर्म खा खा कर सेर हो गया हूँ। मुझे खूब मुसीबत पिलाई गई है। ¹⁶ और अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू शेरबबर की तरह मेरा शिकार करता और मुझ पर दुबारा अपनी मोजिज़ाना कुदरत का इज़हार करता है। ¹⁷ तू

^a लफ़्ज़ी मतलब : कलियाब, लाई (lye)

मेरे खिलाफ़ नए गवाहों को खड़ा करता और मुझ पर अपने ग़ज़ब में इज़ाफ़ा करता है, तेरे लश्कर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर हम्ला करते हैं।¹⁸ नू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यों निकाल लाया? बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता और किसी को नज़र न आता।¹⁹ यूँ होता जैसा मैं कभी ज़िन्दा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट से क़ब्र में पहुँचाया जाता।²⁰ क्या मेरे दिन थोड़े नहीं हैं? मुझे तन्हा छोड़! मुझ से अपना मुँह फेर ले ताकि मैं चन्द एक लम्हों के लिए खुश हो सकूँ,²¹ क्योंकि जल्द ही मुझे कूच करके वहाँ जाना है जहाँ से कोई वापस नहीं आता, उस मुल्क में जिस में तारीकी और घने साय रहते हैं।²² वह मुल्क अंधेरा ही अंधेरा और काला ही काला है, उस में घने साय और बेतरतीबी है। वहाँ रौशनी भी अंधेरा ही है।”

ज़ूफ़र का जवाब : तौबा कर

11 फिर ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे कर कहा,

² “क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं देना चाहिए? क्या यह आदमी अपनी खाली बातों की बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? ³ क्या तेरी बेमानी बातें लोगों के मुँह यूँ बन्द करेंगी कि तू आज़ादी से लान-तान करता जाए और कोई तुझे शर्मिन्दा न कर सके? ⁴ अल्लाह से तू कहता है, ‘मेरी तालीम पाक है, और तेरी नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।’

⁵ काश अल्लाह खुद तेरे साथ हमकलाम हो, वह अपने होंटों को खोल कर तुझ से बात करे! ⁶ काश वह तेरे लिए हिवमत के भेद खोले, क्योंकि वह इन्सान की समझ के नज़दीक मौजिज़े से हैं। तब तू जान लेता कि अल्लाह तेरे गुनाह का काफ़ी हिस्सा दरगुज़र कर रहा है।

⁷ क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है? क्या तू कादिर-ए-मुतलक़ के कामिल इल्म तक पहुँच सकता है? ⁸ वह तो आसमान से

बुलन्द है, चुनाँचे तू क्या कर सकता है? वह पाताल से गहरा है, चुनाँचे तू क्या जान सकता है? ⁹ उस की लम्बाई ज़मीन से बड़ी और चौड़ाई समुन्दर से ज़्यादा है।

¹⁰ अगर वह कहीं से गुज़र कर किसी को गिरिफ़्तार करे या अदालत में उस का हिसाब करे तो कौन उसे रोकेगा? ¹¹ क्योंकि वह फ़रेबदिह आदमियों को जान लेता है, जब भी उसे बुराई नज़र आए तो वह उस पर खूब ध्यान देता है। ¹² अक़ल से खाली आदमी किस तरह समझ पा सकता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि जंगली गधे से इन्सान पैदा हो।

¹³ ऐ अय्यूब, अपना दिल पूरे ध्यान से अल्लाह की तरफ़ माइल कर और अपने हाथ उस की तरफ़ उठा! ¹⁴ अगर तेरे हाथ गुनाह में मुलव्वस हों तो उसे दूर कर और अपने ख़ैमे में बुराई बसने न दे! ¹⁵ तब तू बेइल्ज़ाम हालत में अपना चेहरा उठा सकेगा, तू मज़बूती से खड़ा रहेगा और डरेगा नहीं। ¹⁶ तू अपना दुख-दर्द भूल जाएगा, और वह सिर्फ़ गुज़रे सैलाब की तरह याद रहेगा। ¹⁷ तेरी ज़िन्दगी दोपहर की तरह चमकदार, तेरी तारीकी सुबह की मानिन्द रौशन हो जाएगी। ¹⁸ चूँकि उम्मीद होगी इस लिए तू महफूज़ होगा और सलामती से लेट जाएगा। ¹⁹ तू आराम करेगा, और कोई तुझे दहशतज़दा नहीं करेगा बल्कि बहुत लोग तेरी नज़र-ए-इनायत हासिल करने की कोशिश करेंगे। ²⁰ लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम हो जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उन की उम्मीद मायूसकुन होगी।”^a

अय्यूब का जवाब : मैं मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ

12 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा, ² “लगता है कि तुम ही वाहिद दानिशमन्द हो, कि हिवमत तुम्हारे साथ ही मर जाएगी। ³ लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं

^a या उन की वाहिद उम्मीद इस में होगी कि दम छोड़ें।

तुम से अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें नहीं जानता? 4^{मैं} तो अपने दोस्तों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ, मैं जिस की दुआएँ अल्लाह सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह और बेइल्ज़ाम हूँ दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ! 5जो सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारता है वह मुसीबतज़दा को हक़ीर जानता है। वह कहता है, 'आओ, हम उसे ठोकर मारें जिस के पाँओ डगमगाने लगे हैं।' 6ग़ारतग़रों के ख़ैमों में आराम-ओ-सुकून है, और अल्लाह को तैश दिलाने वाले हिफ़ाज़त से रहते हैं, गो वह अल्लाह के हाथ में हैं।

7ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ ले तो वह तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिन्दों से पता कर तो वह तुझे दुरुस्त जवाब देंगे। 8ज़मीन से बात कर तो वह तुझे तालीम देगी, बल्कि समुन्दर की मछलियाँ भी तुझे इस का मफ़हम सुनाएँगी। 9इन में से एक भी नहीं जो न जानता हो कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है। 10उसी के हाथ में हर जानदार की जान, तमाम इन्सानों का दम है। 11कान तो अल्फ़ाज़ की यूँ जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह ज़बान खानों में इस्तियाज़ करती है। 12और हिक्मत उन में पाई जाती है जो उम्ररसीदा हैं, समझ मुतअद्दिद दिन गुज़रने के बाद ही आती है।

13हिक्मत और कुदरत अल्लाह की है, वही मस्लहत और समझ का मालिक है। 14जो कुछ वह ढा दे वह दुबारा तामीर नहीं होगा, जिसे वह गिरिफ़्तार करे उसे आज़ाद नहीं किया जाएगा। 15जब वह पानी रोके तो काल पड़ता है, जब उसे खुला छोड़े तो वह मुल्क में तबाही मचा देता है।

16उस के पास कुव्वत और दानाई है। भटकने और भटकाने वाला दोनों ही उस के हाथ में हैं। 17मुशीरों को वह नंगे पाँओ अपने साथ ले जाता है, क्राज़ियों को अहमक़ साबित करता है। 18वह बादशाहों का पटका खोल कर उन की कमरों में रस्सा बांधता है।

19इमामों को वह नंगे पाँओ अपने साथ ले जाता है, मज़बूती से खड़े आदमियों को तबाह करता है। 20क्राबिल-ए-एतिमाद अफ़राद से वह बोलने की क्राबिलियत और बुजुर्गों से इम्तियाज़ करने की लियाक़त छीन लेता है। 21वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत का इज़हार करके ज़ौर-आवरों का पटका खोल देता है।

22वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता और गहरी तारीकी को रौशनी में लाता है। 23वह क़ौमों को बड़ा भी बनाता और तबाह भी करता है, उम्मतों को मुन्तशिर भी करता और उन की क्रियादत भी करता है। 24वह मुल्क के राहनुमाओं को अक़ल से महरूम करके उन्हें ऐसे बयाबान में आवारा फिरने देता है जहाँ रास्ता ही नहीं। 25तब वह अंधेरे में रौशनी के बग़ैर टटोल टटोल कर घूमते हैं। अल्लाह ही उन्हें नशे में धुत शराबियों की तरह भटकने देता है।

13 यह सब कुछ मैं ने अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुन कर समझ लिया है। 2इल्म के लिहाज़ से मैं तुम्हारे बराबर हूँ। इस नाते से मैं तुम से कम नहीं हूँ। 3लेकिन मैं क्रादिर-ए-मुतलक़ से ही बात करना चाहता हूँ, अल्लाह के साथ ही मुबाहसा करने की आज़ू रखता हूँ।

4जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, तुम सब फ़रेबदिह लेप लगाने वाले और बेकार डाक्टर हो। 5काश तुम सरासर खामोश रहते! ऐसा करने से तुम्हारी हिक्मत कहीं ज़यादा ज़ाहिर होती। 6मुबाहसे में ज़रा मेरा मौक़िफ़ सुनो, अदालत में मेरे बयानात पर ग़ौर करो!

7क्या तुम अल्लाह की खातिर कजरौ बातें पेश करते हो, क्या उसी की खातिर झूट बोलते हो? 8क्या तुम उस की जानिबदारी करना चाहते हो, अल्लाह के हक़ में लड़ना चाहते हो? 9सोच लो, अगर वह तुम्हारी जाँच करे तो क्या तुम्हारी बात बनेगी? क्या तुम उसे यूँ धोका दे सकते हो जिस तरह इन्सान को धोका दिया जाता है?

¹⁰अगर तुम खुफिया तौर पर भी जानिब-दारी दिखाओ तो वह तुम्हें ज़रूर सख्त सज़ा देगा। ¹¹क्या उस का रोब तुम्हें खौफ़ज़दा नहीं करेगा? क्या तुम उस से सख्त दहशत नहीं खाओगे? ¹²फिर जिन कहावतों की याद तुम दिलाते रहते हो वह राख की अम्साल साबित होंगी, पता चलेगा कि तुम्हारी बातें मिट्टी के अल्फ़ाज़ हैं।

¹³खामोश हो कर मुझ से बाज़ आओ! जो कुछ भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना चाहता हूँ। ¹⁴मैं अपने आप को खतरों में डालने के लिए तय्यार हूँ, मैं अपनी जान पर खेलूँगा। ¹⁵शायद वह मुझे मार डाले। कोई बात नहीं, क्योंकि मेरी उम्मीद जाती रही है। जो कुछ भी हो मैं उसी के सामने अपनी राहों का दिफ़ा करूँगा। ¹⁶और इस में मैं पनाह लेता हूँ कि बेदीन उस के हुज़ूर आने की जुरअत नहीं करता।

¹⁷ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो, अपने कान मेरे बयानात पर धरो। ¹⁸तुम्हें पता चलेगा कि मैं ने एहतियात और तरतीब से अपना मुआमला तय्यार किया है। मुझे साफ़ मालूम है कि मैं हक़ पर हूँ। ¹⁹अगर कोई मुझे मुजरिम साबित कर सके तो मैं चुप हो जाऊँगा, दम छोड़ने तक खामोश रहूँगा।

अय्यूब की मायूसी में दुआ

²⁰ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरखास्तें मन्ज़ूर कर ताकि मुझे तुझ से छुप जाने की ज़रूरत न हो। ²¹पहले, अपना हाथ मुझ से दूर कर ताकि तेरा खौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। ²²दूसरे, इस के बाद मुझे बुला ताकि मैं जवाब दूँ, या मुझे पहले बोलने दे और तू ही इस का जवाब दे।

²³मुझ से कितने गुनाह और ग़लतियाँ हुई हैं? मुझ पर मेरा जुर्म और मेरा गुनाह ज़ाहिर कर! ²⁴तू अपना चेहरा मुझ से छुपाए क्यों रखता है? तू मुझे क्यों अपना दुश्मन समझता

है? ²⁵क्या तू हवा के झोंकों के उड़ाए हुए पत्ते को दहशत खिलाना चाहता, खुशक भूसे का ताक़ुकुब करना चाहता है?

²⁶यह तेरा ही फ़ैसला है कि मैं तलख़ तजरिबों से गुज़रूँ, तेरी ही मर्ज़ी है कि मैं अपनी जवानी के गुनाहों की सज़ा पाऊँ।^a ²⁷तू मेरे पाँओं को काठ में ठोक कर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है। तू मेरे हर एक नक्श-ए-क़दम पर ध्यान देता है, ²⁸गो मैं मैं की घिसी फटी मशक और कीड़ों का ख़राब किया हुआ लिबास हूँ।

14 औरत से पैदा हुआ इन्सान चन्द एक दिन ज़िन्दा रहता है, और उस की ज़िन्दगी बेचैनी से भरी रहती है। ²फूल की तरह वह चन्द लम्हों के लिए फूट निकलता, फिर मुरझा जाता है। साय की तरह वह थोड़ी देर के बाद ओझल हो जाता और क्राइम नहीं रहता। ³क्या तू वाक़ई एक ऐसी मख़लूक का इतने गौर से मुआइना करना चाहता है? मैं कौन हूँ कि तू मुझे पेशी के लिए अपने हुज़ूर लाए?

⁴कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर सकता है? कोई नहीं! ⁵इन्सान की उम्र तो मुक़र्रर हुई है, उस के महीनों की तादाद तुझे मालूम है, क्योंकि तू ही ने उस के दिनों की वह हद बांधी है जिस से आगे वह बढ़ नहीं सकता। ⁶चुनाँचे अपनी निगाह उस से फेर ले और उसे छोड़ दे ताकि वह मज़दूर की तरह अपने थोड़े दिनों से कुछ मज़ा ले सके।

⁷अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी बहुत उम्मीद बाक़ी रहती है, क्योंकि ऐन मुमकिन है कि मूठ से कोंपलें फूट निकलें और उस की नई शाखें उगती जाएँ। ⁸बेशक उस की जड़ें पुरानी हो जाएँ और उस का मूठ मिट्टी में ख़त्म होने लगे, ⁹लेकिन पानी की खुशबू सूँघते ही वह कोंपलें निकालने लगेगा, और पनीरी की सी टहनियाँ उस से फूटने लगेंगी।

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : मीरास में पाऊँ।

¹⁰लेकिन इन्सान फ़र्क़ है। मरते वक़्त उस की हर तरह की ताक़त जाती रहती है, दम छोड़ते वक़्त उस का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहता। ¹¹वह उस झील की मानिन्द है जिस का पानी ओझल हो जाए, उस नदी की मानिन्द जो सुकड़ कर ख़ुश्क हो जाए। ¹²वफ़ात पाने वाले का यही हाल है। वह लेट जाता और कभी नहीं उठेगा। जब तक आसमान क्राइम है न वह जाग उठेगा, न उसे जगाया जाएगा।

¹³काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे वहाँ उस वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक तेरा क्रहर ठंडा न हो जाता! काश तू एक वक़्त मुकर्र करे जब तू मेरा दुबारा खयाल करेगा। ¹⁴(क्योंकि अगर इन्सान मर जाए तो क्या वह दुबारा जिन्दा हो जाएगा?) फिर मैं अपनी सख़्त खिदमत के तमाम दिन बर्दाश्त करता, उस वक़्त तक इन्तिज़ार करता जब तक मेरी सबुकदोशी न हो जाती। ¹⁵तब तू मुझे आवाज़ देता और मैं जवाब देता, तू अपने हाथों के काम का आरज़ूमन्द होता। ¹⁶उस वक़्त भी तू मेरे हर क़दम का शुमार करता, लेकिन न सिर्फ़ इस मक़्सद से कि मेरे गुनाहों पर ध्यान दे। ¹⁷तू मेरे जराइम थैले में बांध कर उस पर मुहर लगा देता, मेरी हर ग़लती को ढाँक देता।

¹⁸लेकिन अप्रसोस! जिस तरह पहाड़ गिर कर चूर चूर हो जाता और चटान खिसक जाती है, ¹⁹जिस तरह बहता पानी पत्थर को रगड़ रगड़ कर खत्म करता और सैलाब मिट्टी को बहा ले जाता है उसी तरह तू इन्सान की उम्मीद ख़ाक में मिला देता है। ²⁰तू मुकम्मल तौर पर उस पर ग़ालिब आ जाता तो वह कूच कर जाता है, तू उस का चेहरा बिगाड़ कर उसे फ़ारिग़ कर देता है। ²¹अगर उस के बच्चों को सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं चलता, अगर उन्हें पस्त किया जाए तो यह भी उस के इल्म में नहीं आता। ²²वह सिर्फ़ अपने ही जिस्म का दर्द महसूस करता और अपने लिए ही मातम करता है।"

इलीफ़ज़ का जवाब : अय्यूब कुफ़्र बक रहा है

15 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे कर कहा,

²"क्या दानिशमन्द को जवाब में बेहूदा खयालात पेश करने चाहिएँ? क्या उसे अपना पेट तपती मशरिकी हवा से भरना चाहिए? ³क्या मुनासिब है कि वह फ़ुज़ूल बह्स-मुबाहसा करे, ऐसी बातें करे जो बेफ़ाइदा हैं? हरगिज़ नहीं!

⁴लेकिन तेरा रवय्या इस से कहीं बुरा है। तू अल्लाह का ख़ौफ़ छोड़ कर उस के हुज़ूर गौर-ओ-ख़ौज़ करने का फ़र्ज़ हकीर जानता है। ⁵तेरा कुसूर ही तेरे मुँह को ऐसी बातें करने की तहरीक दे रहा है, इसी लिए तू ने चालाकों की ज़बान अपना ली है। ⁶मुझे तुझे कुसूरवार ठहराने की ज़रूरत ही नहीं, क्योंकि तेरा अपना ही मुँह तुझे मुजरिम ठहराता है, तेरे अपने ही होंट तेरे खिलाफ़ गवाही देते हैं।

⁷क्या तू सब से पहले पैदा हुआ इन्सान है? क्या तू ने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया? ⁸जब अल्लाह की मजलिस मुनअक़िद हो जाए तो क्या तू भी उन की बातें सुनता है? क्या सिर्फ़ तुझे ही हिक्मत हासिल है? ⁹तू क्या जानता है जो हम नहीं जानते? तुझे किस बात की समझ आई है जिस का इल्म हम नहीं रखते? ¹⁰हमारे दरमियान भी उम्ररसीदा बुजुर्ग हैं, ऐसे आदमी जो तेरे वालिद से भी बूढ़े हैं।

¹¹ऐ अय्यूब, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की तसल्ली देने वाली बातों की कोई अहमियत नहीं? क्या तू इस की क़दर नहीं कर सकता कि नर्मी से तुझ से बात की जा रही है? ¹²तेरे दिल के ज़फ़्बात तुझे यूँ उड़ा कर क्यों ले जाएँ, तेरी आँखें क्यों इतनी चमक उठें ¹³कि आखिरकार तू अपना गुस्सा अल्लाह पर उतार कर ऐसी बातें अपने मुँह से उगल दे?

¹⁴भला इन्सान क्या है कि पाक-साफ़ ठहरे? औरत से पैदा हुई मख़लूक क्या है

कि रास्तबाज़ साबित हो? कुछ भी नहीं! 15अल्लाह तो अपने मुकद्दस ख़ादिमों पर भी भरोसा नहीं रखता, बल्कि आसमान भी उस की नज़र में पाक नहीं है। 16तो फिर वह इन्सान पर भरोसा क्यों रखे जो क़ाबिल-ए-घिन और बिगड़ा हुआ है, जो बुराई को पानी की तरह पी लेता है।

17मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता हूँ। मैं तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ है, 18वह कुछ जो दानिशमन्दों ने पेश किया और जो उन्हें अपने बापदादा से मिला था। उन से कुछ छुपाया नहीं गया था। 19(बापदादा से मुराद वह वाहिद लोग हैं जिन्हें उस वक़्त मुल्क दिया गया जब कोई भी परदेसी उन में नहीं फिरता था)।

20वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन डर के मारे तड़पता रहता, और जितने भी साल ज़ालिम के लिए महफूज़ रखे गए हैं उतने ही साल वह पेच-ओ-ताब खाता रहता है। 21दहशतनाक आवाज़ें उस के कानों में गूँजती रहती हैं, और अमन-ओ-अमान के वक़्त ही तबाही मचाने वाला उस पर टूट पड़ता है। 22उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद ही नहीं, क्योंकि उसे तलवार के लिए तय्यार रखा गया है।

23वह मारा मारा फिरता है, आख़िरकार वह गिद्धों की खोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है कि तारीकी का दिन करीब ही है। 24तंगी और मुसीबत उसे दहशत खिलाती, हम्लाआवर बादशाह की तरह उस पर ग़ालिब आती हैं। 25और वजह क्या है? यह कि उस ने अपना हाथ अल्लाह के खिलाफ़ उठाया, क़ादिर-ए-मुतलक़ के सामने तकब्बुर दिखाया है। 26अपनी मोटी और मज़बूत ढाल की पनाह में अकड़ कर वह तेज़ी से अल्लाह पर हम्ला करता है।

27गो इस वक़्त उस का चेहरा चर्बी से चमकता और उस की कमर मोटी है, 28लेकिन आइन्दा वह तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे

मकानों में जो सब के छोड़े हुए हैं और जो जल्द ही पत्थर के ढेर बन जाएंगे। 29वह अमीर नहीं होगा, उस की दौलत क़ाइम नहीं रहेगी, उस की जायदाद मुल्क में फैली नहीं रहेगी।

30वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे अपने मुँह की एक फूँक से उड़ा कर तबाह कर देगा। 31वह धोके पर भरोसा न करे, वर्ना वह भटक जाएगा और उस का अज़्र धोका ही होगा। 32वक़्त से पहले ही उसे इस का पूरा मुआवज़ा मिलेगा, उस की कोंपल कभी नहीं फले फूलेगी।

33वह अंगूर की उस बेल की मानिन्द होगा जिस का फल कच्ची हालत में ही गिर जाए, ज़ैतून के उस दरख़्त की मानिन्द जिस के तमाम फूल झड़ जाएँ। 34क्योंकि बेदीनों का जथ्था बंजर रहेगा, और आग रिश्तखोरों के खैमों को भस्म करेगी। 35उन के पाँओ दुख-दर्द से भारी हो जाते, और वह बुराई को जन्म देते हैं। उन का पेट धोका ही पैदा करता है।”

अय्यूब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

16 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा, 2“इस तरह की मैं ने बहुत सी बातें सुनी हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ़ दुख-दर्द का बाइस है। 3क्या तुम्हारी लफ़्फ़ाज़ी कभी ख़त्म नहीं होगी? तुझे क्या चीज़ बेचैन कर रही है कि तू मुझे जवाब देने पर मजबूर है? 4अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं भी तुम्हारी जैसी बातें कर सकता। फिर मैं भी तुम्हारे खिलाफ़ पुरअलफ़ाज़ तक़रीरें पेश करके तौबा तौबा कह सकता। 5लेकिन मैं ऐसा न करता। मैं तुम्हें अपनी बातों से तक़वियत देता, अप्रसोस के इज़हार से तुम्हें तस्कीन देता। 6लेकिन मेरे साथ ऐसा सुलूक नहीं हो रहा। अगर मैं बोलूँ तो मुझे सुकून नहीं मिलता, अगर चुप रहूँ तो मेरा दर्द दूर नहीं होता।

7लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है, उस ने मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है।

४उस ने मुझे सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे खिलाफ़ गवाह बन गई है। मेरी दुबली-पतली हालत खड़ी हो कर मेरे खिलाफ़ गवाही देती है। ९अल्लाह का ग़ज़ब मुझे फाड़ रहा है, वह मेरा दुश्मन और मेरा मुखालिफ़ बन गया है जो मेरे खिलाफ़ दाँत पीस पीस कर मुझे अपनी आँखों से छेद रहा है।^{१०}लोग गला फाड़ कर मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे गाल पर थप्पड़ मार कर मेरी बेइज़्जती करते हैं। सब के सब मेरे खिलाफ़ मुत्तहिद हो गए हैं।^{११}अल्लाह ने मुझे शरीरों के हवाले कर दिया, मुझे बेदीनों के चंगुल में फंसा दिया है।^{१२}मैं सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार रहा था कि उस ने मुझे पाश पाश कर दिया, मुझे गले से पकड़ कर ज़मीन पर पटख दिया। उस ने मुझे अपना निशाना बना लिया, ^{१३}फिर उस के तीरअन्दाज़ों ने मुझे घेर लिया। उस ने बेरहमी से मेरे गुदों को चीर डाला, मेरा पित ज़मीन पर उंडेल दिया।^{१४}बार बार वह मेरी क़िलाबन्दी में रखना डालता रहा, पहलवान की तरह मुझ पर हम्ला करता रहा।

^{१५}मैं ने टाँके लगा कर अपनी जिल्द के साथ टाट का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शान-ओ-शौकत खाक में मिलाई है।^{१६}रो रो कर मेरा चेहरा सूज गया है, मेरी पलकों पर घना अंधेरा छा गया है।^{१७}लेकिन वजह क्या है? मेरे हाथ तो जुल्म से बरी रहे, मेरी दुआ पाक-साफ़ रही है।

^{१८}ऐ ज़मीन, मेरे खून को मत ढाँपना! मेरी आह-ओ-ज़ारी कभी आराम की जगह न पाए बल्कि गूँजती रहे।^{१९}अब भी मेरा गवाह आसमान पर है, मेरे हक़ में गवाही देने वाला बुलन्दियों पर है।^{२०}मेरी आह-ओ-ज़ारी मेरा तर्जुमान है, मैं बेख्वाबी से अल्लाह के इन्तिज़ार में रहता हूँ।^{२१}मेरी आहें अल्लाह के सामने फ़ानी इन्सान के हक़ में बात करेगी, उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के हक़ में बात करे।^{२२}क्योंकि थोड़े ही सालों के बाद

मैं उस रास्ते पर रवाना हो जाऊँगा जिस से वापस नहीं आऊँगा।

अल्लाह से इत्तिजा

17 मेरी रूह शिकस्ता हो गई, मेरे दिन बुझ गए हैं। क़ब्रिस्तान ही मेरे इन्तिज़ार में है।^२मेरे चारों तरफ़ मज़ाक़ ही मज़ाक़ सुनाई देता, मेरी आँखें लोगों का हटधर्म रवय्या देखते देखते थक गई हैं।^३ऐ अल्लाह, मेरी ज़मानत मेरे अपने हाथों से क़बूल फ़रमा, क्योंकि और कोई नहीं जो उसे दे।^४उन के ज़हनों को तू ने बन्द कर दिया, इस लिए तो उन से इज़्ज़त नहीं पाएगा।^५वह उस आदमी की मानिन्द हैं जो अपने दोस्तों को ज़ियाफ़त की दावत दे, हालाँकि उस के अपने बच्चे भूके मर रहे हों।

^६अल्लाह ने मुझे मज़ाक़ का यूँ निशाना बनाया है कि मैं क़ौमों में इज़तअंगेज़ मिसाल बन गया हूँ। मुझे देखते ही लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं।^७मेरी आँखें ग़म खा खा कर धुन्दला गई हैं, मेरे आज़ा यहाँ तक सूख गए कि साया ही रह गया है।^८यह देख कर सीधी राह पर चलने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते और बेगुनाह बेदीनों के खिलाफ़ मुश्तइल हो जाते हैं।^९रास्तबाज़ अपनी राह पर क़ाइम रहते, और जिन के हाथ पाक हैं वह तक्रवियत पाते हैं।^{१०}लेकिन जहाँ तक तुम सब का ताल्लुक़ है, आओ दुबारा मुझ पर हम्ला करो! मुझे तुम में एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

^{११}मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मन्सूबे और दिल की आज़ूँएँ खाक में मिल गई हैं^{१२}जिन से रात दिन में बदल गई और रौशनी अंधेरे को दूर करके करीब आई थी।^{१३}अगर मैं सिर्फ़ इतनी ही उम्मीद रखूँ कि पाताल मेरा घर होगा तो यह कैसी उम्मीद होगी? अगर मैं अपना बिस्तर तारीकी में बिछा कर ^{१४}क़ब्र से कहूँ, 'तू मेरा बाप है' और कीड़े से, 'ऐ मेरी अम्मी, ऐ मेरी

^१लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी आँखें मेरे खिलाफ़ तेज़ करता है।

बहन' 15तो फिर यह कैसी उम्मीद होगी? कौन कहेगा, 'मुझे तेरे लिए उम्मीद नज़र आती है'? 16तब मेरी उम्मीद मेरे साथ पाताल में उतरेगी, और हम मिल कर खाक में धँस जाएंगे।"

बिल्दद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

18 बिल्दद सूखी ने जवाब दे कर कहा,

2"तू कब तक ऐसी बातें करेगा? इन से बाज़ आ कर होश में आ! तब ही हम सहीह बात कर सकेंगे। 3तू हमें डंगर जैसे अहमक़ क्यूँ समझता है? 4गो तू आग-बगूला हो कर अपने आप को फाड़ रहा है, लेकिन क्या तेरे बाइस ज़मीन को वीरान होना चाहिए और चटानों को अपनी जगह से खिसकना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

5यक्रीनन बेदीन का चरागा बुझ जाएगा, उस की आग का शोला आइन्दा नहीं चमकेगा। 6उस के ख़ैमे में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उस के ऊपर की शमा बुझ जाएगी। 7उस के लम्बे क़दम रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे, और उस का अपना मन्सूबा उसे पटख देगा।

8उस के अपने पाँओ उसे जाल में फंसा देते हैं, वह दाम पर ही चलता फिरता है। 9फंदा उस की एड़ी पकड़ लेता, कमन्द उसे जकड़ लेती है। 10उसे फंसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा हुआ है, रास्ते में फंदा बिछा है।

11वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे क़दम-ब-क़दम दहशत खिलाती और उस की नाक में दम करती हैं। 12आफ़त उसे हड़प कर लेना चाहती है, तबाही तय्यार खड़ी है ताकि उसे गिरते वक़्त ही पकड़ ले। 13बीमारी उस की जिल्द को खा जाती, मौत का पहलौठा उस के आज्ञा को निगल लेता है। 14उसे उस के ख़ैमे की हिफ़ाज़त से छीन लिया जाता और घसीट कर दहशतों के बादशाह के सामने लाया जाता है।

15उस के ख़ैमे में आग बसती, उस के घर पर गंधक बिखर जाती है। 16नीचे उस की जड़ें सूख जाती, ऊपर उस की शाखें मुरझा जाती हैं। 17ज़मीन पर से उस की याद मिट जाती है, कहीं भी उस का नाम-ओ-निशान नहीं रहता।

18उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता, दुनिया से भगा कर खारिज किया जाता है। 19क़ौम में उस की न औलाद न नस्ल रहेगी, जहाँ पहले रहता था वहाँ कोई नहीं बचेगा। 20उस का अन्जाम देख कर मगरिब के बाशिन्दों के रोंगटे खड़े हो जाते और मशरिफ़ के बाशिन्दे दहशतज़दा हो जाते हैं। 21यही है बेदीन के घर का अन्जाम, उसी के मक़ाम का जो अल्लाह को नहीं जानता।"

अय्यूब : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिन्दा ज़िन्दा है

19 तब अय्यूब ने जवाब में कहा, 2"तुम कब तक मुझ पर तशहूद करना चाहते हो, कब तक मुझे अल्फ़ाज़ से टुकड़े टुकड़े करना चाहते हो? 3अब तुम ने दस बार मुझे मलामत की है, तुम ने शर्म किए बग़ैर मेरे साथ बदसुलूकी की है। 4अगर यह बात सहीह भी हो कि मैं ग़लत राह पर आ गया हूँ तो मुझे ही इस का नतीजा भुगतना है। 5लेकिन चूँकि तुम मुझ पर अपनी सबक़त दिखाना चाहते और मेरी रुस्वाई मुझे डॉटने के लिए इस्तेमाल कर रहे हो 6तो फिर जान लो, अल्लाह ने खुद मुझे ग़लत राह पर ला कर अपने दाम से घेर लिया है।

7गो मैं चीख कर कहूँ, 'मुझ पर जुल्म हो रहा है,' लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो मैं मदद के लिए पुकारूँ, लेकिन इन्साफ़ नहीं पाता। 8उस ने मेरे रास्ते में ऐसी दीवार खड़ी कर दी कि मैं गुज़र नहीं सकता, उस ने मेरी राहों पर अंधेरा ही छा जाने दिया है। 9उस ने मेरी इज़ज़त मुझ से छीन कर मेरे सर से ताज़ उतार दिया है। 10चारों तरफ़ से उस ने मुझे ढा दिया तो मैं तबाह हुआ। उस ने मेरी उम्मीद को

दरख्त की तरह जड़ से उखाड़ दिया है।¹¹ उस का क्रहर मेरे खिलाफ़ भड़क उठा है, और वह मुझे अपने दुश्मनों में शुमार करता है।¹² उस के दस्ते मिल कर मुझ पर हमला करने आए हैं। उन्होंने मेरी फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर लगाया है ताकि उस में रखना डालें। उन्होंने ने चारों तरफ़ से मेरे खैमे का मुहासरा किया है।

¹³ मेरे भाइयों को उस ने मुझ से दूर कर दिया, और मेरे जानने वालों ने मेरा हुक्का-पानी बन्द कर दिया है।¹⁴ मेरे रिश्तेदारों ने मुझे तर्क कर दिया, मेरे क़रीबी दोस्त मुझे भूल गए हैं।¹⁵ मेरे दामनगीर और नौकरानियाँ मुझे अजनबी समझते हैं। उन की नज़र में मैं अजनबी हूँ।¹⁶ मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ तो वह जवाब नहीं देता। गो मैं अपने मुँह से उस से इल्तिजा करूँ तो भी वह नहीं आता।

¹⁷ मेरी बीवी मेरी जान से घिन खाती है, मेरे सगे भाई मुझे मकरूह समझते हैं।¹⁸ यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी मुझे हकीर जानते हैं। अगर मैं उठने की कोशिश करूँ तो वह अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेते हैं।¹⁹ मेरे दिली दोस्त मुझे कराहियत की निगाह से देखते हैं, जो मुझे प्यारे थे वह मेरे मुखालिफ़ हो गए हैं।²⁰ मेरी जिल्द सुकड़ कर मेरी हड्डियों के साथ जा लगी है। मैं मौत से बाल बाल बच गया हूँ।²¹

²¹ मेरे दोस्तों, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर तरस खाओ। क्योंकि अल्लाह ही के हाथ ने मुझे मारा है।²² तुम क्यों अल्लाह की तरह मेरे पीछे पड़ गए हो, क्यों मेरा गोशत खा खा कर सेर नहीं होते?

²³ काश मेरी बातें क़लमबन्द हो जाएँ! काश वह यादगार पर कन्दा की जाएँ, ²⁴ लोहे की छैनी और सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में नक्श की जाएँ! ²⁵ लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ाने वाला जिन्दा है और आखिरकार मेरे हक़ में ज़मीन पर खड़ा हो जाएगा, ²⁶ गो मेरी जिल्द यूँ उतारी भी गई हो। लेकिन मेरी

आर्जू है कि जिस्म में होते हुए अल्लाह को देखूँ, ²⁷ कि मैं खुद ही उसे देखूँ, न कि अजनबी बल्कि अपनी ही आँखों से उस पर निगाह करूँ। इस आर्जू की शिद्दत से मेरा दिल तबाह हो रहा है।

²⁸ तुम कहते हो, 'हम कितनी सख्ती से अय्यूब का ताक्कुब करेंगे' और मसले की जड़ तो उसी में पिनहाँ है।²⁹ लेकिन तुम्हें खुद तलवार से डरना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा गुस्सा तलवार की सज़ा के लाइक़ है, तुम्हें जानना चाहिए कि अदालत आने वाली है।"

ज़ूफ़र : ग़लत काम की मुन्सिफ़ाना सज़ा दी जाएगी

20 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे कर कहा,

² "यकीनन मेरे मुज़तरिब ख़यालात और वह एहसासात जो मेरे अन्दर से उभर रहे हैं मुझे जवाब देने पर मजबूर कर रहे हैं।³ मुझे ऐसी नसीहत सुननी पड़ी जो मेरी बेइज़्जती का बाइस थी, लेकिन मेरी समझ मुझे जवाब देने की तहरीक दे रही है।

⁴ क्या तुझे मालूम नहीं कि क़दीम ज़माने से यानी जब से इन्सान को ज़मीन पर रखा गया ⁵ शरीर का फ़त्हमन्द नारा आरिज़ी और बेदीन की खुशी पल भर की साबित हुई है? ⁶ गो उस का क़द-ओ-क़ामत आसमान तक पहुँचे और उस का सर बादलों को छुए ⁷ ताहम वह अपने फ़ुज़ले की तरह अबद तक तबाह हो जाएगा। जिन्होंने न उसे पहले देखा था वह पूछेंगे, 'अब वह कहाँ है?'

⁸ वह ख़्वाब की तरह उड़ जाता और आइन्दा कहीं नहीं पाया जाएगा, उसे रात की रोया की तरह भुला दिया जाता है। ⁹ जिस आँख ने उसे देखा वह उसे आइन्दा कभी नहीं देखेगी। उस का घर दुबारा उस का मुशाहदा नहीं करेगा। ¹⁰ उस की औलाद को ग़रीबों से

¹ लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई है।' मतलब मुब्हम सा है।

भीक माँगनी पड़ेगी, उस के अपने हाथों को दौलत वापस देनी पड़ेगी।¹¹ जवानी की जिस ताकत से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उस के साथ ही खाक में मिल जाएगी।

¹²बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे अपनी ज़बान तले छुपाए रखता, ¹³उसे महफूज़ रख कर जाने नहीं देता। ¹⁴लेकिन उस की खुराक पेट में आ कर खराब हो जाती बल्कि साँप का ज़हर बन जाती है। ¹⁵जो दौलत उस ने निगल ली उसे वह उगल देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उस के पेट से खारिज करेगा। ¹⁶उस ने साँप का ज़हर चूस लिया, और साँप ही की ज़बान उसे मार डालेगी। ¹⁷वह नदियों से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा, शहद और बालाई की नहरों से मज़ा नहीं लेगा। ¹⁸जो कुछ उस ने हासिल किया उसे वह हज़म नहीं करेगा बल्कि सब कुछ वापस करेगा। जो दौलत उस ने अपने कारोबार से कमाई उस से वह लुत्फ़ नहीं उठाएगा। ¹⁹क्यूँकि उस ने पस्तहालों पर जुल्म करके उन्हें तर्क किया है, उस ने ऐसे घरों को छीन लिया है जिन्हें उस ने तामीर नहीं किया था। ²⁰उस ने पेट में कभी सुकून महसूस नहीं किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे बचने नहीं दिया। ²¹जब वह खाना खाता है तो कुछ नहीं बचता, इस लिए उस की खुशहाली क़ाइम नहीं रहेगी। ²²जूँ ही उसे कसत की चीज़ें हासिल होंगी वह मुसीबत में फंस जाएगा। तब दुख-दर्द का पूरा ज़ोर उस पर आएगा। ²³काश अल्लाह बेदीन का पेट भर कर अपना ग़ज़ब उस पर बरसाए।

²⁴गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए, लेकिन पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। ²⁵जब वह उसे अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक उस के कलेजे में से निकलेगी। उसे दहशतनाक वाक़िआत पेश आएँगे। ²⁶गहरी तारीकी उस के खज़ानों की ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग जो इन्सानों ने नहीं लगाई उसे भस्म करेगी। उस के ख़ैमे के जितने

लोग बच निकले उन्हें वह खा जाएगी। ²⁷आसमान उसे मुजरिम ठहराएगा, ज़मीन उस के खिलाफ़ गवाही देने के लिए खड़ी हो जाएगी। ²⁸सैलाब उस का घर उड़ा ले जाएगा, ग़ज़ब के दिन शिदत से बहता हुआ पानी उस पर से गुज़रेगा। ²⁹यह है वह अज़्र जो अल्लाह बेदीनों को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उन के लिए मुकर्रर की है।”

अय्यूब : बहुत दफ़ा बेदीनों को सज़ा नहीं मिलती

21 फिर अय्यूब ने जवाब में कहा, ²“ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो! यही करने से मुझे तसल्ली दो! ³जब तक मैं अपनी बात पेश न करूँ मुझे बर्दाश्त करो, इस के बाद अगर चाहो तो मेरा मज़ाक़ उड़ाओ। ⁴क्या मैं किसी इन्सान से एहतियाज कर रहा हूँ? हरगिज़ नहीं! तो फिर क्या अजब कि मेरी रूह इतनी तंग आ गई है। ⁵मुझ पर नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाएंगे और तुम हैरानी से अपना हाथ मुँह पर रखोगे।

⁶जब कभी मुझे वह खयाल याद आता है जो मैं पेश करना चाहता हूँ तो मैं दहशतज़दा हो जाता हूँ, मेरे जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है। ⁷खयाल यह है कि बेदीन क्यूँ जीते रहते हैं? न सिर्फ़ वह उम्रसीदा हो जाते बल्कि उन की ताक़त बढ़ती रहती है।

⁸उन के बच्चे उन के सामने क़ाइम हो जाते, उन की औलाद उन की आँखों के सामने मज़बूत हो जाती है। ⁹उन के घर महफूज़ हैं। न कोई चीज़ उन्हें डराती, न अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती है। ¹⁰उन का साँड नस्ल बढ़ाने में कभी नाकाम नहीं होता, उन की गाय वक्रत पर जन्म देती, और उस के बच्चे कभी ज़ाए नहीं होते।

¹¹वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेजते हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड़ की तरह घर से निकलते हैं। उन के लड़के कूदते फाँदते नज़र आते हैं। ¹²वह दफ़ और सरोद

बजा कर गीत गाते और बाँसरी की सुरीली आवाज़ निकाल कर अपना दिल बहलाते हैं।¹³उन की ज़िन्दगी खुशहाल रहती है, वह हर दिन से पूरा लुत्फ उठाते और आखिरकार बड़े सुकून से पाताल में उतर जाते हैं।

¹⁴और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते हैं, 'हम से दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना नहीं चाहते।' ¹⁵क्रादिर-ए-मुतलक़ कौन है कि हम उस की खिदमत करें? उस से दुआ करने से हमें क्या फ़ाइदा होगा?' ¹⁶क्या उन की खुशहाली उन के अपने हाथ में नहीं होती? क्या बेदीनों के मन्सूबे अल्लाह से दूर नहीं रहते?

¹⁷ऐसा लगता है कि बेदीनों का चरागा कभी नहीं बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती है? क्या अल्लाह कभी क्रहर में आ कर उन पर वह तबाही नाज़िल करता है जो उन का मुनासिब हिस्सा है? ¹⁸क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे की तरह और आँधी कभी उन्हें तूड़ी की तरह उड़ा ले जाती है? अफ़्रिसोस, ऐसा नहीं होता। ¹⁹शायद तुम कही, 'अल्लाह उन्हें सज़ा देने के बजाए उन के बच्चों को सज़ा देगा।' लेकिन मैं कहता हूँ कि उसे बाप को ही सज़ा देनी चाहिए ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा ख़ूब जान ले। ²⁰उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही देखें, वह खुद क्रादिर-ए-मुतलक़ के ग़ज़ब का प्याला पी ले। ²¹क्योंकि जब उस की ज़िन्दगी के मुकर्ररा दिन इख़तिताम तक पहुँचें तो उसे क्या परवा होगी कि मेरे बाद घर वालों के साथ क्या होगा।

²²लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता है? वह तो बुलन्दियों पर रहने वालों की भी अदालत करता है। ²³एक शख्स वफ़ात पाते वक़्त ख़ूब तन्दुरुस्त होता है। जीते जी वह बड़े सुकून और इत्मीनान से ज़िन्दगी गुज़ार सका। ²⁴उस के बर्तन दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों का गूदा तर-ओ-ताज़ा रहा। ²⁵दूसरा शख्स शिकस्ता हालत में मर जाता है और उसे कभी खुशहाली का लुत्फ़ नसीब

नहीं हुआ। ²⁶अब दोनों मिल कर खाक में पड़े रहते हैं, दोनों कीड़े-मकोड़ों से ढाँपे रहते हैं।

²⁷सुनो, मैं तुम्हारे खयालात और उन साज़िशों से वाकिफ़ हूँ जिन से तुम मुझ पर जुल्म करना चाहते हो। ²⁸क्योंकि तुम कहते हो, 'रईस का घर कहाँ है? वह ख़ैमा किधर गया जिस में बेदीन बसते थे? वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह हो गए हैं।' ²⁹लेकिन उन से पूछ लो जो इधर उधर सफ़र करते रहते हैं। तुम्हें उन की गवाही तस्लीम करनी चाहिए ³⁰कि आफ़त के दिन शरीर को सहीह-सलामत छोड़ा जाता है, कि ग़ज़ब के दिन उसे रिहाई मिलती है।

³¹कौन उस के रू-ब-रू उस के चाल-चलन की मलामत करता, कौन उसे उस के ग़लत काम का मुनासिब अज़्र देता है? ³²लोग उस के जनाज़े में शरीक हो कर उसे क़ब्र तक ले जाते हैं। उस की क़ब्र पर चौकीदार लगाया जाता है। ³³वादी की मिट्टी के ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे पीछे तमाम दुनिया, उस के आगे आगे अनगिनत हुज़ूम चलता है। ³⁴चुनाँचे तुम मुझे अबस बातों से क्यूँ तसल्ली दे रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी बेवफ़ाई ही नज़र आती है।"

इलीफ़ज़ : अय्यूब शरीर है

22 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे कर कहा,

²¹"क्या अल्लाह इन्सान से फ़ाइदा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! उस के लिए दानिशमन्द भी फ़ाइदे का बाइस नहीं। ³अगर तू रास्तबाज़ हो भी तो क्या वह इस से अपने लिए नफ़ा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर तू बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे तो क्या उसे कुछ हासिल होता है? ⁴अल्लाह तुझे तेरी खुदातरस ज़िन्दगी के सबब से मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि वह इसी लिए अदालत में तुझ से जवाब तलब कर रहा है।

5 नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे ला-महदूद गुनाह हैं।

6 जब तेरे भाइयों ने तुझ से कर्ज़ लिया तो तू ने बिलावजह वह चीज़ें अपना ली होंगी जो उन्होंने ने तुझे ज़मानत के तौर पर दी थीं, तू ने उन्हें उन के कपड़ों से महरूम कर दिया होगा। 7 तू ने थकेमान्दों को पानी पिलाने से और भूके मरने वालों को खाना खिलाने से इन्कार किया होगा। 8 बेशक तेरा रवय्या इस खयाल पर मन्बी था कि पूरा मुल्क ताक़तवरों की मिलकियत है, कि सिर्फ़ बड़े लोग उस में रह सकते हैं। 9 तू ने बेवाओं को खाली हाथ मोड़ दिया होगा, यतीमों की ताक़त पाश पाश की होगी। 10 इसी लिए तू फंदों से घिरा रहता है, अचानक ही तुझे दहशतनाक वाक़िआत डराते हैं। 11 यही वजह है कि तुझ पर ऐसा अंधेरा छा गया है कि तू देख नहीं सकता, कि सैलाब ने तुझे डुबो दिया है।

12 क्या अल्लाह आसमान की बुलन्दियों पर नहीं होता? वह तो सितारों पर नज़र डालता है, ख़्वाह वह कितने ही ऊँचे क्यूँ न हों। 13 तो भी तू कहता है, 'अल्लाह क्या जानता है? क्या वह काले बादलों में से देख कर अदालत कर सकता है?' 14 वह घने बादलों में छुपा रहता है, इस लिए जब वह आसमान के गुम्बद पर चलता है तो उसे कुछ नज़र नहीं आता। 15 क्या तू उस क़दीम राह से बाज़ नहीं आया जिस पर बदकार चलते रहे हैं? 16 वह तो अपने मुकर्रर वक्रत से पहले ही सुकड़ गए, उन की बुन्यादेँ सैलाब से ही उड़ा ली गई। 17 उन्होंने ने अल्लाह से कहा, 'हम से दूर हो जा,' और 'क्रादिर-ए-मुतलक़ हमारे लिए क्या कुछ कर सकता है?' 18 लेकिन अल्लाह ही ने उन के घरों को भरपूर खुशहाली से नवाज़ा, गो बेदीनों के बुरे मन्सूबे उस से दूर ही दूर रहते हैं। 19 रास्तबाज़ उन की तबाही देख कर खुश हुए, बेक़सूरों ने उन की हंसी उड़ा कर कहा, 20 'लो, यह देखो, उन की जायदाद किस तरह

मिट गई, उन की दौलत किस तरह भस्म हो गई है!'

21 ऐ अय्यूब, अल्लाह से सुलह करके सलामती हासिल कर, तब ही तू खुशहाली पाएगा। 22 अल्लाह के मुँह की हिदायत अपना ले, उस के फ़रमान अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 23 अगर तू क्रादिर-ए-मुतलक़ के पास वापस आए तो बहाल हो जाएगा, और तेरे ख़ैमे से बदी दूर ही रहेगी। 24 सोने को खाक के बराबर, ओफ़ीर का ख़ालिस सोना वादी के पत्थर के बराबर समझ ले 25 तो क्रादिर-ए-मुतलक़ खुद तेरा सोना होगा, वही तेरे लिए चाँदी का ढेर होगा। 26 तब तू क्रादिर-ए-मुतलक़ से लुत्फ़-अन्दोज़ होगा और अल्लाह के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27 तू उस से इल्तिजा करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू अपनी मन्नतें बढ़ा सकेगा। 28 जो कुछ भी तू करने का इरादा रखे उस में तुझे कामयाबी होगी, तेरी राहों पर रौशनी चमकेगी। 29 क्यूँकि जो शेखी बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता जबकि जो पस्तहाल है उसे वह नजात देता है। 30 वह बेक़सूर को छुड़ाता है, चुनाँचे अगर तेरे हाथ पाक हों तो वह तुझे छुड़ाएगा।"

अय्यूब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

23 अय्यूब ने जवाब में कहा, 2 "बेशक आज मेरी शिकायत सरकशी का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी आहों पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा हूँ।

3 काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि उस की सुकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4 फिर मैं अपना मुआमला तरतीबवार उस के सामने पेश करता, मैं अपना मुँह दलाइल से भर लेता। 5 तब मुझे उस के जवाबों का पता चलता, मैं उस के बयानात पर गौर कर सकता। 6 क्या वह अपनी अज़ीम कुव्वत मुझ से लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज़ नहीं! वह यक़ीनन मुझ पर तवज्जुह देता। 7 अगर मैं वहाँ उस के हुज़ूर आ सकता तो दियातदार

आदमी की तरह उस के साथ मुकद्दमा लड़ता। तब मैं हमेशा के लिए अपने मुन्सिफ़ से बच निकलता!

⁸लेकिन अप्रसोस, अगर मैं मशरिफ़ की तरफ़ जाऊँ तो वह वहाँ नहीं होता, मगरिब की जानिब बढ़ूँ तो वहाँ भी नहीं मिलता। ⁹शिमाल मैं उसे ढूँढ़ूँ तो वह दिखाई नहीं देता, जुनूब की तरफ़ रुख करूँ तो वहाँ भी पोशीदा रहता है। ¹⁰क्योंकि वह मेरी राह को जानता है। अगर वह मेरी जाँच-पड़ताल करता तो मैं ख़ालिस सोना साबित होता। ¹¹मेरे क्रदम उस की राह में रहे हैं, मैं राह से न बाई, न दाई तरफ़ हटा बल्कि सीधा उस पर चलता रहा। ¹²मैं उस के होंटों के फ़रमान से बाज़ नहीं आया बल्कि अपने दिल में ही उस के मुँह की बातें मफ़्फूज़ रखी हैं।

¹³अगर वह फ़ैसला करे तो कौन उसे रोक सकता है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे अमल में लाता है। ¹⁴जो भी मन्सूबा उस ने मेरे लिए बांधा उसे वह ज़रूर पूरा करेगा। और उस के ज़हन में मज़ीद बहुत से ऐसे मन्सूबे हैं। ¹⁵इसी लिए मैं उस के हुज़ूर दहशतज़दा हूँ। जब भी मैं इन बातों पर ध्यान दूँ तो उस से डरता हूँ। ¹⁶अल्लाह ने खुद मुझे शिकस्तादिल किया, क़ादिर-ए-मुतलक़ ही ने मुझे दहशत खिलाई है। ¹⁷क्योंकि न मैं तारीकी से तबाह हो रहा हूँ, न इस लिए कि घने अंधेरे ने मेरे चेहरे को ढाँप दिया है।

ज़मीन पर कितनी नाइन्साफ़ी पाई जाती है

24 क़ादिर-ए-मुतलक़ अदालत के औक़ात क्यों नहीं मुकर्रर करता? जो उसे जानते हैं वह ऐसे दिन क्यों नहीं देखते? ²बेदीन अपनी ज़मीनों की हदूद को आगे पीछे करते और दूसरों के रेवड़ लूट कर अपनी चरागाहों में ले जाते हैं। ³वह यतीमों का गधा हाँक कर ले जाते और इस शर्त पर बेवा को क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर

अपना बैल दे। ⁴वह ज़रूरतमन्दों को रास्ते से हटाते हैं, चुनाँचे मुल्क के ग़रीबों को सरासर छुप जाना पड़ता है।

⁵ज़रूरतमन्द बयाबान में जंगली गधों की तरह काम करने के लिए निकलते हैं। खुराक का खोज लगा लगा कर वह इधर उधर घूमते फिरते हैं बल्कि रेगिस्तान ही उन्हें उन के बच्चों के लिए खाना मुहय्या करता है। ⁶जो खेत उन के अपने नहीं हैं उन में वह फ़सल काटते हैं, और बेदीनों के अंगूर के बाग़ों में जा कर वह दो चार अंगूर चुन लेते हैं जो फ़सल चुनने के बाद बाक़ी रह गए थे। ⁷कपड़ों से महरूम रह कर वह रात को बरहना हालत में गुज़ारते हैं। सर्दियों में उन के पास कम्बल तक नहीं होता। ⁸पहाड़ों की बारिश से वह भीग जाते और पनाहगाह न होने के बाइस पत्थरों के साथ लिपट जाते हैं।

⁹बेदीन बाप से महरूम बच्चे को माँ की गोद से छीन लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतज़दा को क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना शीरख़वार बच्चा दे। ¹⁰ग़रीब बरहना हालत में और कपड़े पहने बग़ैर फिरते हैं, वह भूके होते हुए पूले उठाए चलते हैं। ¹¹ज़ैतून के जो दरख़्त बेदीनों ने सफ़-दर-सफ़ लगाए थे उन के दरमियान ग़रीब ज़ैतून का तेल निकालते हैं। प्यासी हालत में वह शरीरों के हौज़ों में अंगूर को पाँओ तले कुचल कर उस का रस निकालते हैं। ¹²शहर से मरने वालों की आहें निकलती हैं और ज़ख़मी लोग मदद के लिए चीखते चिल्लाते हैं। इस के बावजूद अल्लाह किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।

¹³यह बेदीन उन में से हैं जो नूर से सरकश हो गए हैं। न वह उस की राहों से वाकिफ़ हैं, न उन में रहते हैं। ¹⁴सुब्ह-सवेरे क़ातिल उठता है ताकि मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द को क़त्ल करे। रात को चोर चक्कर काटता है। ¹⁵ज़िनाकार की आँखें शाम के धुन्दलके के इन्तिज़ार में रहती हैं, यह सोच कर कि उस वक़्त मैं किसी को नज़र नहीं आऊँगा। निकलते वक़्त वह अपने मुँह को ढाँप लेता है।

16 डाकू अंधेरे में घरों में नक्रब लगाते जबकि दिन के वक़्त वह छुप कर अपने पीछे कुंडी लगा लेते हैं। नूर को वह जानते ही नहीं। 17 गहरी तारीकी ही उन की सुब्ह होती है, क्योंकि उन की घने अंधेरे की दृश्यों से दोस्ती हो गई है।

18 लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग हैं, मुल्क में उन का हिस्सा मलऊन है और उन के अंगूर के बाणों की तरफ़ कोई रुजू नहीं करता। 19 जिस तरह काल और झुलसती गर्मी बर्फ़ का पानी छीन लेती हैं उसी तरह पाताल गुनाहगारों को छीन लेता है। 20 माँ का रहम उन्हें भूल जाता, कीड़ा उन्हें चूस लेता और उन की याद जाती रहती है। यक्रीनन बेदीनी लकड़ी की तरह टूट जाती है। 21 बेदीन बाँझ औरत पर जुल्म और बेवाओं से बदसलूकी करते हैं, 22 लेकिन अल्लाह ज़बरदस्तों को अपनी कुदरत से घसीट कर ले जाता है। वह मज़बूती से खड़े भी हों तो भी कोई यक्रीन नहीं कि ज़िन्दा रहेंगे। 23 अल्लाह उन्हें हिफ़ाज़त से आराम करने देता है, लेकिन उस की आँखें उन की राहों की पहरादारी करती रहती हैं। 24 लम्हा भर के लिए वह सरफ़राज़ होते, लेकिन फिर नेस्त-ओ-नाबूद हो जाते हैं। उन्हें खाक में मिला कर सब की तरह जमा किया जाता है, वह गन्दुम की कटी हुई बालों की तरह मुरझा जाते हैं।

25 क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुत्तफ़िक़ नहीं तो वह साबित करे कि मैं ग़लती पर हूँ, वह दिखाए कि मेरे दलाइल बातिल हैं।”

बिल्दद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

25 फिर बिल्दद सूखी ने जवाब दे कर कहा,

26 “अल्लाह की हुकूमत दृशतनाक है। वही अपनी बुलन्दियों पर सलामती क्राइम रखता है। 27 क्या कोई उस के दस्तों की तादाद गिन सकता है? उस का नूर किस पर नहीं

चमकता? 28 तो फिर इन्सान अल्लाह के सामने किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? जो औरत से पैदा हुआ वह किस तरह पाक-साफ़ साबित हो सकता है? 29 उस की नज़र में न चाँद पुरनूर है, न सितारे पाक हैं। 30 तो फिर इन्सान किस तरह पाक ठहर सकता है जो कीड़ा ही है? आदमज़ाद तो मकोड़ा ही है।”

अय्यूब : तू ने मुझे कितने अच्छे मश्वरे दिए हैं!

26 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा, 27 “वाह जी वाह! तू ने क्या ख़ूब उसे सहारा दिया जो बेबस है, क्या ख़ूब उस बाज़ू को मज़बूत कर दिया जो बेताक़त है! 28 तू ने उसे कितने अच्छे मश्वरे दिए जो हिक्मत से महरूम है, अपनी समझ की कितनी गहरी बातें उस पर ज़ाहिर की हैं। 29 तू ने किस की मदद से यह कुछ पेश किया है? किस ने तेरी रूह में वह बातें डालीं जो तेरे मुँह से निकल आई हैं?”

कौन अल्लाह की अज़मत का अन्दाज़ा लगा सकता है?

30 अल्लाह के सामने वह तमाम मुर्दा अर्वाह जो पानी और उस में रहने वालों के नीचे बसती हैं डर के मारे तड़प उठती हैं। 31 हाँ, उस के सामने पाताल बरहना और उस की गहराइयाँ बेनिक्राब हैं।

32 अल्लाह ही ने शिमाल को वीरान-ओ-सुन्सान जगह के ऊपर तान लिया, उसी ने ज़मीन को यूँ लगा दिया कि वह किसी चीज़ से लटकी हुई नहीं है। 33 उस ने अपने बादलों में पानी लपेट लिया, लेकिन वह बोझ तले न फटे। 34 उस ने अपना तख़्त नज़रों से छुपा कर अपना बादल उस पर छा जाने दिया। 35 उस ने पानी की सतह पर दाइरा बनाया जो रौशनी और अंधेरे के दरमियान हद बन गया।

36 आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की धमकी पर वह दृशतज़दा हुए। 37 अपनी

कुदरत से अल्लाह ने समुन्दर को थमा दिया, अपनी हिक्मत से रहब अज़दहे को टुकड़े टुकड़े कर दिया। ¹³उस के रूह ने आसमान को साफ़ किया, उस के हाथ ने फ़रार होने वाले साँप को छेद डाला। ¹⁴लेकिन ऐसे काम उस की राहों के किनारे पर ही किए जाते हैं। जो कुछ हम उस के बारे में सुनते हैं वह धीमी धीमी आवाज़ से हमारे कान तक पहुँचता है। तो फिर कौन उस की कुदरत की कड़कती आवाज़ समझ सकता है?"

मैं बेकुसूर हूँ

27 फिर अय्यूब ने अपनी बात जारी रखी,

²"अल्लाह की हयात की क्रसम जिस ने मेरा इन्साफ़ करने से इन्कार किया, क़ादिर-ए-मुतलक़ की क्रसम जिस ने मेरी ज़िन्दगी तलख़ कर दी है, ³मेरे जीते जी, हाँ जब तक अल्लाह का दम मेरी नाक में है ⁴मेरे हॉट झूट नहीं बोलेंगे, मेरी ज़बान धोका बयान नहीं करेगी। ⁵मैं कभी तस्लीम नहीं करूँगा कि तुम्हारी बात दुरुस्त है। मैं बेइल्ज़ाम हूँ और मरते दम तक इस के उलट नहीं कहूँगा। ⁶मैं इसरार करता हूँ कि रास्तबाज़ हूँ और इस से कभी बाज़ नहीं आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन के बारे में मुझे मलामत नहीं करता।

⁷अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही सुलूक किया जाए जो बेदीनों के साथ किया जाएगा, कि मेरे मुखालिफ़ का वह अन्जाम हो जो बदकारों को पेश आएगा। ⁸क्योंकि उस वक़्त शरीर की क्या उम्मीद रहेगी जब उसे इस ज़िन्दगी से मुन्क़ते किया जाएगा, जब अल्लाह उस की जान उस से तलब करेगा? ⁹क्या अल्लाह उस की चीखें सुनेगा जब वह मुसीबत में फंस कर मदद के लिए पुकारेगा? ¹⁰या क्या वह क़ादिर-ए-मुतलक़ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा और हर वक़्त अल्लाह को पुकारेगा?

¹¹अब मैं तुम्हें अल्लाह की कुदरत के बारे में तालीम दूँगा, क़ादिर-ए-मुतलक़ का इरादा तुम से नहीं छुपाऊँगा। ¹²देखो, तुम सब ने इस का मुशाहदा किया है। तो फिर इस क्रिस्म की बातिल बातें क्यों करते हो?

बेदीन ज़िन्दा नहीं रहेगा

¹³बेदीन अल्लाह से क्या अज़्र पाएगा, ज़ालिम को क़ादिर-ए-मुतलक़ से मीरास में क्या मिलेगा? ¹⁴गो उस के बच्चे मुतअद्दिद हों, लेकिन आखिरकार वह तलवार की ज़द में आएँगे। उस की औलाद भूकी रहेगी। ¹⁵जो बच जाएँ उन्हें मोहलक बीमारी से क़ब्र में पहुँचाया जाएगा, और उन की बेवाएँ मातम नहीं कर पाएँगी। ¹⁶बेशक वह खाक की तरह चाँदी का ढेर लगाए और मिट्टी की तरह नफ़ीस कपड़ों का तोदा इकट्ठा करे, ¹⁷लेकिन जो कपड़े वह जमा करे उन्हें रास्तबाज़ पहन लेगा, और जो चाँदी वह इकट्ठी करे उसे बेकुसूर तक्रसीम करेगा। ¹⁸जो घर बेदीन बना ले वह घोंसले की मानिन्द है, उस आरिज़ी झोंपड़ी की मानिन्द जो चौकीदार अपने लिए बना लेता है। ¹⁹वह अमीर हालत में सो जाता है, लेकिन आखिरी दफ़ा। जब अपनी आँखें खोल लेता तो तमाम दौलत जाती रही है। ²⁰उस पर हीलनाक वाक्रिआत का सैलाब टूट पड़ता, उसे रात के वक़्त आँधी छीन लेती है। ²¹मशरिकी लू उसे उड़ा ले जाती, उसे उठा कर उस के मक़ाम से दूर फेंक देती है। ²²बेरहमी से वह उस पर यूँ झपट्टा मारती रहती है कि उसे बार बार भागना पड़ता है। ²³वह तालियाँ बजा कर अपनी हिक्मत का इज़हार करती, अपनी जगह से आवाज़े कसती है।

हिक्मत कहाँ पाई जाती है?

28 यक़ीनन चाँदी की कानें होती हैं और ऐसी जगहें जहाँ सोना ख़ालिस किया जाता है। ²लोहा ज़मीन से निकाला जाता और लोग पत्थर पिघला कर

ताँबा बना लेते हैं।³इन्सान अंधेरे को खत्म करके ज़मीन की गहरी गहरी जगहों तक कच्ची धात का खोज लगाता है, ख्वाह वह कितने अंधेरे में क्यूँ न हो।⁴एक अजनबी क्रौम सुरंग लगाती है। जब रस्सों से लटके हुए काम करते और इन्सानों से दूर कान में झूमते हैं तो ज़मीन पर गुज़रने वालों को उन की याद ही नहीं रहती।⁵ज़मीन की सतह पर खुराक पैदा होती है जबकि उस की गहराइयाँ यूँ तब्दील हो जाती हैं जैसे उस में आग लगी हो।⁶पत्थरों से संग-ए-लाजवर्द निकाला जाता है जिस में सोने के ज़र्रे भी पाए जाते हैं।

⁷यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी परिन्दा नहीं जानता, जो किसी भी बाज़ ने नहीं देखा।⁸जंगल के रोबदार जानवरों में से कोई भी इन राहों पर नहीं चला, किसी भी शेरबबर ने इन पर क्रदम नहीं रखा।⁹इन्सान संग-ए-चक्रमाक्र पर हाथ लगा कर पहाड़ों को जड़ से उलटा देता है।¹⁰वह पत्थर में सुरंग लगा कर हर क्रिस्म की क्रीमती चीज़ देख लेता¹¹ और ज़मीनदोज़ नदियों को बन्द करके पोशीदा चीज़ें रौशनी में लाता है।

¹²लेकिन हिक्मत कहाँ पाई जाती है, समझ कहाँ से मिलती है? ¹³इन्सान उस तक जाने वाली राह नहीं जानता, क्यूँकि उसे मुल्क-ए-हयात में पाया नहीं जाता।¹⁴समुन्दर कहता है, 'हिक्मत मेरे पास नहीं है,' और उस की गहराइयाँ बयान करती हैं, 'यहाँ भी नहीं है।'

¹⁵हिक्मत को न खालिस सोने, न चाँदी से खरीदा जा सकता है।¹⁶उसे पाने के लिए न ओफ़ीर का सोना, न बेशक्रीमत अक्रीक-ए-अह्वर^a या संग-ए-लाजवर्द^b काफ़ी हैं।¹⁷सोना और शीशा उस का मुक्काबला नहीं कर सकते, न वह सोने के ज़ेवरात के इवज़ मिल सकती है।¹⁸उस की निस्वत मूँगा और बिल्लौर की क्या क्रदर है? हिक्मत से भरी थैली मोतियों से कहीं ज़्यादा क्रीमती है।

^acarnelian

^blapis lazuli

¹⁹एथोपिया का ज़बर्जद^c उस का मुक्काबला नहीं कर सकता, उसे खालिस सोने के लिए खरीदा नहीं जा सकता।

²⁰हिक्मत कहाँ से आती, समझ कहाँ से मिल सकती है? ²¹वह तमाम जानदारों से पोशीदा रहती बल्कि परिन्दों से भी छुपी रहती है।²²पाताल और मौत उस के बारे में कहते हैं, 'हम ने उस के बारे में सिर्फ़ अप्रवाहें सुनी हैं।'

²³लेकिन अल्लाह उस तक जाने वाली राह को जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल सकती है।²⁴क्यूँकि उसी ने ज़मीन की हुदूद तक देखा, आसमान तले सब कुछ पर नज़र डाली²⁵ ताकि हवा का वज़न मुक्करर करे और पानी की पैमाइश करके उस की हुदूद मुतअय्यिन करे।²⁶उसी ने बारिश के लिए फ़रमान जारी किया और बादल की कड़कती बिजली के लिए रास्ता तय्यार किया।²⁷उसी वक़्त उस ने हिक्मत को देख कर उस की जाँच-पड़ताल की। उस ने उसे क्राइम भी किया और उस की तह तक तहक्रीक भी की।²⁸इन्सान से उस ने कहा, 'सुनो, अल्लाह का खौफ़ मानना ही हिक्मत और बुराई से दूर रहना ही समझ है।'

काश मेरी ज़िन्दगी पहले की तरह हो

29 अय्यूब ने अपनी बात जारी रख कर कहा,

²"काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन गुज़ार सकूँ जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था, ³जब उस की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती रही और मैं उस की रौशनी की मदद से अंधेरे में चलता था।⁴उस वक़्त मेरी जवानी उरूज पर थी और मेरा खैमा अल्लाह के साथ में रहता था।⁵कादिर-ए-मुतलक़ मेरे साथ था, और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था।⁶कस्रत के बाइस मेरे क्रदम दही से धोए रहते और

^cperidot

चटान से तेल की नदियाँ फूट कर निकलती थीं।

⁷जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकल कर चौक में अपनी कुर्सी पर बैठ जाता ⁸तो जवान आदमी मुझे देख कर पीछे हट कर छुप जाते, बुजुर्ग उठ कर खड़े रहते, ⁹रईस बोलने से बाज़ आ कर मुँह पर हाथ रखते, ¹⁰शुरफ़ा की आवाज़ दब जाती और उन की ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

¹¹जिस कान ने मेरी बातें सुनीं उस ने मुझे मुबारक कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उस ने मेरे हक़ में गवाही दी। ¹²क्योंकि जो मुसीबत में आ कर आवाज़ देता उसे मैं बचाता, बेसहारा यतीम को छुटकारा देता था। ¹³तबाह होने वाले मुझे बरकत देते थे। मेरे बाइस बेवाओं के दिलों से खुशी के नारे उभर आते थे। ¹⁴मैं रास्तबाज़ी से मुलब्स और रास्तबाज़ी मुझ से मुलब्स रहती थी, इन्साफ़ मेरा चोगा और पगड़ी था।

¹⁵अंधों के लिए मैं आँखें, लंगड़ों के लिए पाँओ बना रहता था। ¹⁶मैं ग़रीबों का बाप था, और जब कभी अजनबी को मुकद्दमा लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर से उस के मुआमले का मुआइना करता था ताकि उस का हक़ मारा न जाए। ¹⁷मैं ने बेदीन का जबड़ा तोड़ कर उस के दाँतों में से शिकार छुड़ाया।

¹⁸उस वक़्त मेरा खयाल था, 'मैं अपने ही घर में वफ़ात पाऊँगा, सीमुर्ग की तरह अपनी ज़िन्दगी के दिनों में इज़ाफ़ा करूँगा। ¹⁹मेरी जड़ें पानी तक फैली और मेरी शाखें ओस से तर रहेंगी। ²⁰मेरी इज़ज़त हर वक़्त ताज़ा रहेगी, और मेरे हाथ की कमान को नई तक्रवियत मिलती रहेगी।'

²¹लोग मेरी सुन कर खामोशी से मेरे मश्वरों के इन्तिज़ार में रहते थे। ²²मेरे बात करने पर वह जवाब में कुछ न कहते बल्कि मेरे अल्फ़ाज़ हल्की सी बूँदा-बाँदी की तरह उन

पर टपकते रहते। ²³जिस तरह इन्सान शिद्दत से बारिश के इन्तिज़ार में रहता है उसी तरह वह मेरे इन्तिज़ार में रहते थे। वह मुँह पसार कर बहार की बारिश की तरह मेरे अल्फ़ाज़ को जज़ब कर लेते थे। ²⁴जब मैं उन से बात करते वक़्त मुस्कुराता तो उन्हें यकीन नहीं आता था, मेरी उन पर मेहरबानी उन के नज़दीक निहायत कीमती थी। ²⁵मैं उन की राह उन के लिए चुन कर उन की क्रियादत करता, उन के दरमियान घूँ बसता था जिस तरह बादशाह अपने दस्तों के दरमियान। मैं उस की मानिन्द था जो मातम करने वालों को तसल्ली देता है।

मुझे रद्द किया गया है

30 लेकिन अब वह मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, हालाँकि उन की उम्र मुझ से कम है और मैं उन के बापों को अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करने वाले कुत्तों के साथ काम पर लगाने के भी लाइक नहीं समझता था। ²मेरे लिए उन के हाथों की मदद का क्या फ़ाइदा था? उन की पूरी ताक़त तो जाती रही थी। ³शुराक की कमी और शदीद भूक के मारे वह खुशक ज़मीन की थोड़ी बहुत पैदावार कतर कतर कर खाते हैं। हर वक़्त वह तबाही और वीरानी के दामन में रहते हैं। ⁴वह झाड़ियों से ख़त्मी का फल तोड़ कर खाते, झाड़ियों^a की जड़ें आग तापने के लिए इकट्ठी करते हैं। ⁵उन्हें आबादियों से खारिज किया गया है, और लोग 'चोर चोर' चिल्ला कर उन्हें भगा देते हैं। ⁶उन्हें घाटियों की ढलानों पर बसना पड़ता, वह ज़मीन के ग़ारों में और पत्थरों के दरमियान ही रहते हैं। ⁷झाड़ियों के दरमियान वह आवाज़ें देते और मिल कर ऊँटकारों तले दबक जाते हैं। ⁸इन कमीने और बेनाम लोगों को मार मार कर मुल्क से भगा दिया गया है।

^aयानी झाड़ी बनाम broom, सीक क्रिस्म की झाड़ी जिस के फूल ज़र्द होते हैं।

9 और अब मैं इन ही का निशाना बन गया हूँ। अपने गीतों में वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मेरी बुरी हालत उन के लिए मज़हकाखेज़ मिसाल बन गई है। 10 वह घिन खा कर मुझ से दूर रहते और मेरे मुँह पर थूकने से नहीं रुकते। 11 चूँकि अल्लाह ने मेरी कमान की ताँत खोल कर मेरी रुस्वाई की है, इस लिए वह मेरी मौजूदगी में बेलगाम हो गए हैं। 12 मेरे दहने हाथ हुजूम खड़े हो कर मुझे ठोकर खिलाते और मेरी फ़सील के साथ मिट्टी के ढेर लगाते हैं ताकि उस में रखना डाल कर मुझे तबाह करें। 13 वह मेरी क़िलाबन्दियों ढा कर मुझे खाक में मिलाने में कामयाब हो जाते हैं। किसी और की मदद दरकार ही नहीं। 14 वह रखने में दाख़िल होते और जौक़-दर-जौक़ तबाहशुदा फ़सील में से गुज़र कर आगे बढ़ते हैं। 15 हौलनाक वाक़िआत मेरे खिलाफ़ खड़े हो गए हैं, और वह तेज़ हवा की तरह मेरे वक्रार को उड़ा ले जा रहे हैं। मेरी सलामती बादल की तरह ओझल हो गई है।

16 और अब मेरी जान निकल रही है, मैं मुसीबत के दिनों के क़ाबू में आ गया हूँ। 17 रात को मेरी हड्डियों को छेदा जाता है, कतरने वाला दर्द मुझे कभी नहीं छोड़ता। 18 अल्लाह बड़े ज़ोर से मेरा कपड़ा पकड़ कर ग़रेबान की तरह मुझे अपनी सख़्त गिरिफ़्त में रखता है। 19 उस ने मुझे कीचड़ में फँक दिया है, और देखने में मैं खाक और मिट्टी ही बन गया हूँ। 20 मैं तुझे पुकारता, लेकिन तू जवाब नहीं देता। मैं खड़ा हो जाता, लेकिन तू मुझे घूरता ही रहता है। 21 तू मेरे साथ अपना सुलूक बदल कर मुझ पर ज़ुल्म करने लगा, अपने हाथ के पूरे ज़ोर से मुझे सताने लगा है। 22 तू मुझे उड़ा कर हवा पर सवार होने देता, गरजते तूफ़ान में घुलने देता है। 23 हाँ, अब मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत के हवाले करेगा, उस घर में पहुँचाएगा जहाँ एक दिन तमाम जानदार जमा हो जाते हैं।

24 यक़ीनन मैं ने कभी भी अपना हाथ किसी ज़रूरतमन्द के खिलाफ़ नहीं उठाया जब उस ने अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। 25 बल्कि जब किसी का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी से रोने लगा, गरीबों की हालत देख कर मेरा दिल ग़म खाने लगा। 26 ताहम मुझ पर मुसीबत आई, अगरचे मैं भलाई की उम्मीद रख सकता था। मुझ पर घना अंधेरा छा गया, हालाँकि मैं रौशनी की तवक्को कर सकता था। 27 मेरे अन्दर सब कुछ मुज़तरिब है और कभी आराम नहीं कर सकता, मेरा वास्ता तक्लीफ़दिह दिनों से पड़ता है। 28 मैं मातमी लिबास में फिरता हूँ और कोई मुझे तसल्ली नहीं देता, हालाँकि मैं जमाअत में खड़े हो कर मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। 29 मैं गीदड़ों का भाई और उक्काबी उल्लूओं का साथी बन गया हूँ। 30 मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ तपती गर्मी के सबब से झुलस गई हैं। 31 अब मेरा सरोद सिर्फ़ मातम करने और मेरी बाँसरी सिर्फ़ रोने वालों के लिए इस्तेमाल होती है।

मेरी आख़िरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

31 मैं ने अपनी आँखों से अहद बांधा है। तो फिर मैं किस तरह किसी कुंवारी पर नज़र डाल सकता हूँ? 2 क्योंकि इन्सान को आसमान पर रहने वाले खुदा की तरफ़ से क्या नसीब है, उसे बुलन्दियों पर बसने वाले क़ादिर-ए-मुतलक़ से क्या विरासत पाना है? 3 क्या ऐसा नहीं है कि नारास्त शख्स के लिए आफ़त और बदकार के लिए तबाही मुकर्रर है? 4 मेरी राहें तो अल्लाह को नज़र आती हैं, वह मेरा हर क़दम गिन लेता है।

5 न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँजों ने कभी फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इस में ज़रा भी शक हो 6 तो अल्लाह मुझे इन्साफ़ के तराजू में तोल ले, अल्लाह मेरी बेइज़्जाम हालत मालूम करे। 7 अगर मेरे क़दम सहीह राह से हट गए, मेरी आँखें मेरे दिल को ग़लत राह पर ले गईं या मेरे हाथ दाग़दार हुए 8 तो

फिर जो बीज मैं ने बोया उस की पैदावार कोई और खाए, जो फ़सलें मैं ने लगाईं उन्हें उखाड़ा जाए।

⁹अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजाइज़ ताल्लुकात रखने पर उकसाया गया और मैं इस मक़्सद से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर ताक लगाए बैठा ¹⁰तो फिर अल्लाह करे कि मेरी बीवी किसी और आदमी की गन्दुम पीसे, कि कोई और उस पर झुक जाए। ¹¹क्यूँकि ऐसी हरकत शर्मनाक होती, ऐसा जुर्म सज़ा के लाइक्र होता है। ¹²ऐसे गुनाह की आग पाताल तक सब कुछ भस्म कर देती है। अगर वह मुझ से सरज़द होता तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों तक राख कर देता।

¹³अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ झगड़ा था और मैं ने उन का हक़ मारा ¹⁴तो मैं क्या करूँ जब अल्लाह अदालत में खड़ा हो जाए? जब वह मेरी पूछ-गछ करे तो मैं उसे क्या जवाब दूँ? ¹⁵क्यूँकि जिस ने मुझे मेरी माँ के पेट में बनाया उस ने उन्हें भी बनाया। एक ही ने उन्हें भी और मुझे भी रहम में तश्कील दिया।

¹⁶क्या मैं ने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी करने से इन्कार किया या बेवा की आँखों को बुझने दिया? हरगिज़ नहीं! ¹⁷क्या मैं ने अपनी रोटी अकेले ही खाई और यतीम को उस में शरीक न किया? ¹⁸हरगिज़ नहीं, बल्कि अपनी जवानी से ले कर मैं ने उस का बाप बन कर उस की परवरिश की, अपनी पैदाइश से ही बेवा की राहनुमाई की। ¹⁹जब कभी मैं ने देखा कि कोई कपड़ों की कमी के बाइस हलाक हो रहा है, कि किसी ग़रीब के पास कम्बल तक नहीं ²⁰तो मैं ने उसे अपनी भेड़ों की कुछ ऊन दी ताकि वह गर्म हो सके। ऐसे लोग मुझे दुआ देते थे। ²¹मैं ने कभी भी यतीमों के खिलाफ़ हाथ नहीं उठाया, उस वक़्त भी नहीं जब शहर के दरवाज़े में बैठे बुजुर्ग मेरे हक़ में थे। ²²अगर ऐसा न था तो

अल्लाह करे कि मेरा शाना कंधे से निकल कर गिर जाए, कि मेरा बाजू जोड़ से फाड़ा जाए! ²³ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन थीं, क्यूँकि अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से दहशत खाता रहता, मैं उस से डर के मारे क्राइम न रह सकता।

²⁴क्या मैं ने सोने पर अपना पूरा भरोसा रखा या ख़ालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही मेरा एतिमाद है'? हरगिज़ नहीं! ²⁵क्या मैं इस लिए खुश था कि मेरी दौलत ज़्यादा है और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल किया है? हरगिज़ नहीं! ²⁶क्या सूरज की चमक-दमक और चाँद की पुरवकार रविश देख कर ²⁷मेरे दिल को कभी चुपके से ग़लत राह पर लाया गया? क्या मैं ने कभी उन का एहतिराम किया? ²⁸हरगिज़ नहीं, क्यूँकि यह भी सज़ा के लाइक्र जुर्म है। अगर मैं ऐसा करता तो बुलन्दियों पर रहने वाले ख़ुदा का इन्कार करता।

²⁹क्या मैं कभी खुश हुआ जब मुझ से नफ़रत करने वाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग़ बाग़ हुआ जब उस पर मुसीबत आई? हरगिज़ नहीं! ³⁰मैं ने अपने मुँह को इजाज़त न दी कि गुनाह करके उस की जान पर लानत भेजे। ³¹बल्कि मेरे ख़ैमे के आदमियों को तस्लीम करना पड़ा, 'कोई नहीं है जो अप्यूब के गोशत से सेर न हुआ।' ³²अजनबी को बाहर गली में रात गुज़ारनी नहीं पड़ती थी बल्कि मेरा दरवाज़ा मुसाफ़िरों के लिए खुला रहता था। ³³क्या मैं ने कभी आदम की तरह अपना गुनाह छुपा कर अपना कुसूर दिल में पोशीदा रखा, ³⁴इस लिए कि हुजूम से डरता और अपने रिश्तेदारों से दहशत खाता था? हरगिज़ नहीं! मैं ने कभी भी ऐसा काम न किया जिस के बाइस मुझे डर के मारे चुप रहना पड़ता और घर से निकल नहीं सकता था।

³⁵काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात पर मेरे दस्तखत हैं, अब क्रादिर-ए-मुतलक़ मुझे जवाब दे। काश मेरे मुख़ालिफ़ लिख कर

³लफ़्ज़ी तर्जुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया।

मुझे वह इल्ज़ामात बताएँ जो उन्होंने ने मुझ पर लगाए हैं! ³⁶अगर इल्ज़ामात का कागज़ मिलता तो मैं उसे उठा कर अपने कंधे पर रखता, उसे पगड़ी की तरह अपने सर पर बांध लेता। ³⁷मैं अल्लाह को अपने क्रदमों का पूरा हिसाब-किताब दे कर रईस की तरह उस के क़रीब पहुँचता।

³⁸क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकार कर मुझ पर इल्ज़ाम लगाया है? क्या उस की रेघारयाँ मेरे सबब से मिल कर रो पड़ी हैं? ³⁹क्या मैं ने उस की पैदावार अन्न दिए बग़ैर खाई, उस पर मेहनत-मशक्कत करने वालों के लिए आहें भरने का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! ⁴⁰अगर मैं इस में कुसूरवार ठहरूँ तो गन्दुम के बजाए खारदार झाड़ियाँ और जौ के बजाए धतूरा^a उगे।” यूँ अय्यूब की बातें इखतिताम को पहुँच गईं।

चौथे साथी इलीहू की तक़रीर

32 तब मज़कूरा तीनों आदमी अय्यूब को जवाब देने से बाज़ आए, क्योंकि वह अब तक समझता था कि मैं रास्तबाज़ हूँ। ²यह देख कर इलीहू बिन बरकेल गुस्से हो गया। बूज़ शहर के रहने वाले इस आदमी का खानदान राम था। एक तरफ़ तो वह अय्यूब से खफ़ा था, क्योंकि यह अपने आप को अल्लाह के सामने रास्तबाज़ ठहराता था। ³दूसरी तरफ़ वह तीनों दोस्तों से भी नाराज़ था, क्योंकि न वह अय्यूब को सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके कि मुजरिम है। ⁴इलीहू ने अब तक अय्यूब से बात नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं की थी वह खामोश रहा, क्योंकि वह बुजुर्ग़ थे। ⁵लेकिन अब जब उस ने देखा कि तीनों आदमी मज़ीद कोई जवाब नहीं दे सकते तो वह भड़क उठा ⁶और जवाब में कहा,

“मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्ररसीदा हैं, इस लिए मैं कुछ शर्मिला था, मैं आप

को अपनी राय बताने से डरता था। ⁷मैं ने सोचा, चलो वह बोलें जिन के ज़्यादा दिन गुज़रे हैं, वह तालीम दें जिन्हें मुतअद्दिद सालों का तजरिबा हासिल है।

⁸लेकिन जो रूह इन्सान में है यानी जो दम क़ादिर-ए-मुतलक़ ने उस में फूँक दिया वही इन्सान को समझ अता करता है। ⁹न सिर्फ़ बूढ़े लोग दानिशमन्द हैं, न सिर्फ़ वह इन्साफ़ समझते हैं जिन के बाल सफ़ेद हैं। ¹⁰चुनाँचे मैं गुज़ारिश करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें, मुझे भी अपनी राय पेश करने दीजिए।

¹¹मैं आप के अल्फ़ाज़ के इन्तिज़ार में रहा। जब आप मौजूँ जवाब तलाश कर रहे थे तो मैं आप की दानिशमन्द बातों पर ग़ौर करता रहा। ¹²मैं ने आप पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन आप में से कोई अय्यूब को गलत साबित न कर सका, कोई उस के दलाइल का मुनासिब जवाब न दे पाया। ¹³अब ऐसा न हो कि आप कहें, ‘हम ने अय्यूब में हिक्मत पाई है, इन्सान उसे शिकस्त दे कर भगा नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ अल्लाह ही।’ ¹⁴क्योंकि अय्यूब ने अपने दलाइल की तरतीब से मेरा मुकाबला नहीं किया, और जब मैं जवाब दूँगा तो आप की बातें नहीं दोहराऊँगा।

¹⁵आप घबरा कर जवाब देने से बाज़ आए हैं, अब आप कुछ नहीं कह सकते। ¹⁶क्या मैं मज़ीद इन्तिज़ार करूँ, गो आप खामोश हो गए हैं, आप रुक कर मज़ीद जवाब नहीं दे सकते? ¹⁷मैं भी जवाब देने में हिस्सा लेना चाहता हूँ, मैं भी अपनी राय पेश करूँगा। ¹⁸क्योंकि मेरे अन्दर से अल्फ़ाज़ छलक रहे हैं, मेरी रूह मेरे अन्दर मुझे मजबूर कर रही है।

¹⁹हक़ीक़त में मैं अन्दर से उस नई मैं की मानिन्द हूँ जो बन्द रखी गई हो, मैं नई मैं से भरी हुई नई मशकों की तरह फटने को हूँ। ²⁰मुझे बोलना है ताकि आराम पाऊँ, लाज़िम ही है कि मैं अपने होंटों को खोल कर जवाब दूँ। ²¹यक़ीनन न मैं किसी की

^aएक बदबूदार पौदा।

जानिबदारी, न किसी की चापलूसी करूँगा।
22क्योंकि मैं खुशामद कर ही नहीं सकता, वरना मेरा खालिक्र मुझे जल्द ही उड़ा ले जाएगा।

अल्लाह कई तरीकों से इन्सान से हमकलाम होता है

33 ऐ अय्यूब, मेरी तक्ररीर सुनें, मेरी तमाम बातों पर कान धरे! 2अब मैं अपना मुँह खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती है। 3मेरे अल्फ़ाज़ सीधी राह पर चलने वाले दिल से उभर आते हैं, मेरे होंट दिया नतदारी से वह कुछ बयान करते हैं जो मैं जानता हूँ। 4अल्लाह के रूह ने मुझे बनाया, क़ादिर-ए-मुतलक़ के दम ने मुझे ज़िन्दगी बरख़्शी।

5अगर आप इस क़ाबिल हों तो मुझे जवाब दें और अपनी बातें तरतीब से पेश करके मेरा मुकाबला करें। 6अल्लाह की नज़र में मैं तो आप के बराबर हूँ, मुझे भी मिट्टी से ले कर तश्कील दिया गया है। 7चुनाँचे मुझे आप के लिए दहशत का बाइस नहीं होना चाहिए, मेरी तरफ़ से आप पर भारी बोझ नहीं आएगा।

8आप ने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आप के अल्फ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं, 9'मैं पाक हूँ, मुझ से जुर्म सरज़द नहीं हुआ, मैं बेगुनाह हूँ, मेरा कोई कुसूर नहीं।' 10तो भी अल्लाह मुझ से झगड़ने के मवाक़े ढूँडता और मुझे अपना दुश्मन समझता है। 11वह मेरे पाँओ को काठ में डाल कर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है।'

12लेकिन आप की यह बात दुरुस्त नहीं, क्योंकि अल्लाह इन्सान से आला है। 13आप उस से झगड़ कर क्यों कहते हैं, 'वह मेरी किसी भी बात का जवाब नहीं देता'? 14शायद इन्सान को अल्लाह नज़र न आए, लेकिन वह ज़रूर कभी इस तरीक़े, कभी उस तरीक़े से उस से हमकलाम होता है।

15कभी वह रूखाब या रात की रोया में उस से बात करता है। जब लोग बिस्तर पर लेट कर गहरी नींद सो जाते हैं 16तो अल्लाह उन

के कान खोल कर अपनी नसीहतों से उन्हें दहशतज़दा कर देता है। 17यूँ वह इन्सान को ग़लत काम करने और मग़रूर होने से बाज़ रख कर 18उस की जान गढ़े में उतरने और दरया-ए-मौत को उबूर करने से रोक देता है।

19कभी अल्लाह इन्सान की बिस्तर पर दर्द के ज़रीए तर्बियत करता है। तब उस की हड्डियों में लगातार जंग होती है। 20उस की जान को खुराक से घिन आती बल्कि उसे लज़ीज़तरीन खाने से भी नफ़रत होती है। 21उस का गोशत-पोस्त सुकड़ कर गाइब हो जाता है जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी हुई थीं वह नुमायाँ तौर पर नज़र आती हैं। 22उस की जान गढ़े के करीब, उस की ज़िन्दगी हलाक करने वालों के नज़दीक पहुँचती है।

23लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से कोई सालिस उस के पास हो जो इन्सान को सीधी राह दिखाए 24और उस पर तरस खा कर कहे, 'उसे गढ़े में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िद्या मिल गया है, 25अब उस का जिस्म जवानी की निस्बत ज़यादा तर-ओ-ताज़ा हो जाए और वह दुबारा जवानी की सी ताक़त पाए' 26तो फिर वह शख्स अल्लाह से इल्तिजा करेगा, और अल्लाह उस पर मेहरबान होगा। तब वह बड़ी खुशी से अल्लाह का चेहरा तकता रहेगा। इसी तरह अल्लाह इन्सान की रास्तबाज़ी बहाल करता है।

27ऐसा शख्स लोगों के सामने गाएगा और कहेगा, 'मैं ने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-मेढ़ी कर दी, और मुझे कोई फ़ाइदा न हुआ। 28लेकिन उस ने फ़िद्या दे कर मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से छुड़ाया। अब मेरी ज़िन्दगी नूर से लुत्फ़अन्दोज़ होगी।'

29अल्लाह इन्सान के साथ यह सब कुछ दो चार मर्तबा करता है 30ताकि उस की जान गढ़े से वापस आए और वह ज़िन्दगी के नूर से रौशन हो जाए।

31ऐ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनें, खामोश हो जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32अगर आप

जवाब में कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें, क्योंकि मैं आप को रास्तबाज़ ठहराने की आर्जू रखता हूँ।³³ लेकिन अगर आप कुछ बयान नहीं कर सकते तो मेरी सुनें, चुप रहें ताकि मैं आप को हिक्मत की तालीम दूँ।”

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज़्र देता है

34 फिर इलीहू ने बात जारी रख कर कहा,

²“ऐ दानिशमन्दो, मेरे अल्फ़ाज़ सुनें! ऐ आलिमो, मुझ पर कान धरें! ³क्योंकि कान यूँ अल्फ़ाज़ की जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह ज़बान ख़ुराक को चख लेती है। ⁴आएँ, हम अपने लिए वह कुछ चुन लें जो दुरुस्त है, आपस में जान लें कि क्या कुछ अच्छा है। ⁵अय्यूब ने कहा है, ‘गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी अल्लाह ने मुझे मेरे हुकूम से महरूम कर रखा है। ⁶जो फ़ैसला मेरे बारे में किया गया है उसे मैं झूट करार देता हूँ। गो मैं बेकूसूर हूँ तो भी तीर ने मुझे यूँ ज़ख्मी कर दिया कि उस का इलाज मुमकिन ही नहीं।’ ⁷अब मुझे बताएँ, क्या कोई अय्यूब जैसा बुरा है? वह तो कुफ़्र की बातें पानी की तरह पीते, ⁸बदकारों की सोहबत में चलते और बेदीनों के साथ अपना वक्रत गुज़ारते हैं। ⁹क्योंकि वह दावा करते हैं कि अल्लाह से लुत्फ़अन्दोज़ होना इन्सान के लिए बेफ़ाइदा है।

¹⁰चुनाँचे ऐ समझदार मर्दों, मेरी बात सुनें! यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम करे? यह तो मुमकिन ही नहीं कि क़ादिर-ए-मुतलक़ नाइन्साफ़ी करे। ¹¹यक़ीनन वह इन्सान को उस के आमाल का मुनासिब अज़्र दे कर उस पर वह कुछ लाता है जिस का तक्राज़ा उस का चाल-चलन करता है। ¹²यक़ीनन अल्लाह बेदीन हरकतें नहीं करता, क़ादिर-ए-मुतलक़ इन्साफ़ का खून नहीं करता। ¹³किस ने ज़मीन को अल्लाह के हवाले किया? किस ने उसे पूरी दुनिया पर

इख़तियार दिया? कोई नहीं! ¹⁴अगर वह कभी इरादा करे कि अपनी रूह और अपना दम इन्सान से वापस ले ¹⁵तो तमाम लोग दम छोड़ कर दुबारा खाक हो जाएंगे।

¹⁶ऐ अय्यूब, अगर आप को समझ है तो सुनें, मेरी बातों पर ध्यान दें। ¹⁷जो इन्साफ़ से नफ़रत करे क्या वह हुकूमत कर सकता है? क्या आप उसे मुजरिम ठहराना चाहते हैं जो रास्तबाज़ और क़ादिर-ए-मुतलक़ है, ¹⁸जो बादशाह से कह सकता है, ‘ऐ बदमआश!’ और शुरफ़ा से, ‘ऐ बेदीनो!’? ¹⁹वह तो न रईसों की जानिबदारी करता, न उद्देदारों को पस्तहालों पर तर्जीह देता है, क्योंकि सब ही को उस के हाथों ने बनाया है। ²⁰वह पल भर में, आधी रात ही मर जाते हैं। शुरफ़ा को हिलाया जाता है तो वह कूच कर जाते हैं, ताक़तवरों को बग़ैर किसी तग-ओ-दौ के हटाया जाता है।

²¹क्योंकि अल्लाह की आँखें इन्सान की राहों पर लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर क़दम उसे नज़र आता है। ²²कहीं इतनी तारीकी या घना अंधेरा नहीं होता कि बदकार उस में छुप सके। ²³और अल्लाह किसी भी इन्सान को उस वक्रत से आगाह नहीं करता जब उसे इलाही तख़्त-ए-अदालत के सामने आना है। ²⁴उसे तहक़ीक़ात की ज़रूरत ही नहीं बल्कि वह ज़ोर-आवरों को पाश पाश करके दूसरों को उन की जगह खड़ा कर देता है। ²⁵वह तो उन की हरकतों से वाकिफ़ है और उन्हें रात के वक्रत यूँ तह-ओ-बाला कर सकता है कि चूर चूर हो जाएँ। ²⁶उन की बेदीनी के जवाब में वह उन्हें सब की नज़रों के सामने पटख देता है। ²⁷उस की पैरवी से हटने और उस की राहों का लिहाज़ न करने का यही नतीजा है। ²⁸क्योंकि उन की हरकतों के बाइस पस्तहालों की चीखें अल्लाह के सामने और मुसीबतज़दों की इत्तिजाएँ उस के कान तक पहुँचीं। ²⁹लेकिन अगर वह ख़ामोश भी रहे तो कौन उसे मुजरिम करार दे सकता है?

अगर वह अपने चेहरे को छुपाए रखे तो कौन उसे देख सकता है? वह तो क्रौम पर बल्कि हर फ़र्द पर हुकूमत करता है ³⁰ताकि शरीर हुकूमत न करें और क्रौम फंस न जाए।

³¹बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, 'मुझे ग़लत राह पर लाया गया है, आइन्दा मैं दुबारा बुरा काम नहीं करूँगा। ³²जो कुछ मुझे नज़र नहीं आता वह मुझे सिखा, अगर मुझ से नाइन्साफ़ी हुई है तो आइन्दा ऐसा नहीं करूँगा।' ³³क्या अल्लाह को आप को वह अज़्र देना चाहिए जो आप की नज़र में मुनासिब है, गो आप ने उसे रद्द कर दिया है? लाज़िम है कि आप खुद ही फ़ैसला करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा वह कुछ पेश करें जो कुछ आप सहीह समझते हैं। ³⁴समझदार लोग बल्कि हर दानिशमन्द जो मेरी बात सुने फ़रमाएगा, ³⁵'अय्यूब इल्म के साथ बात नहीं कर रहा, उस के अल्फ़ाज़ फ़हम से खाली हैं। ³⁶काश अय्यूब की पूरी जाँच-पड़ताल की जाए, क्योंकि वह शरीरों के से जवाब पेश करता, ³⁷वह अपने गुनाह में इज़ाफ़ा करके हमारे रू-ब-रू अपने ज़ुर्म पर शक डालता और अल्लाह पर मुतअद्दिद इल्ज़ामात लगाता है'।"

अपने आप को रास्तबाज़ मत ठहराना

35 फिर इलीहू ने अपनी बात जारी रखी,

²"आप कहते हैं, 'मैं अल्लाह से ज़्यादा रास्तबाज़ हूँ।' क्या आप यह बात दुरुस्त समझते हैं ³या यह कि 'मुझे क्या फ़ाइदा है, गुनाह न करने से मुझे क्या नफ़ा होता है?' ⁴मैं आप को और साथी दोस्तों को इस का जवाब बताता हूँ।

⁵अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाएँ, बुलन्दियों के बादलों पर शौर करें। ⁶अगर आप ने गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़सान पहुँचा है? गो आप से मुतअद्दिद ज़राइम भी सरज़द हुए हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं

होगा। ⁷रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने से आप उसे क्या दे सकते हैं? आप के हाथों से अल्लाह को क्या हासिल हो सकता है? कुछ भी नहीं! ⁸आप के हमजिन्स इन्सान ही आप की बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं, और आदमज़ाद ही आप की रास्तबाज़ी से फ़ाइदा उठाते हैं।

⁹जब लोगों पर सख़्त ज़ुल्म होता है तो वह चीखते चिल्लाते और बड़ों की ज़ियादती के बाइस मदद के लिए आवाज़ देते हैं। ¹⁰लेकिन कोई नहीं कहता, 'अल्लाह, मेरा खालिक़ कहाँ है? वह कहाँ है जो रात के दौरान नग़मे अता करता, ¹¹जो हमें ज़मीन पर चलने वाले जानवरों की निस्बत ज़्यादा तालीम देता, हमें परिन्दों से ज़्यादा दानिशमन्द बनाता है?' ¹²उन की चीखों के बावजूद अल्लाह जवाब नहीं देता, क्योंकि वह घमंडी और बुरे हैं।

¹³यक़ीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़र्याद नहीं सुनता, क्रादिर-ए-मुतलक़ उस पर ध्यान ही नहीं देता। ¹⁴तो फिर वह आप पर क्यों तवज्जुह दे जब आप दावा करते हैं, 'मैं उसे नहीं देख सकता,' और 'मेरा मुआमला उस के सामने ही है, मैं अब तक उस का इत्तिज़ार कर रहा हूँ?' ¹⁵वह आप की क्यों सुने जब आप कहते हैं, 'अल्लाह का ग़ज़ब कभी सज़ा नहीं देता, उसे बुराई की परवा ही नहीं?' ¹⁶जब अय्यूब मुँह खोलता है तो बेमानी बातें निकलती हैं। जो मुतअद्दिद अल्फ़ाज़ वह पेश करता है वह इल्म से खाली हैं।"

अल्लाह कितना अज़ीम है

36 इलीहू ने अपनी बात जारी रखी, ²"थोड़ी देर के लिए सब्र करके मुझे इस की तश्रीह करने दें, क्योंकि मज़ीद बहुत कुछ है जो अल्लाह के हक़ में कहना है। ³मैं दूर दूर तक फिरूँगा ताकि वह इल्म हासिल करूँ जिस से मेरे खालिक़ की रास्ती साबित हो जाए। ⁴यक़ीनन जो कुछ मैं कहूँगा वह फ़रेबदिह नहीं होगा। एक ऐसा आदमी

आप के सामने खड़ा है जिस ने खुलूसदिली से अपना इल्म हासिल किया है।

⁵गो अल्लाह अज़ीम कुदरत का मालिक है ताहम वह खुलूसदिलों को रद्द नहीं करता। ⁶वह बेदीन को ज़्यादा देर तक जीने नहीं देता, लेकिन मुसीबतज़दों का इन्साफ़ करता है। ⁷वह अपनी आँखों को रास्तबाज़ों से नहीं फेरता बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ तख़्तनशीन करके बुलन्दियों पर सरफ़राज़ करता है।

⁸फिर अगर उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ा जाए, उन्हें मुसीबत के रस्सों में गिरिफ़्तार किया जाए ⁹तो वह उन पर ज़ाहिर करता है कि उन से क्या कुछ सरज़द हुआ है, वह उन्हें उन के जराइम पेश करके उन्हें दिखाता है कि उन का तकब्बुर का रवय्या है। ¹⁰वह उन के कानों को तर्बियत के लिए खोल कर उन्हें हुक्म देता है कि अपनी नाइन्साफ़ी से बाज़ आ कर वापस आओ। ¹¹अगर वह मान कर उस की खिदमत करने लगे तो फिर वह जीते जी अपने दिन खुशहाली में और अपने साल सुकून से गुज़ारेंगे। ¹²लेकिन अगर न मानें तो उन्हें दरया-ए-मौत को उबूर करना पड़ेगा, वह इल्म से महरूम रह कर मर जाएंगे।

¹³बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर इलाही ग़ज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बांध भी ले, लेकिन वह मदद के लिए नहीं पुकारते। ¹⁴जवानी में ही उन की जान निकल जाती, उन की ज़िन्दगी मुकद्दस फ़रिशतों के हाथों ख़त्म हो जाती है। ¹⁵लेकिन अल्लाह मुसीबतज़दा को उस की मुसीबत के ज़रीए नजात देता, उस पर होने वाले जुल्म की मारिफ़त उस का कान खोल देता है।

¹⁶वह आप को भी मुसीबत के मुँह से निकलने की तरगीब दिला कर एक ऐसी खुली जगह पर लाना चाहता है जहाँ रुकावट नहीं है, जहाँ आप की मेज़ उम्दा खानों से भरी रहेगी। ¹⁷लेकिन इस वक़्त आप अदालत का वह प्याला पी कर सेर हो गए हैं जो बेदीनों के

नसीब में है, इस वक़्त अदालत और इन्साफ़ ने आप को अपनी सख़्त गिरिफ़्त में ले लिया है।

¹⁸खबरदार कि यह बात आप को कुफ़्र बकने पर न उकसाए, ऐसा न हो कि तावान की बड़ी रक़म आप को ग़लत राह पर ले जाए। ¹⁹क्या आप की दौलत आप का दिफ़ा करके आप को मुसीबत से बचाएगी? या क्या आप की सिरतोड़ कोशिशें यह सरअन्जाम दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! ²⁰रात की आर्जू न करें, उस वक़्त की जब क़ौमों में जहाँ भी हों नेस्त-ओ-नाबूद हो जाती हैं। ²¹खबरदार रहें कि नाइन्साफ़ी की तरफ़ रुजू न करें, क्योंकि आप को इसी लिए मुसीबत से आज़माया जा रहा है।

²²अल्लाह अपनी कुदरत में सरफ़राज़ है। कौन उस जैसा उस्ताद है? ²³किस ने मुकर्रर किया कि उसे किस राह पर चलना है? कौन कह सकता है, 'तू ने ग़लत काम किया'? कोई नहीं! ²⁴उस के काम की तम्जीद करना न भूलें, उस सारे काम की जिस की लोगों ने अपने गीतों में हम्द-ओ-सना की है। ²⁵हर शख्स ने यह काम देख लिया, इन्सान ने दूर दूर से उस का मुलाहज़ा किया है।

²⁶अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं जानते, उस के सालों की तादाद मालूम नहीं कर सकते। ²⁷क्योंकि वह पानी के क़तरें ऊपर खँच कर धुन्द से बारिश निकाल लेता है, ²⁸वह बारिश जो बादल ज़मीन पर बरसा देते और जिस की बौछाड़ें इन्सान पर पड़ती हैं। ²⁹कौन समझ सकता है कि बादल किस तरह छा जाते, कि अल्लाह के मस्कन से बिजलियाँ किस तरह कड़कती हैं? ³⁰वह अपने इर्दगिर्द रौशनी फैला कर समुन्दर की जड़ों तक सब कुछ रौशन करता है। ³¹यूँ वह बादलों से क़ौमों की परवरिश करता, उन्हें कसत की ख़ुराक मुहय्या करता है। ³²वह अपनी मुट्टियों को बादल की बिजलियों से भर कर हुक्म देता है कि क्या चीज़ अपना निशाना बनाएँ। ³³उस के बादलों की गरजती आवाज़ उस के ग़ज़ब

का एलान करती, नाइन्साफ़ी पर उस के शदीद क्रहर को ज़ाहिर करती है।

37 यह सोच कर मेरा दिल लरज़ कर अपनी जगह से उछल पड़ता है।²सुनें और उस की ग़ज़बनाक आवाज़ पर ग़ौर करें, उस गुराती आवाज़ पर जो उस के मुँह से निकलती है।³आसमान तले हर मक़ाम पर बल्कि ज़मीन की इन्तिहा तक वह अपनी बिजली चमकने देता है।⁴इस के बाद कड़कती आवाज़ सुनाई देती, अल्लाह की रोबदार आवाज़ गरज उठती है। और जब उस की आवाज़ सुनाई देती है तो वह बिजलियों को नहीं रोकता।

⁵अल्लाह अनोखे तरीक़े से अपनी आवाज़ गरजने देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम काम करता है जो हमारी समझ से बाहर हैं।⁶क्यूँकि वह बर्फ़ को फ़रमाता है, 'ज़मीन पर पड़ जा' और मूसलाधार बारिश को, 'अपना पूरा ज़ोर दिखा।'⁷यूँ वह हर इन्सान को उस के घर में रहने पर मज्बूर करता है ताकि सब जान लें कि अल्लाह काम में मसरूफ़ है।⁸तब जंगली जानवर भी अपने भटों में छुप जाते, अपने घरों में पनाह लेते हैं।

⁹तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता, शिमाली हवा मुल्क में ठंड फैला देती है।¹⁰अल्लाह फूँक मारता तो पानी जम जाता, उस की सतह दूर दूर तक मुन्जमिद हो जाती है।¹¹अल्लाह बादलों को नमी से बोझल करके उन के ज़रीए दूर तक अपनी बिजली चमकाता है।¹²उस की हिदायत पर वह मंडलाते हुए उस का हर हुक्म तकमील तक पहुँचाते हैं।¹³यूँ वह उन्हें लोगों की तर्बियत करने, अपनी ज़मीन को बरकत देने या अपनी शफ़क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

¹⁴ऐ अय्यूब, मेरी इस बात पर ध्यान दें, रुक कर अल्लाह के अज़ीम कामों पर ग़ौर करें।¹⁵क्या आप को मालूम है कि अल्लाह अपने कामों को कैसे तरतीब देता है, कि वह अपने बादलों से बिजली किस तरह चमकने देता

है? ¹⁶क्या आप बादलों की नक़ल-ओ-हरकत जानते हैं? क्या आप को उस के अनोखे कामों की समझ आती है जो कामिल इल्म रखता है? ¹⁷जब ज़मीन जुनूबी लू की ज़द में आ कर चुप हो जाती और आप के कपड़े तपने लगते हैं ¹⁸तो क्या आप अल्लाह के साथ मिल कर आसमान को ठोंक ठोंक कर पीतल के आईने की मानिन्द सख़्त बना सकते हैं? हरगिज़ नहीं!

¹⁹हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें! अप्रसोस, अंधेरे के बाइस हम अपने खयालात को तरतीब नहीं दे सकते।²⁰अगर मैं अपनी बात पेश करूँ तो क्या उसे कुछ मालूम हो जाएगा जिस का पहले इल्म न था? क्या कोई भी कुछ बयान कर सकता है जो उसे पहले मालूम न हो? कभी नहीं!²¹एक वक्रत धूप नज़र नहीं आती और बादल ज़मीन पर साया डालते हैं, फिर हवा चलने लगती और मौसम साफ़ हो जाता है।²²शिमाल से सुनहरी चमक क़रीब आती और अल्लाह रोबदार शान-ओ-शौकत से घिरा हुआ आ पहुँचता है।²³हम तो क़ादिर-ए-मुतलक़ तक नहीं पहुँच सकते। उस की कुदरत आला और रास्ती ज़ोर-आवर है, वह कभी इन्साफ़ का खून नहीं करता।²⁴इस लिए आदमज़ाद उस से डरते और दिल के दानिशमन्द उस का ख़ौफ़ मानते हैं।"

अल्लाह का जवाब

38 फिर अल्लाह खुद अय्यूब से हमकलाम हुआ। तूफ़ान में से उस ने उसे जवाब दिया,

²"यह कौन है जो समझ से खाली बातें करने से मेरे मन्सूबे के सहीह मतलब पर पर्दा डालता है? ³मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझ से सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।

⁴तू कहाँ था जब मैं ने ज़मीन की बुन्याद रखी? अगर तुझे इस का इल्म हो तो मुझे बता! ⁵किस ने उस की लम्बाई और चौड़ाई

मुकर्रर की? क्या तुझे मालूम है? किस ने नाप कर उस की पैमाइश की? 6 उस के सतून किस चीज़ पर लगाए गए? किस ने उस के कोने का बुन्यादी पत्थर रखा, 7 उस वक़्त जब सुबह के सितारे मिल कर शादियाना बजा रहे, तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?

8 जब समुन्दर रहम से फूट निकला तो किस ने दरवाज़े बन्द करके उस पर क़ाबू पाया? 9 उस वक़्त मैं ने बादलों को उस का लिबास बनाया और उसे घने अंधेरे में यूँ लपेटा जिस तरह नौज़ाद को पोतड़ों में लपेटा जाता है। 10 उस की हुदूद मुकर्रर करके मैं ने उसे रोकने के दरवाज़े और कुंडे लगाए। 11 मैं बोला, 'तुझे यहाँ तक आना है, इस से आगे न बढ़ना, तेरी रोबदार लहरों को यहीं रुकना है।'

12 क्या तू ने कभी सुबह को हुकम दिया या उसे तुलू होने की जगह दिखाई 13 ताकि वह ज़मीन के किनारों को पकड़ कर बेदीनों को उस से झाड़ दे? 14 उस की रौशनी में ज़मीन यूँ तश्कील पाती है जिस तरह मिट्टी जिस पर मुहर लगाई जाए। सब कुछ रंगदार लिबास पहने नज़र आता है। 15 तब बेदीनों की रौशनी रोकी जाती, उन का उठाया हुआ बाजू तोड़ा जाता है।

16 क्या तू समुन्दर के सरचश्मों तक पहुँच कर उस की गहराइयों में से गुज़रा है? 17 क्या मौत के दरवाज़े तुझ पर ज़ाहिर हुए, तुझे घने अंधेरे के दरवाज़े नज़र आए हैं? 18 क्या तुझे ज़मीन के वसी मैदानों की पूरी समझ आई है? मुझे बता अगर यह सब कुछ जानता है!

19 रौशनी के मम्बा तक ले जाने वाला रास्ता कहाँ है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है? 20 क्या तू उन्हें उन के मक़ामों तक पहुँचा सकता है? क्या तू उन के घरों तक ले जाने वाली राहों से वाकिफ़ है? 21 बेशक तू इस का इल्म रखता है, क्योंकि तू उस वक़्त जन्म ले चुका था जब यह पैदा हुए। तू तो क़दीम ज़माने से ही ज़िन्दा है!

22 क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़ के ज़खीरे जमा होते हैं? क्या तू ने ओलों के गोदामों को देख लिया है? 23 मैं उन्हें मुसीबत के वक़्त के लिए महफूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों के लिए जब लड़ाई और जंग छिड़ जाए। 24 मुझे बता, उस जगह तक किस तरह पहुँचना है जहाँ रौशनी तक्सीम होती है, या उस जगह जहाँ से मशरिकी हवा निकल कर ज़मीन पर बिखर जाती है?

25 किस ने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता और गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26 ताकि इन्सान से ख़ाली ज़मीन और ग़ैरआबाद रेगिस्तान की आबपाशी हो जाए, 27 ताकि वीरान-ओ-सुन्सान बयाबान की प्यास बुझ जाए और उस से हरियाली फूट निकले? 28 क्या बारिश का बाप है? कौन शबनम के क़तरों का वालिद है?

29 बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो पाला आसमान से आ कर ज़मीन पर पड़ता है किस ने उसे जन्म दिया? 30 जब पानी पत्थर की तरह सख्त हो जाए बल्कि गहरे समुन्दर की सतह भी जम जाए तो कौन यह सरअन्जाम देता है? 31 क्या तू खोशा-ए-पर्वीन को बांध सकता या जौज़े की ज़न्जीरों को खोल सकता है? 32 क्या तू करवा सकता है कि सितारों के मुख्तलिफ़ झुर्मट उन के मुकर्ररा औक़ात के मुताबिक़ निकल आएँ? क्या तू दुब्ब-ए-अक्बर की उस के बच्चों समेत क्रियादत करने के क़ाबिल है? 33 क्या तू आसमान के क़वानीन जानता या उस की ज़मीन पर हुकूमत मुतअप्यिन करता है?

34 क्या जब तू बुलन्द आवाज़ से बादलों को हुकम दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश बरसाते हैं? 35 क्या तू बादल की बिजली ज़मीन पर भेज सकता है? क्या वह तेरे पास आ कर कहती है, 'मैं खिदमत के लिए हाज़िर हूँ'? 36 किस ने मिस्र के लक्लक़ को हिक्मत दी, मुर्ग़ा को समझ अता की? 37 किस को इतनी दानाई हासिल है कि वह बादलों को

गिन सके? कौन आसमान के इन घड़ों को उस वक्रत उंडेल सकता है ³⁸जब मिट्टी ढाले हुए लोहे की तरह सख्त हो जाए और ढेले एक दूसरे के साथ चिपक जाएँ? कोई नहीं!

³⁹क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या शेरों को सेर करता है ⁴⁰जब वह अपनी छुपने की जगहों में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में कहीं ताक लगाए बैठे हों? ⁴¹कौन कच्चे को खुराक मुहय्या करता है जब उस के बच्चे भूक के बाइस अल्लाह को आवाज़ दें और मारे मारे फिरें?

39 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी बकरियों के बच्चे कब पैदा होते हैं? जब हिरनी अपना बच्चा जन्म देती है तो क्या तू इस को मुलाहज़ा करता है? ²क्या तू वह महीने गिनता रहता है जब बच्चे हिरनियों के पेट में हों? क्या तू जानता है कि किस वक्रत बच्चे जन्म देती हैं? ³उस दिन वह दबक जाती, बच्चे निकल आते और दर्द-ए-ज़ह खत्म हो जाता है। ⁴उन के बच्चे ताक़तवर हो कर खुले मैदान में फलते फूलते, फिर एक दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के पास वापस नहीं आते।

⁵किस ने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया? किस ने उस के रस्से खोल दिए? ⁶मैं ही ने बयाबान उस का घर बना दिया, मैं ही ने मुकर्रर किया कि बंजर ज़मीन उस की रिहाइशगाह हो। ⁷वह शहर का शोर-शराबा देख कर हंस उठता, और उसे हाँकने वाले की आवाज़ सुननी नहीं पड़ती। ⁸वह चरने के लिए पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर घूमता और हरियाली का खोज लगाता रहता है।

⁹क्या जंगली बैल तेरी खिदमत करने के लिए तय्यार होगा? क्या वह कभी रात को तेरी चरनी के पास गुज़ारेगा? ¹⁰क्या तू उसे बांध कर हल चला सकता है? क्या वह वादी में तेरे पीछे चल कर सुहागा फेरेगा? ¹¹क्या तू उस की बड़ी ताक़त देख कर उस पर एतिमाद करेगा? क्या तू अपना सख्त काम उस के

सपुर्द करेगा? ¹²क्या तू भरोसा कर सकता है कि वह तेरा अनाज जमा करके गाहने की जगह पर ले आए? हरगिज़ नहीं!

¹³शुतुरमुर्गा खुशी से अपने परों को फड़फड़ाता है। लेकिन क्या उस का शाहपर लक़लक़ या बाज़ के शाहपर की मानिन्द है? ¹⁴वह तो अपने अंडे ज़मीन पर अकेले छोड़ता है, और वह मिट्टी ही पर पकते हैं। ¹⁵शुतुरमुर्गा को खयाल तक नहीं आता कि कोई उन्हें पाँओ तले कुचल सकता या कोई जंगली जानवर उन्हें रौंद सकता है। ¹⁶लगता नहीं कि उस के अपने बच्चे हैं, क्योंकि उस का उन के साथ सुलूक इतना सख्त है। अगर उस की मेहनत नाकाम निकले तो उसे परवा ही नहीं, ¹⁷क्योंकि अल्लाह ने उसे हिक्मत से महरूम रख कर उसे समझ से न नवाज़ा। ¹⁸तो भी वह इतनी तेज़ी से उछल कर भाग जाता है कि घोड़े और घुड़सवार की दौड़ देख कर हँसने लगता है।

¹⁹क्या तू घोड़े को उस की ताक़त दे कर उस की गर्दन को अयाल से आरास्ता करता है? ²⁰क्या तू ही उसे टिड्डी की तरह फलाँगने देता है? जब वह ज़ोर से अपने नथनों को फुला कर आवाज़ निकालता है तो कितना रोबदार लगता है! ²¹वह वादी में सुम मार मार कर अपनी ताक़त की खुशी मनाता, फिर भाग कर मैदान-ए-जंग में आ जाता है। ²²वह खौफ़ का मज़ाक़ उड़ाता और किसी से भी नहीं डरता, तलवार के रू-ब-रू भी पीछे नहीं हटता। ²³उस के ऊपर तर्कश खड़खड़ाता, नेज़ा और शम्शीर चमकती है। ²⁴वह बड़ा शोर मचा कर इतनी तेज़ी और जोश-ओ-खुरोश से दुश्मन पर हम्ला करता है कि बिगुल बजते वक्रत भी रोका नहीं जाता। ²⁵जब भी बिगुल बजे वह ज़ोर से हिनहिनाता और दूर ही से मैदान-ए-जंग, कमाँडरों का शोर और जंग के नारे सूँघ लेता है।

²⁶क्या बाज़ तेरी ही हिक्मत के ज़रीए हवा में उड़ कर अपने परों को जुनूब की जानिब फैला देता है? ²⁷क्या उक्राब तेरे ही हुक्म

पर बुलन्दियों पर मंडलाता और ऊँची ऊँची जगहों पर अपना घोंसला बना लेता है? 28 वह चटान पर रहता, उस के टूटे-फूटे किनारों और किलाबन्द जगहों पर बसेरा करता है। 29 वहाँ से वह अपने शिकार का खोज लगाता है, उस की आँखें दूर दूर तक देखती हैं। 30 उस के बच्चे खून के लालच में रहते, और जहाँ भी लाश हो वहाँ वह हाज़िर होता है।”

अय्यूब रब को जवाब नहीं दे सकता

40 रब ने अय्यूब से पूछा, 2 “क्या मलामत करने वाला अदालत में क़ादिर-ए-मुतलक़ से झगड़ना चाहता है? अल्लाह की सरज़निश करने वाला उसे जवाब दे।”

3 तब अय्यूब ने जवाब दे कर रब से कहा, 4 “मैं तो नालाइक़ हूँ, मैं किस तरह तुझे जवाब दूँ? मैं अपने मुँह पर हाथ रख कर ख़ामोश रहूँगा। 5 एक बार मैं ने बात की और इस के बाद मज़ीद एक दफ़ा, लेकिन अब से मैं जवाब में कुछ नहीं कहूँगा।”

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी क़ुदरत हासिल है?

6 तब अल्लाह तूफ़ान में से अय्यूब से हमकलाम हुआ,

7 “मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझ से सवाल करूँ और तू मुझे तालीम दे। 8 क्या तू वाक़ई मेरा इन्साफ़ मन्सूख़ करके मुझे मुजरिम ठहराना चाहता है ताकि खुद रास्तबाज़ ठहरे? 9 क्या तेरा बाजू अल्लाह के बाजू जैसा ज़ोर-आवर है? क्या तेरी आवाज़ उस की आवाज़ की तरह कड़कती है। 10 आ, अपने आप को शान-ओ-शौकत से आरास्ता कर, इज़ज़त-ओ-जलाल से मुलब्स हो जा! 11 ब-यक-वक्रत अपना शदीद क्रहर मुख्तलिफ़ जगहों पर नाज़िल कर, हर मग़रूर को अपना

^aसाईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

निशाना बना कर उसे ख़ाक में मिला दे। 12 हर मुतकब्बिर पर ग़ौर करके उसे पस्त कर। जहाँ भी बेदीन हो वहीं उसे कुचल दे। 13 उन सब को मिट्टी में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़ कर किसी खुफ़िया जगह गिरिफ़्तार कर। 14 तब ही मैं तेरी तारीफ़ करके मान जाऊँगा कि तेरा दहना हाथ तुझे नजात दे सकता है।

अल्लाह की क़ुदरत और हिक्मत की दो मिसालें

15 बहेमोत^a पर ग़ौर कर जिसे मैं ने तुझे ख़ल्क़ करते वक्रत बनाया और जो बैल की तरह घास खाता है। 16 उस की कमर में कितनी ताक़त, उस के पेट के पट्टों में कितनी कुव्वत है। 17 वह अपनी दुम को देवदार के दरख़्त की तरह लटकने देता है, उस की रानों की नसें मज़बूती से एक दूसरी से जुड़ी हुई हैं। 18 उस की हड्डियाँ पीतल के से पाइप, लोहे के से सरीए हैं। 19 वह अल्लाह के कामों में से अव्वल है, उस के खालिक़ ही ने उसे उस की तलवार दी। 20 पहाड़ियाँ उसे अपनी पैदावार पेश करती, खुले मैदान के तमाम जानवर वहाँ खेलते कूदते हैं। 21 वह काँटेदार झाड़ियों के नीचे आराम करता, सरकंडों और दलदल में छुपा रहता है। 22 खारदार झाड़ियाँ उस पर साया डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख़्त उसे घेरे रखते हैं। 23 जब दरया सैलाब की सूरत इख़तियार करे तो वह नहीं भागता। गो दरया-ए-यर्दन उस के मुँह पर फूट पड़े तो भी वह अपने आप को मटफूज़ समझता है। 24 क्या कोई उस की आँखों में उंगलियाँ डाल कर उसे पकड़ सकता है? अगर उसे फंदे में पकड़ा भी जाए तो क्या कोई उस की नाक को छेद सकता है? हरगिज़ नहीं!

41 क्या तू लिवियातान^b अज़दहे को मछली के काँटे से पकड़ सकता या उस की ज़बान को रस्से से बांध सकता

^bसाईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

है? 2क्या तू उस की नाक छेद कर उस में से रस्सा गुज़ार सकता या उस के जबड़े को काँटे से चीर सकता है? 3क्या वह कभी तुझ से बार बार रहम माँगेगा या नर्म नर्म अल्फ़ाज़ से तेरी खुशामद करेगा? 4क्या वह कभी तेरे साथ अह्द करेगा कि तू उसे अपना गुलाम बनाए रखे? हरगिज़ नहीं! 5क्या तू परिन्दे की तरह उस के साथ खेल सकता या उसे बांध कर अपनी लड़कियों को दे सकता है ताकि वह उस के साथ खेलें? 6क्या सौदागर कभी उस का सौदा करेंगे या उसे ताजिरोँ में तक्रसीम करेंगे? कभी नहीं! 7क्या तू उस की खाल को भालों से या उस के सर को हार्पूनों से भर सकता है? 8एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह लड़ाई तुझे हमेशा याद रहेगी, और तू आइन्दा ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा!

9थक्रीनन उस पर क़ाबू पाने की हर उम्मीद फ़रेबदिह साबित होगी, क्यूँकि उसे देखते ही इन्सान गिर जाता है। 10कोई इतना बेधड़क नहीं है कि उसे मुशतइल करे। तो फिर कौन मेरा सामना कर सकता है? 11किस ने मुझे कुछ दिया है कि मैं उस का मुआवज़ा दूँ। आसमान तले हर चीज़ मेरी ही है!

12मैं तुझे उस के आज्ञा के बयान से महरूम नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताक़तवर और ख़ूबसूरत है। 13कौन उस की खाल¹ उतार सकता, कौन उस के ज़िराबक्तर की दो तहों के अन्दर तक पहुँच सकता है? 14कौन उस के मुँह का दरवाज़ा खोलने की जुरअत करे? उस के हौलनाक दाँत देख कर इन्सान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 15उस की पीठ पर एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई ढालों की क्रतारें होती हैं। 16वह इतनी मज़बूती से एक दूसरी से लगी होती हैं कि उन के दरमियान से हवा भी नहीं गुज़र सकती, 17बल्कि यूँ एक दूसरी से चिमटी और लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक दूसरी से अलग नहीं किया जा सकता।

18जब छीकें मारे तो बिजली चमक उठती है। उस की आँखें तुलू-ए-सुब्ह की पलकों की मानिन्द हैं। 19उस के मुँह से मशअलें और चिंगारियाँ ख़ारिज होती हैं, 20उस के नथनों से धुआँ यूँ निकलता है जिस तरह भड़कती और दहकती आग पर रखी गई देग से। 21जब फूँक मारे तो कोएले दहक उठते और उस के मुँह से शोले निकलते हैं।

22उस की गर्दन में इतनी ताक़त है कि जहाँ भी जाए वहाँ उस के आगे आगे मायूसी फैल जाती है। 23उस के गोशत-पोस्त की तहें एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे की तरह मज़बूत और बेलचक हैं। 24उस का दिल पत्थर जैसा सख़्त, चक्की के निचले पाट जैसा मुस्तहकम है।

25जब उठे तो ज़ोर-आवर डर जाते और दहशत खा कर पीछे हट जाते हैं। 26हथियारों का उस पर कोई असर नहीं होता, ख़्वाह कोई तलवार, नेज़े, बरछी या तीर से उस पर हम्ला क्यूँ न करे। 27वह लोहे को भूसा और पीतल को गली सड़ी लकड़ी समझता है। 28तीर उसे नहीं भगा सकते, और अगर गुलेल के पत्थर उस पर चलाओ तो उन का असर भूसे के बराबर है। 29ढंडा उसे तिनका सा लगता है, और वह शम्शीर का शोर-शराबा सुन कर हंस उठता है। 30उस के पेट पर तेज़ ठीकरे से लगे हैं, और जिस तरह अनाज पर गाहने का आला चलाया जाता है उसी तरह वह कीचड़ पर चलता है। 31जब समुन्दर की गहराइयों में से गुज़रे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने लगता है। वह महम के मुख्तलिफ़ अजज़ा को मिला मिला कर तप्यार करने वाले अत्तार की तरह समुन्दर को हरकत में लाता है। 32अपने पीछे वह चमकता दमकता रास्ता छोड़ता है। तब लगता है कि समुन्दर की गहराइयों के सफ़ेद बाल हैं। 33दुनिया में उस जैसा कोई मख़्लूक नहीं, ऐसा बनाया गया है कि कभी न डरे। 34जो भी आला हो उस पर वह हिक़ारत

¹लफ़ज़ी तर्जुमा : बैरूनी लिबास।

की निगाह से देखता है, वह तमाम रोबदार जानवरों का बादशाह है।”

अय्यूब की आखिरी बात

42 तब अय्यूब ने जवाब में रब से कहा,

2“मैं ने जान लिया है कि तू सब कुछ कर पाता है, कि तेरा कोई भी मन्सूबा रोका नहीं जा सकता। 3तू ने फ़रमाया, ‘यह कौन है जो समझ से खाली बातें करने से मेरे मन्सूबे के सहीह मतलब पर पर्दा डालता है?’ यकीनन मैं ने ऐसी बातें बयान कीं जो मेरी समझ से बाहर हैं, ऐसी बातें जो इतनी अनोखी हैं कि मैं उन का इल्म रख ही नहीं सकता। 4तू ने फ़रमाया, ‘सुन मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं तुझ से सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।’ 5पहले मैं ने तेरे बारे में सिर्फ़ सुना था, लेकिन अब मेरी अपनी आँखों ने तुझे देखा है। 6इस लिए मैं अपनी बातें मुस्तरद करता, अपने आप पर खाक और राख डाल कर तौबा करता हूँ।”

अय्यूब अपने दोस्तों की शफ़ाअत करता है

7अय्यूब से यह तमाम बातें कहने के बाद रब इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, “मैं तुझ से और तेरे दो दोस्तों से गुस्से हूँ, क्योंकि गो मेरे बन्दे अय्यूब ने मेरे बारे में दुरुस्त बातें कीं मगर तुम ने ऐसा नहीं किया। 8चुनाँचे अब सात जवान बैल और सात मेंढे ले कर मेरे बन्दे अय्यूब के पास जाओ और अपनी खातिर भस्म होने वाली कुर्बानी पेश करो। लाज़िम है कि अय्यूब तुम्हारी शफ़ाअत करे, वरना मैं तुम्हें तुम्हारी हमाक़त का पूरा अज़्र दूँगा। लेकिन

उस की शफ़ाअत पर मैं तुम्हें मुआफ़ करूँगा, क्योंकि मेरे बन्दे अय्यूब ने मेरे बारे में वह कुछ बयान किया जो सहीह है जबकि तुम ने ऐसा नहीं किया।”

9इलीफ़ज़ तेमानी, बिल्दद सूखी और ज़ूफ़र नामाती ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने को कहा था तो रब ने अय्यूब की सुनी।

10और जब अय्यूब ने दोस्तों की शफ़ाअत की तो रब ने उसे इतनी बरकत दी कि आखिरकार उसे पहले की निस्बत दुगनी दौलत हासिल हुई। 11तब उस के तमाम भाई-बहनें और पुराने जानने वाले उस के पास आए और घर में उस के साथ खाना खा कर उस आफ़त पर अप्रसोस किया जो रब अय्यूब पर लाया था। हर एक ने उसे तसल्ली दे कर उसे एक सिक्का और सोने का एक छल्ला दे दिया।

12अब से रब ने अय्यूब को पहले की निस्बत कहीं ज़यादा बरकत दी। उसे 14,000 बकरियाँ, 6,000 ऊँट, बैलों की 1,000 जोड़ियाँ और 1,000 गधियाँ हासिल हुईं। 13नीज़, उस के मज़ीद सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 14उस ने बेटियों के यह नाम रखे : पहली का नाम यमीमा, दूसरी का क़सीअह और तीसरी का क़रन-हप्पूक। 15तमाम मुल्क में अय्यूब की बेटियों जैसी ख़ूबसूरत ख़वातीन पाई नहीं जाती थीं। अय्यूब ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत दी, ऐसी मिलकियत जो उन के भाइयों के दरमियान ही थी।

16अय्यूब मज़ीद 140 साल ज़िन्दा रहा, इस लिए वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त तक देख सका। 17फिर वह दराज़ ज़िन्दगी से आसूदा हो कर इन्तिकाल कर गया।

ज़बूर

पहली किताब 1-41

दो राहें

1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मश्वरे पर चलता, न गुनाहगारों की राह पर क्रदम रखता, और न तानाज़नों के साथ बैठता है

²बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता और दिन रात उसी पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करता रहता है।

³वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिन्द है। वक्रत पर वह फल लाता, और उस के पत्ते नहीं मुरझाते। जो कुछ भी करे उस में वह कामयाब है।

⁴बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की मानिन्द हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।

⁵इस लिए बेदीन अदालत में क़ाइम नहीं रहेंगे, और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में मक़ाम नहीं होगा।

⁶क्योंकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

अल्लाह का मसीह

2 अक्रवाम क्यूँ तैश में आ गई हैं? उम्मतें क्यूँ बेकार साज़िशें कर रही हैं?

²दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्मरान रब और उस के मसीह के खिलाफ़ जमा हो गए हैं।

³वह कहते हैं, "आओ, हम उन की ज़न्जीरों को तोड़ कर आज़ाद हो जाएँ, उन के रस्सों को दूर तक फैंक दें।"

⁴लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह हँसता है, रब उन का मज़ाक़ उड़ाता है।

⁵फिर वह गुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद गज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।

⁶वह फ़रमाता है, "मैं ने खुद अपने बादशाह को अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुकर्रर किया है!"

⁷आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उस ने मुझ से कहा, "तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।

⁸मुझ से माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम अक्रवाम अता करूँगा, दुनिया की इन्तिहा तक सब कुछ बख़्श दूँगा।

⁹तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश करेगा, उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह चकनाचूर करेगा।"

¹⁰चुनाँचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ दुनिया के हुक्मरानो, तर्बियत क्रबूल करो!

¹¹ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो, लरज़ते हुए खुशी मनाओ।

¹²बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह गुस्से हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ। क्योंकि वह एक दम तैश में आ जाता है। मुबारक हैं वह सब जो उस में पनाह लेते हैं।

सुबह को मदद के लिए दुआ

3 दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।

ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़यादा हैं, कितने लोग मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।

²मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, “अल्लाह इसे छुटकारा नहीं देगा।” (सिलाह)^a

³लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ाज़त करने वाली ढाल है। तू मेरी इज़ज़त है जो मेरे सर को उठाए रखता है।

⁴मैं बुलन्द आवाज़ से रब को पुकारता हूँ, और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है। (सिलाह)

⁵मैं आराम से लेट कर सो गया, फिर जाग उठा, क्योंकि रब ख़ुद मुझे सँभाले रखता है।

⁶उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते हैं।

⁷ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर! क्योंकि तू ने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़ मारा, तू ने बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।

⁸रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी क़ौम पर आए। (सिलाह)

शाम को मदद के लिए दुआ

4 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के ख़ुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मख़लसी रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!

²ऐ आदमज़ादो, मेरी इज़ज़त कब तक खाक में मिली जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल चीज़ों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश में रहोगे? (सिलाह)

³जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे पुकारूँगा।

⁴गुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। अपने बिस्तर पर लेट कर मुआमले पर सोच-बिचार करो, लेकिन दिल में, ख़ामोशी से। (सिलाह)

⁵रास्ती की कुर्बानियाँ पेश करो, और रब पर भरोसा रखो।

⁶बहुतेरे शक कर रहे हैं, “कौन हमारे हालात ठीक करेगा?” ऐ रब, अपने चेहरे का नूर हम पर चमका!

⁷तू ने मेरे दिल को खुशी से भर दिया है, ऐसी खुशी से जो उन के पास भी नहीं होती जिन के पास कस्रत का अनाज और अंगूर है।

⁸मैं आराम से लेट कर सो जाता हूँ, क्योंकि तू ही ऐ रब मुझे हिफ़ाज़त से बसने देता है।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

5 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!

²ऐ मेरे बादशाह, मेरे ख़ुदा, मदद के लिए मेरी चीखें सुन, क्योंकि मैं तुझ ही से दुआ करता हूँ।

^aसिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरिन में इस के मतलब के बारे में इत्तिफ़ाक़-ए-राय नहीं होती।

३ए रब, सुबह को तू मेरी आवाज़ सुनता है, सुबह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके जवाब का इन्तिज़ार करने लगता हूँ।

४क्योंकि तू ऐसा खुदा नहीं है जो बेदीनी से खुश हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।

५मगरूर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार से तू नफ़रत करता है।

६झूट बोलने वालों को तू तबाह करता, खूँखार और धोकेबाज़ से रब घिन खाता है।

७लेकिन मुझ पर तू ने बड़ी मेहरबानी की है, इस लिए मैं तेरे घर में दाखिल हो सकता, मैं तेरा खौफ़ मान कर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह के सामने सिज्दा करता हूँ।

८ए रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब न आएँ। अपनी राह को मेरे आगे हमवार कर।

९क्योंकि उन के मुँह से एक भी क़ाबिल-ए-एतिमाद बात नहीं निकलती। उन का दिल तबाही से भरा रहता, उन का गला खुली क़न्न है, और उन की ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।

१०ए रब, उन्हें उन के ग़लत काम का अज़्र दे। उन की साज़िशें उन की अपनी तबाही का बाइस बनें। उन्हें उन के मुतअद्दिद गुनाहों के बाइस निकाल कर मुत्तशिर कर दे, क्योंकि वह तुझ से सरकश हो गए हैं।

११लेकिन जो तुझ में पनाह लेते हैं वह सब खुश हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्योंकि तू उन्हें मद्दफूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार करने वाले तेरा जश्न मनाएँ।

१२क्योंकि तू ए रब, रास्तबाज़ को बरकत देता है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों तरफ़ हिफ़ाज़त करता है।

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला ज़बूर)

6 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ए रब, गुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे तम्बीह न कर।

२ए रब, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं निढाल हूँ। ए रब, मुझे शिफ़ा दे, क्योंकि मेरे आज़ा दहशतज़दा हैं।

३मेरी जान निहायत खौफ़ज़दा है। ए रब, तू कब तक देर करेगा?

४ए रब, वापस आ कर मेरी जान को बचा। अपनी शफ़क़त की खातिर मुझे छुटकारा दे।

५क्योंकि मुर्दा तुझे याद नहीं करता। पाताल में कौन तेरी सताइश करेगा?

६मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसूओं से पलंग गल गया है।

७गम के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे मुखालिफ़ों के हम्लों से वह ज़ाए होती जा रही हैं।

८ए बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्योंकि रब ने मेरी आह-ओ-बुका सुनी है।

९रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी दुआ रब को क़बूल है।

१०मेरे तमाम दुश्मनों की रुस्वाई हो जाएगी, और वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुड़ कर अचानक ही शर्मिन्दा हो जाएंगे।

इन्साफ़ के लिए दुआ

7 दाऊद का वह मातमी गीत जो उस ने कूश बिनयमीनी की बातों पर रब की तम्जीद में गाया।

ए रब मेरे खुदा, मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। मुझे उन सब से बचा कर छुटकारा दे जो मेरा तावक़ुब कर रहे हैं,

२वर्ना वह शेरबबर की तरह मुझे पाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचाने वाला कोई नहीं होगा।

३ए रब मेरे खुदा, अगर मुझ से यह कुछ सरज़द हुआ और मेरे हाथ कुसूरवार हों,

४अगर मैं ने उस से बुरा सुलूक किया जिस का मेरे साथ झगड़ा नहीं था या अपने दुश्मन को ख्वाह-म-ख्वाह लूट लिया हो

५तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़ कर मुझे पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे, मेरी इज़ज़त को खाक में मिलाए। (सिलाह)

६ए रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे दुश्मनों के तैश के खिलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी मदद करने के लिए जाग उठ! तू ने खुद अदालत का हुक्म दिया है।

७अक्रवाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब तू उन के ऊपर बुलन्दियों पर तख़्तनशीन हो जाए।

८रब अक्रवाम की अदालत करता है। ऐ रब, मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके मेरा इन्साफ़ कर।

९ए रास्त खुदा, जो दिल की गहराइयों को तह तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर और रास्तबाज़ को क़ाइम रख।

१०अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।

११अल्लाह आदिल मुन्सिफ़ है, ऐसा खुदा जो रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।

१२यक़ीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तान कर निशाना बांध रहा है।

१३लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते हुए तीर उस ने तय्यार कर रखे हैं उन की ज़द में वह खुद ही आ जाएगा।

१४देख, बुराई का बीज उस में उग आया है। अब वह शरारत से हामिला हो कर फिरता और झूट के बच्चे जन्म देता है।

१५लेकिन जो गढ़ा उस ने दूसरों को फंसाने के लिए खोद खोद कर तय्यार किया उस में खुद गिर पड़ा है।

१६वह खुद अपनी शरारत की ज़द में आएगा, उस का ज़ुल्म उस के अपने सर पर नाज़िल होगा।

१७मैं रब की सताइश करूँगा, क्योंकि वह रास्त है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

मख़लूक़ात का ताज

८ दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
तर्ज़ : गिस्तीत।

ऐ रब हमारे आका, तेरा नाम पूरी दुनिया में कितना शानदार है! तू ने आसमान पर ही अपना जलाल ज़ाहिर कर दिया है।

२अपने मुख़ालिफ़ों के जवाब में तू ने छोटे बच्चों और शीरख़वारों की ज़बान को तय्यार किया है ताकि वह तेरी कुव्वत से दुश्मन और कीनापर्वर को ख़त्म करें।

३जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ जो तेरी उंगलियों का काम है, चाँद और सितारों पर ग़ौर करता हूँ जिन को तू ने अपनी अपनी जगह पर क़ाइम किया

४तो इन्सान कौन है कि तू उसे याद करे या आदमज़ाद कि तू उस का खयाल रखे?

५तू ने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया,^१ तू ने उसे जलाल और इज़ज़त का ताज पहनाया।

^१एक और मुमकिनता तर्ज़ुमा : तू ने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया (देखिए इब्रानियों 2:7,9)।

६तू ने उसे अपने हाथों के कामों पर मुकर्रर किया, सब कुछ उस के पाँओ के नीचे कर दिया,

७ख्वाह भेड़-बकरियाँ हों ख्वाह गाय-बैल, जंगली जानवर,

८परिन्दे, मछलियाँ या समुन्दरी राहों पर चलने वाले बाक्री तमाम जानवर।

९ए रब हमारे आक्रा, पूरी दुनिया में तेरा नाम कितना शानदार है!

अल्लाह की कुदरत और इन्साफ़

९ दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।
तर्ज़ : अलामुत-लब्बीन।

ए रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे तमाम मौजिज़ात का बयान करूँगा।

२मैं शादमान हो कर तेरी खुशी मनाऊँगा।
ए अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तम्जीद में गीत गाऊँगा।

३जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर खा कर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।

४क्योंकि तू ने मेरा इन्साफ़ किया है, तू तख़्त पर बैठ कर रास्त मुन्सिफ़ साबित हुआ है।

५तू ने अक्रवाम को मलामत करके बेदीनों को हलाक कर दिया, उन का नाम-ओ-निशान हमेशा के लिए मिटा दिया है।

६दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मल्बे का ढेर बन गया है। तू ने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है, और उन की याद तक बाक्री नहीं रहेगी।

७लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और उस ने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा किया है।

८वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा, इन्साफ़ से उम्मतों का फ़ैसला करेगा।

९रब मज़्लूमों की पनाहगाह है, एक क़िला जिस में वह मुसीबत के वक्रत मफ़ूज़ रहते हैं।

१०ए रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर भरोसा रखते हैं। क्योंकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें तू ने कभी तर्क नहीं किया।

११रब की तम्जीद में गीत गाओ जो सिय्यून पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ सुनाओ जो उस ने किया है।

१२क्योंकि जो मक्कतूलों का इन्तिक्राम लेता है वह मुसीबतज़दों की चीखें नज़रअन्दाज़ नहीं करता।

१३ए रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तक्लीफ़ पर गौर कर जो नफ़रत करने वाले मुझे पहुँचा रहे हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से निकाल कर उठा ले

१४ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तू ने मेरे लिए किया है, ताकि मैं तेरी नजात की खुशी मनाऊँ।

१५अक्रवाम उस गढ़े में खुद गिर गई हैं जो उन्होंने ने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उन के अपने पाँओ उस जाल में फंस गए हैं जो उन्होंने ने दूसरों को फंसाने के लिए बिछा दिया था।

१६रब ने इन्साफ़ करके अपना इज़हार किया तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया। (हिग्गायून का तर्ज़। सिलाह)

१७बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।

१८क्योंकि वह ज़रूरतमन्दों को हमेशा तक नहीं भूलेगा, मुसीबतज़दों की उम्मीद अबद तक जाती नहीं रहेगी।

१९ए रब, उठ खड़ा हो ताकि इन्सान ग़ालिब न आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक्रवाम की अदालत की जाए।

२०ए रब, उन्हें दहशतज़दा कर ताकि अक्रवाम जान लें कि इन्सान ही हैं। (सिलाह)

इन्साफ़ के लिए दुआ

10 ऐ रब, तू इतना दूर क्यों खड़ा है? मुसीबत के वक़्त तू अपने आप को पोशीदा क्यों रखता है?

²बेदीन तकब्बुर से मुसीबतज़दों के पीछे लग गए हैं, और अब बेचारे उन के जालों में उलझने लगे हैं।

³क्योंकि बेदीन अपनी दिली आर्जूओं पर शेखी मारता है, और नाजाइज़ नफ़ा कमाने वाला लानत करके रब को हक़ीर जानता है।

⁴बेदीन गुरूर से फूल कर कहता है, "अल्लाह मुझ से जवाबतलबी नहीं करेगा।" उस के तमाम खयालात इस बात पर मब्नी हैं कि कोई ख़ुदा नहीं है।

⁵जो कुछ भी करे उस में वह कामयाब है। तेरी अदालतें उसे बुलन्दियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि वह अपने तमाम मुखालिफ़ों के खिलाफ़ फुंकारता है।

⁶दिल में वह सोचता है, "मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा, नस्ल-दर-नस्ल मुसीबत के पंजों से बचा रहूँगा।"

⁷उस का मुँह लानतों, फ़रेब और जुल्म से भरा रहता, उस की ज़बान नुब्रसान और आफ़त पहुँचाने के लिए तय्यार रहती है।

⁸वह आबादियों के क़रीब ताक में बैठ कर चुपके से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें बदकिस्मतों की घात में रहती हैं।

⁹जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रह कर वह मुसीबतज़दा पर हम्ला करने का मौक़ा ढूँडता है। जब उसे पकड़ ले तो उसे अपने जाल में घसीट कर ले जाता है।

¹⁰उस के शिकार पाश पाश हो कर झुक जाते हैं, बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की ज़द में आ कर गिर जाते हैं।

¹¹तब वह दिल में कहता है, "अल्लाह भूल गया है, उस ने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे यह कभी नज़र नहीं आएगा।"

¹²ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठा कर नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।

¹³बेदीन अल्लाह की तहक़ीर क्यों करे, वह दिल में क्यों कहे, "अल्लाह मुझ से जवाब तलब नहीं करेगा"?

¹⁴ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ देखता है। तू हमारी तक्लीफ़ और परेशानी पर ध्यान दे कर मुनासिब जवाब देगा। नाचार अपना मुआमला तुझ पर छोड़ देता है, क्योंकि तू यतीमों का मददगार है।

¹⁵शरीर और बेदीन आदमी का बाजू तोड़ दे! उस से उस की शरारतों की जवाबतलबी कर ताकि उस का पूरा असर मिट जाए।

¹⁶रब अबद तक बादशाह है। उस के मुल्क से दीगर अक्वाम गाइब हो गई हैं।

¹⁷ऐ रब, तू ने नाचारों की आर्जू सुन ली है। तू उन के दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान दे कर

¹⁸यतीमों और मज़लूमों का इन्साफ़ करेगा ताकि आइन्दा कोई भी इन्सान मुल्क में दहशत न फैलाए।

रब पर भरोसा

11 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

मैं ने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस तरह मुझ से कहते हो, "चल, परिन्दे की तरह फड़फड़ा कर पहाड़ों में भाग जा"?

²क्योंकि देखो, बेदीन कमान तान कर तीर को ताँत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठ कर इस इन्तिज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलने वालों पर चलाएँ।

³रास्तबाज़ क्या करे? उन्होंने ने तो बुन्याद को ही तबाह कर दिया है।

⁴लेकिन रब अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में है, रब का तख़्त आसमान पर है। वहाँ से वह

देखता है, वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती हैं।

⁵रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन और ज़ालिम से नफ़रत ही करता है।

⁶बेदीनों पर वह जलते हुए कोएले और शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसने वाली आँधी उन का हिस्सा होगी।

⁷क्योंकि रब रास्त है, और उसे इन्साफ़ प्यारा है। सिर्फ़ सीधी राह पर चलने वाले उस का चेहरा देखेंगे।

मदद के लिए दुआ

12 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्योंकि ईमानदार खन्म हो गए हैं। दियानतदार इन्सानों में से मिट गए हैं।

²आपस में सब झूट बोलते हैं। उन की ज़बान पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में कुछ और ही होता है।

³रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेखीबाज़ ज़बानों को काट डाले!

⁴वह उन सब को मिटा दे जो कहते हैं, "हम अपनी लाइक्र ज़बान के बाइस ताक़तवर हैं। हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा मालिक होगा? कोई नहीं!"

⁵लेकिन रब फ़रमाता है, "नाचारों पर तुम्हारे जुल्म की खबर और ज़रूरतमन्दों की कराहती आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठ कर उन्हें उन से छुटकारा दूँगा जो उन के खिलाफ़ फुकारते हैं।"

⁶रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़ की गई चाँदी की मानिन्द खालिस हैं।

⁷ऐ रब, तू ही उन्हें मट्फूज़ रखेगा, तू ही उन्हें अबद तक इस नस्ल से बचाए रखेगा,

⁸गो बेदीन आज़ादी से इधर उधर फिरते हैं, और इन्सानों के दरमियान कमीनापन का राज है।

मदद के लिए दुआ

13 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझ से छुपाए रखेगा?

²मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे, मेरा दिल कब तक रोज़-ब-रोज़ दुख उठाता रहे? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?

³ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डाल कर मेरी सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वर्ना मैं मौत की नींद सो जाऊँगा।

⁴तब मेरा दुश्मन कहेगा, "मैं उस पर ग़ालिब आ गया हूँ!" और मेरे मुखालिफ़ शादियाना बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।

⁵लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नजात देख कर ख़ुशी मनाएगा।

⁶मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि उस ने मुझ पर एहसान किया है।

बेदीन की हमक्रत

14 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

अहमक्र दिल में कहता है, "अल्लाह है ही नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें क़ाबिल-ए-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।

²रब ने आसमान से इन्सान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?

³अप्रसोस, सब सहीह राह से भटक गए, सब के सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

⁴क्या जो बदी करके मेरी क्रौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उन में से एक को भी समझ नहीं आती? वह तो रब को पुकारते ही नहीं।

⁵तब उन पर सख्त दृशत छा गई, क्योंकि अल्लाह रास्तबाज़ की नस्ल के साथ है।

⁶तुम नाचार के मन्सूबों को खाक में मिलाना चाहते हो, लेकिन रब खुद उस की पनाहगाह है।

⁷काश कोह-ए-सियून से इस्राईल की नजात निकले! जब रब अपनी क्रौम को बहाल करेगा तो याकूब खुशी के नारे लगाएगा, इस्राईल बाग बाग होगा।

कौन अल्लाह के हुज़ूर क्राइम रह सकता है?

15

दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर सकता है? किस को तेरे मुकद्दस पहाड़ पर रहने की इजाज़त है?

²वह जिस का चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ार कर दिल से सच बोलता है।

³ऐसा शख्स अपनी ज़बान से किसी पर तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़ियादती करता, न उस की बेइज़ज़ती करता है।

⁴वह मर्द को हकीर जानता लेकिन खुदातरस की इज़ज़त करता है। जो वादा उस ने क्रसम खा कर किया उसे पूरा करता है, ख्वाह उसे कितना ही नुकसान क्यूँ न पहुँचे।

⁵वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की रिश्तत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह

का हक़ मारना चाहता है। ऐसा शख्स कभी डॉवाँडोल नहीं होगा।

एतिमाद की दुआ

16 दाऊद का एक सुनहरा ज़बूर।
ऐ अल्लाह, मुझे मत्फूज़ रख, क्योंकि तुझ में मैं पनाह लेता हूँ।

²मैं ने रब से कहा, "तू मेरा आक्रा है, तू ही मेरी खुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।"

³मुल्क में जो मुकद्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं, उन ही को मैं पसन्द करता हूँ।

⁴लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते हैं उन की तकलीफ़ बढ़ती जाएगी। न मैं उन की खून की कुर्बानियों को पेश करूँगा, न उन के नामों का ज़िक्र तक करूँगा।

⁵ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा नसीब तेरे हाथ में है।

⁶जब कुरआ डाला गया तो मुझे खुशगवार ज़मीन मिल गई। यक्रीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसन्द है।

⁷मैं रब की सताइश करूँगा जिस ने मुझे मश्वरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।

⁸रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इस लिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

⁹इस लिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान खुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारेगा।

¹⁰क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुकद्दस को गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।

¹¹तू मुझे ज़िन्दगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर खुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मसरतें हासिल होती हैं।

बेगुनाह शख्स की दुआ

17

दाऊद की दुआ।

ऐ रब, इन्साफ़ के लिए मेरी फ़र्याद सुन, मेरी आह-ओ-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर गौर कर, क्योंकि वह फ़रेबदिह होंटों से नहीं निकलती।

२तेरे हुज़ूर मेरा इन्साफ़ किया जाए, तेरी आँखें उन बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।

३तू ने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा मुआइना किया है। तू ने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। क्योंकि मैं ने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं निकलेगी।

४जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैं ने खुद तेरे मुँह के फ़रमान के ताबे रह कर अपने आप को ज़ालिमों की राहों से दूर रखा है।

५मैं क्रदम-ब-क्रदम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँओ कभी न डगमगाए।

६ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनेगा। कान लगा कर मेरी दुआ को सुन।

७तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता है जो अपने मुखालिफ़ों से तुझ में पनाह लेते हैं, मोजिज़ाना तौर पर अपनी शफ़क़त का इज़हार कर।

८आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त कर, अपने परों के साथ में मुझे छुपा ले।

९उन बेदीनों से मुझे महफूज़ रख जो मुझ पर तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे घेर कर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।

१०वह सरकश हो गए हैं, उन के मुँह घमंड की बातें करते हैं।

११जिधर भी हम क्रदम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच जाते हैं। अब उन्होंने ने हमें घेर लिया है, वह घूर घूर कर हमें ज़मीन पर पटखने का मौक़ा ढूँड रहे हैं।

१२वह उस शेरबबर की मानिन्द हैं जो शिकार को फाड़ने के लिए तड़पता है, उस जवान शेर की मानिन्द जो ताक में बैठा है।

१३ऐ रब, उठ और उन का सामना कर, उन्हें ज़मीन पर पटख दे! अपनी तलवार से मेरी जान को बेदीनों से बचा।

१४ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इन से छुटकारा दे। उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका है। क्योंकि तू ने उन के पेट को अपने माल से भर दिया, बल्कि उन के बेटे भी सेर हो गए हैं और इतना बाकी है कि वह अपनी औलाद के लिए भी काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।

१५लेकिन मैं खुद रास्तबाज़ साबित हो कर तेरे चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जाग कर तेरी सूरत से सेर हो जाऊँगा।

दाऊद का फ़न्ह का गीत

18

रब के खादिम दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए यह गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और साऊल से बचाया। वह बोला,

ऐ रब मेरी कुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।

२रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिन्दा है। मेरा खुदा मेरी चटान है जिस में मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलन्द हिसार है।

३मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तम्जीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

४मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।

५पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।

६जब मैं मुसीबत में फंस गया तो मैं ने रब को पुकारा। मैं ने मदद के लिए अपने खुदा से फ़र्याद की तो उस ने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीखें उस के कान तक पहुँच गईं।

7 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, पहाड़ों की बुन्यादें रब के गज़ब के सामने काँपने और झूलने लगीं।

8 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उस के मुँह से भस्म करने वाले शोले और दहकते कोएले भड़क उठे।

9 आसमान को झुका कर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उस के पाँओ के नीचे अंधेरा ही अंधेरा था।

10 वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़ कर हवा के परों पर मंडलाने लगा।

11 उस ने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल खैमे की तरह अपने गिर्दागिर्द लगाए।

12 उस के हुज़ूर की तेज़ रौशनी से उस के बादल ओले और शोलाज़न कोएले ले कर निकल आए।

13 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और शोलाज़न कोएले बरसने लगे।

14 उस ने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर उधर गिरती गई तो उन में हलचल मच गई।

15 ऐ रब, तू ने डाँटा तो समुन्दर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं, जब तू गुस्से में गरजा तो तेरे दम के झोंकों से ज़मीन की बुन्यादें नज़र आईं।

16 बुलन्दियों पर से अपना हाथ बढ़ा कर उस ने मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खँच कर निकाल लाया।

17 उस ने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उन से जो मुझ से नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।

18 जिस दिन मैं मुसीबत में फंस गया उस दिन उन्होंने मुझ पर हम्ला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।

19 उस ने मुझे तंग जगह से निकाल कर छुटकारा दिया, क्योंकि वह मुझ से खुश था।

20 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र देता है। मेरे हाथ साफ़ हैं, इस लिए वह मुझे बरकत देता है।

21 क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने खुदा से दूर नहीं हुआ।

22 उस के तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैं ने उस के फ़रमानों को रद्द नहीं किया।

23 उस के सामने ही मैं बेइल्ज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।

24 इस लिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-साफ़ साबित हुआ।

25 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उस के साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइल्ज़ाम है उस के साथ तेरा सुलूक बेइल्ज़ाम है।

26 जो पाक है उस के साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कजरौ है उस के साथ तेरा सुलूक भी कजरवी का है।

27 क्योंकि तू पस्तहालों को नजात देता और मगरूर आँखों को पस्त करता है।

28 ऐ रब, तू ही मेरा चरागा जलाता, मेरा खुदा ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।

29 क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हम्ला कर सकता, अपने खुदा के साथ दीवार को फलाँग सकता हूँ।

30 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उस में पनाह ले उस की वह ढाल है।

31 क्योंकि रब के सिवा कौन खुदा है? हमारे खुदा के सिवा कौन चटान है?

32 अल्लाह मुझे कुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।

33 वह मेरे पाँओ को हिरन की सी फुरती अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलन्दियों पर खड़ा करता है।

³⁴वह मेरे हाथों को जंग करने की तर्बियत देता है। अब मेरे बाजू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

³⁵ऐ रब, तू ने मुझे अपनी नजात की ढाल बरख्श दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे क्राइम रखा, तेरी नर्मी ने मुझे बड़ा बना दिया है।

³⁶तू मेरे क्रदमों के लिए रास्ता बना देता है, इस लिए मेरे टखने नहीं डगमगाते।

³⁷मैं ने अपने दुश्मनों का ताक़ुक़ करके उन्हें पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म न हो गए।

³⁸मैं ने उन्हें यूँ पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिर कर मेरे पाँओ तले पड़े रहे।

³⁹क्यूँकि तू ने मुझे जंग करने के लिए कुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तू ने मेरे मुखालिफ़ों को मेरे सामने झुका दिया।

⁴⁰तू ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैं ने नफ़रत करने वालों को तबाह कर दिया।

⁴¹वह मदद के लिए चीखते चिल्लाते रहे, लेकिन बचाने वाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उस ने जवाब न दिया।

⁴²मैं ने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैं ने उन्हें कचरे की तरह गली में फैंक दिया।

⁴³तू ने मुझे क्रौम के झगड़ों से बचा कर अक्रवाम का सरदार बना दिया है। जिस क्रौम से मैं नावाक्रिफ़ था वह मेरी खिदमत करती है।

⁴⁴जूँ ही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते हैं। परदेसी दबक कर मेरी खुशामद करते हैं।

⁴⁵वह हिम्मत हार कर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।

⁴⁶रब ज़िन्दा है! मेरी चटान की तम्ज़ीद हो! मेरी नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!

⁴⁷वही ख़ुदा है जो मेरा इन्तिक्राम लेता, अक्रवाम को मेरे ताबे कर देता

⁴⁸और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यकीनन तू मुझे मेरे मुखालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।

⁴⁹ऐ रब, इस लिए मैं अक्रवाम में तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

⁵⁰क्यूँकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।

मख़्लूकात में अल्लाह का जलाल

19

दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं, आसमानी गुम्बद उस के हाथों का काम बयान करता है।

²एक दिन दूसरे को इत्तिला देता, एक रात दूसरी को खबर पहुँचाती है,

³लेकिन ज़बान से नहीं। गो उन की आवाज़ सुनाई नहीं देती,

⁴तो भी उन की आवाज़ निकल कर पूरी दुनिया में सुनाई देती, उन के अल्फ़ाज़ दुनिया की इन्तिहा तक पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के लिए ख़ैमा लगाया है।

⁵जिस तरह दूल्हा अपनी ख़्वाबगाह से निकलता है उसी तरह सूरज निकल कर पहलवान की तरह अपनी दौड़ दौड़ने पर खुशी मनाता है।

⁶आसमान के एक सिरे से चढ़ कर उस का चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती गर्मी से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं रहती।

⁷रब की शरीअत कामिल है, उस से जान में जान आ जाती है। रब के अह्काम क़ाबिल-

ए-एतिमाद हैं, उन से सादालौह दानिशमन्द हो जाता है।

⁸रब की हिदायात बा-इन्साफ़ हैं, उन से दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अह्काम पाक हैं, उन से आँखें चमक उठती हैं।

⁹रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक क़ाइम रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सब के सब रास्त हैं।

¹⁰वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा मर्गूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से ज़्यादा मीठे हैं।

¹¹उन से तेरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है, उन पर अमल करने से बड़ा अज़्र मिलता है।

¹²जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुई कौन उन्हें जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!

¹³अपने ख़ादिम को गुस्ताखों से मट्फूज़ रख ताकि वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं बेइल्ज़ाम हो कर संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।

¹⁴ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे दिल की सोच-बिचार तुझे पसन्द आए। तू ही मेरी चटान और मेरा छुड़ाने वाला है।

फ़लह के लिए दुआ

20 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के खुदा का नाम तुझे मट्फूज़ रखे।

²वह मक्दि़स से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून से तेरा सहारा बने।

³वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म होने वाली कुर्बानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)

⁴वह तेरे दिल की आर्जू पूरी करे, तेरे तमाम मन्सूबों को कामयाबी बख़्शे।

⁵तब हम तेरी नजात की खुशी मनाएँगे, हम अपने खुदा के नाम में फ़लह का झंडा गाड़ेंगे। रब तेरी तमाम गुज़ारिशों पूरी करे।

⁶अब मैं ने जान लिया है कि रब अपने मसह किए हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने मुक़द्दस आसमान से उस की सुन कर अपने दहने हाथ की कुदरत से उसे छुटकारा देगा।

⁷बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन हम रब अपने खुदा के नाम पर फ़ख़र करेंगे।

⁸हमारे दुश्मन झुक कर गिर जाएंगे, लेकिन हम उठ कर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

⁹ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी सुने जब हम मदद के लिए पुकारें।

21 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, बादशाह तेरी कुव्वत देख कर शादमान है, वह तेरी नजात की कितनी बड़ी खुशी मनाता है।

²तू ने उस की दिली ख्वाहिश पूरी की और इन्कार न किया जब उस की आर्जू ने होंटों पर अल्फ़ाज़ का रूप धारा। (सिलाह)

³क्यूँकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ ले कर उस से मिलने आया, तू ने उसे ख़ालिस सोने का ताज पहनाया।

⁴उस ने तुझ से ज़िन्दगी पाने की आर्जू की तो तू ने उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन कि उन की इन्तिहा नहीं।

⁵तेरी नजात से उसे बड़ी इज़ज़त हासिल हुई, तू ने उसे शान-ओ-शौकत से आरास्ता किया।

⁶क्यूँकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे अपने चेहरे के हुज़ूर ला कर निहायत खुश कर देता है।

7क्योंकि बादशाह रब पर एतिमाद करता है, अल्लाह तआला की शक्रत उसे डगमगाने से बचाएगी।

8तेरे दुश्मन तेरे क्रब्जे में आ जाएंगे, जो तुझ से नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।

9जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह भड़कती भट्टी की सी मुसीबत में फंस जाएंगे। रब अपने ग़ज़ब में उन्हें हड़प कर लेगा, और आग उन्हें खा जाएगी।

10तू उन की औलाद को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालेगा, इन्सानों में उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

11गो वह तेरे खिलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी उन के बुरे मन्सूबे नाकाम रहेंगे।

12क्योंकि तू उन्हें भगा कर उन के चेहरों को अपने तीरों का निशाना बना देगा।

13ऐ रब, उठ और अपनी कुदरत का इज़हार कर ताकि हम तेरी कुदरत की तम्जीद में साज़ बजा कर गीत गाएँ।

रास्तबाज़ का दुख

22

दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़: तुलू-ए-सुबह की हिरनी।

ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तू ने मुझे क्यों तर्क कर दिया है? मैं चीख रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात नज़र नहीं आती।

2ऐ मेरे खुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन तू जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन आराम नहीं पाता।

3लेकिन तू कुहूस है, तू जो इस्राईल की मदहसराई पर तख़्तनशीन होता है।

4तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब भरोसा रखा तो तू ने उन्हें रिहाई दी।

5जब उन्होंने मेरी मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतिमाद किया तो शर्मिन्दा न हुए।

6लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इन्सान नहीं समझा जाता। लोग मेरी बेइज़ज़ती करते, मुझे हकीर जानते हैं।

7सब मुझे देख कर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह मुँह बना कर तौबा तौबा करते और कहते हैं,

8“उस ने अपना मुआमला रब के सपुर्द किया है। अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे, क्योंकि वही उस से खुश है।”

9यकीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया। मैं अभी माँ का दूध पीता था कि तू ने मेरे दिल में भरोसा पैदा किया।

10जुँ ही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया गया। माँ के पेट से ही तू मेरा खुदा रहा है।

11मुझ से दूर न रह। क्योंकि मुसीबत ने मेरा दामन पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद करे।

12मुतअद्दि बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन के ताक़तवर साँड चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।

13मेरे खिलाफ़ उन्होंने अपने मुँह खोल दिए हैं, उस दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को फाड़ने के जोश में आ गया है।

14मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है, मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म के अन्दर मेरा दिल मोम की तरह पिघल गया है।

15मेरी ताक़त ठीकरे की तरह खुश्क हो गई, मेरी ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तू ने मुझे मौत की खाक में लिटा दिया है।

16कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जथ्थे ने मेरा इहाता किया है। उन्होंने मेरे हाथों और पाँवों को छेद डाला है।

17मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग घूर घूर कर मेरी मुसीबत से खुश होते हैं।

18वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे लिबास पर कुरआ डालते हैं।

¹⁹लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी कुव्वत, मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!

²⁰मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी ज़िन्दगी को कुत्ते के पंजे से छुड़ा।

²¹शेर के मुँह से मुझे मख़लसी दे, जंगली बैलों के सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तू ने मेरी सुनी है!

²²मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान करूँगा, जमाअत के दरमियान तेरी मदहसराई करूँगा।

²³तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की तम्जीद करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद, उस का एहतिराम करो! ऐ इस्राईल के तमाम फ़र्ज़न्दो, उस से ख़ौफ़ खाओ!

²⁴क्यूँकि न उस ने मुसीबतज़दा का दुख़ हकीर जाना, न उस की तकलीफ़ से घिन खाई। उस ने अपना मुँह उस से न छुपाया बल्कि उस की सुनी जब वह मदद के लिए चीखने-चिल्लाने लगा।

²⁵ऐ ख़ुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश करूँगा, ख़ुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी करूँगा।

²⁶नाचार जी भर कर खाएँगे, रब के तालिब उस की हम्द-ओ-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक ज़िन्दा रहें!

²⁷लोग दुनिया की इन्तिहा तक रब को याद करके उस की तरफ़ रुजू करेंगे। ग़ैरअक्वाम के तमाम खानदान उसे सिज्दा करेंगे।

²⁸क्यूँकि रब को ही बादशाही का इख्तियार हासिल है, वही अक्वाम पर हुकूमत करता है।

²⁹दुनिया के तमाम बड़े लोग उस के हुज़ूर खाएँगे और सिज्दा करेंगे। खाक में उतरने वाले सब उस के सामने झुक जाएंगे, वह सब जो अपनी ज़िन्दगी को ख़ुद क़ाइम नहीं रख सकते।

³⁰उस के फ़र्ज़न्द उस की खिदमत करेंगे। एक आने वाली नस्ल को रब के बारे में सुनाया जाएगा।

³¹हाँ, वह आ कर उस की रास्ती एक क़ौम को सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्यूँकि उस ने यह कुछ किया है।

अच्छा चरवाहा

23

दाऊद का ज़बूर।

रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न होगी।

²वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और पुरसुकून चश्मों के पास ले जाता है।

³वह मेरी जान को ताज़ादम करता और अपने नाम की खातिर रास्ती की राहों पर मेरी क्रियादत करता है।

⁴गो में तारीकतरीन वादी में से गुज़रूँ मैं मुसीबत से नहीं डरूँगा, क्यूँकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी और तेरा असा मुझे तसल्ली देते हैं।

⁵तू मेरे दुश्मनों के रू-ब-रू मेरे सामने मेज़ बिछा कर मेरे सर को तेल से तर-ओ-ताज़ा करता है। मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है।

⁶यक़ीनन भलाई और शफ़क़त उम्र भर मेरे साथ साथ रहेंगी, और मैं जीते जी रब के घर में सुकूनत करूँगा।

बादशाह का इस्तिज़्बाल

24

दाऊद का ज़बूर।

ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है, दुनिया और उस के बाशिन्दे उसी के हैं।
²क्यूँकि उस ने ज़मीन की बुन्याद समुन्दरों पर रखी और उसे दरयाओं पर क़ाइम किया।

³किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त है? कौन उस के मुक़द्दस मक़ाम में खड़ा हो सकता है?

4वह जिस के हाथ पाक और दिल साफ़ हैं, जो न फ़रेब का इरादा रखता, न क्रसम खा कर झूट बोलता है।

5वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात के खुदा से रास्ती मिलेगी।

6यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की मज़ी दरयाफ़्त करते, जो तेरे चेहरे के तालिब होते हैं, ऐ याकूब के खुदा। (सिलाह)

7ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क्रदीम दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाख़िल हो जाए।

8जलाल का बादशाह कौन है? रब जो क़वी और क़ादिर है, रब जो जंग में ज़ोर-आवर है।

9ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क्रदीम दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाख़िल हो जाए।

10जलाल का बादशाह कौन है? रब्ब-उल-अप्रवाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ

25

दाऊद का जबूर।

ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमन्द हूँ।

2ऐ मेरे खुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ। मुझे शर्मिन्दा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर शादियाना बजाएँ।

3क्योंकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह शर्मिन्दा नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफ़ा होते हैं वही शर्मिन्दा हो जाएंगे।

4ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने रास्तों की तालीम दे।

5अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राहनुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात का खुदा है। दिन भर मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।

6ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद कर जो तू क्रदीम ज़माने से करता आया है।

7ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफ़ा हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की खातिर और अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरा ख़याल रख।

8रब भला और आदिल है, इस लिए वह गुनाहगारों को सहीह राह पर चलने की तल्कीन करता है।

9वह फ़रोतनों की इन्साफ़ की राह पर राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की तालीम देता है।

10जो रब के अहद और अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी की राहों पर ले चलता है।

11ऐ रब, मेरा कुसूर संगीन है, लेकिन अपने नाम की खातिर उसे मुआफ़ कर।

12रब का ख़ौफ़ मानने वाला कहाँ है? रब खुद उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।

13तब वह खुशहाल रहेगा, और उस की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।

14जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने हमराज़ बना कर अपने अहद की तालीम देता है।

15मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँओ को जाल से निकाल लेता है।

16मेरी तरफ़ माइल हो जा, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मैं तन्हा और मुसीबतज़दा हूँ।

17मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी तकालीफ़ से रिहाई दे।

18मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डाल कर मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।

19देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह कितना जुल्म करके मुझ से नफ़रत करते हैं।

20मेरी जान को मटफूज़ रख, मुझे बचा! मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्योंकि मैं तुझ में पनाह लेता हूँ।

21 बेगुनाही और दियानतदारी मेरी पहरा-दारी करें, क्योंकि मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।
22 ऐ अल्लाह, फ़िद्या दे कर इस्राईल को उस की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

बेगुनाह का इफ़्कार और इल्तिजा
26 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरा इन्साफ़ कर, क्योंकि मेरा चाल-चलन बेकूसूर है। मैं ने रब पर भरोसा रखा है, और मैं डाँवडोल नहीं हो जाऊँगा।

2 ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आज़मा कर दिल की तह तक मेरा मुआइना कर।

3 क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।

4 न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।

5 मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है, बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।

6 ऐ रब, मैं अपने हाथ धो कर अपनी बेगुनाही का इज़हार करता हूँ। मैं तेरी कुर्बानगाह के गिर्द फिर कर

7 बुलन्द आवाज़ से तेरी हम्द-ओ-सना करता, तेरे तमाम मोजिज़ात का एलान करता हूँ।

8 ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़ है।

9 मेरी जान को मुझ से छीन कर मुझे गुनाहगारों में शामिल न कर! मेरी ज़िन्दगी को मिटा कर मुझे खूँखवारों में शुमार न कर,

10 ऐसे लोगों में जिन के हाथ शर्मनाक हरकतों से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्त ख़ाते हैं।

11 क्योंकि मैं बेगुनाह ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। फ़िद्या दे कर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!

12 मेरे पाँओ हमवार ज़मीन पर क्राइम हो गए हैं, और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

अल्लाह से रिफ़ाक़त
27 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं किस से डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं किस से दहशत खाऊँ?

2 जब शरीर मुझ पर हम्ला करें ताकि मुझे हड़प कर लें, जब मेरे मुखालिफ़ और दुश्मन मुझ पर टूट पड़ें तो वह ठोकर खा कर गिर जाएंगे।

3 गो फ़ौज़ मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं खाएगा, गो मेरे खिलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा भरोसा क्राइम रहेगा।

4 रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात चाहता हूँ। यह कि जीते जी रब के घर में रह कर उस की शफ़क़त से लुत्फ़अन्दोज़ हो सकूँ, कि उस की सुकूनतगाह में ठहर कर महव-ए-खयाल रह सकूँ।

5 क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा लेगा, मुझे उठा कर ऊँची चटान पर रखेगा।

6 अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलन्द हूँगा, अगरचे उन्होंने मुझे घेर रखा है। मैं उस के ख़ैमे में खुशी के नारे लगा कर कुर्बानियाँ पेश करूँगा, साज़ बजा कर रब की मदहूसराई करूँगा।

7 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ, मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।

8 मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तू ने खुद फ़रमाया, “मेरे चेहरे के तालिब रहो!” ऐ रब, मैं तेरे ही चेहरे का तालिब रहा हूँ।

9 अपने चेहरे को मुझ से छुपाए न रख, अपने खादिम को गुस्से से अपने हुज़ूर से न

निकाल। क्योंकि तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के खुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न कर।

¹⁰क्योंकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है, लेकिन रब मुझे कबूल करके अपने घर में लाएगा।

¹¹ऐ रब, मुझे अपनी राह की तर्बियत दे, हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने दुश्मनों से महफूज़ रहूँ।

¹²मुझे मुखालिफ़ों के लालच में न आने दे, क्योंकि झूठे गवाह मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं जो तशहूद करने के लिए तय्यार हैं।

¹³लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं ज़िन्दों के मुल्क में रह कर रब की भलाई देखूँगा।

¹⁴रब के इन्तिज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर हो, और रब के इन्तिज़ार में रह!

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शुक्रगुज़ारी

28 दाऊद का जबूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी चटान, खामोशी से अपना मुँह मुझ से न फेर। क्योंकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में उतरने वालों की मानिन्द हो जाऊँगा।

²मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीखते चिल्लाते तुझ से मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी सुकूनतगाह के मुकद्दसतरीन कमरे की तरफ़ उठाता हूँ।

³मुझे उन बेदीनों के साथ घसीट कर सज़ा न दे जो ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों से बज़ाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में उन के खिलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधते हैं।

⁴उन्हें उन की हरकतों और बुरे कामों का बदला दे। जो कुछ उन के हाथों से सरज़द हुआ है उस की पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही नुक्सान पहुँचा दे जितना उन्होंने दूसरों को पहुँचाया है।

^aसिर्यून हर्मून का दूसरा नाम है।

⁵क्योंकि न वह रब के आमाल पर, न उस के हाथों के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें ढा देगा और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

⁶रब की तम्जीद हो, क्योंकि उस ने मेरी इल्तिजा सुन ली।

⁷रब मेरी कुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे दिल ने भरोसा रखा, उस से मुझे मदद मिली है। मेरा दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गा कर उस की सताइश करता हूँ।

⁸रब अपनी क्रौम की कुव्वत और अपने मसह किए हुए खादिम का नजातबख़्श क़िला है।

⁹ऐ रब, अपनी क्रौम को नजात दे! अपनी मीरास को बरकत दे! उन की गल्लाबानी करके उन्हें हमेशा तक उठाए रख।

रब के जलाल की तम्जीद

29 दाऊद का जबूर।
ऐ अल्लाह के फ़र्ज़न्दो, रब की तम्जीद करो! रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो!

²रब के नाम को जलाल दो। मुकद्दस लिबास से आरास्ता हो कर रब को सिज्दा करो।

³रब की आवाज़ समुन्दर के ऊपर गूँजती है। जलाल का खुदा गरजता है, रब गहरे पानी के ऊपर गरजता है।

⁴रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़ पुरजलाल है।

⁵रब की आवाज़ देवदार के दरख्तों को तोड़ डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख्तों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।

⁶वह लुबनान को बछड़े और कोह-ए-सिर्यून^a को जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।

7रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।

8रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है, रब दशत-ए-क्रादिस को काँपने देता है।

9रब की आवाज़ सुन कर हिरनी दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं, "जलाल!"

10रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है, रब बादशाह की हैसियत से अबद तक तख़्तनशीन है।

11रब अपनी क्रौम को तक्रवियत देगा, रब अपने लोगों को सलामती की बरकत देगा।

मौत से छुटकारे पर शुक्रगुज़ारी

30 दाऊद का ज़बूर। रब के घर की मख़सूसियत के मौक़े पर गीत।

ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तू ने मुझे गहराइयों में से खँच निकाला। तू ने मेरे दुश्मनों को मुझ पर बग़ालें बजाने का मौक़ा नहीं दिया।

2ऐ रब मेरे खुदा, मैं ने चीखते चिल्लाते हुए तुझ से मदद माँगी, और तू ने मुझे शिफ़ा दी।

3ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया, तू ने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से बचाया है।

4ऐ ईमानदारो, साज़ बजा कर रब की तारीफ़ में गीत गाओ। उस के मुक़द्दस नाम की हम्द-ओ-सना करो।

5क्योंकि वह लम्हा भर के लिए गुस्से होता, लेकिन ज़िन्दगी भर के लिए मेहरबानी करता है। गो शाम को रोना पड़े, लेकिन सुबह को हम खुशी मनाएँगे।

6जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, "मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा।"

7ऐ रब, जब तू मुझ से खुश था तो तू ने मुझे मज़बूत पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तू ने

अपना चेहरा मुझ से छुपा लिया तो मैं सख़्त घबरा गया।

8ऐ रब, मैं ने तुझे पुकारा, हाँ खुदावन्द से मैं ने इल्तिजा की,

9"क्या फ़ाइदा है अगर मैं हलाक हो कर मौत के गढ़े में उतर जाऊँ? क्या खाक तेरी सताइश करेगी? क्या वह लोगों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताएगी?"

10ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ रब, मेरी मदद करने के लिए आ!"

11तू ने मेरा मातम खुशी के नाच में बदल दिया, तू ने मेरे मातमी कपड़े उतार कर मुझे शादमानी से मुलब्बस किया।

12क्योंकि तू चाहता है कि मेरी जान खामोश न हो बल्कि गीत गा कर तेरी तम्जीद करती रहे। ऐ रब मेरे खुदा, मैं अबद तक तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

31 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है। मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के मुताबिक़ मुझे बचा।

2अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही मुझे छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज हो, पहाड़ का क़िला जिस में मैं पनाह ले कर नजात पा सकूँ।

3क्योंकि तू मेरी चटान, मेरा क़िला है, अपने नाम की खातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क्रियादत कर।

4मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने के लिए चुपके से बिछाया गया है। क्योंकि तू ही मेरी पनाहगाह है।

5मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब, ऐ वफ़ादार खुदा, तू ने फ़िद्या दे कर मुझे छुड़ाया है!

6 मैं उन से नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों से लिपटे रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।

7 मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़क़त की खुशी मनाऊँगा, क्योंकि तू ने मेरी मुसीबत देख कर मेरी जान की परेशानी का ख़याल किया है।

8 तू ने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि मेरे पाँओ को खुले मैदान में क्राइम कर दिया है।

9 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरी जान और जिस्म गल रहे हैं।

10 मेरी ज़िन्दगी दुख की चक्की में पिस रही है, मेरे साल आहें भरते भरते जाए हो रहे हैं। मेरे कुसूर की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी हड्डियाँ गलने सड़ने लगी हैं।

11 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ बल्कि मेरे हमसाय भी मुझे लान-तान करते, मेरे जानने वाले मुझ से दहशत खाते हैं। गली में जो भी मुझे देखे मुझ से भाग जाता है।

12 मैं मुर्दों की मानिन्द उन की याददाश्त से मिट गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फेंक दिया गया है।

13 बहुतों की अप्रवाहें मुझ तक पहुँच गई हैं, चारों तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह मिल कर मेरे खिलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे क़त्ल करने के मन्सूबे बांध रहे हैं।

14 लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मैं कहता हूँ, “तू मेरा खुदा है!”

15 मेरी तक्रदीर^a तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ से बचा, उन से जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।

16 अपने चेहरे का नूर अपने खादिम पर चमका, अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।

17 ऐ रब, मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्योंकि मैं ने तुझे पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह काले हो जाएँ, वह पाताल में उतर कर चुप हो जाएँ।

18 उन के फ़रेबदिह होंट बन्द हो जाएँ, क्योंकि वह तकब्बुर और हिक्कारत से रास्तबाज़ के खिलाफ़ कुफ़्र बकते हैं।

19 तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उन के लिए तय्यार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे उन्हें दिखाता है जो इन्सानों के सामने से तुझ में पनाह लेते हैं।

20 तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों के हम्लों से छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में ला कर इल्ज़ामतराश ज़बानों से मट्फ़ूज़ रखता है।

21 रब की तम्ज़ीद हो, क्योंकि जब शहर का मुहासरा हो रहा था तो उस ने मोज़िज़ाना तौर पर मुझ पर मेहरबानी की।

22 उस वक़्त मैं घबरा कर बोला, “हाय, मैं तेरे हुज़ूर से मुन्क़रते हो गया हूँ!” लेकिन जब मैं ने चीखते चिल्लाते हुए तुझ से मदद माँगी तो तू ने मेरी इल्तिजा सुन ली।

23 ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उस से मुहब्बत रखो! रब वफ़ादारों को मट्फ़ूज़ रखता, लेकिन मग़रूरों को उन के रवय्ये का पूरा अज़्र देगा।

24 चुनाँचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो रब के इन्तिज़ार में हो।

मुआफ़ी की बरकत (तौबा का दूसरा ज़बूर)

32 दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
मुबारक है वह जिस के जराइम मुआफ़ किए गए, जिस के गुनाह ढाँपे गए हैं।

2 मुबारक है वह जिस का गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा और जिस की रूह में फ़रेब नहीं है।

^aलफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरे औक्रात।

³जब मैं चुप रहा तो दिन भर आहें भरने से मेरी हड्डियाँ गलने लगीं।

⁴क्योंकि दिन रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले पिसता रहा, मेरी ताक़त गोया मौसम-ए-गर्मा की झुलसती तपिश में जाती रही। (सिलाह)

⁵तब मैं ने तेरे सामने अपना गुनाह तस्लीम किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, "मैं रब के सामने अपने जराइम का इफ़्कार करूँगा।" तब तू ने मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)

⁶इस लिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझ से दुआ करें जब तू मिल सकता है। यक़ीनन जब बड़ा सैलाब आए तो उन तक नहीं पहुँचेगा।

⁷तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से मद्फूज़ रखता, मुझे नजात के नग़मों से घेर लेता है। (सिलाह)

⁸"मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मश्वरा दे कर तेरी देख-भाल करूँगा।

⁹नासमझ घोड़े या खच्चर की मानिन्द न हो, जिन पर क़ाबू पाने के लिए लगाम और दहाने की ज़रूरत है, वरना वह तेरे पास नहीं आएँगे।"

¹⁰बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी शफ़क़त से घेरे रखता है।

¹¹ऐ रास्तबाज़ो, रब की खुशी में जश्र मनाओ! ऐ तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे लगाओ!

अल्लाह की हुकूमत और मदद की तारीफ़

33 ऐ रास्तबाज़ो, रब की खुशी मनाओ! क्योंकि मुनासिब है कि सीधी राह पर चलने वाले उस की सताइश करें।

²सरोद बजा कर रब की हम्द-ओ-सना करो। उस की तम्जीद में दस तारों वाला साज़ बजाओ।

³उस की तम्जीद में नया गीत गाओ, महारत से साज़ बजा कर खुशी के नारे लगाओ।

⁴क्योंकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम वफ़ादारी से करता है।

⁵उसे रास्तबाज़ी और इन्साफ़ प्यारे हैं, दुनिया रब की शफ़क़त से भरी हुई है।

⁶रब के कहने पर आसमान खलक हुआ, उस के मुँह के दम से सितारों का पूरा लश्कर वुजूद में आया।

⁷वह समुन्दर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता, पानी की गहराइयों को गोदामों में मद्फूज़ रखता है।

⁸कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के तमाम बाशिन्दे उस से दहशत खाएँ।

⁹क्योंकि उस ने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया, उस ने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ाइम हुआ।

¹⁰रब अक्वाम का मन्सूबा नाकाम होने देता, वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।

¹¹लेकिन रब का मन्सूबा हमेशा तक कामयाब रहता, उस के दिल के इरादे पुशत-दर-पुशत क़ाइम रहते हैं।

¹²मुबारक है वह क़ौम जिस का खुदा रब है, वह क़ौम जिसे उस ने चुन कर अपनी मीरास बना लिया है।

¹³रब आसमान से नज़र डाल कर तमाम इन्सानों का मुलाहज़ा करता है।

¹⁴अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिन्दों का मुआइना करता है।

¹⁵जिस ने उन सब के दिलों को तश्कील दिया वह उन के तमाम कामों पर ध्यान देता है।

16बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती, और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।

17घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं देती।

18यक़ीनन रब की आँख़ उन पर लगी रहती है जो उस का ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के इन्तिज़ार में रहते हैं,

19कि वह उन की जान मौत से बचाए और काल में मत्फूज़ रखे।

20हमारी जान रब के इन्तिज़ार में है। वही हमारा सहारा, हमारी ढाल है।

21हमारा दिल उस में खुश है, क्योंकि हम उस के मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।

22ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्योंकि हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

34

दाऊद का यह ज़बूर उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब उस ने फ़िलिस्ती बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप भर लिया। यह देख कर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।

हर वक़्त मैं रब की तम्ज़ीद करूँगा, उस की हम्द-ओ-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।

2मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबतज़दा यह सुन कर खुश हो जाएँ।

3आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम मिल कर उस का नाम सरबुलन्द करें।

4मैं ने रब को तलाश किया तो उस ने मेरी सुनी। जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सब से उस ने मुझे रिहाई दी।

5जिन की आँखें उस पर लगी रहीं वह खुशी से चमकेंगे, और उन के मुँह शर्मिन्दा नहीं होंगे।

6इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी, उस ने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।

7जो रब का ख़ौफ़ मानें उन के इर्दगिर्द उस का फ़रिश्ता खैमाज़न हो कर उन को बचाए रखता है।

8रब की भलाई का तजरिबा करो। मुबारक है वह जो उस में पनाह ले।

9ऐ रब के मुक़द्दसीन, उस का ख़ौफ़ मानो, क्योंकि जो उस का ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।

10जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमन्द और भूके होते हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी।

11ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें रब के ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।

12कौन मज़े से ज़िन्दगी गुज़ारना और अच्छे दिन देखना चाहता है?

13वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।

14वह बुराई से मुँह फेर कर नेक काम करे, सुलह-सलामती का तालिब हो कर उस के पीछे लगा रहे।

15रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं, और उस के कान उन की इल्तिजाओं की तरफ़ माइल हैं।

16लेकिन रब का चेहरा उन के खिलाफ़ है जो ग़लत काम करते हैं। उन का ज़मीन पर नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

17जब रास्तबाज़ फ़र्याद करें तो रब उन की सुनता, वह उन्हें उन की तमाम मुसीबत से छुटकारा देता है।

18रब शिकस्तादिलों के करीब होता है, वह उन्हें रिहाई देता है जिन की रूह को खाक में कुचला गया हो।

19रास्तबाज़ की मुतअद्दिद तकालीफ़ होती हैं, लेकिन रब उसे उन सब से बचा लेता है।

20वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।

21बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज़्र मिलेगा।

22लेकिन रब अपने खादिमों की जान का फ़िद्दा देगा। जो भी उस में पनाह ले उसे सज़ा नहीं मिलेगी।

शरीरों के हमलों से रिहाई के लिए दुआ

35 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, उन से झगड़ जो मेरे साथ झगड़ते हैं, उन से लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।

2लम्बी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठ कर मेरी मदद करने आ।

3नेज़े और बरछी को निकाल कर उन्हें रोक दे जो मेरा ताक़ुब कर रहे हैं! मेरी जान से फ़रमा, "मैं तेरी नजात हूँ!"

4जो मेरी जान के लिए कोशों हैं उन का मुँह काला हो जाए, वह रसवा हो जाएँ। जो मुझे मुसीबत में डालने के मन्सूबे बांध रहे हैं वह पीछे हट कर शर्मिन्दा हों।

5वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।

6उन का रास्ता तारीक और फिसलना हो जब रब का फ़रिश्ता उन के पीछे पड़ जाए।

7क्योंकि उन्होंने ने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढ़ा खोदा है।

8इस लिए तबाही अचानक ही उन पर आ पड़े, पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्होंने ने चुपके से बिछाया उस में वह खुद उलझ जाएँ, जिस गढ़े को उन्होंने ने खोदा उस में वह खुद गिर कर तबाह हो जाएँ।

9तब मेरी जान रब की खुशी मनाएगी और उस की नजात के बाइस शादमान होगी।

10मेरे तमाम आज्ञा कह उठेंगे, "ऐ रब, कौन तेरी मानिन्द है? कोई भी नहीं! क्योंकि तू ही मुसीबतज़दा को ज़बरदस्त आदमी से

छुटकारा देता, तू ही नाचार और ग़रीब को लूटने वाले के हाथ से बचा लेता है।"

11ज़ालिम गवाह मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हो रहे हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर रहे हैं जिन से मैं वाकिफ़ ही नहीं।

12वह मेरी नेकी के इवज़ मुझे नुक़सान पहुँचा रहे हैं। अब मेरी जान तन-ए-तनहा है।

13जब वह बीमार हुए तो मैं ने टाट ओढ़ कर और रोज़ा रख कर अपनी जान को दुख दिया। काश मेरी दुआ मेरी गोद में वापस आए!

14मैं ने यूँ मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या भाई हो। मैं मातमी लिबास पहन कर यूँ खाक में झुक गया जैसे अपनी माँ का जनाज़ा हो।

15लेकिन जब मैं खुद ठोकर खाने लगा तो वह खुश हो कर मेरे खिलाफ़ जमा हुए। वह मुझ पर हम्ला करने के लिए इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।

16मुसलसल कुफ़ बक बक कर वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे खिलाफ़ दाँत पीसते थे।

17ऐ रब, तू कब तक खामोशी से देखता रहेगा? मेरी जान को उन की तबाहकुन हरकतों से बचा, मेरी ज़िन्दगी को जवान शेरों से छुटकारा दे।

18तब मैं बड़ी जमाअत में तेरी सताइश और बड़े हुजूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।

19उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भों चढ़ाने न दे जो बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं।

20क्योंकि वह ख़ैर और सलामती की बातें नहीं करते बल्कि उन के खिलाफ़ फ़रेबदिह मन्सूबे बांधते हैं जो अम्न और सुकून से मुल्क में रहते हैं।

21वह मुँह फाड़ कर कहते हैं, "लो जी, हम ने अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!"

22ए रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है।
खामोश न रह! ऐ रब, मुझ से दूर न हो।

23ए रब मेरे खुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में
उठ कर उन से लड़!

24ए रब मेरे खुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक़
मेरा इन्साफ़ कर। उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने
न दे।

25वह दिल में न सोचें, "लो जी, हमारा
इरादा पूरा हुआ है!" वह न बोलें, "हम ने
उसे हड़प कर लिया है।"

26जो मेरा नुक्सान देख कर खुश हुए उन
सब का मुँह काला हो जाए, वह शर्मिन्दा हो
जाएँ। जो मुझे दबा कर अपने आप पर फ़ख़र
करते हैं वह शर्मिन्दगी और रुस्वाई से मुलब्स
हो जाएँ।

27लेकिन जो मेरे इन्साफ़ के आरज़ूमन्द हैं
वह खुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें,
"रब की बड़ी तारीफ़ हो, जो अपने खादिम
की ख़ैरियत चाहता है।"

28तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी,
वह सारा दिन तेरी तम्जीद करती रहेगी।

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

36 रब के खादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री
के राहनुमा के लिए।

बदकारी बेदीन के दिल ही में उस से बात
करती है। उस की आँखों के सामने अल्लाह
का ख़ौफ़ नहीं होता,

2क्यूँकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का
बाइस है कि उसे कुसूरवार पाया गया, कि वह
नफ़रत करता है।

3उस के मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता
है, वह समझदार होने और नेक काम करने से
बाज़ आया है।

4अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मन्सूबे
बांधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा
रहता और बुराई को मुस्तरद नहीं करता।

5ए रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी
वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।

6तेरी रास्ती बुलन्दतरीन पहाड़ों की
मानिन्द, तेरा इन्साफ़ समुन्दर की गहराइयों
जैसा है। ऐ रब, तू इन्सान-ओ-हैवान की मदद
करता है।

7ए अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेश-
क्रीमत है! आदमज़ाद तेरे परों के साथ में
पनाह लेते हैं।

8वह तेरे घर के उम्दा खाने से तर-ओ-ताज़ा
हो जाते हैं, और तू उन्हें अपनी खुशियों की
नदी में से पिलाता है।

9क्यूँकि ज़िन्दगी का सरचश्मा तेरे ही पास
है, और हम तेरे नूर में रह कर नूर का मुशाहदा
करते हैं।

10अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो
तुझे जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल
से दियानतदार हैं।

11मगरूरों का पाँओ मुझ तक न पहुँचे,
बेदीनों का हाथ मुझे बेघर न बनाए।

12देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन
पर पटख दिया गया है, और वह दुबारा कभी
नहीं उठेंगे।

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

37 दाऊद का ज़बूर।
शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा,
बदकारों पर रशक न कर।

2क्यूँकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा
जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख
जाएंगे।

3रब पर भरोसा रख कर भलाई कर, मुल्क
में रह कर वफ़ादारी की परवरिश कर।

4रब से लुत्फ़अन्दोज़ हो तो जो तेरा दिल
चाहे वह तुझे देगा।

5अपनी राह रब के सपुर्द कर। उस पर
भरोसा रख तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।

६तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू होने देगा और तेरा इन्साफ़ दोपहर की रौशनी की तरह चमकने देगा।

७रब के हुज़ूर चुप हो कर सब्र से उस का इन्तिज़ार कर। बेकरार न हो अगर साज़िशें करने वाला कामयाब हो।

८ख़फ़ा होने से बाज़ आ, गुस्से को छोड़ दे। रज़ीदा न हो, वर्ना बुरा ही नतीजा निकलेगा।

९क्योंकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से उम्मीद रखने वाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।

१०मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नाम-ओ-निशान मिट जाएगा। तू उस का खोज लगाएगा, लेकिन कहीं नहीं पाएगा।

११लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पा कर बड़े अमन और सुकून से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे।

१२बेशक बेदीन दाँत पीस पीस कर रास्तबाज़ के खिलाफ़ साज़िशें करता रहे।

१३लेकिन रब उस पर हँसता है, क्योंकि वह जानता है कि उस का अन्जाम करीब ही है।

१४बेदीनों ने तलवार को खँचा और कमान को तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरत-मन्दों को गिरा दें और सीधी राह पर चलने वालों को क्रत्ल करें।

१५लेकिन उन की तलवार उन के अपने दिल में घोंपी जाएगी, उन की कमान टूट जाएगी।

१६रास्तबाज़ को जो थोड़ा बहुत हासिल है वह बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।

१७क्योंकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।

१८रब बेइल्ज़ामों के दिन जानता है, और उन की मौरूसी मिलकियत हमेशा के लिए क्राइम रहेगी।

१९मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे, काल भी पड़े तो सेर होंगे।

२०लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे, धुएँ की तरह गाइब हो जाएंगे।

२१बेदीन क़र्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता, लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़र्याज़ी से देता है।

२२क्योंकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

२३अगर किसी के पाँओ जम जाएँ तो यह रब की तरफ़ से है। ऐसे शख्स की राह को वह पसन्द करता है।

२४अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा, क्योंकि रब उस के हाथ का सहारा बना रहेगा।

२५मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन मैं ने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क किया गया या उस के बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।

२६वह हमेशा मेहरबान और क़र्ज़ देने के लिए तय्यार है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।

२७बुराई से बाज़ आ कर भलाई कर। तब तू हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,

२८क्योंकि रब को इन्साफ़ प्यारा है, और वह अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा। वह अबद तक मट्फूज़ रहेंगे जबकि बेदीनों की औलाद का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

२९रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पा कर उस में हमेशा बसेंगे।

३०रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत बयान करता और उस की ज़बान से इन्साफ़ निकलता है।

३१अल्लाह की शरीअत उस के दिल में है, और उस के क़दम कभी नहीं डगमगाएँगे।

३२बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठ कर उसे मार डालने का मौक़ा ढूँडता है।

३३लेकिन रब रास्तबाज़ को उस के हाथ में नहीं छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने देगा।

34रब के इन्तिज़ार में रह और उस की राह पर चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क का वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की हलाकत देखेगा।

35मैं ने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को देखा जो फलते फूलते देवदार के दरख्त की तरह आसमान से बातें करने लगा।

36लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से गुज़रा तो वह था नहीं। मैं ने उस का खोज लगाया, लेकिन कहीं न मिला।

37बेइल्ज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार पर गौर कर, क्योंकि आखिरकार उसे अमन और सुकून हासिल होगा।

38लेकिन मुजरिम मिल कर तबाह हो जाएंगे, और बेदीनों को आखिरकार रू-ए-ज़मीन पर से मिटाया जाएगा।

39रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है, मुसीबत के वक़्त वही उन का क़िला है।

40रब ही उन की मदद करके उन्हें छुटकारा देगा, वही उन्हें बेदीनों से बचा कर नजात देगा। क्योंकि उन्होंने ने उस में पनाह ली है।

सज़ा से बचने की इत्तिजा (तौबा का तीसरा ज़बूर)

38 दाऊद का ज़बूर। याददाश्त के लिए।
ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे, क्रहर में मुझे तम्बीह न कर!

2क्योंकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा हाथ मुझ पर भारी है।

3तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने लगी हैं।

4क्योंकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया हूँ, वह नाक्राबिल-ए-बर्दाश्त बोझ बन गए हैं।

5मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख्मों से बदबू आने लगी, वह गलने लगे हैं।

6मैं कुबड़ा बन कर खाक में दब गया हूँ, पूरा दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।

7मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म बीमार है।

8मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के अज़ाब के बाइस मैं चीखता चिल्लाता हूँ।

9ऐ रब, मेरी तमाम आर्जू तेरे सामने है, मेरी आहें तुझ से पोशीदा नहीं रहतीं।

10मेरा दिल ज़ोर से धड़कता, मेरी ताक़त जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी जाती रही है।

11मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देख कर मुझ से गुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार दूर खड़े रहते हैं।

12मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे और सारा सारा दिन फ़रेबदिह मन्सूबे बांध रहे हैं।

13और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता। मैं गूंगे की मानिन्द हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।

14मैं ऐसा शख्स बन गया हूँ जो न सुनता, न जवाब में एतिराज़ करता है।

15क्योंकि ऐ रब, मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ। ऐ रब मेरे खुदा, तू ही मेरी सुनेगा।

16मैं बोला, "ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़सान देख कर बग़लें बजाएँ, वह मेरे पाँओ के डगमगाने पर मुझे दबा कर अपने आप पर फ़ख़र करें।"

17क्योंकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत मुतवातिर मेरे सामने रहती है।

18चुनाँचे मैं अपना क़सूर तस्लीम करता हूँ, मैं अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ।

19मेरे दुश्मन ज़िन्दा और ताक़तवर हैं, और जो बिलावजह मुझ से नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।

²⁰वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इस लिए मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।

²¹ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझ से दूर न रह!

²²ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

इन्सान के फ़ानी होने के पेश-ए-नज़र इल्तिजा

39

दाऊद का ज़बूर। यदूतून के लिए। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

मैं बोला, "मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन मेरे सामने रहे उस वक़्त तक अपने मुँह को लगाम दिए रहूँगा।"

²मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर रह कर खामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।

³मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते कराहते मेरे अन्दर बेचैनी की आग सी भड़क उठी। तब बात ज़बान पर आ गई,

⁴"ऐ रब, मुझे मेरा अन्जाम और मेरी उम्र की हद दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।

⁵देख, मेरी ज़िन्दगी का दौरानिया तेरे सामने लम्हा भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़दीक कुछ भी नहीं है। हर इन्सान दम भर का ही है, ख्वाह वह कितनी ही मज़बूती से खड़ा क्यूँ न हो। (सिलाह)

⁶जब वह इधर उधर घूमे फिरे तो साया ही है। उस का शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं कि बाद में किस के क़ब्ज़े में आएगी!"

⁷चुनाँचे ऐ रब, मैं किस के इन्तिज़ार में रहूँ? तू ही मेरी वाहिद उम्मीद है!

⁸मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक़ को मेरी रुस्वाई करने न दे।

⁹मैं खामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह नहीं खोलता, क्यूँकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ से हुआ है।

¹⁰अपना अज़ाब मुझ से दूर कर! तेरे हाथ की ज़र्बों से मैं हलाक हो रहा हूँ।

¹¹जब तू इन्सान को उस के कुसूर की मुनासिब सज़ा दे कर उस को तम्बीह करता है तो उस की खूबसूरती कीड़ा लगे कपड़े की तरह जाती रहती है। हर इन्सान दम भर का ही है। (सिलाह)

¹²ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसूओं को देख कर खामोश न रह। क्यूँकि मैं तेरे हुज़ूर रहने वाला परदेसी, अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर बसने वाला ग़ैरशहरी हूँ।

¹³मुझ से बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो जाऊँ।

शुक्र और दरख्वास्त

40 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

मैं सब्र से रब के इन्तिज़ार में रहा तो वह मेरी तरफ़ माइल हुआ और मदद के लिए मेरी चीखों पर तवज्जुह दी।

²वह मुझे तबाही के गढ़े से खँच लाया, दलदल और कीचड़ से निकाल लाया। उस ने मेरे पाँओ को चटान पर रख दिया, और अब मैं मज़बूती से चल फिर सकता हूँ।

³उस ने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे खुदा की हम्द-ओ-सना का गीत उभरने दिया। बहुत से लोग यह देखेंगे और ख़ौफ़ खा कर रब पर भरोसा रखेंगे।

⁴मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता है, जो तंग करने वालों और फ़रेब में उलझे हुएों की तरफ़ रुख नहीं करता।

5 ए रब मेरे खुदा, बार बार तू ने हमें अपने मोजिज़े दिखाए, जगह-ब-जगह अपने मन्सूबे वुजूद में ला कर हमारी मदद की। तुझ जैसा कोई नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं उन की पूरी फ़हरिस्त बता भी नहीं सकता।

6 तू कुर्बानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था, लेकिन तू ने मेरे कानों को खोल दिया। तू ने भस्म होने वाली कुर्बानियों और गुनाह की कुर्बानियों का तक्राज़ा न किया।

7 फिर मैं बोल उठा, "मैं हाज़िर हूँ जिस तरह मेरे बारे में कलाम-ए-मुकद्दस¹ में लिखा है।

8 ए मेरे खुदा, मैं खुशी से तेरी मर्ज़ी पूरी करता हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।"

9 मैं ने बड़े इजतिमा में रास्ती की खुशखबरी सुनाई है। ए रब, यक्रीनन तू जानता है कि मैं ने अपने होंटों को बन्द न रखा।

10 मैं ने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैं ने बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और सदाक़त की एक बात भी पोशीदा न रखी।

11 ए रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम नहीं रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल मेरी निगहबानी करेंगी।

12 क्योंकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा है, मेरे गुनाहों ने आखिरकार मुझे आ पकड़ा है। अब मैं नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के बालों से ज़यादा हैं, इस लिए मैं हिम्मत हार गया हूँ।

13 ए रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ए रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

14 मेरे जानी दुश्मन सब शर्मिन्दा हो जाएँ, उन की सख़्त रुस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उन का मुँह काला हो जाए।

15 जो मेरी मुसीबत देख कर क़हक़हा लगाते हैं वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

16 लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी खुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, "रब अज़ीम है!"

17 मैं नाचार और ज़रूरतमन्द हूँ, लेकिन रब मेरा खयाल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिन्दा है। ए मेरे खुदा, देर न कर!

मरीज़ की दुआ

41 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मुबारक है वह जो पस्तहाल का खयाल रखता है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।

2 रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की ज़िन्दगी को मफ़ूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरकत दे कर उसे उस के दुश्मनों के लालच के हवाले नहीं करेगा।

3 बीमारी के वक़्त रब उस को बिस्तर पर सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल करेगा।

4 मैं बोला, "ए रब, मुझ पर रहम कर! मुझे शिफ़ा दे, क्योंकि मैं ने तेरा ही गुनाह किया है।"

5 मेरे दुश्मन मेरे बारे में शलत बातें करके कहते हैं, "वह कब मरेगा? उस का नाम-ओ-निशान कब मिटेगा?"

6 जब कभी कोई मुझ से मिलने आए तो उस का दिल झूट बोलता है। पस-ए-पर्दा वह ऐसी नुक्सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद में बाहर जा कर गलियों में फैला सके।

7 मुझ से नफ़रत करने वाले सब आपस में मेरे खिलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे खिलाफ़ बुरे मन्सूबे बांध कर कहते हैं,

8 "उसे मोहलक मर्ज़ लग गया है। वह कभी अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।"

¹लफ़ज़ी तर्जुमा : किताब के तूमार में।

⁹मेरा दोस्त भी मेरे खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतिमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उस ने मुझ पर लात उठाई है।

¹⁰लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर! मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उन के सुलूक का बदला दे सकूँ।

¹¹इस से मैं जानता हूँ कि तू मुझ से खुश है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़्रह के नारे नहीं लगाता।

¹²तू ने मुझे मेरी दियानतदारी के बाइस क्राइम रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर खड़ा किया है।

¹³रब की हम्द हो जो इस्राईल का खुदा है। अज़ल से अबद तक उस की तम्जीद हो। आमीन, फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

परदेस में अल्लाह का आरजूमन्द

42 क्रोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत का गीत। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे लिए तड़पती है।

²मेरी जान खुदा, हाँ ज़िन्दा खुदा की प्यासी है। मैं कब जा कर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?

³दिन रात मेरे आँसू मेरी गिज़ा रहे हैं। क्योंकि पूरा दिन मुझ से कहा जाता है, “तेरा खुदा कहाँ है?”

⁴पहले हालात याद करके मैं अपने सामने अपने दिल की आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता हूँ।^a कितना मज़ा आता था जब हमारा जुलूस निकलता था, जब मैं हुज़ूम के बीच में खुशी और शुक़रगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह

की सुकूनतगाह की जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता था जब हम जश्न मनाते हुए घूमते फिरते थे।

⁵ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

⁶मेरी जान ग़म के मारे पिघल रही है। इस लिए मैं तुझे यर्दन के मुल्क, हर्मून के पहाड़ी सिलसिले और कोह-ए-मिसआर से याद करता हूँ।

⁷जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलन्द हुई तो एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई हैं।

⁸दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और रात के वक़्त उस का गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी हयात के खुदा से दुआ करूँगा।

⁹मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, “तू मुझे क्यों भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के जुल्म के बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिरे?”

¹⁰मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट रही हैं, क्योंकि पूरा दिन वह कहते हैं, “तेरा खुदा कहाँ है?”

¹¹ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

43 ऐ अल्लाह, मेरा इन्साफ़ कर! मेरे लिए ग़ैरईमानदार क्रौम से लड़, मुझे धोकेबाज़ और शरीर आदमियों से बचा।

^aलफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

२क्योंकि तू मेरी पनाह का खुदा है। तू ने मुझे क्यों रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के जुल्म के बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिर्कू?

३अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह मेरी राहनुमाई करके मुझे तेरे मुकद्दस पहाड़ और तेरी सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।

४तब मैं अल्लाह की कुर्बानगाह के पास आऊँगा, उस खुदा के पास जो मेरी खुशी और फ़र्हत है। ऐ अल्लाह मेरे खुदा, वहाँ मैं सरोद बजा कर तेरी सताइश करूँगा।

५ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है?

44 क्रोरह की औलाद का जबूर। हिक्मत का गीत। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, जो कुछ तू ने हमारे बापदादा के अय्याम में यानी क़दीम ज़माने में किया वह हम ने अपने कानों से उन से सुना है।

२तू ने खुद अपने हाथ से दीगर क़ौमों को निकाल कर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे की तरह लगा दिया। तू ने खुद दीगर उम्मतों को शिकस्त दे कर हमारे बापदादा को मुल्क में फलने फूलने दिया।

३उन्होंने ने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाजू से फ़ल्ह नहीं पाई बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाजू और तेरे चेहरे के नूर ने यह सब कुछ किया। क्योंकि वह तुझे पसन्द थे।

४तू मेरा बादशाह, मेरा खुदा है। तेरे ही हुक्म पर याक़ूब को मदद हासिल होती है।

५तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर पटख देते, तेरा नाम ले कर अपने मुखालिफ़ों को कुचल देते हैं।

६क्योंकि मैं अपनी कमान पर एतिमाद नहीं करता, और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी

७बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें शर्मिन्दा होने देता है जो हम से नफ़रत करते हैं।

८पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं, और हम हमेशा तक तेरे नाम की तम्ज़ीद करेंगे। (सिलाह)

९लेकिन अब तू ने हमें रद्द कर दिया, हमें शर्मिन्दा होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने के लिए निकलती हैं तो तू उन का साथ नहीं देता।

१०तू ने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया, और जो हम से नफ़रत करते हैं उन्होंने हमें लूट लिया है।

११तू ने हमें भेड़-बकरियों की तरह क़स्साब के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर दिया है।

१२तू ने अपनी क़ौम को ख़फ़ीफ़ सी रक़म के लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा हासिल न हुआ।

१३यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें रुसवा करते, गिर्द-ओ-नवाह के लोग हमें लान-तान करते हैं।

१४हम अक्वाम में इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए हैं। लोग हमें देख कर तौबा तौबा कहते हैं।

१५दिन भर मेरी रुस्वाई मेरी आँखों के सामने रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,

१६क्योंकि मुझे उन की गालियाँ और कुफ़्र सुनना पड़ता है, दुश्मन और इन्तिक़ाम लेने पर तुले हुए को बर्दाश्त करना पड़ता है।

१७यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न हम तुझे भूल गए और न तेरे अह्द से बेवफ़ा हुए हैं।

१८न हमारा दिल बागी हो गया, न हमारे क़दम तेरी राह से भटक गए हैं।

19 ताहम तू ने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के दरमियान छोड़ दिया, तू ने हमें गहरी तारीकी में डूबने दिया है।

20 अगर हम अपने खुदा का नाम भूल कर अपने हाथ किसी और माबूद की तरफ उठाते

21 तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो जाती? ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से वाकिफ़ होता है।

22 लेकिन तेरी खातिर हमें दिन भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होने वाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।

23 ऐ रब, जाग उठ! तू क्यूँ सोया हुआ है? हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद करने के लिए खड़ा हो जा।

24 तू अपना चेहरा हम से पोशीदा क्यूँ रखता है, हमारी मुसीबत और हम पर होने वाले जुल्म को नज़रअन्दाज़ क्यूँ करता है?

25 हमारी जान खाक में दब गई, हमारा बदन मिट्टी से चिमट गया है।

26 उठ कर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त की खातिर फ़िद्या दे कर हमें छुड़ा!

बादशाह की शादी

45 क्रोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

मेरे दिल से खूबसूरत गीत छलक रहा है, मैं उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर कातिब के क़लम की मानिन्द हो!

27 तू आदमियों में सब से खूबसूरत है! तेरे होंट शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इस लिए अल्लाह ने तुझे अबदी बरकत दी है।

3 ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो, अपनी शान-ओ-शौकत से मुलब्सस हो जा!

4 ग़ल्बा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई, इनकिसारी और रास्ती की खातिर

लड़ने के लिए निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज़ काम दिखाए।

5 तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को छेद डालें। क्रौमें तेरे पाँओ में गिर जाएँ।

6 ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क्राइम-ओ-दाइम रहेगा, और इन्साफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।

7 तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से नफ़रत की, इस लिए अल्लाह तेरे खुदा ने तुझे खुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़यादा सरफ़राज़ कर दिया।

8 मुर, ऊद और अमलतास की बेशक्रीमत खुशबू तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत के महलों में तारदार मौसीक्री तेरा दिल बहलाती है।

9 बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी फिरती हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए तेरे दहने हाथ खड़ी है।

10 ऐ बेटी, सुन मेरी बात! ग़ौर कर और कान लगा। अपनी क्रौम और अपने बाप का घर भूल जा।

11 बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमन्द है, क्यूँकि वह तेरा आक्रा है। चुनाँचे झुक कर उस का एहतिराम कर।

12 सूर की बेटी तोहफ़ा ले कर आएगी, क्रौम के अमीर तेरी नज़र-ए-करम हासिल करने की कोशिश करेंगे।

13 बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से आरास्ता है। उस का लिबास सोने के धागों से बुना हुआ है।

14 उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के पास लाया जाता है। जो कुंवारी सहेलियाँ उस के पीछे चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।

15 लोग शादमान हो कर और खुशी मनाते हुए उन्हें वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में दाखिल होती हैं।

¹⁶ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह खड़े हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बना कर पूरी दुनिया में ज़िम्मादारियाँ देगा।

¹⁷पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तम्जीद करूँगा, इस लिए क़ौमों हमेशा तक तेरी सताइश करेंगी।

अल्लाह हमारी कुव्वत है

46 क्रोरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ : कुवारियाँ।

अल्लाह हमारी पनाहगाह और कुव्वत है। मुसीबत के वक्रत वह हमारा मज़बूत सहारा साबित हुआ है।

²इस लिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन लरज़ उठे और पहाड़ झूम कर समुन्दर की गहराइयों में गिर जाएँ,

³गो समुन्दर शोर मचा कर ठठें मारे और पहाड़ उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

⁴दरया की शाखें अल्लाह के शहर को खुश करती हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की मुकद्दस सुकूनतगाह है।

⁵अल्लाह उस के बीच में है, इस लिए शहर नहीं डगमगाएगा। सुबह-सवेरे ही अल्लाह उस की मदद करेगा।

⁶क़ौमों शोर मचाने, सलतनतें लड़खड़ाने लगीं। अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।

⁷रब्ब-उल-अफ़वाज़ हमारे साथ है, याक़ूब का खुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

⁸आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो! उसी ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही नाज़िल की है।

⁹वही दुनिया की इन्तिहा तक जंगें रोक देता, वही कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े टुकड़े करता और ढाल को जला देता है।

¹⁰वह फ़रमाता है, “अपनी हरकर्तों से बाज़ आओ! जान लो कि मैं खुदा हूँ। मैं अक्रवाम में सरबुलन्द और दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।”

¹¹रब्ब-उल-अफ़वाज़ हमारे साथ है। याक़ूब का खुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

अल्लाह तमाम क़ौमों का बादशाह है

47 क्रोरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ तमाम क़ौमो, ताली बजाओ! खुशी के नारे लगा कर अल्लाह की मदहसराई करो!

²क्यूँकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी दुनिया का अज़ीम बादशाह है।

³उस ने क़ौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों को हमारे पाँओ तले रख दिया।

⁴उस ने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया, उसी को जो उस के प्यारे बन्दे याक़ूब के लिए फ़ख़र का बाइस था। (सिलाह)

⁵अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ खुशी का नारा बुलन्द हुआ, रब बुलन्दी पर चढ़ गया तो साथ साथ नरसिंगा बजता रहा।

⁶मदहसराई करो, अल्लाह की मदहसराई करो! मदहसराई करो, हमारे बादशाह की मदहसराई करो!

⁷क्यूँकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है। हिक्मत का गीत गा कर उस की सताइश करो।

⁸अल्लाह क़ौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह अपने मुकद्दस तख़्त पर बैठा है।

⁹दीगर क़ौमों के शुरफ़ा इब्राहीम के खुदा की क़ौम के साथ जमा हो गए हैं, क्यूँकि वह दुनिया के हुक्मरानों का मालिक है। वह निहायत ही सरबुलन्द है।

अल्लाह का शहर यरूशलम

48 गीत। क्रोरह की औलाद का जबूर। रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के

लाइक्र है। उस का मुक़द्दस पहाड़ हमारे खुदा के शहर में है।

²कोह-ए-सिय्यून की बुलन्दी खूबसूरत है, पूरी दुनिया उस से खुश होती है। कोह-ए-सिय्यून दूरतरीन शिमाक का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह का शहर है।

³अल्लाह उस के महलों में है, वह उस की पनाहगाह साबित हुआ है।

⁴क्यूँकि देखो, बादशाह जमा हो कर यरूशलम से लड़ने आए।

⁵लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दहशत खा कर भाग गए।

⁶वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाने लगे।

⁷जिस तरह मशरिकी आँधी तरसीस के शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तू ने उन्हें तबाह कर दिया।

⁸जो कुछ हम ने सुना है वह हमारे देखते देखते रब्ब-उल-अप्रवाज हमारे खुदा के शहर पर सादिक आया है, अल्लाह उसे अबद तक क़ाइम रखेगा। (सिलाह)

⁹ए अल्लाह, हम ने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त पर गौर-ओ-ख़ौज़ किया है।

¹⁰ए अल्लाह, तेरा नाम इस लाइक्र है कि तेरी तारीफ़ दुनिया की इन्तिहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ रास्ती से भरा रहता है।

¹¹कोह-ए-सिय्यून शादमान हो, यहूदाह की बेटियों^अ तेरे मुन्सिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस खुशी मनाएँ।

¹²सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फ़िरो, उस की फ़सील के साथ साथ चल कर उस के बुर्ज गिन लो।

¹³उस की क़िलाबन्दी पर खूब ध्यान दो, उस के महलों का मुआइना करो ताकि आने वाली नस्ल को सब कुछ सुना सको।

¹⁴यक़ीनन अल्लाह हमारा खुदा हमेशा तक ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

अमीरों की शान सराब ही है

49 कोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ए तमाम क़ौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिन्दो, ध्यान दो!

²छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह दें।

³मेरा मुँह हिक्मत बयान करेगा और मेरे दिल का गौर-ओ-ख़ौज़ समझ अता करेगा।

⁴मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा, सरोद बजा कर अपनी पहली का हल बताऊँगा।

⁵मैं ख़ौफ़ क्यूँ खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?

⁶ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतिमाद और अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।

⁷कोई भी फ़िद्या दे कर अपने भाई की जान को नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस क़िस्म का तावान नहीं दे सकता।

⁸क्यूँकि इतनी बड़ी रक़म देना उस के बस की बात नहीं। आख़िरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी कोशिशों से बाज़ आना पड़ेगा।

⁹चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रह सकता, आख़िरकार हर एक मौत के गढ़े में उतरेगा।

¹⁰क्यूँकि हर एक देख सकता है कि दानिशमन्द भी वफ़ात पाते और अहमक़ और नासमझ भी मिल कर हलाक हो जाते हैं। सब

^अयहाँ यहूदाह की बेटियों से मुराद उस के शहर भी हो सकते हैं।

को अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।

11उन की क़ब्रें अबद तक उन के घर बनी रहेंगी, पुश्त-दर-पुश्त वह उन में बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें हासिल थीं जो उन के नाम पर थीं।

12इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद क्राइम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

13यह उन सब की तक्दीर है जो अपने आप पर एतिमाद रखते हैं, और उन सब का अन्जाम जो उन की बातें पसन्द करते हैं। (सिलाह)

14उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्योंकि सुबह के वक़्त दियानतदार उन पर हुकूमत करेंगे। तब उन की शक्ल-ओ-सूरत घिसे फटे कपड़े की तरह गल सड़ जाएगी, पाताल ही उन की रिहाइशगाह होगा।

15लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िद्या देगा, वह मुझे पकड़ कर पाताल की गिरिफ्त से छुड़ाएगा। (सिलाह)

16मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब उस के घर की शान-ओ-शौकत बढ़ती जाए।

17मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाएगा, उस की शान-ओ-शौकत उस के साथ पाताल में नहीं उतरेगी।

18बेशक वह जीते जी अपने आप को मुबारक कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की तारीफ़ करेंगे।

19फिर भी वह आखिरकार अपने बापदादा की नस्ल के पास उतरेगा, उन के पास जो दुबारा कभी रौशनी नहीं देखेंगे।

20जो इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

सहीह इबादत

50 आसफ़ का ज़बूर।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ खुदा बोल उठा है, उस ने तुलू-ए-सुबह से ले कर गुरूब-ए-आफ़्रताब तक पूरी दुनिया को बुलाया है।

2अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस पहाड़ से जो कामिल हुस्न का इज़हार है,

3हमारा खुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं रहेगा। उस के आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा है, उस के इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।

4वह आसमान-ओ-ज़मीन को आवाज़ देता है, "अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।

5मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें जिन्होंने कुर्बानियाँ पेश करके मेरे साथ अह्द बांधा है।"

6आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे, क्योंकि अल्लाह खुद इन्साफ़ करने वाला है। (सिलाह)

7"ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ इस्राईल, मैं तेरे खिलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह तेरा खुदा हूँ।

8मैं तुझे तेरी ज़बह की कुर्बानियों के बाइस मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होने वाली कुर्बानियाँ तो मुसलसल मेरे सामने हैं।

9न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।

10क्योंकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं, हज़ारों पहाड़ियों पर बसने वाले जानवर मेरे ही हैं।

11मैं पहाड़ों के हर परिन्दे को जानता हूँ, और जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।

12अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता, क्योंकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।

13क्या तू समझता है कि मैं साँडों का गोश्त खाना या बकरों का खून पीना चाहता हूँ?

14 अल्लाह को शुक्रगुजारी की कुर्बानी पेश कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तू ने अल्लाह तआला के हुज़ूर मानी है।

15 मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे नजात दूँगा और तू मेरी तम्जीद करेगा।”

16 लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है, “मेरे अहकाम सुनाने और मेरे अहद का ज़िक्र करने का तेरा क्या हक़ है?

17 तू तो तर्बियत से नफ़रत करता और मेरे फ़रमान कचरे की तरह अपने पीछे फ़ैंक देता है।

18 किसी चोर को देखते ही तू उस का साथ देता है, तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।

19 तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तय्यार रखता है।

20 तू दूसरों के पास बैठ कर अपने भाई के खिलाफ़ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।

21 यह कुछ तू ने किया है, और मैं खामोश रहा। तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने ही मुआमला तरतीब से सुनाऊँगा।

22 तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ लो, वर्ना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक़्त कोई नहीं होगा जो तुम्हें बचाए।

23 जो शुक्रगुजारी की कुर्बानी पेश करे वह मेरी ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह पर चले उसे मैं अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।”

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर!

(तौबा का चौथा ज़बूर)

51

दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़

है जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद नातन नबी उस के पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक़ मेरी सरकशी के दाया मिटा दे।

2 मुझे धो दे ताकि मेरा कुसूर दूर हो जाए, जो गुनाह मुझ से सरज़द हुआ है उस से मुझे पाक कर।

3 क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।

4 मैं ने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही खिलाफ़ गुनाह किया, मैं ने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है। क्योंकि लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

5 यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ। जूँ ही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।

6 यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसन्द करता और पोशीदगी में मुझे हिक्मत की तालीम देता है।

7 ज़ूफ़ा ले कर मुझ से गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़यादा सफ़ेद हो जाऊँ।

8 मुझे दुबारा खुशी और शादमानी सुनने दे ताकि जिन हड्डियों को तू ने कुचल दिया वह शादियाना बजाएँ।

9 अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा तमाम कुसूर मिटा दे।

10 ऐ अल्लाह, मेरे अन्दर पाक दिल पैदा कर, मुझ में नए सिरे से साबितक़दम रूह क्राइम कर।

11 मुझे अपने हुज़ूर से खारिज न कर, न अपने मुक़दस रूह को मुझ से दूर कर।

12 मुझे दुबारा अपनी नजात की खुशी दिला, मुझे मुस्ताइद रूह अता करके सँभाले रख।

13तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो तुझे से बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास वापस आएँगे।

14ऐ अल्लाह, मेरी नजात के खुदा, क़ल्ल का कुसूर मुझे से दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती की हम्द-ओ-सना करेगी।

15ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी सताइश करे।

16क्योंकि तू ज़बह की कुर्बानी नहीं चाहता, वर्ना मैं वह पेश करता। भस्म होने वाली कुर्बानियाँ तुझे पसन्द नहीं।

17अल्लाह को मन्ज़ूर कुर्बानी शिकस्ता रूह है। ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर नहीं जानेगा।

18अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिष्यून को खुशहाली बख़्श, यरूशलम की फ़सील तामीर कर।

19तब तुझे हमारी सहीह कुर्बानियाँ, हमारी भस्म होने वाली और मुकम्मल कुर्बानियाँ पसन्द आएँगी। तब तेरी कुर्बानगाह पर बैल चढ़ाए जाएंगे।

जुलम के बावजूद तसल्ली

52 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। हिक्मत का यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब दोग अदोमी साऊल बादशाह के पास गया और उसे बताया, “दाऊद अख़ीमलिक इमाम के घर में गया है।”

ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्य़ँ फ़ख़र करता है? अल्लाह की शफ़क़त दिन भर क़ाइम रहती है।

2ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह चलती हुई तबाही के मन्सूबे बांधती है।

3तुझे भलाई की निस्बत बुराई ज़यादा प्यारी है, सच बोलने की निस्बत झूट ज़यादा पसन्द है। (सिलाह)

4ऐ फ़रेबदिह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात से प्यार करती है।

5लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए खाक में मिलाएगा। वह तुझे मार मार कर तेरे ख़ैमे से निकाल देगा, तुझे जड़ से उखाड़ कर ज़िन्दों के मुल्क से ख़ारिज कर देगा। (सिलाह)

6रास्तबाज़ यह देख कर ख़ौफ़ खाएँगे। वह उस पर हंस कर कहेंगे,

7“लो, यह वह आदमी है जिस ने अल्लाह में पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतिमाद किया, जो अपने तबाहकुन मन्सूबों से ताक़तवर हो गया था।”

8लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते फूलते दरख़्त की मानिन्द हूँ। मैं हमेशा के लिए अल्लाह की शफ़क़त पर भरोसा रखूँगा।

9मैं अबद तक उस के लिए तेरी सताइश करूँगा जो तू ने किया है। मैं तेरे ईमानदारों के सामने ही तेरे नाम के इन्तिज़ार में रहूँगा, क्य़ँकि वह भला है।

बेदीन की हमाक़त

53 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। हिक्मत का गीत। तर्ज़ : महलत।

अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें क़ाबिल-ए-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।

2अल्लाह ने आसमान से इन्सान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?

3अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सब के सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

4क्या जो बंदी करके मेरी क्रौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो अल्लाह को पुकारते ही नहीं।

5तब उन पर सख्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ पहले दहशत का सबब नहीं था। जिन्होंने ने तुझे घेर रखा था अल्लाह ने उन की हड्डियाँ बिखेर दीं। तू ने उन को रुसवा किया, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें रद्द किया है।

6काश कोह-ए-सिय्यून से इस्राईल की नजात निकले! जब रब अपनी क्रौम को बहाल करेगा तो याकूब खुशी के नारे लगाएगा, इस्राईल बाग बाग होगा।

खतरे में फंसे हुए शख्स की इल्तिजा

54

दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस वक़्त से मुताल्लिक है जब ज़ीफ़ के बाशिन्दों ने साऊल के पास जा कर कहा, “दाऊद हमारे पास छुपा हुआ है।”

ए अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे छुटकारा दे! अपनी कुदरत के ज़रीए से मेरा इन्साफ़ कर!

2ए अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के अल्फ़ाज़ पर ध्यान दे।

3क्योंकि परदेसी मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी जान लेने के दरपै हैं। (सिलाह)

4लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी जिन्दगी काइम रखता है।

5वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस लाएगा। चुनाँचे अपनी वफ़ादारी दिखा कर उन्हें तबाह कर दे!

6मैं तुझे रज़ाकाराना कुर्बानी पेश करूँगा। ए रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा, क्योंकि वह भला है।

7क्योंकि उस ने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी, और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर खुश हूँगा।

झूठे भाइयों पर शिकायत

55

दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। हिक्मत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ए अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने आप को मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।

2मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।

3क्योंकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए हैं, गुस्से में मेरी मुखालफ़त कर रहे हैं।

4मेरा दिल मेरे अन्दर तड़प रहा है, मौत की दहशत मुझ पर छा गई है।

5खौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत मुझ पर ग़ालिब आ गई है।

6मैं बोला, “काश मेरे कबूतर के से पर हों ताकि उड़ कर आराम-ओ-सुकून पा सकूँ!

7तब मैं दूर तक भाग कर रेगिस्तान में बसेरा करता,

8मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी और तूफ़ान से मटफ़ूज़ रहता।” (सिलाह)

9ए रब, उन में अब्तीर पैदा कर, उन की ज़बान में इखतिलाफ़ डाल! क्योंकि मुझे शहर में हर तरफ़ जुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।

10दिन रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं, और शहर फ़साद और खराबी से भरा रहता है।

11उस के बीच में तबाही की हुकूमत है, और जुल्म और फ़रेब उस के चौक को नहीं छोड़ते।

12अगर कोई दुश्मन मेरी रुस्वाई करता तो काबिल-ए-बर्दाश्त होता। अगर मुझ से नफ़रत

करने वाला मुझे दबा कर अपने आप को सरफ़राज़ करता तो मैं उस से छुप जाता।

¹³लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है, जो मेरा करीबी दोस्त और हमराज़ है।

¹⁴मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी जब हम हुज़ूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ़ चलते गए!

¹⁵मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले ले। ज़िन्दा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्योंकि बुराई ने उन में अपना घर बना लिया है।

¹⁶लेकिन मैं पुकार कर अल्लाह से मदद माँगता हूँ, और रब मुझे नजात देगा।

¹⁷मैं हर वक़्त आह-ओ-ज़ारी करता और कराहता रहता हूँ, ख्वाह सुबह हो, ख्वाह दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।

¹⁸वह फ़िद्या दे कर मेरी जान को उन से छुड़ाएगा जो मेरे खिलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उन की तादाद बड़ी है वह मुझे आराम-ओ-सुकून देगा।

¹⁹अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी सुन कर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्योंकि न वह तब्दील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का ख़ौफ़ मानेंगे।

²⁰उस शख्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के खिलाफ़ उठाया, उस ने अपना अह्द तोड़ लिया है।

²¹उस की ज़बान पर मक्खन की सी चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उस के तेल से ज़्यादा नर्म अल्फ़ाज़ हकीक़त में खैची हुई तलवारें हैं।

²²अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।

²³लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े में उतरने देगा। ख़ूँखार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

मुसीबत में भरोसा

56 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : दूरदराज़ जज़ीरों का कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब फ़िलिस्तिनो ने उसे जात में पकड़ लिया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़ने वाला दिन भर मुझे सता रहा है।

²दिन भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्योंकि वह बहुत हैं और गुरूर से मुझ से लड़ रहे हैं।

³लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरिफ़्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

⁴अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

⁵दिन भर वह मेरे अल्फ़ाज़ को तोड़-मरोड़ कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मन्सूबों से मुझे ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।

⁶वह हम्लाआवर हो कर ताक में बैठ जाते और मेरे हर क़दम पर ग़ौर करते हैं। क्योंकि वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।

⁷जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक्वाम को गुस्से में खाक में मिला दे।

⁸जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उन का तू ने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मश्कीज़े में डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में क़लमबन्द नहीं हैं? ज़रूर!

⁹फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझ से बाज़ आएँगे। यह मैं ने जान लिया है कि अल्लाह मेरे साथ है!

10 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के कलाम पर मेरा फ़ख़र है।

11 अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक्सान पहुँचा सकता है?

12 ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैं ने मन्नतें मानी हैं, और अब मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ पेश करूँगा।

13 क्योंकि तू ने मेरी जान को मौत से बचाया और मेरे पाँओ को ठोकर खाने से मटफ़ूज़ रखा ताकि ज़िन्दगी की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलूँ।

आज़माइश में अल्लाह पर एतिमाद

57

दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा

गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब वह साऊल से भाग कर ग़ार में छुप गया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मेरी जान तुझ में पनाह लेती है। जब तक आफ़त मुझ पर से गुज़र न जाए मैं तेरे परों के साथ में पनाह लूँगा।

2 मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह से जो मेरा मुआमला ठीक करेगा।

3 वह आसमान से मदद भेज कर मुझे छुटकारा देगा और उन की रुस्वाई करेगा जो मुझे तंग कर रहे हैं। (सिलाह) अल्लाह अपना करम और वफ़ादारी भेजेगा।

4 मैं इन्सान को हड़प करने वाले शेरबबरों के बीच में लेटा हुआ हूँ, उन के दरमियान जिन के दाँत नेज़े और तीर हैं और जिन की ज़बान तेज़ तलवार है।

5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलन्द हो जा! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!

6 उन्हीं ने मेरे क़दमों के आगे फंदा बिछा दिया, और मेरी जान खाक में दब गई है। उन्हीं

ने मेरे सामने गढ़ा खोद लिया, लेकिन वह खुद उस में गिर गए हैं। (सिलाह)

7 ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल साबितक़दम है। मैं साज़ बजा कर तेरी मदहसराई करूँगा।

8 ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! आओ, मैं तुलू-ए-सुब्ह को जगाऊँ।

9 ऐ रब, क़ौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा।

10 क्योंकि तेरी अज़ीम शफ़क़त आसमान जितनी बुलन्द है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।

11 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

इन्तिक़ाम की दुआ

58

दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ हुक्मरानो, क्या तुम वाक़ई मुन्सिफ़ाना फ़ैसला करते, क्या दियानतदारी से आदमज़ादों की अदालत करते हो?

2 हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और मुल्क में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते हो।

3 बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए हैं, झूट बोलने वाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।

4 वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे नाग की तरह जो अपने कानों को बन्द कर रखता है

5 ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न माहिर सपेरे के मंत्र।

6 ऐ अल्लाह, उन के मुँह के दाँत तोड़ डाल! ऐ रब, जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश कर!

7वह उस पानी की तरह ज़ाए हो जाएँ जो बह कर गाड़ब हो जाता है। उन के चलाए हुए तीर बेअसर रहें।

8वह धूप में घोंगे की मानिन्द हों जो चलता चलता पिघल जाता है। उन का अन्जाम उस बच्चे का सा हो जो माँ के पेट में ज़ाए हो कर कभी सूरज नहीं देखेगा।

9इस से पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार टहनियों की आग महसूस करें अल्लाह उन सब को आँधी में उड़ा कर ले जाएगा।

10आखिरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह देख कर रास्तबाज़ खुश होगा, और वह अपने पाँओ को बेदीनों के खून में धो लेगा।

11तब लोग कहेंगे, “वाक़ई रास्तबाज़ को अज़्र मिलता है, वाक़ई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों की अदालत करता है!”

दुश्मन के दरमियान दुआ

59

दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब साऊल ने अपने आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़ल्ल करें।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उन से मेरी हिफ़ाज़त कर जो मेरे खिलाफ़ उठे हैं।

2मुझे बदकारों से छुटकारा दे, खूँख़वारों से रिहा कर।

3देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, ज़बरदस्त आदमी मुझे पर हम्ताआवर हैं, हालाँकि मुझे से न खता हुई न गुनाह।

4मैं बेक़सूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़ कर मुझे से लड़ने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। चुनौचे जाग उठ, मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र डाल।

5ऐ रब, लश्करोँ और इस्त्राईल के ख़ुदा, दीगर तमाम क़ौमों को सज़ा देने के लिए जाग उठ! उन सब पर करम न फ़रमा जो शरीर और ग़द्दार हैं। (सिलाह)

6हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते फिरते हैं।

7देख, उन के मुँह से राल टपक रही है, उन के होंटों से तलवारों निकल रही हैं। क्यूँकि वह समझते हैं, “कौन सुनेगा?”

8लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाता है।

9ऐ मेरी कुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी, क्यूँकि अल्लाह मेरा क़िला है।

10मेरा ख़ुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझे से मिलने आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर खुश हूँगा।

11ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर, वर्ना मेरी क़ौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी कुदरत का इज़हार यूँ कर कि वह इधर उधर लड़खड़ा कर गिर जाएँ।

12जो कुछ भी उन के मुँह से निकलता है वह गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनौचे उन्हें उन के तकब्बुर के जाल में फंसने दे।

13गुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यूँ तबाह कर कि उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे। तब लोग दुनिया की इन्तिहा तक जान लेंगे कि अल्लाह याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

14हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते फिरते हैं।

15वह इधर उधर गश्त लगा कर खाने की चीज़ें ढूँडते हैं। अगर पेट न भरे तो गुराते रहते हैं।

16लेकिन मैं तेरी कुदरत की मदहसराई करूँगा, सुबह को खुशी के नारे लगा कर तेरी शफ़क़त की सताइश करूँगा। क्यूँकि तू मेरा

क्रिला और मुसीबत के वक्रत मेरी पनाहगाह है।

17 ऐ मेरी कुव्वत, मैं तेरी मदहसराई करूँगा, क्योंकि अल्लाह मेरा क्रिला और मेरा मेहरबान खुदा है।

मर्दूद क्रौम की दुआ

60 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : अहद का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक्रत से मुताल्लिक है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के अरामियों और ज़ोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000 अदोमियों को मार डाला।

ऐ अल्लाह, तू ने हमें रद्द किया, हमारी क्रिलाबन्दी में रखना डाल दिया है। लेकिन अब अपने गज़ब से बाज़ आ कर हमें बहाल कर।

2 तू ने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उस में दराड़ें पड़ गईं। अब उस के शिगाफ़ों को शिफ़ा दे, क्योंकि वह अभी तक थरथरा रही है।

3 तू ने अपनी क्रौम को तल्लख तजरिबों से दोचार होने दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी कि हम डगमगाने लगे हैं।

4 लेकिन जो तेरा खौफ़ मानते हैं उन के लिए तू ने झंझा गाड़ दिया जिस के इर्दगिर्द वह जमा हो कर तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)

5 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6 अल्लाह ने अपने मक्त्रिस में फ़रमाया है, "मैं फ़्रतह मनाते हुए सिकम को तन्नसीम करूँगा और वादी-ए-सुवकात को नाप कर बाँट दूँगा।

7 जिलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़्राईम मेरा खोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।

8 मोआब मेरा गुसल का बर्तन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फैंक दूँगा। ऐ

फ़िलिस्ती मुल्क, मुझे देख कर ज़ोरदार नारे लगा!"

9 कौन मुझे क्रिलाबन्द शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?

10 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तू ने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।

11 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक्रत इन्सानी मदद बेकार है।

12 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

दूर से दरख्वास्त

61 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी आह-ओ-ज़ारी सुन, मेरी दुआ पर तवज्जुह दे।

2 मैं तुझे दुनिया की इत्तिहा से पुकार रहा हूँ, क्योंकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी राहनुमाई करके मुझे उस चटान पर पहुँचा दे जो मुझ से बुलन्द है।

3 क्योंकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मज़बूत बुर्ज जिस में मैं दुश्मन से मत्फूज़ हूँ।

4 मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे परो तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5 क्योंकि ऐ अल्लाह, तू ने मेरी मन्नतों पर ध्यान दिया, तू ने मुझे वह मीरास बरख़शी जो उन सब को मिलती है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं।

6 बादशाह को उम्र की दराज़ी बरख़श दे। वह पुश्त-दर-पुश्त जीता रहे।

7वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्त-नशीन रहे। शफ़क़त और वफ़ादारी उस की हिफ़ाज़त करें।

8तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मदहसराई करूँगा, रोज़-ब-रोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

ख़ामोशी से अल्लाह का इन्तिज़ार कर

62 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।

मेरी जान ख़ामोशी से अल्लाह ही के इन्तिज़ार में है। उसी से मुझे मदद मिलती है।

2वही मेरी चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है, इस लिए मैं ज़्यादा नहीं डगमगाऊँगा।

3तुम कब तक उस पर हम्ला करोगे जो पहले ही झुकी हुई दीवार की मानिन्द है? तुम सब कब तक उसे क़त्ल करने पर तुले रहोगे जो पहले ही गिरने वाली चारदीवारी जैसा है?

4उन के मन्सूबों का एक ही मक़्सद है, कि उसे उस के ऊँचे उद्दे से उतारें। उन्हें झूट से मज़ा आता है। मुँह से वह बरकत देते, लेकिन अन्दर ही अन्दर लानत करते हैं। (सिलाह)

5लेकिन तू ऐ मेरी जान, ख़ामोशी से अल्लाह ही के इन्तिज़ार में रह। क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद है।

6सिर्फ़ वही मेरी जान की चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है, इस लिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

7मेरी नजात और इज़ज़त अल्लाह पर मब्नी है, वही मेरी महफूज़ चटान है। अल्लाह में मैं पनाह लेता हूँ।

8ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख! उस के हुज़ूर अपने दिल का रंज-ओ-अलम पानी की तरह उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी पनाहगाह है। (सिलाह)

9इन्सान दम भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब ही हैं। अगर उन्हें तराजू में तोला जाए तो मिल कर उन का वज़न एक फूँक से भी कम है।

10जुल्म पर एतिमाद न करो, चोरी करने पर फ़ुज़ूल उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए तो तुम्हारा दिल उस से लिपट न जाए।

11अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार मैं ने सुनी है कि अल्लाह ही क़ादिर है।

12ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्योंकि तू हर एक को उस के आमाल का बदला देता है।

अल्लाह के लिए आज़ू

63 दाऊद का ज़बूर। यह उस वक़्त से मुताल्लिक है जब वह यहूदाह के रेगिस्तान में था।

ऐ अल्लाह, तू मेरा खुदा है जिसे मैं ढूँडता हूँ। मेरी जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए तरसता है। मैं उस खुश्क और निढाल मुल्क की मानिन्द हूँ जिस में पानी नहीं है।

2चुनाँचे मैं मक़्दिस में तुझे देखने के इन्तिज़ार में रहा ताकि तेरी कुदरत और जलाल का मुशाहदा करूँ।

3क्योंकि तेरी शफ़क़त ज़िन्दगी से कहीं बेहतर है, मेरे हॉट तेरी मदहसराई करेंगे।

4चुनाँचे मैं जीते जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा नाम ले कर अपने हाथ उठाऊँगा।

5मेरी जान उम्दा ग़िज़ा से सेर हो जाएगी, मेरा मुँह खुशी के नारे लगा कर तेरी हम्द-ओ-सना करेगा।

6बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के दौरान तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।

7क्योंकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे परों के साथ में खुशी के नारे लगाता हूँ।

8मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा दहना हाथ मुझे सँभालता है।

⁹लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह तबाह हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर जाएंगे।

¹⁰उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और वह गीदड़ों की खुराक बन जाएंगे।

¹¹लेकिन बादशाह अल्लाह की खुशी मनाएगा। जो भी अल्लाह की क्रसम खाता है वह फ़ख़र करेगा, क्योंकि झूट बोलने वालों के मुँह बन्द हो जाएंगे।

शरीअत के पोशीदा हम्लों से

हिफ़ाज़त की दुआ

64 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आह-ओ-ज़ारी पेश करता हूँ। मेरी ज़िन्दगी दुश्मन की दहशत से महफूज़ रख।

²मुझे बदनआशों की साज़िशों से छुपाए रख, उन की हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।

³वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़ करते और अपने ज़हरीले अल्फ़ाज़ को तीरों की तरह तय्यार रखते हैं

⁴ताकि ताक में बैठ कर उन्हें बेकूसूर पर चलाएँ। वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा देते हैं।

⁵वह बुरा काम करने में एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करते, एक दूसरे से मश्वरा लेते हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपा कर लगाएँ? वह कहते हैं, “यह किसी को भी नज़र नहीं आएँगे।”

⁶वह बड़ी बारीकी से बुरे मन्सूबों की तय्यारियाँ करते, फिर कहते हैं, “चलो, बात बन गई है, मन्सूबा सोच-बिचार के बाद तय्यार हुआ है।” यक़ीनन इन्सान के बातिन और दिल की तह तक पहुँचना मुश्किल ही है।

⁷लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और अचानक ही वह ज़ख्मी हो जाएंगे।

⁸वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खा कर गिर जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह “तौबा तौबा” कहेगा।

⁹तब तमाम लोग ख़ौफ़ खा कर कहेंगे, “अल्लाह ही ने यह किया!” उन्हें समझ आएगी कि यह उसी का काम है।

¹⁰रास्तबाज़ अल्लाह की खुशी मना कर उस में पनाह लेगा, और जो दिल से दियानतदार हैं वह सब फ़ख़र करेंगे।

रूहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

65 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए गीत।

ऐ अल्लाह, तू ही इस लाइक है कि इन्सान कोह-ए-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इन्तिज़ार में रहे, तेरी तम्ज़ीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करे।

²तू दुआओं को सुनता है, इस लिए तमाम इन्सान तेरे हुज़ूर आते हैं।

³गुनाह मुझ पर गालिब आ गए हैं, तू ही हमारी सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।

⁴मुबारक है वह जिसे तू चुन कर क़रीब आने देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।

⁵ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से अपनी रास्ती क़ाइम करके हमारी सुन! क्योंकि तू ज़मीन की तमाम हुदूद और दूरदराज़ समुन्दरों तक सब की उम्मीद है।

⁶तू अपनी कुदरत से पहाड़ों की मज़बूत बुन्यादेँ डालता और कुव्वत से कमरबस्ता रहता है।

7तू मुतलातिम समुन्दरों को थमा देता है, तू उन की गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा खत्म कर देता है।

8दुनिया की इन्तिहा के बाशिन्दे तेरे निशानात से खौफ़ खाते हैं, और तू तुलू-ए-सुबह और गुरूब-ए-आफ़ताब को खुशी मनाने देता है।

9तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की कस्रत और ज़रखेज़ी से नवाज़ता है, चुनाँचे अल्लाह की नदी पानी से भरी रहती है। ज़मीन को यूँ तप्यार करके तू इन्सान को अनाज की अच्छी फ़सल मुहय्या करता है।

10तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके उस के ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की बौछाड़ों से ज़मीन को नर्म करके उस की फ़सलों को बरकत देता है।

11तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना देता है, और तेरे नर्रश-ए-क्रदम तेल की फ़रावानी से टपकते हैं।

12बयाबान की चरागाहें तेल^a की कस्रत से टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर खुशी से मुलब्स हो जाती हैं।

13सब्ज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब खुशी के नारे लगा रहे हैं, सब गीत गा रहे हैं।

अल्लाह की मौजिज़ाना मदद की तारीफ़

66 मौसीकी के राहनुमा के लिए। ज़बूर। गीत।

ऐ सारी ज़मीन, खुशी के नारे लगा कर अल्लाह की मदहसराई कर!

2उस के नाम के जलाल की तम्जीद करो, उस की सताइश उरूज तक ले जाओ!

3अल्लाह से कहो, "तेरे काम कितने पुरजलाल हैं। तेरी बड़ी कुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबक कर तेरी खुशामद करने लगते हैं।

4तमाम दुनिया तुझे सिज्दा करे! वह तेरी तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।" (सिलाह)

5आओ, अल्लाह के काम देखो! आदमज़ाद की खातिर उस ने कितने पुरजलाल मौजिज़े किए हैं!

6उस ने समुन्दर को खुश्क ज़मीन में बदल दिया। जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाओ था वहाँ से लोग पैदल ही गुज़रे। चुनाँचे आओ, हम उस की खुशी मनाएँ।

7अपनी कुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता है। उस की आँखें क़ौमों पर लगी रहती हैं ताकि सरकश उस के खिलाफ़ न उठें। (सिलाह)

8ऐ उम्मतो, हमारे खुदा की हम्द करो। उस की सताइश दूर तक सुनाई दे।

9क्यूँकि वह हमारी ज़िन्दगी क़ाइम रखता, हमारे पाँओ को डगमगाने नहीं देता।

10क्यूँकि ऐ अल्लाह, तू ने हमें आजमाया। जिस तरह चाँदी को पिघला कर साफ़ किया जाता है उसी तरह तू ने हमें पाक-साफ़ कर दिया है।

11तू ने हमें जाल में फंसा दिया, हमारी कमर पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।

12तू ने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की ज़द में आ गए। लेकिन फिर तू ने हमें मुसीबत से निकाल कर फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13मैं भस्म होने वाली कुर्बानियाँ ले कर तेरे घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करूँगा,

14वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक्रत मानी थीं।

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : 'चर्बी,' जो फ़रावानी का निशान था।

15 भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर मैं तुझे मोटी-ताज़ी भेड़ों और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा, साथ साथ बैल और बकरे भी चढ़ाऊँगा। (सिलाह)

16 ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ मानने वालो, आओ और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए किया वह तुम्हें सुनाऊँगा।

17 मैं ने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तय्यार थी।

18 अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता तो रब मेरी न सुनता।

19 लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उस ने मेरी इल्तिजा पर तवज्जुह दी।

20 अल्लाह की हम्द हो, जिस ने न मेरी दुआ रद्द की, न अपनी शफ़क़त मुझ से बाज़ रखी।

तमाम क्रौमों अल्लाह की तारीफ़ करें

67 ज़बूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत दे। वह अपने चेहरे का नूर हम पर चमकाए (सिलाह)

2ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम क्रौमों में तेरी नजात मालूम हो जाए।

3ऐ अल्लाह, क्रौमों तेरी सताइश करें, तमाम क्रौमों तेरी सताइश करें।

4उम्मतें शादमान हो कर खुशी के नारे लगाएँ, क्योंकि तू इन्साफ़ से क्रौमों की अदालत करेगा और ज़मीन पर उम्मतों की क्रियादत करेगा। (सिलाह)

5ऐ अल्लाह, क्रौमों तेरी सताइश करें, तमाम क्रौमों तेरी सताइश करें।

6ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह हमारा ख़ुदा हमें बरकत दे!

7अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की इन्तिहाएँ सब उस का ख़ौफ़ मानें।

अल्लाह की फ़तह

68 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए गीत।

अल्लाह उठे तो उस के दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएंगे, उस से नफ़रत करने वाले उस के सामने से भाग जाएंगे।

2वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह मोम आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह बेदीन अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएंगे।

3लेकिन रास्तबाज़ ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम होंगे, वह अल्लाह के हुज़ूर जश्न मना कर फूले न समाएँगे।

4अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उस के नाम की मदहसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान में से गुज़र रहा है उस के लिए रास्ता तय्यार करो। रब उस का नाम है, उस के हुज़ूर खुशी मनाओ!

5अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में यतीमों का बाप और बेवाओं का हामी है।

6अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और क़ैदियों को क़ैद से निकाल कर ख़ुशहाली अता करता है। लेकिन जो सरकश हैं वह झुलसे हुए मुल्क में रहेंगे।

7ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क्रौम के आगे आगे निकला, जब तू रेगिस्तान में क्रदम-ब-क्रदम आगे बढ़ा (सिलाह)

8तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोह-ए-सीना और इसाईल का ख़ुदा है ऐसा ही हुआ।

१९ए अल्लाह, तू ने कस्रत की बारिश बरसने दी। जब कभी तेरा मौरूसी मुल्क निढाल हुआ तो तू ने उसे ताज़ादम किया।

१०यूँ तेरी क्रौम उस में आबाद हुई।
ए अल्लाह, अपनी भलाई से तू ने उसे ज़रूरतमन्दों के लिए तय्यार किया।

११रब फ़रमान सादिर करता है तो खुश-ख़बरी सुनाने वाली औरतों का बड़ा लश्कर निकलता है,

१२“फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग रहे हैं और औरतें लूट का माल तक्सीम कर रही हैं।

१३तुम क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठे रहते हो? देखो, कबूतर के परों पर चाँदी और उस के शाहपरों पर पीला सोना चढ़ाया गया है।”

१४जब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने वहाँ के बादशाहों को मुन्तशिर कर दिया तो कोह-ए-ज़ल्मोन पर बर्फ़ पड़ी।

१५कोह-ए-बसन इलाही पहाड़ है, कोह-ए-बसन की मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।

१६ए पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस पहाड़ को क्यों रश्क की निगाह से देखती हो जिसे अल्लाह ने अपनी सुकूनतगाह के लिए पसन्द किया है? यक्रीनन रब वहाँ हमेशा के लिए सुकूनत करेगा।

१७अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत फ़ौजी हैं। खुदावन्द उन के दरमियान है, सीना का खुदा मक्दिद में है।

१८तू ने बुलन्दी पर चढ़ कर क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इन्सानों से तोहफ़े मिले, उन से भी जो सरकश हो गए थे। यूँ ही रब खुदा वहाँ सुकूनतपज़ीर हुआ।

१९रब की तम्जीद हो जो रोज़-ब-रोज़ हमारा बोझ उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है। (सिलाह)

२०हमारा खुदा वह खुदा है जो हमें बार बार नजात देता है, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हमें बार बार मौत से बचने के रास्ते मुहय्या करता है।

२१यक्रीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को कुचल देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता उस की खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।

२२रब ने फ़रमाया, “मैं उन्हें बसन से वापस लाऊँगा, समुन्दर की गहराइयों से वापस पहुँचाऊँगा।

२३तब तू अपने पाँओ को दुश्मन के खून में धो लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।”

२४ए अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे खुदा और बादशाह के जुलूस मक्दिदिस में दाखिल होते हुए नज़र आ गए हैं।

२५आगे गुलूकार, फिर साज़ बजाने वाले चल रहे हैं। उन के आस-पास कुंवारियाँ दफ़्र बजाते हुए फिर रही हैं।

२६“जमाअतों में अल्लाह की सताइश करो! जितने भी इस्राईल के सरकशमे से निकले हुए हो रब की तम्जीद करो!”

२७वहाँ सब से छोटा भाई बिनयमीन आगे चल रहा है, फिर यहूदाह के बुजुर्गों का पुरशोर हुजूम ज़बूलून और नफ़्ताली के बुजुर्गों के साथ चल रहा है।

२८ए अल्लाह, अपनी कुदरत ब-रू-ए कार ला! ए अल्लाह, जो कुदरत तू ने पहले भी हमारी ख़ातिर दिखाई उसे दुबारा दिखा!

२९उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनतगाह से दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर तोहफ़े लाएँगे।

३०सरकंडों में छुपे हुए दरिन्दे को मलामत कर! साँडों का जो गोल बछड़ों जैसी क्रौमों में रहता है उसे डाँट! उन्हें कुचल दे जो चाँदी को प्यार करते हैं। उन क्रौमों को मुन्तशिर कर जो जंग करने से लुत्फ़अन्दोज़ होती हैं।

३१मिस्र से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने हाथ अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।

³²ऐ दुनिया की सलतनतो, अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ! रब की मदहसराई करो (सिलाह)

³³जो अपने रथ पर सवार हो कर क्रदीम ज़माने के बुलन्दतरीन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो उस की आवाज़ जो ज़ोर से गरज रहा है।

³⁴अल्लाह की कुदरत को तस्लीम करो! उस की अज़मत इस्राईल पर छाई रहती और उस की कुदरत आसमान पर है।

³⁵ऐ अल्लाह, तू अपने मक्दिसे से ज़ाहिर होते वक़्त कितना महीब है। इस्राईल का ख़ुदा ही क़ौम को कुव्वत और ताक़त अता करता है। अल्लाह की तम्ज़ीद हो!

आज़माइश से नजात की दुआ

69 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल।
मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्योंकि पानी मेरे गले तक पहुँच गया है।

²मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँओ जमाने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की गहराइयों में आ गया हूँ, सैलाब मुझ पर गालिब आ गया है।

³मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला बैठ गया है। अपने ख़ुदा का इन्तिज़ार करते करते मेरी आँखें धुन्दला गईं।

⁴जो बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं वह मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर हैं। जो कुछ मैं ने नहीं लूटा उसे मुझ से तलब किया जाता है।

⁵ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाकिफ़ है, मेरा कुसूर तुझ से पोशीदा नहीं है।

⁶ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अप्रवाज, जो तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शर्मिन्दा न हों। ऐ इस्राईल के ख़ुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की रुस्वाई न हो।

⁷क्योंकि तेरी ख़ातिर मैं शर्मिन्दगी बर्दाश्त कर रहा हूँ, तेरी ख़ातिर मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है।

⁸मैं अपने सगे भाइयों के नज़दीक अजनबी और अपनी माँ के बेटों के नज़दीक परदेसी बन गया हूँ।

⁹क्योंकि तेरे घर की गैरत मुझे खा गई है, जो तुझे गालियाँ देते हैं उन की गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।

¹⁰जब मैं रोज़ा रख कर रोता था तो लोग मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे।

¹¹जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो उन के लिए इद्रतअंगेज़ मिसाल बन गया।

¹²जो बुजुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे बारे में गर्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने तन्ज़ भरे गीतों का निशाना बनाते हैं।

¹³लेकिन ऐ रब, मेरी तुझ से दुआ है कि मैं तुझे दुबारा मन्ज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी सुन, अपनी यक़ीनी नजात के मुताबिक़ मुझे बचा।

¹⁴मुझे दलदल से निकाल ताकि गर्क़ न हो जाऊँ। मुझे उन से छुटकारा दे जो मुझ से नफ़रत करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे बचा।

¹⁵सैलाब मुझ पर गालिब न आए, समुन्दर की गहराई मुझे हड़प न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना मुँह बन्द न कर ले।

¹⁶ऐ रब, मेरी सुन, क्योंकि तेरी शफ़क़त भली है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़ रुजू कर।

¹⁷अपना चेहरा अपने खादिम से छुपाए न रख, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!

¹⁸क़रीब आ कर मेरी जान का फ़िद्या दे, मेरे दुश्मनों के सबब से इवज़ाना दे कर मुझे छोड़ा।

¹⁹तू मेरी रुस्वाई, मेरी शर्मिन्दगी और तज़लील से वाकिफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम दुश्मनों पर लगी रहती हैं।

²⁰उन के तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इन्तिज़ार में रहा, लेकिन बेफ़ाइदा। मैं ने तवक्क़ो की कि कोई मुझे दिलासा दे, लेकिन एक भी न मिला।

²¹उन्होंने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

²²उन की मेज़ उन के लिए फंदा और उन के साथियों के लिए जाल बन जाए।

²³उन की आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें। उन की कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।

²⁴अपना पूरा गुस्सा उन पर उतार, तेरा सख़्त ग़ज़ब उन पर आ पड़े।

²⁵उन की रिहाइशगाह सुन्सान हो जाए और कोई उन के ख़ैमों में आबाद न हो,

²⁶क्योंकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते हैं, जिसे तू ही ने ज़ख़मी किया उस का दुख दूसरों को सुना कर खुश होते हैं।

²⁷उन के कुसूर का सख़्ती से हिसाब-किताब कर, वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।

²⁸उन्हें किताब-ए-हयात से मिटाया जाए, उन का नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज न हो।

²⁹हाय, मैं मुसीबत में फंसा हुआ हूँ, मुझे बहुत दर्द है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफूज़ रखे।

³⁰मैं अल्लाह के नाम की मदहसराई करूँगा, शुक़रगुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।

³¹यह रब को बैल या सींग और खुर रखने वाले साँड से कहीं ज़यादा पसन्द आएगा।

³²हलीम अल्लाह का काम देख कर खुश हो जाएंगे। ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!

³³क्योंकि रब मुहताजों की सुनता और अपने क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

³⁴आसमान-ओ-ज़मीन उस की तम्जीद करें, समुन्दर और जो कुछ उस में हरकत करता है उस की सताइश करे।

³⁵क्योंकि अल्लाह सिप्यून को नजात दे कर यहूदाह के शहरों को तामीर करेगा, और उस के ख़ादिम उन पर क़ब्ज़ा करके उन में आबाद हो जाएंगे।

³⁶उन की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी, और उस के नाम से मुहब्बत रखने वाले उस में बसे रहेंगे।

दुश्मन से नजात की दुआ

70 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। याददाश्त के लिए।

ऐ अल्लाह, जल्दी से आ कर मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

²मेरे जानी दुश्मन शर्मिन्दा हो जाएँ, उन की सख़्त रुस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उन का मुँह काला हो जाए।

³जो मेरी मुसीबत देख कर क़हक़हा लगाते हैं वह शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।

⁴लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी खुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, "अल्लाह अज़ीम है!"

⁵लेकिन मैं नाचार और मुहताज हूँ। ऐ अल्लाह, जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदाहिन्दा है। ऐ रब, देर न कर!

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

71 ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है। मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे।

²अपनी रास्ती से मुझे बचा कर छुटकारा दे। अपना कान मेरी तरफ़ झुका कर मुझे नजात दे।

3 मेरे लिए चटान पर मट्फूज़ घर हो जिस में मैं हर वक्रत पनाह ले सकूँ। तू ने फ़रमाया है कि मुझे नजात देगा, क्योंकि तू ही मेरी चटान और मेरा क़िला है।

4 ऐ मेरे खुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उस के क़ब्ज़े से जो बेइन्साफ़ और ज़ालिम है।

5 क्योंकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।

6 पैदाइश से ही मैं ने तुझ पर तकिया किया है, माँ के पेट से तू ने मुझे सँभाला है। मैं हमेशा तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा।

7 बहुतों के नज़दीक मैं बदनशुगूनी हूँ, लेकिन तू मेरी मज़बूत पनाहगाह है।

8 दिन भर मेरा मुँह तेरी तम्जीद और ताज़ीम से लबरेज़ रहता है।

9 बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म होने पर मुझे तर्क न कर।

10 क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे हैं, जो मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह एक दूसरे से सलाह-मश्वरा कर रहे हैं।

11 वह कहते हैं, "अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया है। उस के पीछे पड़ कर उसे पकड़ो, क्योंकि कोई नहीं जो उसे बचाए।"

12 ऐ अल्लाह, मुझ से दूर न हो। ऐ मेरे खुदा, मेरी मदद करने में जल्दी कर।

13 मेरे हरीफ़ शर्मिन्दा हो कर फ़ना हो जाएँ, जो मुझे नुक़सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान और रुस्वाई तले दब जाएँ।

14 लेकिन मैं हमेशा तेरे इन्तिज़ार में रहूँगा, हमेशा तेरी सताइश करता रहूँगा।

15 मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन तेरे नजातबख़्श कामों का ज़िक़र करता

रहेगा, गो मैं उन की पूरी तादाद गिन भी नहीं सकता।

16 मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के अज़ीम काम सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही रास्ती याद करूँगा।

17 ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोज़िज़ात का एलान करता आया हूँ।

18 ऐ अल्लाह, ख्वाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं आने वाली पुशत के तमाम लोगों को तेरी कुव्वत और कुदरत के बारे में बता न लूँ।

19 ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिस ने इतने अज़ीम काम किए हैं?

20 तू ने मुझे मुतअदिद तलख़ तजरिबों में से गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िन्दा भी करेगा, तू मुझे ज़मीन की गहराइयों में से वापस लाएगा।

21 मेरा रुतबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली दे।

22 ऐ मेरे खुदा, मैं सितार बजा कर तेरी सताइश और तेरी वफ़ादारी की तम्जीद करूँगा। ऐ इस्राईल के कुहूस, मैं सरोद बजा कर तेरी तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

23 जब मैं तेरी मदहसराई करूँगा तो मेरे होंट खुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तू ने फ़िद्या दे कर छुड़ाया है शादियाना बजाएगी।

24 मेरी ज़बान भी दिन भर तेरी रास्ती बयान करेगी, क्योंकि जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते थे वह शर्मसार और रुसवा हो गए हैं।

सलामती का बादशाह

72

सुलैमान का ज़बूर।

ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना

इन्साफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी रास्ती बरख़्श दे

२ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इन्साफ़ से तेरे मुसीबतज़दों की अदालत करे।

३पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ रास्ती पहुँचाएँ।

४वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इन्साफ़ करे और मुहताजों की मदद करके ज़ालिमों को कुचल दे।

५तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे जब तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।

६वह कटी हुई घास के खेत पर बरसने वाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर करने वाली बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो जाए।

७उस के दौर-ए-हुकूमत में रास्तबाज़ फले फूलेगा, और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का गल्बा होगा।

८वह एक समुन्दर से दूसरे समुन्दर तक और दरया-ए-फुरात से दुनिया की इन्तिहा तक हुकूमत करे।

९रैगिस्तान के बाशिन्दे उस के सामने झुक जाएँ, उस के दुश्मन खाक चारें।

१०तरसीस और साहिली इलाकों के बादशाह उसे खराज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे बाज पेश करें।

११तमाम बादशाह उसे सिज्दा करें, सब अक्रवाम उस की खिदमत करें।

१२क्यूँकि जो ज़रूरतमन्द मदद के लिए पुकारे उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और जिस की मदद कोई नहीं करता उसे वह रिहाई देगा।

१३वह पस्तहालों और ग़रीबों पर तरस खाएगा, मुहताजों की जान को बचाएगा।

१४वह इवज़ाना दे कर उन्हें ज़ुल्म-ओ-तशहद से छुड़ाएगा, क्यूँकि उन का खून उस की नज़र में क़ीमती है।

१५बादशाह जिन्दाबाद! सबा का सोना उसे दिया जाए। लोग हमेशा उस के लिए दुआ करें, दिन भर उस के लिए बरकत चाहें।

१६मुल्क में अनाज की कस्रत हो, पहाड़ों की चोटियों पर भी उस की फ़सलें लहलहाएँ। उस का फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों के बाशिन्दे हरियाली की तरह फलें फूलें।

१७बादशाह का नाम अबद तक क़ाइम रहे, जब तक सूरज चमके उस का नाम फले फूले। तमाम अक्रवाम उस से बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक कहें।

१८रब खुदा की तम्जीद हो जो इस्राईल का खुदा है। सिर्फ़ वही मौजिज़े करता है!

१९उस के जलाली नाम की अबद तक तम्जीद हो, पूरी दुनिया उस के जलाल से भर जाए। आमीन, फिर आमीन।

२०यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ ख़त्म होती हैं।

तीसरी किताब 73-89

बेदीनों की कामयाबी के बावजूद तसल्ली

73 आसफ़ का ज़बूर। यक़ीनन अल्लाह इस्राईल पर मेहरबान है, उन पर जिन के दिल पाक हैं।

२लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे क़दम लज़िज़ खाने को थे।

३क्यूँकि शेखीबाज़ों को देख कर मैं बेचैन हो गया, इस लिए कि बेदीन इतने खुशहाल हैं।

४मरते वक़्त उन को कोई तकलीफ़ नहीं होती, और उन के जिस्म मोटे-ताज़े रहते हैं।

५आम लोगों के मसाइल से उन का वास्ता नहीं पड़ता। जिस दर्द-ओ-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं उस से वह आज़ाद होते हैं।

६इस लिए उन के गले में तकब्बुर का हार है, वह ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।

7 चर्बी के बाइस उन की आँखें उभर आई हैं। उन के दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ्त में रहते हैं।

8 वह मज़ाक़ उड़ा कर बुरी बातें करते हैं, अपने गुरूर में जुल्म की धमकियाँ देते हैं।

9 वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से निकलता है वह आसमान से है, जो बात हमारी ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए अहमियत रखती है।

10 चुनाँचे अवाम उन की तरफ़ रूजू होते हैं, क्योंकि उन के हाँ कसत का पानी पिया जाता है।

11 वह कहते हैं, “अल्लाह को क्या पता है? अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।”

12 देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा करते हैं।

13 यक़ीनन मैं ने बेफ़ाइदा अपना दिल पाक रखा और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने से बाज़ रखे।

14 क्योंकि दिन भर मैं दर्द-ओ-करब में मुत्तला रहता हूँ, हर सुबह मुझे सज़ा दी जाती है।

15 अगर मैं कहता, “मैं भी उन की तरह बोलूँगा,” तो तेरे फ़र्ज़न्दों की नस्ल से ग़दारी करता।

16 मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया, अज़ियत में सिर्फ़ इज़ाफ़ा हुआ।

17 तब मैं अल्लाह के मक़्दिस में दाख़िल हो कर समझ गया कि उन का अन्जाम क्या होगा।

18 यक़ीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा, उन्हें फ़रेब में फंसा कर ज़मीन पर पटख देगा।

19 अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे, दृशतनाक मुसीबत में फंस कर मुकम्मल तौर पर फ़ना हो जाएंगे।

20 ऐ रब, जिस तरह ख़्वाब जाग उठते वक़्त ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते वक़्त उन्हें वहम करार दे कर हक़ीर जानेगा।

21 जब मेरे दिल में तल्ख़ी पैदा हुई और मेरे बातिन में सख़्त दर्द था

22 तो मैं अहमक था। मैं कुछ नहीं समझता था बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिन्द था।

23 तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा, क्योंकि तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।

24 तू अपने मश्वरे से मेरी क्रियादत करके आख़िर में इज़ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़दम करेगा।

25 जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की कोई भी चीज़ नहीं चाहूँगा।

26 ख़्वाह मेरा जिस्म और मेरा दिल जवाब दे जाएँ, लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की चटान और मेरी मीरास है।

27 यक़ीनन जो तुझ से दूर हैं वह हलाक हो जाएंगे, जो तुझ से बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर देगा।

28 लेकिन मेरे लिए अल्लाह की कुर्बत सब कुछ है। मैं ने रब क़ादिर-ए-मुतलक़ को अपनी पनाहगाह बनाया है, और मैं लोगों को तेरे तमाम काम सुनाऊँगा।

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़सोस

74 आसफ़ का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
ऐ अल्लाह, तू ने हमें हमेशा के लिए क्यूँ रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर तेरा क्रहर क्यूँ भड़कता रहता है?

2 अपनी जमाअत को याद कर जिसे तू ने क़दीम ज़माने में ख़रीदा और इवज़ाना दे कर छुड़ाया ताकि तेरी मीरास का क़बीला

हो। कोह-ए-सिय्यून को याद कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।

³अपने क्रदम इन दाइमी खंडरात की तरफ़ बढ़ा। दुश्मन ने मक्दिस में सब कुछ तबाह कर दिया है।

⁴तेरे मुखालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जल्सागाह में अपने निशान गाड़ दिए हैं।

⁵उन्होंने ने गुंजान जंगल में लक्कड़हारों की तरह अपने कुल्हाड़े चलाए,

⁶अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम कन्दाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।

⁷उन्होंने ने तेरे मक्दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श तक तेरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।

⁸अपने दिल में वह बोले, “आओ, हम उन सब को खाक में मिलाएँ!” उन्होंने ने मुल्क में अल्लाह की हर इबादतगाह नज़र-ए-आतिश कर दी है।

⁹अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई और मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब तक रहेंगे।

¹⁰ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान करेगा, दुश्मन कब तक तेरे नाम की तक्फ़ीर करेगा?

¹¹तू अपना हाथ क्यों हटाता, अपना दहना हाथ दूर क्यों रखता है? उसे अपनी चादर से निकाल कर उन्हें तबाह कर दे!

¹²अल्लाह क्रदीम ज़माने से मेरा बादशाह है, वही दुनिया में नजातबख़्श काम अन्जाम देता है।

¹³तू ही ने अपनी कुदरत से समुन्दर को चीर कर पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।

¹⁴तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर करके उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।

¹⁵एक जगह तू ने चश्मे और नदियाँ फूटने दीं, दूसरी जगह कभी न सूखने वाले दरया सूखने दिए।

¹⁶दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और सूरज तेरे ही हाथ से क़ाइम हुए।

¹⁷तू ही ने ज़मीन की हुदूद मुकरर कीं, तू ही ने गर्मियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

¹⁸ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर। खयाल कर कि अहमक़ क्रौम तेरे नाम पर कुफ़्र बकती है।

¹⁹अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों के हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों की ज़िन्दगी को न भूल।

²⁰अपने अहद का लिहाज़ कर, क्योंकि मुल्क के तारीक कोने जुल्म के मैदानों से भर गए हैं।

²¹होने न दे कि मज़लूमों को शर्मिन्दा हो कर पीछे हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा और ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।

²²ऐ अल्लाह, उठ कर अदालत में अपने मुआमले का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़ दिन भर तुझे लान-तान करता है।

²³अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने मुखालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा याद कर।

अल्लाह मगरूरों की अदालत करता है

75

आसफ़ का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा नाम उन के क़रीब है जो तेरे मौजिज़े बयान करते हैं।

²अल्लाह फ़रमाता है, “जब मेरा वक़्त आएगा तो मैं इन्साफ़ से अदालत करूँगा।

३गो ज़मीन अपने बाशिन्दों समेत डगमगाने लगे, लेकिन मैं ही ने उस के सतूनों को मज़बूत कर दिया है। (सिलाह)

४शेखीबाज़ों से मैं ने कहा, 'डींगें मत मारो,' और बेदीनों से, 'अपने आप पर फ़ख़र मत करो।'^a

५न अपनी ताक़त पर शेखी मारो,^b न अकड़ कर कुफ़्र बको।'^c

६क्योंकि सरफ़राज़ी न मशरिफ़ से, न मगरिब से और न बयाबान से आती है

७बल्कि अल्लाह से जो मुन्सिफ़ है। वही एक को पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।

८क्योंकि रब के हाथ में झागदार और मसालेदार मै का प्याला है जिसे वह लोगों को पिला देता है। यक़ीनन दुनिया के तमाम बेदीनों को इसे आखिरी क्रतरे तक पीना है।

९लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की मदहसराई करूँगा।

१०अल्लाह फ़रमाता है, "मैं तमाम बेदीनों की कमर तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफ़राज़ होगा।"^c

अल्लाह मुन्सिफ़ है

76

आसफ़ का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

अल्लाह यहूदाह में मशहूर है, उस का नाम इस्राईल में अज़ीम है।

२उस ने अपनी मान्द सालिम^d में और अपना भट कोह-ए-सिय्यून पर बना लिया है।

३वहाँ उस ने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर कर दिया है। (सिलाह)

४ऐ अल्लाह, तू दरख़्शाँ है, तू शिकार के पहाड़ों से आया हुआ अज़ीमु-श़ान सूरमा है।

५बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं उठा सकता।

६ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और रथबान बेहिस्स-ओ-हरकत हो गए हैं।

७तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे हुज़ूर काइम रहेगा?

८तू ने आसमान से फ़ैसले का एलान किया। ज़मीन सहम कर चुप हो गई

९जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए आया। (सिलाह)

१०क्योंकि इन्सान का तैश भी तेरी तम्जीद का बाइस है। उस के तैश का आखिरी नतीजा तेरा जलाल ही है।^e

११रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नतें मान कर उन्हें पूरा करो। जितने भी उस के इर्दगिर्द हैं वह पुरजलाल ख़ुदा के हुज़ूर हदिए लाएँ।

१२वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता है, उसी से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

77

आसफ़ का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : सींग मत उठाओ।

^bलफ़ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।

^cलफ़ज़ी तर्जुमा : बेदीनों के तमाम सींगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सींग सरफ़राज़ हो जाएगा।

^dसालिम से मुराद यरूशलम है।

^eलफ़ज़ी तर्जुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

मैं अल्लाह से फ़र्याद करके मदद के लिए चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ पर ध्यान दे।

²अपनी मुसीबत में मैं ने रब को तलाश किया। रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानागा उस की तरफ़ उठे रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने से इन्कार किया।

³मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रूह निढाल हो जाती है। (सिलाह)

⁴तू मेरी आँखों को बन्द होने नहीं देता। मैं इतना बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

⁵मैं क़दीम ज़माने पर ग़ौर करता हूँ, उन सालों पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।

⁶रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा दिल महव-ए-ख़याल रहता और मेरी रूह तप़तीश करती रहती है।

⁷"क्या रब हमेशा के लिए रद्द करेगा, क्या आइन्दा हमें कभी पसन्द नहीं करेगा?

⁸क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही है? क्या उस के वादे अब से जवाब दे गए हैं?

⁹क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है? क्या उस ने गुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?" (सिलाह)

¹⁰मैं बोला, "इस से मुझे दुख है कि अल्लाह तआला का दहना हाथ बदल गया है।"

¹¹मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम ज़माने के तेरे मौजिज़े याद करूँगा।

¹²जो कुछ तू ने किया उस के हर पहलू पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में महव-ए-ख़याल रहूँगा।

¹³ऐ अल्लाह, तेरी राह कुदूस है। कौन सा माबूद हमारे ख़ुदा जैसा अज़ीम है?

¹⁴तू ही मौजिज़े करने वाला ख़ुदा है। अक्वाम के दरमियान तू ने अपनी कुदरत का इज़हार किया है।

¹⁵बड़ी कुव्वत से तू ने इवज़ाना दे कर अपनी क्रौम, याकूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा कर दिया है। (सिलाह)

¹⁶ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने लगा।

¹⁷मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे और तेरे तीर इधर उधर चलने लगे।

¹⁸आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती उछल पड़ी।

¹⁹तेरी राह समुन्दर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी में से गुज़रा, तो भी तेरे नक्श-ए-क़दम किसी को नज़र न आए।

²⁰मूसा और हारून के हाथ से तू ने रेवड़ की तरह अपनी क्रौम की राहनुमाई की।

इसाईल की तारीख़ में इलाही सज़ा और रहम

78 आसफ़ का जबूर। हिक्मत का गीत।
ऐ मेरी क्रौम, मेरी हिदायत पर ध्यान दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।

²मैं तम्सीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के मुअम्मे बयान करूँगा।

³जो कुछ हम ने सुन लिया और हमें मालूम हुआ है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है

⁴उसे हम उन की औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम आने वाली पुश्त को रब के क़ाबिल-ए-तारीफ़ काम बताएँगे, उस की कुदरत और मौजिज़ात बयान करेंगे।

⁵क्योंकि उस ने याकूब की औलाद को शरीअत दी, इसाईल में अहकाम क़ाइम किए। उस ने फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह अहकाम अपनी औलाद को सिखाएँ

6 ताकि आने वाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी अपने बच्चों को सुनाना था।

7 क्योंकि अल्लाह की मर्ज़ी है कि इस तरह हर पुश्त अल्लाह पर एतिमाद रख कर उस के अज़ीम काम न भूले बल्कि उस के अहकाम पर अमल करे।

8 वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की मानिन्द हों जो ज़िद्दी और सरकश नस्ल थे, ऐसी नस्ल जिस का दिल साबितकदम नहीं था और जिस की रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न रही।

9 चुनाँचे इफ़्राईम के मर्द गो कमानों से लेस थे जंग के वक्रत फ़रार हुए।

10 वह अल्लाह के अहद के वफ़ादार न रहे, उस की शरीअत पर अमल करने के लिए तय्यार नहीं थे।

11 जो कुछ उस ने किया था, जो मोज़िज़े उस ने उन्हें दिखाए थे, इफ़्राईमी वह सब कुछ भूल गए।

12 मुल्क-ए-मिस्र के इलाक़े जुअन में उस ने उन के बापदादा के देखते देखते मोज़िज़े किए थे।

13 समुन्दर को चीर कर उस ने उन्हें उस में से गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार की तरह खड़ा रहा।

14 दिन को उस ने बादल के ज़रीए और रात भर चमकदार आग से उन की क्रियादत की।

15 रेगिस्तान में उस ने पत्थरों को चाक करके उन्हें समुन्दर की सी कस्रत का पानी पिलाया।

16 उस ने होने दिया कि चटान से नदियाँ फूट निकलें और पानी दरयाओं की तरह बहने लगे।

17 लेकिन वह उस का गुनाह करने से बाज़ न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।

18 जान-बूझ कर उन्होंने ने अल्लाह को आज़मा कर वह ख़ुराक माँगी जिस का लालच करते थे।

19 अल्लाह के ख़िलाफ़ कुफ़्र बक कर वह बोले, "क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़ बिछा सकता है?"

20 बेशक जब उस ने चटान को मारा तो पानी फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या वह रोटी भी दे सकता है, अपनी क़ौम को गोश्त भी मुहय्या कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।"

21 यह सुन कर रब तैश में आ गया। याकूब के ख़िलाफ़ आग भड़क उठी, और उस का ग़ज़ब इस्राईल पर नाज़िल हुआ।

22 क्यों? इस लिए कि उन्हें अल्लाह पर यक़ीन नहीं था, वह उस की नजात पर भरोसा नहीं रखते थे।

23 इस के बावजूद अल्लाह ने उन के ऊपर बादलों को हुकम दे कर आसमान के दरवाज़े खोल दिए।

24 उस ने खाने के लिए उन पर मन बरसाया, उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।

25 हर एक ने फ़रिशतों की यह रोटी खाई बल्कि अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उन के पेट भर गए।

26 फिर उस ने आसमान पर मशरिकी हवा चलाई और अपनी कुदरत से जुनूबी हवा पहुँचाई।

27 उस ने गर्द की तरह उन पर गोश्त बरसाया, समुन्दर की रेत जैसे बेशुमार परिन्दे उन पर गिरने दिए।

28 ख़ैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उन के घरों के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।

29 तब वह खा खा कर ख़ूब सेर हो गए, क्योंकि जिस का लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें मुहय्या किया था।

30 लेकिन उन का लालच अभी पूरा नहीं हुआ था और गोश्त अभी उन के मुँह में था

31कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। क्रौम के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इस्राईल के जवान खाक में मिल गए।

32इन तमाम बातों के बावजूद वह अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करते गए और उस के मौजिज़ात पर ईमान न लाए।

33इस लिए उस ने उन के दिन नाकामी में गुज़रने दिए, और उन के साल दहशत की हालत में इख़तितामपज़ीर हुए।

34जब कभी अल्लाह ने उन में क्रल्ल-ओ-ग़ारत होने दी तो वह उसे ढूँडने लगे, वह मुड़ कर अल्लाह को तलाश करने लगे।

35तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी चटान, अल्लाह तआला हमारा छुड़ाने वाला है।

36लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से उसे झूट पेश करते थे।

37न उन के दिल साबितक्रदमी से उस के साथ लिपटे रहे, न वह उस के अह्द के वफ़ादार रहे।

38तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उस ने उन्हें तबाह न किया बल्कि उन का कुसूर मुआफ़ करता रहा। बार बार वह अपने ग़ज़ब से बाज़ आया, बार बार अपना पूरा क्रहर उन पर उतारने से गुरेज़ किया।

39क्यूँकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इन्सान हैं, हवा का एक झोंका जो गुज़र कर कभी वापस नहीं आता।

40रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उस से सरकश हुए, कितनी मर्तबा उसे दुख पहुँचाया।

41बार बार उन्होंने ने अल्लाह को आज़माया, बार बार इस्राईल के कुदूस को रंजीदा किया।

42उन्हें उस की कुदरत याद न रही, वह दिन जब उस ने फ़िद्या दे कर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,

43वह दिन जब उस ने मिस्र में अपने इलाही निशान दिखाए, जुअन के इलाक़े में अपने मौजिज़े किए।

44उस ने उन की नहरों का पानी खून में बदल दिया, और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।

45उस ने उन के दरमियान जूओं के गोल भेजे जो उन्हें खा गईं, मेंढक जो उन पर तबाही लाए।

46उन की पैदावार उस ने जवान टिड्डियों के हवाले की, उन की मेहनत का फल बालिग़ टिड्डियों के सपुर्द किया।

47उन की अंगूर की बेलें उस ने ओलों से, उन के अन्जीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर दिए।

48उन के मवेशी उस ने ओलों के हवाले किए, उन के रेवड़ बिजली के सपुर्द किए।

49उस ने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब नाज़िल किया। क्रहर, ख़फ़गी और मुसीबत यानी तबाही लाने वाले फ़रिशतों का पूरा दस्ता उन पर हम्लाआवर हुआ।

50उस ने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तय्यार करके उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक वबा की ज़द में आने दिया।

51मिस्र में उस ने तमाम पहलौठों को मार डाला और हाम के खैमों में मर्दानगी का पहला फल तमाम कर दिया।

52फिर वह अपनी क्रौम को भेड़-बकरियों की तरह मिस्र से बाहर ला कर रेगिस्तान में रेवड़ की तरह लिए फिरा।

53वह हिफ़ाज़त से उन की क्रियादत करता रहा। उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उन के दुश्मन समुन्दर में डूब गए।

54यूँ अल्लाह ने उन्हें मुकद्दस मुल्क तक पहुँचाया, उस पहाड़ तक जिसे उस के दहने हाथ ने हासिल किया था।

55उन के आगे आगे वह दीगर क्रौमों निकालता गया। उन की ज़मीन उस ने तक्सीम करके इस्राईलियों को मीरास में दी,

और उन के खैमों में उस ने इस्राईली क़बीले बसाए।

⁵⁶इस के बावजूद वह अल्लाह तआला को आज़माने से बाज़ न आए बल्कि उस से सरकश हुए और उस के अहक़ाम के ताबे न रहे।

⁵⁷अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दार बन कर बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो गए।

⁵⁸उन्होंने ने ऊँची जगहों की ग़लत कुर्बानग़ाहों से अल्लाह को गुस्सा दिलाया और अपने बुतों से उसे रंजीदा किया।

⁵⁹जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह ग़ज़बनाक हुआ और इस्राईल को मुकम्मल तौर पर मुस्तरद कर दिया।

⁶⁰उस ने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़ दी, वह ख़ैमा जिस में वह इन्सान के दरमियान सुकूनत करता था।

⁶¹अहद का सन्दूक उस की कुदरत और जलाल का निशान था, लेकिन उस ने उसे दुश्मन के हवाले करके जिलावतनी में जाने दिया।

⁶²अपनी क़ौम को उस ने तलवार की ज़द में आने दिया, क्योंकि वह अपनी मौरूसी मिलकियत से निहायत नाराज़ था।

⁶³क़ौम के जवान नज़र-ए-आतिश हुए, और उस की कुंवारीयों के लिए शादी के गीत गाए न गए।

⁶⁴उस के इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस की बेवाओं ने मातम न किया।

⁶⁵तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह जिस की नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की मानिन्द जिस से नशे का असर उतर गया हो।

⁶⁶उस ने अपने दुश्मनों को मार मार कर भगा दिया और उन्हें हमेशा के लिए शर्मिन्दा कर दिया।

⁶⁷उस वक़्त उस ने यूसुफ़ का ख़ैमा रद किया और इफ़्राईम के क़बीले को न चुना

⁶⁸बल्कि यहूदाह के क़बीले और कोह-ए-सिय्यून को चुन लिया जो उसे प्यारा था।

⁶⁹उस ने अपना मक्ब्रिदिस बुलन्दियों की मानिन्द बनाया, ज़मीन की मानिन्द जिसे उस ने हमेशा के लिए क़ाइम किया है।

⁷⁰उस ने अपने खादिम दाऊद को चुन कर भेड़-बकरियों के बाड़ों से बुलाया।

⁷¹हाँ, उस ने उसे भेड़ों^a की देख-भाल से बुलाया ताकि वह उस की क़ौम याकूब, उस की मीरास इस्राईल की गल्लाबानी करे।

⁷²दाऊद ने खुलूसदिली से उन की गल्लाबानी की, बड़ी महारत से उस ने उन की राहनुमाई की।

जंग की मुसीबत में क़ौम की दुआ

79 आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, अजनबी क़ौमों तेरी मौरूसी ज़मीन में घुस आई है। उन्होंने तेरी मुकद्दस सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यरूशलम को मल्बे का ढेर बना दिया है।

²उन्होंने तेरे खादिमों की लार्शे परिन्दों को और तेरे ईमानदारों का गोशत जंगली जानवरों को खिला दिया है।

³यरूशलम के चारों तरफ़ उन्होंने ने खून की नदियाँ बहाई, और कोई बाक़ी न रहा जो मुर्दों को दफ़नाता।

⁴हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना बना लिया है, इर्दगिर्द की क़ौमों हमारी हंसी उड़ाती और लान-तान करती हैं।

^aइब्रानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

5ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक गुस्से होगा? तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह भड़कती रहेगी?

6अपना ग़ज़ब उन अक्रवाम पर नाज़िल कर जो तुझे तस्लीम नहीं करतीं, उन सल्तनतों पर जो तेरे नाम को नहीं पुकारतीं।

7क्योंकि उन्होंने ने याकूब को हड़प करके उस की रिहाइशगाह तबाह कर दी है।

8हमें उन गुनाहों के कुसूरवार न ठहरा जो हमारे बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में जल्दी कर, क्योंकि हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।

9ऐ हमारी नज़ात के खुदा, हमारी मदद कर ताकि तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने नाम की खातिर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।

10दीगर अक्रवाम क्यूँ कहें, "उन का खुदा कहाँ है?" हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने खादिमों के खून का बदला लेता है।

11क़ैदियों की आहें तुझ तक पहुँचीं, जो मरने को हैं उन्हें अपनी अज़ीम कुदरत से महफूज़ रख।

12ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने तुझ पर बरसाई है उसे सात गुना उन के सरो पर वापस ला।

13तब हम जो तेरी क्रौम और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुश्त-दर-पुश्त तेरी हम्द-ओ-सना करेंगे।

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

80

आसफ़ का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़: अहद के सोसन।

ऐ इस्राईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू जो यूसुफ़ की रेवड़ की तरह राहनुमाई करता है, हम पर तवज्जुह कर! तू जो करूबी फ़रिशतों के दरमियान तख़तनशीन है, अपना नूर चमका!

2इफ़्राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी कुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नज़ात पाएँगे।

4ऐ रब, लश्करों के खुदा, तेरा ग़ज़ब कब तक भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी क्रौम तुझ से इल्तिजा कर रही है?

5तू ने उन्हें आँसूओं की रोटी खिलाई और आँसूओं का प्याला खूब पिलाया।

6तू ने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना बनाया। हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7ऐ लश्करों के खुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नज़ात पाएँगे।

8अंगूर की जो बेल मिस्र में उग रही थी उसे तू उखाड़ कर मुल्क-ए-कनआन लाया। तू ने वहाँ की अक्रवाम को भगा कर यह बेल उन की जगह लगाई।

9तू ने उस के लिए ज़मीन तय्यार की तो वह जड़ पकड़ कर पूरे मुल्क में फैल गई।

10उस का साया पहाड़ों पर छा गया, और उस की शाखों ने देवदार के अज़ीम दरख्तों को ढाँक लिया।

11उस की टहनियाँ मगरिब में समुन्दर तक फैल गई, उस की डालियाँ मशरिक्क में दरया-ए-फ़ुरात तक पहुँच गईं।

12तू ने उस की चारदीवारी क्यूँ गिरा दी? अब हर गुज़रने वाला उस के अंगूर तोड़ लेता है।

13जंगल के सूअर उसे खा खा कर तबाह करते, खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14ऐ लश्करों के खुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रूजू फ़रमा! आसमान से नज़र डाल कर

हालात पर ध्यान दे। इस बेल की देख-भाल कर।

15उसे मट्फूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने ज़मीन में लगाया, उस बटे को जिसे तू ने अपने लिए पाला है।

16इस वक्रत वह कट कर नज़र-ए-आतिश हुआ है। तेरे चेहरे की डाँट-डपट से लोग हलाक हो जाते हैं।

17तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बन्दे को पनाह दे, उस आदमज़ाद को जिसे तू ने अपने लिए पाला था।

18तब हम तुझ से दूर नहीं हो जाएंगे। बरख़्श दे कि हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम पुकारेंगे।

19ऐ रब, लश्करोँ के खुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

हकीकी इबादत क्या है?

81

आसफ़ का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गितीत।

अल्लाह हमारी कुव्वत है। उस की खुशी में शादियाना बजाओ, याक़ूब के खुदा की ताज़ीम में खुशी के नारे लगाओ।

2गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।

3नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद के जिस दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।

4क्योंकि यह इस्राईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब के खुदा का फ़रमान है।

5जब यूसुफ़ मिस्र के खिलाफ़ निकला तो अल्लाह ने खुद यह मुकर्रर किया।

मैं ने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं जानता था,

6"मैं ने उस के कंधे पर से बोझ उतारा और उस के हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।

7मुसीबत में तू ने आवाज़ दी तो मैं ने तुझे बचाया। गरजते बादल में से मैं ने तुझे जवाब दिया और तुझे मरीबा के पानी पर आज़माया। (सिलाह)

8ऐ मेरी क़ौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा। ऐ इस्राईल, काश तू मेरी सुने!

9तेरे दरमियान कोई और खुदा न हो, किसी अजनबी माबूद को सिज्दा न कर।

10मैं ही रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया। अपना मुँह खूब खोल तो मैं उसे भर दूँगा।

11लेकिन मेरी क़ौम ने मेरी न सुनी, इस्राईल मेरी बात मानने के लिए तय्यार न था।

12चुनाँचे मैं ने उन्हें उन के दिलों की ज़िद के हवाले कर दिया, और वह अपने ज़ाती मश्वरों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।

13काश मेरी क़ौम सुने, इस्राईल मेरी राहों पर चले!

14तब मैं जल्दी से उस के दुश्मनों को ज़ेर करता, अपना हाथ उस के मुखालिफ़ों के खिलाफ़ उठाता।

15तब रब से नफ़रत करने वाले दबक कर उस की खुशामद करते, उन की शिकस्त अबदी होती।

16लेकिन इस्राईल को मैं बेहतरीन गन्दुम खिलाता, मैं चटान में से शहद निकाल कर उसे सेर करता।"

सब से आला मुन्सिफ़

82

आसफ़ का ज़बूर।

अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है, माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,

2"तुम कब तक अदालत में ग़लत फ़ैसले करके बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)

3पस्तहालों और यतीमों का इन्साफ़ करो, मुसीबतज़दों और ज़रूरतमन्दों के हुकूक़ क़ाइम रखो।

4पस्तहालों और ग़रीबों को बचा कर बेदीनों के हाथ से छुड़ाओ।”

5लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही नहीं आती। वह तारीकी में टटोल टटोल कर घूमते फिरते हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुन्यादेँ झूमने लगी हैं।

6बेशक मैं ने कहा, “तुम खुदा हो, सब अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द हो।

7लेकिन तुम फ़ानी इन्सान की तरह मर जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर जाओगे।”

8ऐ अल्लाह, उठ कर ज़मीन की अदालत कर! क्योंकि तमाम अक्रवाम तेरी ही मौरूसी मिलकियत हैं।

क्रौम के दुश्मनों के खिलाफ़ दुआ

83 गीत। आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, खामोश न रह! ऐ अल्लाह, चुप न रह!

2देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझ से नफ़रत करने वाले अपना सर तेरे खिलाफ़ उठा रहे हैं।

3तेरी क्रौम के खिलाफ़ वह चालाक मन्सूबे बांध रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उन के खिलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं।

4वह कहते हैं, “आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि क्रौम नेस्त हो जाए और इस्राईल का नाम-ओ-निशान बाक़ी न रहे।”

5क्योंकि वह आपस में सलाह-मश्वरा करने के बाद दिली तौर पर मुत्तहिद हो गए हैं, उन्होंने ने तेरे ही खिलाफ़ अह्द बांधा है।

6उन में अदोम के ख़ैमे, इस्माईली, मोआब, हाज़िरी,

7जबाल, अम्मोन, अमालीक़, फिलिस्तिया और सूर के बाशिन्दे शामिल हो गए हैं।

8असूर भी उन में शरीक हो कर लूत की औलाद को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9उन के साथ वही सुलूक कर जो तू ने मिदियानियों से यानी कैसोन नदी पर सीसरा और याबीन से किया।

10क्योंकि वह ऐन-दोर के पास हलाक हो कर खेत में गोबर बन गए।

11उन के शुरफ़ा के साथ वही बरताओ कर जो तू ने ओरेब और ज़एब से किया। उन के तमाम सरदार ज़िबह और ज़ल्मुन्ना की मानिन्द बन जाएँ,

12जिन्होंने कहा, “आओ, हम अल्लाह की चरागाहों पर क़ब्ज़ा करें।”

13ऐ मेरे खुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते हुए भूसे की मानिन्द बना दे।

14जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और एक ही शौला पहाड़ों को झुलसा देता है, 15उसी तरह अपनी आँधी से उन का ताक़क़ुब कर, अपने तूफ़ान से उन को दत्शतज़दा कर दे।

16ऐ रब, उन का मुँह काला कर ताकि वह तेरा नाम तलाश करें।

17वह हमेशा तक शर्मिन्दा और हवास=बाख़ता रहें, वह शर्मसार हो कर हलाक हो जाएँ।

18तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिस का नाम रब है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का मालिक है।

रब के घर पर खुशी

84 कोरह खानदान का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गिचीत।

ऐ रब्ब-उल-अप्रवाज, तेरी सुकूनतगाह कितनी प्यारी है!

२मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म जिन्दा खुदा को ज़ोर से पुकार रहा है।

३ऐ रब्ब-उल-अप्रवाज, ऐ मेरे बादशाह और खुदा, तेरी कुर्बानगाहों के पास परिन्दे को भी घर मिल गया, अबाबील को भी अपने बच्चों को पालने का घोंसला मिल गया है।

४मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)

५मुबारक हैं वह जो तुझ में अपनी ताक़त पाते, जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।

६वह बुका की खुश्क वादी^९ में से गुज़रते हुए उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशों उसे बरकतों से ढाँप देती हैं।

७वह क्रदम-ब-क्रदम तक्रवियत पाते हुए आगे बढ़ते, सब कोह-ए-सिय्यून पर अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाते हैं।

८ऐ रब, ऐ लश्करों के खुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ याकूब के खुदा, ध्यान दे! (सिलाह)

९ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह डाल। अपने मसह किए हुए खादिम के चेहरे पर नज़र कर।

१०तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह पर हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने खुदा के घर के दरवाज़े पर हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में बसने से कहीं ज़्यादा पसन्द है।

११क्योंकि रब खुदा आप्रताब और ढाल है, वही हमें फ़ज़ल और इज़ज़त से नवाज़ता है। जो दियानतदारी से चलें उन्हें वह किसी भी अच्छी चीज़ से महरूम नहीं रखता।

१२ऐ रब्ब-उल-अप्रवाज, मुबारक है वह जो तुझ पर भरोसा रखता है!

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

85 क्रोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, पहले तू ने अपने मुल्क को पसन्द किया, पहले याकूब को बहाल किया।

२पहले तू ने अपनी क्रौम का कुसूर मुआफ़ किया, उस का तमाम गुनाह ढाँप दिया। (सिलाह)

३जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उस का सिलसिला तू ने रोक दिया, जो क्रहर हमारे खिलाफ़ भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

४ऐ हमारी नजात के खुदा, हमें दुबारा बहाल कर। हम से नाराज़ होने से बाज़ आ।

५क्या तू हमेशा तक हम से गुस्से रहेगा? क्या तू अपना क्रहर पुश्त-दर-पुश्त काइम रखेगा?

६क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं करेगा ताकि तेरी क्रौम तुझ से खुश हो जाए?

७ऐ रब, अपनी शफ़क़त हम पर ज़ाहिर कर, अपनी नजात हमें अता फ़रमा।

८मैं वह कुछ सुनूँगा जो खुदा रब फ़रमाएगा। क्यूँकि वह अपनी क्रौम और अपने ईमानदारों से सलामती का वादा करेगा, अलबत्ता लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ न जाएँ।

९यकीनन उस की नजात उन के क़रीब है जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क में सुकूनत करे।

१०शफ़क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले लग गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को बोसा दिया है।

११सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।

^९या रोने वाली यानी आँसूओं की वादी।

12 अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है, हमारी ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा करेगी।

13 रास्ती उस के आगे आगे चल कर उस के क़दमों के लिए रास्ता तय्यार करेगी।

मुसीबत में दुआ

86 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, अपना कान झुका कर मेरी सुन, क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और मुस्ताज़ हूँ।

2 मेरी जान को महफूज़ रख, क्योंकि मैं ईमानदार हूँ। अपने खादिम को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है। तू ही मेरा खुदा है!

3 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि दिन भर मैं तुझे पुकारता हूँ।

4 अपने खादिम की जान को खुश कर, क्योंकि मैं तेरा आरज़ूमन्द हूँ।

5 क्योंकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने के लिए तय्यार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू बड़ी शफ़क़त करता है।

6 ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर तवज्जुह कर।

7 मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनता है।

8 ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिन्द नहीं है। जो कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।

9 ऐ रब, जितनी भी क्रौमें तू ने बनाई वह आ कर तेरे हुज़ूर सिज्दा करेंगी और तेरे नाम को जलाल देगी।

10 क्योंकि तू ही अज़ीम है और मोज़िज़े करता है। तू ही खुदा है।

11 ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी वफ़ादारी में चलूँ। बरख़श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा ख़ौफ़ मानूँ।

12 ऐ रब मेरे खुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।

13 क्योंकि तेरी मुझ पर शफ़क़त अज़ीम है, तू ने मेरी जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

14 ऐ अल्लाह, मगरूर मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिमों का जथ्था मेरी जान लेने के दरपै है। यह लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।

15 लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान खुदा है। तू तहम्मूल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर है।

16 मेरी तरफ़ रज़ू फ़रमा, मुझ पर मेहरबानी कर! अपने खादिम को अपनी कुव्वत अता कर, अपनी खादिमा के बेटे को बचा।

17 मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान दिखा। मुझ से नफ़रत करने वाले यह देख कर शर्मिन्दा हो जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके मुझे तसल्ली दी है।

सिय्यून अक्वाम की माँ है

87 क्रोह की औलाद का जबूर। गीत।
उस की बुन्याद मुकद्दस पहाड़ों पर रखी गई है।

2 रब सिय्यून के दरवाज़ों को याकूब की दीगर आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।

3 ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें सुनाई जाती हैं। (सिलाह)

4 रब फ़रमाता है, "मैं मिस्र और बाबल को उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।" फिलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी कहा जाएगा, "इन की पैदाइश यहीं हुई है।"

5 लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, "हर एक बाशिन्दा उस में पैदा हुआ है। अल्लाह तआला खुद उसे क़ाइम रखेगा।"

6जब रब अक्रवाम को किताब में दर्ज करेगा तो वह साथ साथ यह भी लिखेगा, "यह सिख्यून में पैदा हुई हैं।" (सिलाह)

7और लोग नाचते हुए गाएँगे, "मेरे तमाम चश्मे तुझ में हैं।"

तर्क किए गए शख्स के लिए दुआ

88 क्रोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : महलत लअन्नोत। हैमान इज़ाही का हिक्मत का गीत।

ऐ रब, ऐ मेरी नजात के खुदा, दिन रात मैं तेरे हुज़ूर चीखता चिल्लाता हूँ।

2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी चीखों की तरफ़ झुका।

3क्योंकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी टाँगें क्रब्र में लटकी हुई हैं।

4मुझे उन में शुमार किया जाता है जो पाताल में उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिन्द हूँ जिस की तमाम ताक़त जाती रही है।

5मुझे मुर्दों में तन्हा छोड़ा गया है, क्रब्र में उन मक्तूलों की तरह जिन का तू अब खयाल नहीं रखता और जो तेरे हाथ के सहारे से मुन्कते हो गए हैं।

6तू ने मुझे सब से गहरे गढ़े में, तारीकतरीन गहराइयों में डाल दिया है।

7तेरे गज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है, तू ने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया है। (सिलाह)

8तू ने मेरे क़रीबी दोस्तों को मुझ से दूर कर दिया है, और अब वह मुझ से घिन खाते हैं। मैं फंसा हुआ हूँ और निकल नहीं सकता।

9मेरी आँखें ग़म के मारे पड़मुरदा हो गई हैं। ऐ रब, दिन भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाए रखता हूँ।

10क्या तू मुर्दों के लिए मौजिज़े करेगा? क्या पाताल के बाशिन्दे उठ कर तेरी तम्जीद करेंगे? (सिलाह)

11क्या लोग क्रब्र में तेरी शफ़क़त या पाताल में तेरी वफ़ा बयान करेंगे?

12क्या तारीकी में तेरे मौजिज़े या मुल्क-ए-फ़रामोश में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ, मेरी दुआ सुबह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।

14ऐ रब, तू मेरी जान को क्यूँ रद्द करता, अपने चेहरे को मुझ से पोशीदा क्यूँ रखता है?

15मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के क़रीब रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बर्दाश्त करते करते मैं जान से हाथ धो बैठा हूँ।

16तेरा भड़कता क्रहर मुझ पर से गुज़र गया, तेरे हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।

17दिन भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते हैं, हर तरफ़ से मुझ पर हम्लाआवर होते हैं।

18तू ने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझ से दूर कर रखा है। तारीकी ही मेरी क़रीबी दोस्त बन गई है।

इसाईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

89 ऐतान इज़ाही का हिक्मत का गीत। मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की मदहसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से तेरी वफ़ा का एलान करूँगा।

2क्योंकि मैं बोला, "तेरी शफ़क़त हमेशा तक क़ाइम है, तू ने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुन्याद आसमान पर ही रखी है।"

3तू ने फ़रमाया, "मैं ने अपने चुने हुए बन्दे से अहद बांधा, अपने खादिम दाऊद से क़सम खा कर वादा किया है,

4'मैं तेरी नस्ल को हमेशा तक क़ाइम रखूँगा, तेरा तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा।'" (सिलाह)

5 ए रब, आसमान तेरे मौजिजों की सताइश करेंगे, मुकद्दसीन की जमाअत में ही तेरी वफ़ादारी की तम्जीद करेंगे।

6 क्योंकि बादलों में कौन रब की मानिन्द है? इलाही हस्तियों में से कौन रब की मानिन्द है?

7 जो भी मुकद्दसीन की मजलिस में शामिल हैं वह अल्लाह से खौफ़ खाते हैं। जो भी उस के इर्दगिर्द होते हैं उन पर उस की अज़मत और रोब छाया रहता है।

8 ए रब, ऐ लश्करो के खुदा, कौन तेरी मानिन्द है? ए रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा से घिरा रहता है।

9 तू ठाठें मारते हुए समुन्दर पर हुकूमत करता है। जब वह मौजज़न हो तो तू उसे थमा देता है।

10 तू ने समुन्दरी अज़दहे रहब को कुचल दिया, और वह मक्त्तूल की मानिन्द बन गया। अपने क़वी बाजू से तू ने अपने दुश्मनों को तित्तर-बित्तर कर दिया।

11 आसमान-ओ-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो कुछ उस में है तू ने क़ाइम किया।

12 तू ने शिमाल-ओ-जुनूब को खल्क किया। तबूर और हर्मून तेरे नाम की खुशी में नारे लगाते हैं।

13 तेरा बाजू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर है। तेरा दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए तय्यार है।

14 रास्ती और इन्साफ़ तेरे तख़्त की बुन्याद हैं। शफ़क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती हैं।

15 मुबारक है वह क़ौम जो तेरी खुशी के नारे लगा सके। ए रब, वह तेरे चेहरे के नूर में चलेंगे।

16 रोज़ाना वह तेरे नाम की खुशी मनाएँगे और तेरी रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।

17 क्योंकि तू ही उन की ताक़त की शान है, और तू अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।

18 क्योंकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा बादशाह इस्राईल के कुद्दूस ही का है।

19 माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से हमकलाम हुआ। उस वक़्त तू ने फ़रमाया, “मैं ने एक सूरे को ताक़त से नवाज़ा है, क़ौम में से एक को चुन कर सरफ़राज़ किया है।

20 मैं ने अपने खादिम दाऊद को पा लिया और उसे अपने मुकद्दस तेल से मसह किया है।

21 मेरा हाथ उसे क़ाइम रखेगा, मेरा बाजू उसे तक्कवियत देगा।

22 दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर उसे खाक में नहीं मिलाएँगे।

23 उस के आगे आगे मैं उस के दुश्मनों को पाश पाश करूँगा। जो उस से नफ़रत रखते हैं उन्हें ज़मीन पर पटख़ ढूँगा।

24 मेरी वफ़ा और मेरी शफ़क़त उस के साथ रहेंगी, मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।

25 मैं उस के हाथ को समुन्दर पर और उस के दहने हाथ को दरयाओं पर हुकूमत करने ढूँगा।

26 वह मुझे पुकार कर कहेगा, ‘तू मेरा बाप, मेरा खुदा और मेरी नजात की चटान है।’

27 मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का सब से आला बादशाह बनाऊँगा।

28 मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़क़त से नवाज़ता रहूँगा, मेरा उस के साथ अहद कभी तमाम नहीं होगा।

29 मैं उस की नस्तल हमेशा तक क़ाइम रखूँगा, जब तक आसमान क़ाइम है उस का तख़्त क़ाइम रखूँगा।

30 अगर उस के बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे अहक़ाम पर अमल न करें,

31 अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती करके मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारें

³²तो मैं लाठी ले कर उन की तादीब करूँगा और मोहलक वबाओं से उन के गुनाहों की सज़ा दूँगा।

³³लेकिन मैं उसे अपनी शपक़त से महरूम नहीं करूँगा, अपनी वफ़ा का इन्कार नहीं करूँगा।

³⁴न मैं अपने अह्द की बेहुरमती करूँगा, न वह कुछ तब्दील करूँगा जो मैं ने फ़रमाया है।

³⁵मैं ने एक बार सदा के लिए अपनी कुदूसियत की क़सम खा कर वादा किया है, और मैं दाऊद को कभी धोका नहीं दूँगा।

³⁶उस की नस्ल अबद तक क़ाइम रहेगी, उस का तख़्त आप़ताब की तरह मेरे सामने खड़ा रहेगा।

³⁷चाँद की तरह वह हमेशा तक बरकरार रहेगा, और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार है।" (सिलाह)

³⁸लेकिन अब तू ने अपने मसह किए हुए खादिम को ठुकरा कर रद्द किया, तू उस से ग़ज़बनाक हो गया है।

³⁹तू ने अपने खादिम का अह्द नामन्ज़ूर किया और उस का ताज खाक में मिला कर उस की बेहुरमती की है।

⁴⁰तू ने उस की तमाम फ़सीलें ढा कर उस के क़िलों को मल्बे के ढेर बना दिया है।

⁴¹जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है। वह अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया है।

⁴²तू ने उस के मुखालिफ़ों का दहना हाथ सरफ़राज़ किया, उस के तमाम दुश्मनों को ख़ुश कर दिया है।

⁴³तू ने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके उसे जंग में फ़्रह पाने से रोक दिया है।

⁴⁴तू ने उस की शान ख़त्म करके उस का तख़्त ज़मीन पर पटख़ दिया है।

⁴⁵तू ने उस की जवानी के दिन मुख़तसर करके उसे रुस्वाई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)

⁴⁶ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आप को हमेशा तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क्रहर अबद तक आग की तरह भड़कता रहेगा?

⁴⁷याद रहे कि मेरी ज़िन्दगी कितनी मुख़तसर है, कि तू ने तमाम इन्सान कितने फ़ानी ख़ल्क किए हैं।

⁴⁸कौन है जिस का मौत से वास्ता न पड़े, कौन है जो हमेशा ज़िन्दा रहे? कौन अपनी जान को मौत के क़ब्ज़े से बचाए रख सकता है? (सिलाह)

⁴⁹ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ हैं जिन का वादा तू ने अपनी वफ़ा की क़सम खा कर दाऊद से किया?

⁵⁰ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद कर। मेरा सीना मुतअद्दिद क़ौमों की लान-तान से दुखता है,

⁵¹क्योंकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान की, उन्होंने ने तेरे मसह किए हुए ख़ादिम को हर क़दम पर लान-तान की है!

⁵²अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर आमीन।

चौथी किताब 90-106

फ़ानी इन्सान अल्लाह में पनाह ले

90 मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की दुआ।
ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी पनाहगाह रहा है।

²इस से पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ अल्लाह, तू अज़ल से अबद तक है।

³तू इन्सान को दुबारा खाक होने देता है। तू फ़रमाता है, 'ऐ आदमज़ादो, दुबारा खाक में मिल जाओ!'

⁴क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे हुए दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिन्द हैं।

5तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है, वह नींद और उस घास की मानिन्द हैं जो सुब्ह को फूट निकलती है।

6वह सुब्ह को फूट निकलती और उगती है, लेकिन शाम को मुरझा कर सूख जाती है।

7क्यूँकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और तेरे क्रहर से हवासबाख़ता हो जाते हैं।

8तू ने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा, हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में लाया है।

9चुनाँचे हमारे तमाम दिन तेरे क्रहर के तहत घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों के इख़तिताम पर पहुँचते हैं तो ज़िन्दगी सर्द आह के बराबर ही होती है।

10हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा ताक़त हो तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन फ़ख़र का बाइस थे वह भी तक्लीफ़दिह और बेकार हैं। जल्द ही वह गुज़र जाते हैं, और हम परिन्दों की तरह उड़ कर चले जाते हैं।

11कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता है? कौन समझता है कि तेरा क्रहर हमारी खुदातरसी की कमी के मुताबिक़ ही है?

12चुनाँचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमन्द हो जाएँ।

13ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा! तू कब तक दूर रहेगा? अपने ख़ादिमों पर तरस खा!

14सुब्ह को हमें अपनी शफ़क़त से सेर कर! तब हम ज़िन्दगी भर बाग़ बाग़ होंगे और खुशी मनाएँगे।

15हमें उतने ही दिन खुशी दिला जितने तू ने हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख सहना पड़ा है।

16अपने ख़ादिमों पर अपने काम और उन की औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।

17रब हमारा खुदा हमें अपनी मेहरबानी दिखाए। हमारे हाथों का काम मज़बूत कर, हाँ हमारे हाथों का काम मज़बूत कर!

अल्लाह की पनाह में

91 जो अल्लाह तआला की पनाह में रहे वह क़ादिर-ए-मुतलक़ के साथ में सुकूनत करेगा।

2मैं कहूँगा, "ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा क़िला है, मेरा खुदा जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ।"

3क्यूँकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और मोहलक मर्ज़ से छुड़ाएगा।

4वह तुझे अपने शाहपरोँ के नीचे ढाँप लेगा, और तू उस के परोँ तले पनाह ले सकेगा। उस की वफ़ादारी तेरी ढाल और पुश्ता रहेगी।

5रात की दहशतों से ख़ौफ़ मत खा, न उस तीर से जो दिन के वक़्त चले।

6उस मोहलक मर्ज़ से दहशत मत खा जो तारीकी में धूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो दोपहर के वक़्त तबाही फैलाए।

7गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ, लेकिन तू उस की ज़द में नहीं आएगा।

8तू अपनी आँखों से इस का मुलाहज़ा करेगा, तू खुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।

9क्यूँकि तू ने कहा है, "रब मेरी पनाहगाह है," तू अल्लाह तआला के साथ में छुप गया है।

10इस लिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के क़रीब फटकने नहीं पाएगी।

11क्यूँकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,

12और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे।

¹³तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क्रदम रखेगा, तू जवान शेरों और अज़दहाओं को कुचल देगा।

¹⁴रब फ़रमाता है, “चूँकि वह मुझ से लिपटा रहता है इस लिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा नाम जानता है इस लिए मैं उसे मट्फूज़ रखूँगा।

¹⁵वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा। मुसीबत में मैं उस के साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ा कर उस की इज़ज़त करूँगा।

¹⁶मैं उसे उम्र की दराज़ी बख्शूँगा और उस पर अपनी नजात ज़ाहिर करूँगा।”

अल्लाह की सताइश करने की खुशी

92 ज़बूर। सबत के लिए गीत।
रब का शुक्र करना भला है। ऐ अल्लाह तआला, तेरे नाम की मदहसराई करना भला है।

²सुबह को तेरी शप्रक़त और रात को तेरी वफ़ा का एलान करना भला है,

³खासकर जब साथ साथ दस तारों वाला साज़, सितार और सरोद बजते हैं।

⁴क्यूँकि ऐ रब, तू ने मुझे अपने कामों से खुश किया है, और तेरे हाथों के काम देख कर मैं खुशी के नारे लगाता हूँ।

⁵ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे खयालात कितने गहरे हैं।

⁶नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इस की समझ नहीं आती।

⁷गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और बदकार सब फलते फूलते हैं, लेकिन आख़िरकार वह हमेशा के लिए हलाक हो जाएंगे।

⁸मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलन्द रहेगा।

⁹क्यूँकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यक़ीनन तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।

¹⁰तू ने मुझे जंगली बैल की सी ताक़त दे कर ताज़ा तेल से मसह किया है।

¹¹मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और मेरे कान उन शरीरों के अन्जाम से लुत्फ़अन्दोज़ हुए हैं जो मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।

¹²रास्तबाज़ खज़ूर के दरख़्त की तरह फले फूलेगा, वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह बढ़ेगा।

¹³जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं वह हमारे खुदा की बारगाहों में फले फूलेंगे।

¹⁴वह बुढ़ापे में भी फल लाएँगे और तर-ओ-ताज़ा और हरे-भरे रहेंगे।

¹⁵उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, “रब रास्त है। वह मेरी चटान है, और उस में नारास्ती नहीं होती।”

अल्लाह अबदी बादशाह है

93 रब बादशाह है, वह जलाल से मुलब्स है। रब जलाल से मुलब्स और कुदरत से कमरबस्ता है। यक़ीनन दुनिया मज़बूत बुन्याद पर क्राइम है, और वह नहीं डगमगाएगी।

²तेरा तख़्त क़दीम ज़माने से क्राइम है, तू अज़ल से मौजूद है।

³ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचा कर गरज उठे, सैलाब ठाठें मार कर गरज उठे।

⁴लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से ज़यादा ज़ोर-आवर, जो समुन्दर की ठाठों से ज़यादा ताक़तवर है। रब जो बुलन्दियों पर रहता है कहीं ज़यादा अज़ीम है।

५ए रब, तेरे अह्काम हर तरह से क्राबिल-ए-एतिमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक कुदूसियत से आरास्ता रहेगा।

क्रौम पर जुल्म करने वालों से रिहाई के लिए दुआ

94 ऐ रब, ऐ इन्तिक्राम लेने वाले खुदा! ऐ इन्तिक्राम लेने वाले खुदा, अपना नूर चमका।

२ए दुनिया के मुन्सिफ़, उठ कर मगरूरों को उन के आमाल की मुनासिब सज़ा दे।

३ए रब, बेदीन कब तक, हॉ कब तक फ़ल्ह के नारे लगाएँगे?

४वह कुफ़्र की बातें उगलते रहते, तमाम बदकार शेखी मारते रहते हैं।

५ए रब, वह तेरी क्रौम को कुचल रहे, तेरी मौरूसी मिलकियत पर जुल्म कर रहे हैं।

६बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के घाट उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।

७वह कहते हैं, “यह रब को नज़र नहीं आता, याकूब का खुदा ध्यान ही नहीं देता।”

८ए क्रौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अहमक्रो, तुम्हें कब समझ आएगी?

९जिस ने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता? जिस ने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं देखता?

१०जो अक्वाम को तम्बीह करता और इन्सान को तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?

११रब इन्सान के खयालात जानता है, वह जानता है कि वह दम भर के ही हैं।

१२ए रब, मुबारक है वह जिसे तू तर्बियत देता है, जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है

१३ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए और उस वक़्त तक सुकून से ज़िन्दगी

गुज़ारे जब तक बेदीनों के लिए गढ़ा तय्यार न हो।

१४क्यूँकि रब अपनी क्रौम को रद्द नहीं करेगा, वह अपनी मौरूसी मिलकियत को तर्क नहीं करेगा।

१५फ़ैसले दुबारा इन्साफ़ पर मब्नी होंगे, और तमाम दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

१६कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा? कौन मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?

१७अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान जल्द ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।

१८ए रब, जब मैं बोला, “मेरा पाँओ डगमगाने लगा है” तो तेरी शफ़क़त ने मुझे सँभाला।

१९जब तश्वीशनाक खयालात मुझे बेचैन करने लगे तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ादम किया।

२०ए अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे साथ मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो अपने फ़रमानों से जुल्म करती है? हरगिज़ नहीं!

२१वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस में मिल जाते और बेकुसूरों को क्रातिल ठहराते हैं।

२२लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और मेरा खुदा मेरी पनाह की चटान साबित हुआ है।

२३वह उन की नाइन्साफ़ी उन पर वापस आने देगा और उन की शरीर हरकर्तों के जवाब में उन्हें तबाह करेगा। रब हमारा खुदा उन्हें नेस्त करेगा।

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत

95 आओ, हम शादियाना बजा कर रब की मदहसराई करें, खुशी के

नारे लगा कर अपनी नजात की चटान की तम्जीद करें!

2आओ, हम शुक्रगुजारी के साथ उस के हुज़ूर आएँ, गीत गा कर उस की सताइश करें।

3क्यूँकि रब अज़ीम खुदा और तमाम माबूदों पर अज़ीम बादशाह है।

4उस के हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं, और पहाड़ की बुलन्दियाँ भी उसी की हैं।

5समुन्दर उस का है, क्यूँकि उस ने उसे खल्क किया। खुशकी उस की है, क्यूँकि उस के हाथों ने उसे तश्कील दिया।

6आओ हम सिज्दा करें और रब अपने खालिक के सामने झुक कर घुटने टेकें।

7क्यूँकि वह हमारा खुदा है और हम उस की चरागाह की क़ौम और उस के हाथ की भेड़ें हैं। अगर तुम आज उस की आवाज़ सुनो

8“तो अपने दिलों को सख्त न करो जिस तरह मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में हुआ।

9वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आजमाया और जाँचा, हालाँकि उन्होंने मेरे काम देख लिए थे।

10चालीस साल मैं उस नस्ल से घिन खाता रहा। मैं बोला, ‘उन के दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं, और वह मेरी राहें नहीं जानते।’

11अपने ग़ज़ब में मैं ने क्रसम खाई, ‘यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।’”

दुनिया का खालिक और मुत्सिफ़

96 रब की तम्जीद में नया गीत गाओ, ऐ पूरी दुनिया, रब की मदहसराई करो।

2रब की तम्जीद में गीत गाओ, उस के नाम की सताइश करो, रोज़-ब-रोज़ उस की नजात की खुशखबरी सुनाओ।

3क़ौमों में उस का जलाल और तमाम उम्मतों में उस के अजाइब बयान करो।

4क्यूँकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लाइक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।

5क्यूँकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।

6उस के हुज़ूर शान-ओ-शौकत, उस के मक्दिदिस में कुदरत और जलाल है।

7ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तम्जीद करो, रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो।

8रब के नाम को जलाल दो। कुर्बानी ले कर उस की बारगाहों में दाखिल हो जाओ।

9मुक़द्दस लिबास से आरास्ता हो कर रब को सिज्दा करो। पूरी दुनिया उस के सामने लरज़ उठे।

10क़ौमों में एलान करो, “रब ही बादशाह है! यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ाइम है और नहीं डगमगाएगी। वह इन्साफ़ से क़ौमों की अदालत करेगा।”

11आसमान खुश हो, ज़मीन जश्र मनाए! समुन्दर और जो कुछ उस में है खुशी से गरज उठे।

12मैदान और जो कुछ उस में है बाग़ बाग़ हो। फिर जंगल के दरख्त शादियाना बजाएंगे।

13वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्यूँकि वह आ रहा है, वह दुनिया की अदालत करने आ रहा है। वह इन्साफ़ से दुनिया की अदालत करेगा और अपनी सदाक़त से अक्रवाम का फ़ैसला करेगा।

अल्लाह की सलतनत पर खुशी

97 रब बादशाह है! ज़मीन जश्र मनाए, साहिली इलाक़े दूर दूर तक खुश हों।

2वह बादलों और गहरे अंधरे से घिरा रहता है, रास्ती और इन्साफ़ उस के तख्त की बुन्याद हैं।

3आग उस के आगे आगे भड़क कर चारों तरफ़ उस के दुश्मनों को भस्म कर देती है।

4उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को रौशन कर दिया तो ज़मीन यह देख कर पेच-ओ-ताब खाने लगी।

5रब के आगे आगे, हाँ पूरी दुनिया के मालिक के आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।

6आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया, और तमाम क्रौमों ने उस का जलाल देखा।

7तमाम बुतपरस्त, हाँ सब जो बुतों पर फ़खर करते हैं शर्मिन्दा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिज्दा करो!

8कोह-ए-सिय्यून सुन कर खुश हुआ। ऐ रब, तेरे फ़ैसलों के बाइस यहूदाह की बेटियाँ³ बाग़ बाग़ हुईं।

9क्योंकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सब से आला है, तू तमाम माबूदों से सरबुलन्द है।

10तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से नफ़रत करो! रब अपने ईमानदारों की जान को मटफूज़ रखता है, वह उन्हें बेदीनों के क्रब्ज़े से छुड़ाता है।

11रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया गया है।

12ऐ रास्तबाज़ो, रब से खुश हो, उस के मुकद्दस नाम की सताइश करो।

पूरी दुनिया का शाही मुन्सिफ़

98 रब की तम्ज़ीद में नया गीत गाओ, क्योंकि उस ने मोजिज़े किए हैं। अपने दहने हाथ और मुकद्दस बाज़ू से उस ने नजात दी है।

2रब ने अपनी नजात का एलान किया और अपनी रास्ती क्रौमों के रू-ब-रू ज़ाहिर की है।

3उस ने इस्राईल के लिए अपनी शफ़क़त और वफ़ा याद की है। दुनिया की इन्तिहाओं ने सब हमारे खुदा की नजात देखी है।

4ऐ पूरी दुनिया, नारे लगा कर रब की मदहसराई करो! आपे में न समाओ और जश्र मना कर हम्द के गीत गाओ!

5सरोद बजा कर रब की मदहसराई करो, सरोद और गीत से उस की सताइश करो।

6तुरम और नरसिंगा फूँक कर रब बादशाह के हुज़ूर खुशी के नारे लगाओ!

7समुन्दर और जो कुछ उस में है, दुनिया और उस के बाशिन्दे खुशी से गरज उठें।

8दरया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिल कर खुशी मनाएँ,

9वह रब के सामने खुशी मनाएँ। क्योंकि वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह इन्साफ़ से दुनिया की अदालत करेगा, रास्ती से क्रौमों का फ़ैसला करेगा।

कुद्दूस खुदा

99 रब बादशाह है, अक्वाम लरज़ उठें! वह करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!

2कोह-ए-सिय्यून पर रब अज़ीम है, तमाम अक्वाम पर सरबुलन्द है।

3वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की सताइश करें, क्योंकि वह कुद्दूस है।

4वह बादशाह की कुदरत की तम्ज़ीद करें जो इन्साफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने अदल क़ाइम किया, तू ही ने याक़ूब में इन्साफ़ और रास्ती पैदा की है।

5रब हमारे खुदा की ताज़ीम करो, उस के पाँओ की चौकी के सामने सिज्दा करो, क्योंकि वह कुद्दूस है।

³एक और मुमकिन तर्ज़ुमा : यहूदाह की आबादियाँ।

६मूसा और हारून उस के इमामों में से थे। समूएल भी उन में से था जो उस का नाम पुकारते थे। उन्होंने ने रब को पुकारा, और उस ने उन की सुनी।

७वह बादल के सतून में से उन से हमकलाम हुआ, और वह उन अहकाम और फ़रमानों के ताबे रहे जो उस ने उन्हें दिए थे।

८ऐ रब हमारे खुदा, तू ने उन की सुनी। तू जो अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता उन्हें उन की बुरी हरकतों की सज़ा भी देता रहा।

९रब हमारे खुदा की ताज़ीम करो और उस के मुक़द्दस पहाड़ पर सिज्दा करो, क्योंकि रब हमारा खुदा कुद्दूस है।

अल्लाह की सताइश करो!

100 शुक़ुज़ारी की कुर्बानी के लिए ज़बूर।

ऐ पूरी दुनिया, खुशी के नारे लगा कर रब की मदहसराई करो!

२खुशी से रब की इबादत करो, जश्न मनाते हुए उस के हुज़ूर आओ!

३जान लो कि रब ही खुदा है। उसी ने हमें खलक किया, और हम उस के हैं, उस की क़ौम और उस की चरागाह की भेड़ें।

४शुक़ करते हुए उस के दरवाज़ों में दाख़िल हो, सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो। उस का शुक़ करो, उस के नाम की तम्जीद करो!

५क्योंकि रब भला है। उस की शफ़क़त अबदी है, और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम है।

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

101 दाऊद का ज़बूर। मैं शफ़क़त और इन्साफ़ का गीत गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मदहसराई करूँगा।

२मैं बड़ी एहतियात से बेइल्ज़ाम राह पर चलूँगा। लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं खुलूसदिली से अपने घर में ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।

३मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता और बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ। ऐसी चीज़ें मेरे साथ लिपट न जाएँ।

४झूटा दिल मुझ से दूर रहे। मैं बुराई को जानना ही नहीं चाहता।

५जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत लगाए उसे मैं खामोश कराऊँगा, जिस की आँखें मगरूर और दिल मुतकब्बिर हो उसे बर्दाश्त नहीं करूँगा।

६मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी रहती हैं ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइल्ज़ाम राह पर चले वही मेरी खिदमत करे।

७धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलने वाला मेरी मौजूदगी में क़ाइम न रहे।

८हर सुबह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को खामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब के शहर में से मिटाया जाए।

सियून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ ज़बूर)

102 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक़्त जब वह निढाल हो कर रब के सामने अपनी आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता है।

ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें तेरे हुज़ूर पहुँचें।

२जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझ से छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका। जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।

३क्योंकि मेरे दिन धुएँ की तरह शाइब हो रहे हैं, मेरी हड्डियाँ कोएलों की तरह दहक रही हैं।

४मेरा दिल घास की तरह झुलस कर सूख गया है, और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।

५आह-ओ-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़ गया है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।

6 मैं रेगिस्तान में दशती उल्लू और खंडरात में छोटे उल्लू की मानिन्द हूँ।

7 मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तन्हा परिन्दे की मानिन्द हूँ।

8 दिन भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं। जो मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम ले कर लानत करते हैं।

9 राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उस में मेरे आँसू मिले होते हैं।

10 क्योंकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा गज़ब नाज़िल हुआ है। तू ने मुझे उठा कर ज़मीन पर पटख़ दिया है।

11 मेरे दिन शाम के ढलने वाले साय की मानिन्द हैं। मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12 लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है, तेरा नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहता है।

13 अब आ, कोह-ए-सिय्यून पर रहम कर। क्योंकि उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है, मुक़र्ररा वक़्त आ गया है।

14 क्योंकि तेरे खादिमों को उस का एक एक पत्थर प्यारा है, और वह उस के मल्बे पर तरस खाते हैं।

15 तब ही क़ौमें रब के नाम से डरेंगी, और दुनिया के तमाम बादशाह तेरे जलाल का ख़ौफ़ खाएँगे।

16 क्योंकि रब सिय्यून को अज़ सर-ए-नौ तामीर करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो जाएगा।

17 मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और उन की फ़र्यादों को हकीर नहीं जानेगा।

18 आने वाली नस्ल के लिए यह क़लमबन्द हो जाए ताकि जो क़ौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब की सताइश करे।

19 क्योंकि रब ने अपने मक्दिस की बुलन्दियों से झाँका है, उस ने आसमान से ज़मीन पर नज़र डाली है

20 ताकि क़ैदियों की आह-ओ-ज़ारी सुने और मरने वालों की ज़न्जीरें खोले।

21 क्योंकि उस की मर्ज़ी है कि वह कोह-ए-सिय्यून पर रब के नाम का एलान करें और यरूशलम में उस की सताइश करें,

22 कि क़ौमें और सलतनतें मिल कर जमा हो जाएँ और रब की इबादत करें।

23 रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़ कर मेरे दिन मुख़्तसर कर दिए हैं।

24 मैं बोला, “ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िन्दों के मुल्क से दूर न कर, मेरी ज़िन्दगी तो अधूरी रह गई है। लेकिन तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहते हैं।

25 तू ने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुन्याद रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।

26 यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू क़ाइम रहेगा। यह सब कपड़े की तरह घिस फट जाएंगे। तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और वह जाते रहेंगे।

27 लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी ज़िन्दगी कभी ख़त्म नहीं होती।

28 तेरे खादिमों के फ़र्ज़न्द तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे, और उन की औलाद तेरे सामने क़ाइम रहेगी।”

रब की शफ़क़त की सताइश

103 दाऊद का ज़बूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! मेरा रग-ओ-रेशा उस के कुहूस नाम की हम्द करे!

2 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो कुछ उस ने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।

3 क्योंकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करता, तुझे तमाम बीमारियों से शिफ़ा देता है।

4वह इवज़ाना दे कर तेरी जान को मौत के गढ़े से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और रहमत के ताज से आरास्ता करता है।

5वह तेरी ज़िन्दगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता है, और तू दुबारा जवान हो कर उक्राब की सी तक्रवियत पाता है।

6रब तमाम मज़लूमों के लिए रास्ती और इन्साफ़ क़ाइम करता है।

7उस ने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम काम इस्राईलियों पर ज़ाहिर किए।

8रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है।

9न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक नाराज़ रहेगा।

10न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज़्र देता है।

11क्यूँकि जितना बुलन्द आसमान है, उतनी ही अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं।

12जितनी दूर मशरिक़ मगरिब से है उतना ही उस ने हमारे कुसूर हम से दूर कर दिए हैं।

13जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता है उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं।

14क्यूँकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे याद है कि हम खाक़ ही हैं।

15इन्सान के दिन घास की मानिन्द हैं, और वह जंगली फूल की तरह ही फलता फूलता है।

16जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं रहता, और उस के नाम-ओ-निशान का भी पता नहीं चलता।

17लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह हमेशा तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी

रास्ती उन के पोतों और नवासों पर भी ज़ाहिर करेगा।

18शर्त यह है कि वह उस के अह्द के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें और ध्यान से उस के अह्काम पर अमल करें।

19रब ने आसमान पर अपना तख़्त क़ाइम किया है, और उस की बादशाही सब पर हुकूमत करती है।

20ऐ रब के फ़रिशतो, उस के ताक़तवर सूरमाओ, जो उस के फ़रमान पूरे करते हो ताकि उस का कलाम माना जाए, रब की सताइश करो!

21ऐ तमाम लश्करो, तुम सब जो उस के खादिम हो और उस की मर्ज़ी पूरी करते हो, रब की सताइश करो!

22तुम सब जिन्हें उस ने बनाया, रब की सताइश करो! उस की सल्तनत की हर जगह पर उस की तम्ज़ीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

ख़ालिक़ की हम्द-ओ-सना

104 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत ही अज़ीम है, तू जाह-ओ-जलाल से आरास्ता है।

2तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढ़े रहता है। तू आसमान को ख़ैमे की तरह तान कर

3अपना बालाखाना उस के पानी के बीच में तामीर करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा के परों पर सवार होता है।

4तू हवाओं को अपने क़ासिद और आग के शोलों को अपने खादिम बना देता है।

5तू ने ज़मीन को मज़बूत बुन्याद पर रखा ताकि वह कभी न डगमगाए।

6सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया, और पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।

7लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी गरजती आवाज़ सुन कर वह एक दम भाग गया।

8तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों पर उतर आईं जो तू ने उन के लिए मुकर्रर की थीं।

9तू ने एक हृद बांधी जिस से पानी बढ़ नहीं सकता। आइन्दा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं ढाँकने का।

10तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह पहाड़ों में से बह निकलते हैं।

11बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम जानवरों को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आ कर अपनी प्यास बुझाते हैं।

12परिन्दे उन के किनारों पर बसेरा करते, और उन की चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से सुनाई देती हैं।

13तू अपने बालाखाने से पहाड़ों को तर करता है, और ज़मीन तेरे हाथ से सेर हो कर हर तरह का फल लाती है।

14तू जानवरों के लिए घास फूटने और इन्सान के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की काश्तकारी करके रोटी हासिल करे।

15तेरी मैं इन्सान का दिल खुश करती, तेरा तेल उस का चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी उस का दिल मज़बूत करती है।

16रब के दरख्त यानी लुबनान में उस के लगाए हुए देवदार के दरख्त सेराब रहते हैं।

17परिन्दे उन में अपने घोंसले बना लेते हैं, और लक्लक जूनीपर के दरख्त में अपना आशियाना।

18पहाड़ों की बुलन्दियों पर पहाड़ी बकरो का राज है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।

19तू ने साल को महीनों में तक्सीम करने के लिए चाँद बनाया, और सूरज को गुरूब होने के औक्रात मालूम हैं।

20तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।

21जवान शेरबबर दहाड़ कर शिकार के पीछे पड़ जाते और अल्लाह से अपनी खुराक का मुतालबा करते हैं।

22फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह खिसक कर अपने भटों में छुप जाते हैं।

23उस वक़्त इन्सान घर से निकल कर अपने काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता है।

24ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं! तू ने हर एक को हिकमत से बनाया, और ज़मीन तेरी मख्लूकात से भरी पड़ी है।

25समुन्दर को देखो, वह कितना बड़ा और वसी है। उस में बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे भी।

26उस की सतह पर जहाज़ इधर उधर सफ़र करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता है, वह अज़दहा जिसे तू ने उस में उछलने कूदने के लिए तश्कील दिया था।

27सब तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त पर खाना मुहय्या करे।

28तू उन में खुराक तक्सीम करता है तो वह उसे इकट्ठा करते हैं। तू अपनी मूट्टी खोलता है तो वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।

29जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उन के हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उन का दम निकाल लेता है तो वह नेस्त हो कर दुबारा खाक में मिल जाते हैं।

30तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो जाते हैं। तू ही रू-ए-ज़मीन को बहाल करता है।

31रब का जलाल अबद तक क़ाइम रहे! रब अपने काम की खुशी मनाए!

32वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़ उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ छोड़ते हैं।

33 मैं उम्र भर रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, जब तक ज़िन्दा हूँ अपने खुदा की मदहसराई करूँगा।

34 मेरी बात उसे पसन्द आए! मैं रब से कितना खुश हूँ!

35 गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! रब की हम्द हो!

माज़ी में रब की नजात की हम्द

105 रब का शुक्र करो और उस का नाम पुकारो! अक़वाम में उस के कामों का एलान करो।

2 साज़ बजा कर उस की मदहसराई करो। उस के तमाम अजाइब के बारे में लोगों को बताओ।

3 उस के मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से खुश हों।

4 रब और उस की कुदरत की दरयाफ़्त करो, हर वक़्त उस के चेहरे के तालिब रहो।

5 जो मोज़िज़े उस ने किए उन्हें याद करो। उस के इलाही निशान और उस के मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।

6 तुम जो उस के खादिम इब्राहीम की औलाद और याक़ूब के फ़र्ज़न्द हो, जो उस के बर्गुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!

7 वही रब हमारा खुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।

8 वह हमेशा अपने अह्द का ख़याल रखता है, उस कलाम का जो उस ने हज़ार पुशतों के लिए फ़रमाया था।

9 यह वह अह्द है जो उस ने इब्राहीम से बांधा, वह वादा जो उस ने क्रसम खा कर इस्हाक़ से किया था।

10 उस ने उसे याक़ूब के लिए क़ाइम किया ताकि वह उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, उस ने तस्दीक़ की कि यह मेरा इस्माइल से अबदी अह्द है।

11 साथ साथ उस ने फ़रमाया, "मैं तुझे मुल्क-ए-कनआन दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।"

12 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।

13 अब तक वह मुख्तलिफ़ क़ौमों और सल्लनतों में घूमते फिरते थे।

14 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को जुल्म करने न दिया, और उन की खातिर उस ने बादशाहों को डाँटा,

15 "मेरे मसह किए हुए खादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।"

16 फिर अल्लाह ने मुल्क-ए-कनआन में काल पड़ने दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा ख़त्म किया।

17 लेकिन उस ने उन के आगे आगे एक आदमी को मिस्र भेजा यानी यूसुफ़ को जो गुलाम बन कर फ़रोख़्त हुआ।

18 उस के पाँओ और गर्दन ज़न्जीरों में जकड़े रहे

19 जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिस की पेशगोई यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के फ़रमान ने उस की तस्दीक़ न की।

20 तब मिस्री बादशाह ने अपने बन्दों को भेज कर उसे रिहाई दी, क़ौमों के हुक्मरान ने उसे आज़ाद किया।

21 उस ने उसे अपने घराने पर निगरान और अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुकर्रर किया।

22 यूसुफ़ को फ़िरऔन के रईसों को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलाने और मिस्री बुजुर्गों को हिक्मत की तालीम देने की ज़िम्मादारी भी दी गई।

²³फिर याकूब का खानदान मिस्र आया, और इस्राईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत से बसने लगा।

²⁴वहाँ अल्लाह ने अपनी क्रौम को बहुत फलने फूलने दिया, उस ने उसे उस के दुश्मनों से ज़्यादा ताक़तवर बना दिया।

²⁵साथ साथ उस ने मिस्रियों का रवय्या बदल दिया, तो वह उस की क्रौम इस्राईल से नफ़रत करके रब के खादिमों से चालाकियाँ करने लगे।

²⁶तब अल्लाह ने अपने खादिम मूसा और अपने चुने हुए बन्दे हारून को मिस्र में भेजा।

²⁷मुल्क-ए-हाम में आ कर उन्होंने ने उन के दरमियान अल्लाह के इलाही निशान और मोज़िज़े दिखाए।

²⁸अल्लाह के हुक्म पर मिस्र पर तारीकी छा गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्होंने ने उस के फ़रमान न माने।

²⁹उस ने उन का पानी खून में बदल कर उन की मछलियों को मरवा दिया।

³⁰मिस्र के मुल्क पर मेंढकों के गोल छा गए जो उन के हुक्मरानों के अन्दरूनी कमरों तक पहुँच गए।

³¹अल्लाह के हुक्म पर मिस्र के पूरे इलाक़े में मक्खियों और जूओं के गोल फैल गए।

³²बारिश की बजाए उस ने उन के मुल्क पर ओले और दहकते शीले बरसाए।

³³उस ने उन की अंगूर की बेलें और अन्जीर के दरख़्त तबाह कर दिए, उन के इलाक़े के दरख़्त तोड़ डाले।

³⁴उस के हुक्म पर अनगिनत टिट्टियाँ अपने बच्चों समेत मुल्क पर हम्लाआवर हुई।

³⁵वह उन के मुल्क की तमाम हरियाली और उन के खेतों की तमाम पैदावार चट कर गई।

³⁶फिर अल्लाह ने मिस्र में तमाम पहलौठों को मार डाला, उन की मर्दानगी का पहला फल तमाम हुआ।

³⁷इस के बाद वह इस्राईल को चाँदी और सोने से नवाज़ कर मिस्र से निकाल लाया। उस वक़्त उस के क़बीलों में ठोकर खाने वाला एक भी नहीं था।

³⁸मिस्र खुश था जब वह रवाना हुए, क्योंकि उन पर इस्राईल की दहशत छा गई थी।

³⁹दिन को अल्लाह ने उन के ऊपर बादल कम्बल की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहय्या की ताकि रौशनी हो।

⁴⁰जब उन्होंने ने खुराक माँगी तो उस ने उन्हें बटेर पहुँचा कर आसमानी रोटी से सेर किया।

⁴¹उस ने चटान को चाक किया तो पानी फूट निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने लगीं।

⁴²क्योंकि उस ने उस मुक़द्दस वादे का खयाल रखा जो उस ने अपने खादिम इब्राहीम से किया था।

⁴³चुनौचे वह अपनी चुनी हुई क्रौम को मिस्र से निकाल लाया, और वह खुशी और शादमानी के नारे लगा कर निकल आए।

⁴⁴उस ने उन्हें दीगर अक्वाम के ममालिक दिए, और उन्होंने ने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर क़ब्ज़ा किया।

⁴⁵क्योंकि वह चाहता था कि वह उस के अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। रब की हम्द हो।

अल्लाह का फ़ज़ल और इस्राईल की सरकशी

106 रब की हम्द हो! रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शपक़त अबदी है।

²कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता, कौन उस की मुनासिब तम्जीद कर सकता है?

³मुबारक हैं वह जो इन्साफ़ क़ाइम रखते, जो हर वक़्त रास्त काम करते हैं।

4ए रब, अपनी क्रौम पर मेहरबानी करते वक़्त मेरा खयाल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद कर

5ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की खुशहाली देख सकूँ और तेरी क्रौम की खुशी में शरीक हो कर तेरी मीरास के साथ सताइश कर सकूँ।

6हम ने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है, हम से नाइन्साफ़ी और बेदीनी सरज़द हुई है।

7जब हमारे बापदादा मिस्र में थे तो उन्हें तेरे मोज़िज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्दिद मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुन्दर यानी बहर-ए-कुल्जुम पर सरकश हुए।

8तो भी उस ने उन्हें अपने नाम की खातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी कुदरत का इज़हार करना चाहता था।

9उस ने बहर-ए-कुल्जुम को झिड़का तो वह खुशक हो गया। उस ने उन्हें समुन्दर की गहराइयों में से यूँ गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से।

10उस ने उन्हें नफ़रत करने वाले के हाथ से छुड़ाया और इवज़ाना दे कर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।

11उन के मुखालिफ़ पानी में डूब गए। एक भी न बचा।

12तब उन्होंने ने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान ला कर उस की मदहसराई की।

13लेकिन जल्द ही वह उस के काम भूल गए। वह उस की मर्ज़ी का इन्तिज़ार करने के लिए तय्यार न थे।

14रेगिस्तान में शदीद लालच में आ कर उन्होंने ने वहीं बयाबान में अल्लाह को आजमाया।

15तब उस ने उन की दरख्वास्त पूरी की, लेकिन साथ साथ मोहलक वबा भी उन में फैला दी।

16खैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस इमाम हारून से हसद करने लगे।

17तब ज़मीन खुल गई, और उस ने दातन को हड़प कर लिया, अबीराम के जथ्थे को अपने अन्दर दफ़न कर लिया।

18आग उन के जथ्थे में भड़क उठी, और बेदीन नज़र-ए-आतिश हुए।

19वह कोह-ए-होरिब यानी सीना के दामन में बछड़े का बुत ढाल कर उस के सामने औँधे मुँह हो गए।

20उन्होंने ने अल्लाह को जलाल देने के बजाए घास खाने वाले बैल की पूजा की।

21वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिस्र में अज़ीम काम किए थे।

22जो मोज़िज़े हाम के मुल्क में हुए और जो जलाली वाक़िआत बहर-ए-कुल्जुम पर पेश आए थे वह सब अल्लाह के हाथ से हुए थे।

23चुनाँचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें नेस्त-ओ-नाबूद करूँगा। लेकिन उस का चुना हुआ ख़ादिम मूसा रखने में खड़ा हो गया ताकि उस के ग़ज़ब को इस्त्राईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़ इस वजह से अल्लाह अपने इरादे से बाज़ आया।

24फिर उन्होंने ने कनआन के खुशगवार मुल्क को हक़ीर जाना। उन्हें यक़ीन नहीं था कि अल्लाह अपना वादा पूरा करेगा।

25वह अपने खैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब की आवाज़ सुनने के लिए तय्यार न हुए।

26तब उस ने अपना हाथ उन के खिलाफ़ उठाया ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे

27और उन की औलाद को दीगर अक़्वाम में फैक कर मुख्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर दे।

28 वह बाल-फ़गूर देवता से लिपट गए और मुर्दों के लिए पेश की गई कुर्बानियों का गोश्त खाने लगे।

29 उन्होंने ने अपनी हरकतों से रब को तैश दिलाया तो उन में मोहलक बीमारी फैल गई।

30 लेकिन फ़िन्हास ने उठ कर उन की अदालत की। तब वबा रुक गई।

31 इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-पुश्त और अबद तक रास्तबाज़ करार दिया।

32 मरीबा के चश्मे पर भी उन्होंने ने रब को गुस्सा दिलाया। उन ही के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।

33 क्योंकि उन्होंने ने उस के दिल में इतनी तल्खी पैदा की कि उस के मुँह से बेजा बातें निकलीं।

34 जो दीगर क़ौमों मुल्क में थीं उन्हें उन्होंने ने नेस्त न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा था।

35 न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता बांध कर उन में घुल मिल गए और उन के रस्म-ओ-रिवाज अपना लिए।

36 वह उन के बुतों की पूजा करने में लग गए, और यह उन के लिए फंदे का बाइस बन गए।

37 वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हुज़ूर कुर्बान करने से भी न कतराए।

38 हाँ, उन्होंने ने अपने बेटे-बेटियों को कनआन के देवताओं के हुज़ूर पेश करके उन का मासूम खून बहाया। इस से मुल्क की बेहुरमती हुई।

39 वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा हुए।

40 तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख्त नाराज़ हुआ, और उसे अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन आने लगी।

41 उस ने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और जो उन से नफ़रत करते थे वह उन पर हुक्मत करने लगे।

42 उन के दुश्मनों ने उन पर जुल्म करके उन को अपना मुती बना लिया।

43 अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि वह अपने सरकश मन्सूबों पर तुले रहे और अपने कुसूर में डूबते गए।

44 लेकिन उस ने मदद के लिए उन की आहें सुन कर उन की मुसीबत पर ध्यान दिया।

45 उस ने उन के साथ अपना अहद याद किया, और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।

46 उस ने होने दिया कि जिस ने भी उन्हें गिरिफ़्तार किया उस ने उन पर तरस खाया।

47 ए रब हमारे खुदा, हमें बचा! हमें दीगर क़ौमों से निकाल कर जमा कर। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिल-ए-तारीफ़ कामों पर फ़खर करेंगे।

48 अज़ल से अबद तक रब, इस्राईल के खुदा की हम्द हो। तमाम क़ौम कहे, "आमीन! रब की हम्द हो!"

पाँचवीं किताब 107-150

नजातयाफ़्ता की शुक्रगुज़ारी

107 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

2 रब के नजातयाफ़्ता जिन को उस ने इवज़ाना दे कर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।

3 उस ने उन्हें मशरिक से मगरिब तक और शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से इकट्ठा किया है।

4 बाज़ रैगिस्तान में सहीह रास्ता भूल कर वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न मिली।

⁵भूक और प्यास के मारे उन की जान निढाल हो गई।

⁶तब उन्होंने ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

⁷उस ने उन्हें सहीह राह पर ला कर ऐसी आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।

⁸वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और अपने मौजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।

⁹क्योंकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और भूकी जान को कसत की अच्छी चीज़ों से सेर करता है।

¹⁰दूसरे ज़न्जीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,

¹¹क्योंकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए थे, उन्होंने ने अल्लाह तआला का फ़ैसला हक़ीर जाना था।

¹²इस लिए अल्लाह ने उन के दिल को तक्लीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खा कर गिर गए और मदद करने वाला कोई न रहा था

¹³तो उन्होंने ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

¹⁴वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल लाया और उन की ज़न्जीरें तोड़ डालीं।

¹⁵वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और अपने मौजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।

¹⁶क्योंकि उस ने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

¹⁷कुछ लोग अहमक़्र थे, वह अपने सरकश चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला हुए।

¹⁸उन्हें हर खुराक से घिन आने लगी, और वह मौत के दरवाज़ों के करीब पहुँचे।

¹⁹तब उन्होंने ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

²⁰उस ने अपना कलाम भेज कर उन्हें शिफ़ा दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।

²¹वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और मौजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।

²²वह शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ पेश करें और खुशी के नारे लगा कर उस के कामों का चर्चा करें।

²³बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के सिलसिले में समुन्दर पर सफ़र करते करते दूरदराज़ इलाकों तक पहुँचे।

²⁴उन्होंने ने रब के अज़ीम काम और समुन्दर की गहराइयों में उस के मौजिज़े देखे हैं।

²⁵क्योंकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो समुन्दर की मौज़ें बुलन्दियों पर लाई।

²⁶वह आसमान तक चढ़ीं और गहराइयों तक उतरतीं। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत जवाब दे गई।

²⁷वह शराब में धुत आदमी की तरह लड़खड़ाते और डगमगाते रहे। उन की तमाम हिक्मत नाकाम साबित हुई।

²⁸तब उन्होंने ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

²⁹उस ने समुन्दर को थमा दिया और खामोशी फैल गई, लहरें साकित हो गईं।

³⁰मुसाफ़िर पुरसुकून हालात देख कर खुश हुए, और अल्लाह ने उन्हें मन्ज़िल-ए-मक्रसूद तक पहुँचाया।

³¹वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और अपने मौजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।

32 वह क्रौम की जमाअत में उस की ताज़ीम करें, बुजुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।

33 कई जगहों पर वह दरयाओं को रेगिस्तान में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।

34 बाशिन्दों की बुराई देख कर वह ज़रखेज़ ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।

35 दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।

36 वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि आबादियाँ क़ाइम करें।

37 तब वह खेत और अंगूर के बाग़ लगाते हैं जो ख़ूब फल लाते हैं।

38 अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उन की तादाद बहुत बढ़ जाती है। वह उन के रेवड़ों को भी कम होने नहीं देता।

39 जब कभी उन की तादाद कम हो जाती और वह मुसीबत और दुख के बोझ तले खाक में दब जाते हैं

40 तो वह शुरफ़ा पर अपनी हिक्कारत उंडेल देता और उन्हें रेगिस्तान में भगा कर सहीह रास्ते से दूर फिरने देता है।

41 लेकिन मुस्ताज को वह मुसीबत की दलदल से निकाल कर सरफ़राज़ करता और उस के खानदानों को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।

42 सीधी राह पर चलने वाले यह देख कर खुश होंगे, लेकिन बेइन्साफ़ का मुँह बन्द किया जाएगा।

43 कौन दानिशमन्द है? वह इस पर ध्यान दे, वह रब की मेहरबानियों पर ग़ौर करे।

है। मैं साज़ बजा कर तेरी मदहसराई करूँगा।
ऐ मेरी जान, जाग उठ!

2 ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलू-ए-सुब्ह को जगाऊँगा।

3 ऐ रब, मैं क्रौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा।

4 क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान से कहीं बुलन्द है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।

5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

6 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

7 अल्लाह ने अपने मक्दिस में फ़रमाया है, "मैं फ़त्ह मनाते हुए सिकम को तक्सीम करूँगा और वादी-ए-सुक़ात को नाप कर बाँट दूँगा।

8 ज़िलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़्राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।

9 मोआब मेरा गुसल का बर्तन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फैंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क पर ज़ोरदार नारे लगाऊँगा!"

10 कौन मुझे क़िलाबन्द शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?

11 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तू ने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।

12 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त इन्साननी मदद बेकार है।

13 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

जंग में रब पर उम्मीद

108

दाऊद का जबूर। गीत।

ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत

बेरहम मुखालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

109

दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!

²क्योंकि उन्होंने ने अपना बेदीन और फ़रेबदिह मुँह मेरे खिलाफ़ खोल कर झूठी ज़बान से मेरे साथ बात की है।

³वह मुझे नफ़रत के अलफ़ाज़ से घेर कर बिलावजह मुझ से लड़े हैं।

⁴मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा सहारा है।

⁵मेरी नेकी के इवज़ वह मुझे नुक़सान पहुँचाते और मेरे प्यार के बदले मुझ से नफ़रत करते हैं।

⁶ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुक़र्रर कर जो मेरे दुश्मन के खिलाफ़ गवाही दे, कोई मुखालिफ़ उस के दहने हाथ खड़ा हो जाए जो उस पर इल्ज़ाम लगाए।

⁷मुक़द्दमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस की दुआएँ भी उस के गुनाहों में शुमार की जाएँ।

⁸उस की ज़िन्दगी मुख़्तसर हो, कोई और उस की ज़िम्मादारी उठाए।

⁹उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा बन जाए।

¹⁰उस के बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने पर मजबूर हो जाएँ। उन्हें उन के तबाहशुदा घरों से निकल कर इधर उधर रोटी ढूँडनी पड़े।

¹¹जिस से उस ने क़र्ज़ा लिया था वह उस के तमाम माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी उस की मेहनत का फल लूट लें।

¹²कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या उस के यतीमों पर रहम करे।

¹³उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली पुश्त में उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे।

¹⁴रब उस के बापदादा की नाइन्साफ़ी का लिहाज़ करे, और वह उस की माँ की ख़ता भी दरगुज़र न करे।

¹⁵उन का बुरा किरदार रब के सामने रहे, और वह उन की याद रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डाले।

¹⁶क्योंकि उस को कभी मेहरबानी करने का खयाल न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा, मुह्तताज और शिकस्तादिल का ताक्कुब करता रहा ताकि उसे मार डाले।

¹⁷उसे लानत करने का शौक़ था, चुनाँचे लानत उसी पर आए! उसे बरकत देना पसन्द नहीं था, चुनाँचे बरकत उस से दूर रहे।

¹⁸उस ने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनाँचे लानत पानी की तरह उस के जिस्म में और तेल की तरह उस की हड्डियों में सिरायत कर जाए।

¹⁹वह कपड़े की तरह उस से लिपटी रहे, पटके की तरह हमेशा उस से कमरबस्ता रहे।

²⁰रब मेरे मुखालिफ़ों को और उन्हें जो मेरे खिलाफ़ बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।

²¹लेकिन तू ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपने नाम की खातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलूक कर। मुझे बचा, क्योंकि तेरी ही शफ़क़त तसल्लीबख़्श है।

²²क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द हूँ। मेरा दिल मेरे अन्दर मजरूह है।

²³शाम के ढलते साय की तरह मैं ख़त्म होने वाला हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़ कर दूर कर दिया गया है।

²⁴रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे और मेरा जिस्म सूख गया है।

²⁵मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ। मुझे देख कर वह सर हिला कर "तौबा तौबा" कहते हैं।

²⁶ऐ रब मेरे ख़ुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मुझे छुड़ा!

27 उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।

28 जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब वह मेरे खिलाफ उठें तो बख्श दे कि शर्मिन्दा हो जाएँ जबकि तेरा खादिम खुश हो।

29 मेरे मुखालिफ़ रुस्वाई से मुलब्स हो जाएँ, उन्हें शर्मिन्दगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30 मैं ज़ोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों के दरमियान उस की हम्द करूँगा।

31 क्योंकि वह मुहताज के दहने हाथ खड़ा रहता है ताकि उसे उन से बचाए जो उसे मुजरिम ठहराते हैं।

अबदी बादशाह और इमाम

110 दाऊद का ज़बूर।
रब ने मेरे रब से कहा, “मेरे दहने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ की चौकी न बना दूँ।”

2 रब सिय्यून से तेरी सल्लनत की सरहदें बढ़ा कर कहेगा, “आस-पास के दुश्मनों पर हुकूमत कर!”

3 जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा तेरी क़ौम खुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुकद्दस शान-ओ-शौकत से आरास्ता हो कर तुलू-ए-सुब्ह के बातिन से अपनी जवानी की ओस पाएगा।

4 रब ने क्रसम खाई है और इस से पछताएगा नहीं, “तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।”

5 रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने ग़ज़ब के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।

6 वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को लाशों से भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश करेगा।

7 रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इस लिए अपना सर उठाए फिरेगा।

अल्लाह के फ़ज़ल की तम्ज़ीद

111 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल से दियानतदारों की मजलिस और जमाअत में रब का शुक्र करूँगा।

2 रब के काम अज़ीम हैं। जो उन से लुत्फ़अन्दोज़ होते हैं वह उन का खूब मुतालाआ करते हैं।

3 उस का काम शानदार और जलाली है, उस की रास्ती अबद तक क़ाइम रहती है।

4 वह अपने मौजिज़े याद कराता है। रब मेहरबान और रहीम है।

5 जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उस ने खुराक मुहय्या की है। वह हमेशा तक अपने अह्द का खयाल रखेगा।

6 उस ने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त कामों का एलान करके कहा, “मैं तुम्हें ग़ैरक़ौमों की मीरास अता करूँगा।”

7 जो भी काम उस के हाथ करें वह सच्चे और रास्त हैं। उस के तमाम अह्काम क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं।

8 वह अज़ल से अबद तक क़ाइम हैं, और उन पर सच्चाई और दियानतदारी से अमल करना है।

9 उस ने अपनी क़ौम का फ़िद्या भेज कर उसे छुड़ाया है। उस ने फ़रमाया, “मेरा क़ौम के साथ अह्द अबद तक क़ाइम रहे।” उस का नाम कुद्दूस और पुरजलाल है।

10 हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मारें। जो भी उस के अह्काम पर अमल करे उसे अच्छी समझ हासिल होगी। उस की हम्द हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

112 रब की हम्द हो! मुबारक है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़

मानता और उस के अहकाम से बहुत लुत्फ़अन्दोज़ होता है।

२उस के फ़र्ज़न्द मुन्क में ताक़तवर होंगे, और दियानतदार की नस्ल को बरकत मिलेगी।

३दौलत और खुशहाली उस के घर में रहेगी, और उस की रास्तबाज़ी अबद तक क़ाइम रहेगी।

४अंधेरे में चलते वक्रत दियानतदारों पर रौशनी चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम है।

५मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बाबरकत है। जो अपने मुआमलों को इन्साफ़ से हल करे वह अच्छा करेगा,

६क्योंकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा। रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।

७वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उस का दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।

८उस का दिल मुस्तहक़म है। वह सहमा हुआ नहीं रहता, क्योंकि वह जानता है कि एक दिन मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर खुश हूँगा।

९वह फ़य्याज़ी से ज़रूरतमन्दों में ख़ैरात बिखेर देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा क़ाइम रहेगी, और उसे इज़ज़त के साथ सरफ़राज़ किया जाएगा।

१०बेदीन यह देख कर नाराज़ हो जाएगा, वह दाँत पीस पीस कर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ बेदीन चाहते हैं वह जाता रहेगा।

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी
113 रब की हम्द हो! ऐ रब के खादिमो, रब के नाम की सताइश करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।

२रब के नाम की अब से अबद तक तम्जीद हो।

३तुलू-ए-सुब्ह से गुरूब-ए-आफ़ताब तक रब के नाम की हम्द हो।

४रब तमाम अक्रवाम से सरबुलन्द है, उस का जलाल आसमान से अज़ीम है।

५कौन रब हमारे खुदा की मानिन्द है जो बुलन्दियों पर तख़तनशीन है

६और आसमान-ओ-ज़मीन को देखने के लिए नीचे झुकता है?

७पस्तहाल को वह खाक में से उठा कर पाँओ पर खड़ा करता, मुस्ताज को राख से निकाल कर सरफ़राज़ करता है।

८वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी क्रौम के शुरफ़ा के साथ बिठा देता है।

९बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह घर में खुशी से ज़िन्दगी गुज़ार सके। रब की हम्द हो!

मिस्र में अल्लाह के मोजिज़ात

114 जब इस्राईल मिस्र से रवाना हुआ और याकूब का घराना अजनबी ज़बान बोलने वाली क्रौम से निकल आया

२तो यहूदाह अल्लाह का मक्दिदिस बन गया और इस्राईल उस की बादशाही।

३यह देख कर समुन्दर भाग गया और दरया-ए-यर्दन पीछे हट गया।

४पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियों जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।

५ऐ समुन्दर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ यर्दन, क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?

६ऐ पहाड़ी, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह कूदने लगे हो? ऐ पहाड़ियों, क्या हुआ कि तुम जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगी हो?

७ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याकूब के खुदा के हुज़ूर लरज़ उठ,

४उस के सामने थरथरा जिस ने चटान को जोहड़ में और सख्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

अल्लाह ही की हम्द हो

115 ऐ रब, हमारी ही इज़ज़त की खातिर काम न कर बल्कि इस लिए कि तेरे नाम को जलाल मिले, इस लिए कि तू मेहरबान और वफ़ादार खुदा है।

२दीगर अक्वाम क्यूँ कहें, “उन का खुदा कहाँ है?”

३हमारा खुदा तो आसमान पर है, और जो जी चाहे करता है।

४उन के बुत सोने-चाँदी के हैं, इन्सान के हाथ ने उन्हें बनाया है।

५उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते। उन की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।

६उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उन की नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।

७उन के हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते। उन के पाँओ हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उन के गले से आवाज़ नहीं निकलती।

८जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिस्स-ओ-हरकत हो जाएँ।

९ऐ इस्राईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।

१०ऐ हारून के घराने, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।

११ऐ रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब पर भरोसा रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।

१२रब ने हमारा खयाल किया है, और वह हमें बरकत देगा। वह इस्राईल के घराने को बरकत देगा, वह हारून के घराने को बरकत देगा।

१३वह रब का ख़ौफ़ मानने वालों को बरकत देगा, ख़्वाह छोटे हों या बड़े।

१४रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी भी और तुम्हारी औलाद की भी।

१५रब जो आसमान-ओ-ज़मीन का खालिक है तुम्हें बरकत से मालामाल करे।

१६आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को उस ने आदमज़ादों को बरख़्श दिया है।

१७ऐ रब, मुर्दे तेरी सताइश नहीं करते, खामोशी के मुल्क में उतरने वालों में से कोई भी तेरी तम्जीद नहीं करता।

१८लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद तक करेंगे। रब की हम्द हो!

मौत से नजात पर शुक्रगुज़ारी

116 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ, क्यूँकि उस ने मेरी आवाज़ और मेरी इल्तिजा सुनी है।

२उस ने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है, इस लिए मैं उम्र भर उसे पुकारूँगा।

३मौत ने मुझे अपनी ज़न्जीरों में जकड़ लिया, और पाताल की परेशानियाँ मुझे पर गालिब आईं। मैं मुसीबत और दुख में फंस गया।

४तब मैं ने रब का नाम पुकारा, “ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा!”

५रब मेहरबान और रास्त है, हमारा खुदा रहीम है।

६रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है। जब मैं पस्तहाल था तो उस ने मुझे बचाया।

७ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास वापस आ, क्यूँकि रब ने तेरे साथ भलाई की है।

८क्यूँकि ऐ रब, तू ने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँओ को फिसलने से बचाया है।

९अब मैं ज़िन्दों की ज़मीन में रह कर रब के हुज़ूर चलूँगा।

10 मैं ईमान लाया और इस लिए बोला, "मैं शदीद मुसीबत में फंस गया हूँ।"

11 मैं सख्त घबरा गया और बोला, "तमाम इन्सान दरोगागो हैं।"

12 जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सब के इवज़ मैं क्या दूँ?

13 मैं नजात का प्याला उठा कर रब का नाम पुकारूँगा।

14 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क्रौम के सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

15 रब की निगाह में उस के ईमानदारों की मौत गिराँक्रदर है।

16 ऐ रब, यक्रीनन मैं तेरा खादिम, हाँ तेरा खादिम और तेरी खादिमा का बेटा हूँ। तू ने मेरी ज़न्जीरों को तोड़ डाला है।

17 मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की कुर्बानी पेश करके तेरा नाम पुकारूँगा।

18 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क्रौम के सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

19 मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम तेरे बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

तमाम अक्वाम अल्लाह की हम्द करें

117 ऐ तमाम अक्वाम, रब की तम्जीद करो! ऐ तमाम उम्मतो, उस की मदहसराई करो!

2 क्योंकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है, और रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

118 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

2 इस्राईल कहे, "उस की शफ़क़त अबदी है।"

3 हारून का घराना कहे, "उस की शफ़क़त अबदी है।"

4 रब का ख़ौफ़ मानने वाले कहे, "उस की शफ़क़त अबदी है।"

5 मुसीबत में मैं ने रब को पुकारा तो रब ने मेरी सुन कर मेरे पाँओं को खुले मैदान में क्राइम कर दिया है।

6 रब मेरे हक़ में है, इस लिए मैं नहीं डरूँगा। इन्सान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?

7 रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इस लिए मैं उन की शिकस्त देख कर खुश हूँगा जो मुझ से नफ़रत करते हैं।

8 रब में पनाह लेना इन्सान पर एतिमाद करने से कहीं बेहतर है।

9 रब में पनाह लेना शुरफ़ा पर एतिमाद करने से कहीं बेहतर है।

10 तमाम अक्वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन मैं ने अल्लाह का नाम ले कर उन्हें भगा दिया।

11 उन्होंने ने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से घेर लिया, लेकिन मैं ने अल्लाह का नाम ले कर उन्हें भगा दिया।

12 वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर हुए, लेकिन काँटदार झाड़ियों की आग की तरह जल्द ही बुझ गए। मैं ने रब का नाम ले कर उन्हें भगा दिया।

13 दुश्मन ने मुझे धक्का दे कर गिराने की कोशिश की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।

14 रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।

15 खुशी और फ़तह के नारे रास्तबाज़ों के ख़ैमों में गूँजते हैं, "रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है।"

16 रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है, रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!"

17मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िन्दा रह कर रब के काम बयान करूँगा।

18गो रब ने मेरी सख्त तादीब की है, उस ने मुझे मौत के हवाले नहीं किया।

19रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि मैं उन में दाखिल हो कर रब का शुक्र करूँ।

20यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्तबाज़ दाखिल होते हैं।

21मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्योंकि तू ने मेरी सुन कर मुझे बचाया है।

22जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।

23यह रब ने किया और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है।

24इसी दिन रब ने अपनी कुदरत दिखाई है। आओ, हम शादियाना बजा कर उस की खुशी मनाएँ।

25ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब, मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!

26मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।

27रब ही खुदा है, और उस ने हमें रौशनी बरख़्शी है। आओ, ईद की कुर्बानी रस्सियों से कुर्बानगाह के सींगों के साथ बान्धो।

28तू मेरा खुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ। ऐ मेरे खुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।

29रब की सताइश करो, क्योंकि वह भला है और उस की शफ़क़त अबदी है।

अल्लाह के कलाम की शान

-1-

119 मुबारक हैं वह जिन का चाल-चलन बेइल्ज़ाम है, जो रब की शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

2मुबारक हैं वह जो उस के अहकाम पर अमल करते और पूरे दिल से उस के तालिब रहते हैं,

3जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर चलते हैं।

4तू ने हमें अपने अहकाम दिए हैं, और तू चाहता है कि हम हर लिहाज़ से उन के ताबे रहें।

5काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं साबितक़दमी से तेरे अहकाम पर अमल करूँ!

6तब मैं शर्मिन्दा नहीं हूँगा, क्योंकि मेरी आँखें तेरे तमाम अहकाम पर लगी रहेंगी।

7जितना मैं तेरे बा-इन्साफ़ फ़ैसलों के बारे में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी सताइश करूँगा।

8तेरे अहकाम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा। मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

-2-

9नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे।

10मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने अहकाम से भटकने न दे।

11मैं ने तेरा कलाम अपने दिल में महफूज़ रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।

12ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अहकाम सिखा।

13अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम हिदायात सुनाता हूँ।

14मैं तेरे अहकाम की राह से उतना लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की दौलत से।

15मैं तेरी हिदायात में महव-ए-खयाल रहूँगा और तेरी राहों को तकता रहूँगा।

16मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ और तेरा कलाम नहीं भूलता।

-3-

17 अपने खादिम से भलाई कर ताकि मैं ज़िन्दा रहूँ और तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ।

18 मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के अजाइब देखूँ।

19 दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अहकाम मुझ से छुपाए न रख।

20 मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आज़ू करके करते निढाल हो रही है।

21 तू मगरूरों को डाँटता है। उन पर लानत जो तेरे अहकाम से भटक जाते हैं।

22 मुझे लोगों की तौहीन और तहक़ीर से रिहाई दे, क्योंकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहा हूँ।

23 गो बुजुर्ग मेरे खिलाफ़ मन्सूबे बांधने के लिए बैठ गए हैं, तेरा खादिम तेरे अहकाम में महव-ए-खयाल रहता है।

24 तेरे अहकाम से ही मैं लुत्फ़ उठाता हूँ, वही मेरे मुशीर हैं।

-4-

25 मेरी जान खाक में दब गई है। अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

26 मैं ने अपनी राहें बयान कीं तो तू ने मेरी सुनी। मुझे अपने अहकाम सिखा।

27 मुझे अपने अहकाम की राह समझने के क़ाबिल बना ताकि तेरे अजाइब में महव-ए-खयाल रहूँ।

28 मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ तक़वियत दे।

29 फ़रेब की राह मुझ से दूर रख और मुझे अपनी शरीअत से नवाज़।

30 मैं ने वफ़ा की राह इखतियार करके तेरे आईन अपने सामने रखे हैं।

31 मैं तेरे अहकाम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब, मुझे शर्मिन्दा न होने दे।

32 मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्योंकि तू ने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

-5-

33 ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो मैं उम्र भर उन पर अमल करूँगा।

34 मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उस के ताबे रहूँ।

35 अपने अहकाम की राह पर मेरी राहनुमाई कर, क्योंकि यही मैं पसन्द करता हूँ।

36 मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे अपने फ़रमानों की तरफ़ माइल कर।

37 मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले, और मुझे अपनी राहों पर सँभाल कर मेरी जान को ताज़ादम कर।

38 जो वादा तू ने अपने खादिम से किया वह पूरा कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।

39 जिस रुस्वाई से मुझे ख़ौफ़ है उस का खतरा दूर कर, क्योंकि तेरे अहकाम अच्छे हैं।

40 मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमन्द हूँ, अपनी रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

-6-

41 ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिस का वादा तू ने किया है मुझ तक पहुँचे

42 ताकि मैं बेइज़ज़ती करने वाले को जवाब दे सकूँ। क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।

43 मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन, क्योंकि मैं तेरे फ़रमानों के इन्तिज़ार में हूँ।

44 मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा, अब से अबद तक उस में क़ाइम रहूँगा।

45 मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्योंकि तेरे आईन का तालिब रहता हूँ।

46 मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे अहकाम बयान करूँगा।

47 मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ, वह मुझे प्यारे हैं।

48 मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़ उठाऊँगा, क्योंकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी हिदायात में महव-ए-खयाल रहूँगा।

-7-

49 उस बात का खयाल रख जो तू ने अपने खादिम से की और जिस से तू ने मुझे उम्मीद दिलाई है।

50 मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है कि तेरा कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता है।

51 मगरूर मेरा हद से ज़यादा मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।

52 ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता हूँ तो मुझे तसल्ली मिलती है।

53 बेदीनों को देख कर मैं आग-बगूला हो जाता हूँ, क्योंकि उन्होंने तेरी शरीअत को तर्क किया है।

54 जिस घर में मैं परदेसी हूँ उस में मैं तेरे अहक़ाम के गीत गाता रहता हूँ।

55 ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ, तेरी शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।

56 यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की पैरवी करता हूँ।

-8-

57 रब मेरी मीरास है। मैं ने तेरे फ़रमानों पर अमल करने का वादा किया है।

58 मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा हूँ। अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।

59 मैं ने अपनी राहों पर ध्यान दे कर तेरे अहक़ाम की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।

60 मैं नहीं झिजकता बल्कि भाग कर तेरे अहक़ाम पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।

61 बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।

62 आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे रास्त फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।

63 मैं उन सब का साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उन सब का दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल करते हैं।

64 ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे अपने अहक़ाम सिखा!

-9-

65 ऐ रब, तू ने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने खादिम से भलाई की है।

66 मुझे सहीह इन्तियाज़ और इफ़ान सिखा, क्योंकि मैं तेरे अहक़ाम पर ईमान रखता हूँ।

67 इस से पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं आवारा फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के ताबे रहता हूँ।

68 तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने आईन सिखा!

69 मगरूरों ने झूट बोल कर मुझ पर कीचड़ उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात की फ़रमाँबरदारी करता हूँ।

70 उन के दिल अकड़ कर बेहिस्स हो गए हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।

71 मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया, क्योंकि इस तरह मैं ने तेरे अहक़ाम सीख लिए।

72 जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़यादा पसन्द है।

-10-

73 तेरे हाथों ने मुझे बना कर मज़बूत बुन्याद पर रख दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि तेरे अहक़ाम सीख लूँ।

74जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देख कर खुश हो जाएँ, क्योंकि मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में रहता हूँ।

75ऐ रब, मैं ने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तू ने मुझे पस्त किया है।

76तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तू ने अपने ख़ादिम से वादा किया है।

77मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि मेरी जान में जान आए, क्योंकि मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।

78जो मगरूर मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह शर्मिन्दा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महव-ए-खयाल रहूँगा।

79काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे अहक़ाम जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!

80मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में बेइल्ज़ाम रहे ताकि मेरी रुस्वाई न हो जाए।

-11-

81मेरी जान तेरी नजात की आर्जू करते करते निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में हूँ।

82मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते धुन्दला रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?

83मैं धुएँ में सुकड़ी हुई मशक की मानिन्द हूँ लेकिन तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।

84तेरे ख़ादिम को मज़ीद कितनी देर इन्तिज़ार करना पड़ेगा? तू मेरा ताक्कुब करने वालों की अदालत कब करेगा?

85जो मगरूर तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते उन्होंने ने मुझे फंसाने के लिए गढ़े खोद लिए हैं।

86तेरे तमाम अहक़ाम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद कर, क्योंकि वह झूट का सहारा ले कर मेरा ताक्कुब कर रहे हैं।

87वह मुझे रू-ए-ज़मीन पर से मिटाने के क़रीब ही हैं, लेकिन मैं ने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।

88अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान को ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर अमल करूँ।

-12-

89ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर काइम-ओ-दाइम है।

90तेरी वफ़ादारी पुशत-दर-पुशत रहती है। तू ने ज़मीन की बुन्याद रखी, और वह वहीं की वहीं बरकरार रहती है।

91आज तक आसमान-ओ-ज़मीन तेरे फ़रमानों को पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं, क्योंकि तमाम चीज़ें तेरी ख़िदमत करने के लिए बनाई गई हैं।

92अगर तेरी शरीअत मेरी खुशी न होती तो मैं अपनी मुसीबत में हलाक हो गया होता।

93मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्योंकि उन ही के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता है।

94मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरे अहक़ाम का तालिब रहा हूँ।

95बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।

96मैं ने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद होती है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं होती।

-13-

97तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन भर मैं उस में महव-ए-खयाल रहता हूँ।

98तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा दानिशमन्द बना देता है, क्योंकि वह हमेशा तक मेरा खज़ाना है।

99मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं तेरे आईन में महव-ए-खयाल रहता हूँ।

100 मुझे बुजुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं वफ़ादारी से तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।

101 मैं ने हर बुरी राह पर क्रदम रखने से गुरेज़ किया है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।

102 मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्योंकि तू ही ने मुझे तालीम दी है।

103 तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे मुँह में शहद से ज़्यादा मीठा है।

104 तेरे अहकाम से मुझे समझ हासिल होती है, इस लिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता हूँ।

-14-

105 तेरा कलाम मेरे पाँओ के लिए चरामा है जो मेरी राह को रौशन करता है।

106 मैं ने क्रसम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों की पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी करूँगा।

107 मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

108 ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना कुर्बानियों को पसन्द कर और मुझे अपने आईन सिखा!

109 मेरी जान हमेशा खतरे में है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।

110 बेदीनों ने मेरे लिए फ़ंदा तय्यार कर रखा है, लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।

111 तेरे अहकाम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं, क्योंकि उन से मेरा दिल खुशी से उछलता है।

112 मैं ने अपना दिल तेरे अहकाम पर अमल करने की तरफ़ माइल किया है, क्योंकि इस का अज़्र अबदी है।

-15-

113 मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत से मुहब्बत करता हूँ।

114 तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में रहता हूँ।

115 ऐ बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्योंकि मैं अपने ख़ुदा के अहकाम से लिपटा रहूँगा।

116 अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे सँभाल ताकि जिन्दा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि शर्मिन्दा न हो जाऊँ।

117 मेरा सहारा बन ताकि बच कर हर वक़्त तेरे आईन का लिहाज़ रखूँ।

118 तू उन सब को रद्द करता है जो तेरे अहकाम से भटके फिरते हैं, क्योंकि उन की धोकेबाज़ी फ़रेब ही है।

119 तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी से ख़ारिज की हुई मैल की तरह फैंक कर नेस्त कर देता है, इस लिए तेरे फ़रमान मुझे प्यारे हैं।

120 मेरा जिस्म तुझ से दहशत खा कर थरथराता है, और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

-16-

121 मैं ने रास्त और बा-इन्साफ़ काम किया है, चुनाँचे मुझे उन के हवाले न कर जो मुझ पर जुल्म करते हैं।

122 अपने खादिम की खुशहाली का ज़ामिन बन कर मगरूरों को मुझ पर जुल्म करने न दे।

123 मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे की राह देखते देखते रह गई हैं।

124 अपने खादिम से तेरा सुलूक तेरी शफ़क़त के मुताबिक़ हो। मुझे अपने अहकाम सिखा।

125 मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता फ़रमा ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।

126 अब वक़्त आ गया है कि रब क्रदम उठाए, क्योंकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।

127 इस लिए मैं तेरे अहकाम को सोने बल्कि ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।

128इस लिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदिह राह से नफ़रत करता हूँ।

-17-

129तेरे अहकाम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इस लिए मेरी जान उन पर अमल करती है।

130तेरे कलाम का इन्किशाफ़ रौशनी बख़्शता और सादालौह को समझ अता करता है।

131मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि मुँह खोल कर हाँप रहा हूँ।

132मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा और मुझे पर वही मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे नाम से प्यार करते हैं।

133अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर, किसी भी गुनाह को मुझे पर हुकूमत न करने दे।

134फ़िद्या दे कर मुझे इन्सान के ज़ुल्म से छुटकारा दे ताकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहूँ।

135अपने चेहरे का नूर अपने खादिम पर चमका और मुझे अपने अहकाम सिखा।

136मेरी आँखों से आँसूओं की नदियाँ बह रही हैं, क्योंकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।

-18-

137ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुरुस्त हैं।

138तू ने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ अपने फ़रमान जारी किए हैं।

139मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है, क्योंकि मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।

140तेरा कलाम आज़मा कर पाक-साफ़ साबित हुआ है, तेरा खादिम उसे प्यार करता है।

141मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है, लेकिन मैं तेरे आईन नहीं भूलता।

142तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत सच्चाई है।

143मुसीबत और परेशानी मुझे पर ग़ालिब आ गई हैं, लेकिन मैं तेरे अहकाम से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।

144तेरे अहकाम अबद तक रास्त हैं। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

-19-

145मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, "ऐ रब, मेरी सुन! मैं तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।"

146मैं पुकारता हूँ, "मुझे बचा! मैं तेरे अहकाम की पैरवी करूँगा।"

147पौ फटने से पहले पहले मैं उठ कर मदद के लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में हूँ।

148रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं ताकि तेरे कलाम पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करूँ।

149अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़ सुन! ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

150जो चालाकी से मेरा ताक्कुब कर रहे हैं वह क़रीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से इन्तिहाई दूर हैं।

151ऐ रब, तू क़रीब ही है, और तेरे अहकाम सच्चाई हैं।

152बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम हुआ है कि तू ने उन्हें हमेशा के लिए क़ाइम रखा है।

-20-

153मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।

154अदालत में मेरे हक़ में लड़ कर मेरा इवज़ाना दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

155नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्योंकि वह तेरे अहकाम के तालिब नहीं होते।

156ए रब, तू मुतअद्दिद तरीकों से अपने रहम का इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

157मेरा ताक़्कुब करने वालों और मेरे दुश्मनों की बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अह्काम से दूर नहीं हुआ।

158बेवफ़ाओं को देख कर मुझे घिन आती है, क्योंकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारते।

159देख, मुझे तेरे अह्काम से प्यार है। ऐ रब, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

160तेरे कलाम का लुब्ब-ए-लुबाब सच्चाई है, तेरे तमाम रास्त फ़रमान अबद तक क़ाइम हैं।

-21-

161सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं, लेकिन मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।

162मैं तेरे कलाम की खुशी उस की तरह मनाता हूँ जिसे कसत का माल-ए-ग़नीमत मिल गया हो।

163मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन खाता हूँ, लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।

164मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तेरे अह्काम रास्त हैं।

165जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून हासिल है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खा कर नहीं गिरेंगे।

166ए रब, मैं तेरी नजात के इन्तिज़ार में रहते हुए तेरे अह्काम की पैरवी करता हूँ।

167मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है, वह उसे निहायत प्यारे हैं।

168मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता हूँ, क्योंकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

-22-

169ए रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।

170मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!

171मेरे होंटों से हम्द-ओ-सना फ़ूट निकले, क्योंकि तू मुझे अपने अह्काम सिखाता है।

172मेरी ज़बान तेरे कलाम की मदहसराई करे, क्योंकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।

173तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तय्यार रहे, क्योंकि मैं ने तेरे अह्काम इख़तियार किए हैं।

174ए रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूमन्द हूँ, तेरी शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।

175मेरी जान ज़िन्दा रहे ताकि तेरी सताइश कर सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।

176मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर रहा हूँ। अपने ख़ादिम को तलाश कर, क्योंकि मैं तेरे अह्काम नहीं भूलता।

तोहमत लगाने वालों से रिहाई के लिए दुआ

120 ज़ियारत का गीत।
मुसीबत में मैं ने रब को पुकारा, और उस ने मेरी सुनी।

2ए रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फ़रेबदिह ज़बान से बचा।

3ए फ़रेबदिह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे, मज़ीद तुझे क्या दे?

4वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते कोएले बरसाए!

5मुझ पर अफ़सोस! मुझे अजनबी मुल्क मसक में, क़ीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता है।

6इतनी देर से अम्न के दुश्मनों के पास रहने से मेरी जान तंग आ गई है।

7मैं तो अम्न चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ तो वह जंग करने पर तुले होते हैं।

इन्सान का वफ़ादार मुहाफ़िज़

121 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की तरफ़ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?

²मेरी मदद रब से आती है, जो आसमान-ओ-ज़मीन का खालिक़ है।

³वह तेरा पाँओ फिसलने नहीं देगा। तेरा मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।

⁴यक्रीनन इस्राईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघता है, न सोता है।

⁵रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर सायबान है।

⁶न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर पहुँचाएगा।

⁷रब तुझे हर नुक़सान से बचाएगा, वह तेरी जान को मट्फूज़ रखेगा।

⁸रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की पहरादारी करेगा।

यरूशलम पर बरकत

122 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उन से खुश हुआ जिन्होंने ने मुझ से कहा, “आओ, हम रब के घर चलें।”

²ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँओ तेरे दरवाज़ों में खड़े हैं।

³यरूशलम शहर यूँ बनाया गया है कि उस के तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

⁴वहाँ क़बीले, हाँ रब के क़बीले हाज़िर होते हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह इस्राईल को फ़रमाया गया है।

⁵क्योंकि वहाँ तख़्त-ए-अदालत करने के लिए लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।

⁶यरूशलम के लिए सलामती माँगो! “जो तुझ से प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।

⁷तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में सुकून हो।”

⁸अपने भाइयों और हमसायों की खातिर मैं कहूँगा, “तेरे अन्दर सलामती हो!”

⁹रब हमारे खुदा के घर की खातिर मैं तेरी खुशहाली का तालिब रहूँगा।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

123 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ़ उठाता हूँ, तेरी तरफ़ जो आसमान पर तख़्तनशीन है।

²जिस तरह गुलाम की आँखें अपने मालिक के हाथ की तरफ़ और लौंडी की आँखें अपनी मालिकन के हाथ की तरफ़ लगी रहती हैं उसी तरह हमारी आँखें रब अपने खुदा पर लगी रहती हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न करे।

³ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर मेहरबानी कर! क्योंकि हम हद से ज़्यादा हिक़ारत का निशाना बन गए हैं।

⁴सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की लान-तान और मग़रूरों की तट्कीर से हमारी जान दूभर हो गई है।

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

124 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इस्राईल कहे, “अगर रब हमारे साथ न होता,

²अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे खिलाफ़ उठे

³और आग-बगूला हो कर अपना पूरा गुस्सा हम पर उतारा, तो वह हमें ज़िन्दा हड़प कर लेते।

⁴फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़ धारा हम पर गालिब आ जाता

⁵और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र जाता।”

६रब की हम्द हो जिस ने हमें उन के दाँतों के हवाले न किया, वरना वह हमें फाड़ खाते।

७हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है जो चिड़ीमार के फंदे से निकल कर उड़ गई है। फंदा टूट गया है, और हम बच निकले हैं।

८रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा है जो आसमान-ओ-ज़मीन का खालिक है।

४ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसम-ए-बरसात में दशत-ए-नजब के खुशक नाले पानी से भर जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।

५जो आँसू बहा बहा कर बीज बोएँ वह खुशी के नारे लगा कर फ़सल काटेंगे।

६वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे, लेकिन जब फ़सल पक जाए तो खुशी के नारे लगा कर पूले उठाए अपने घर लौटेंगे।

चारों तरफ़ से क्रौम की हिफ़ाज़त

125

ज़ियारत का गीत।

जो रब पर भरोसा रखते हैं वह कोह-ए-सिय्यून की मानिन्द हैं जो कभी नहीं डगमगाता बल्कि अबद तक क्राइम रहता है।

२जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता है उसी तरह रब अपनी क्रौम को अब से अबद तक चारों तरफ़ से मट्फूज़ रखता है।

३क्यूँकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़ बदकारी करने की आजमाइश में पड़ जाएँ।

४ऐ रब, उन से भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं।

५लेकिन जो भटक कर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ खारिज कर दे। इस्राईल की सलामती हो!

रब अपने क्रैदियों को रिहाई देता है

126

ज़ियारत का गीत।

जब रब ने सिय्यून को बहाल किया तो ऐसा लग रहा था कि हम ख़्वाब देख रहे हैं।

२तब हमारा मुँह हंसी-खुशी से भर गया, और हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रुक न सकी। तब दीगर क्रौमों में कहा गया, “रब ने उन के लिए ज़बरदस्त काम किया है।”

३रब ने वाक्रई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया है। हम कितने खुश थे, कितने खुश!

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

127

सुलैमान का ज़ियारत का गीत।

अगर रब घर को तामीर न करे तो उस पर काम करने वालों की मेहनत अबस है। अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो इन्सानी पहरेदारों की निगहबानी अबस है।

२यह भी अबस है कि तुम सुबह-सवेरे उठो और पूरे दिन मेहनत-मशक्कत के साथ रोज़ी कमा कर रात गए सो जाओ। क्यूँकि जो अल्लाह को प्यारे हैं उन्हें वह उन की ज़रूरियात उन के सोते में पूरी कर देता है।

३बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से पाते हैं, औलाद एक अन्न है जो वही हमें देता है।

४जवानी में पैदा हुए बेटे सूरमे के हाथ में तीरों की मानिन्द हैं।

५मुबारक है वह आदमी जिस का तर्कश उन से भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों से झगड़ेगा तो शर्मिन्दा नहीं होगा।

जिस ख़ानदान को अल्लाह

बरकत देता है

128

ज़ियारत का गीत।

मुबारक है वह जो रब का खौफ़ मान कर उस की राहों पर चलता है।

२यक्रीनन तू अपनी मेहनत का फल खाएगा। मुबारक हो, क्यूँकि तू कामयाब होगा।

३घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की मानिन्द होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठ कर ज़ैतून की ताज़ा शाखों^a की मानिन्द होंगे।

४जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही बरकत मिलेगी।

५रब तुझे कोह-ए-सिय्यून से बरकत दे। वह करे कि तू जीते जी यरूशलम की खुशहाली देखे,

६कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे। इस्राईल की सलामती हो!

मदद के लिए इस्राईल की दुआ

129

ज़ियारत का गीत।

इस्राईल कहे, "मेरी जवानी से ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हम्लाआवर हुए हैं।

२मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर हम्लाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर ग़ालिब न आए।"

३हल चलाने वालों ने मेरी पीठ पर हल चला कर उस पर अपनी लम्बी लम्बी रेधारयाँ बनाई हैं।

४रब रास्त है। उस ने बेदीनों के रस्से काट कर मुझे आज़ाद कर दिया है।

५अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफ़रत रखें वह शर्मिन्दा हो कर पीछे हट जाएँ।

६वह छतों पर की घास की मानिन्द हों जो सहीह तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है

७और जिस से न फ़सल काटने वाला अपना हाथ, न पूले बांधने वाला अपना बाजू भर सके।

८जो भी उन से गुज़रे वह न कहे, "रब तुम्हें बरकत दे।"

हम रब का नाम ले कर तुम्हें बरकत देते हैं!

^aइस से मुराद है पैवन्दकारी के लिए दरख़त से काटी गई टहनियाँ।

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़बूर)

130

ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से पुकारता हूँ।

२ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगा कर मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे!

३ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे तो कौन क़ाइम रहेगा? कोई भी नहीं!

४लेकिन तुझ से मुआफ़ी हासिल होती है ताकि तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

५मैं रब के इन्तिज़ार में हूँ, मेरी जान शिद्दत से इन्तिज़ार करती है। मैं उस के कलाम से उम्मीद रखता हूँ।

६पहरेदार जिस शिद्दत से चौ फटने के इन्तिज़ार में रहते हैं, मेरी जान उस से भी ज़्यादा शिद्दत के साथ, हाँ ज़्यादा शिद्दत के साथ रब की मुन्तज़िर रहती है।

७ऐ इस्राईल, रब की राह देखता रह! क्योंकि रब के पास शफ़क़त और फ़िद्या का ठोस बन्द-ओ-बस्त है।

८वह इस्राईल के तमाम गुनाहों का फ़िद्या दे कर उसे नजात देगा।

बच्चे का सा ईमान

131

ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न मेरी आँखें मग़रूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और हैरानकुन हैं कि मैं उन से निपट नहीं सकता उन्हें मैं नहीं छेड़ता।

२यक़ीनन मैं ने अपनी जान को राहत और सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में बैठे छोटे बच्चे की मानिन्द है, हाँ मेरी जान छोटे बच्चे^b की मानिन्द है।

^bजिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

३ऐ इस्राईल, अब से अबद तक रब के इन्तिज़ार में रह!

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक्दिस

132

ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, दाऊद का खयाल रख, उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।

२उस ने क्रसम खा कर रब से वादा किया और याकूब के क़वी खुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,

३“न मैं अपने घर में दाखिल हूँगा, न बिस्तर पर लेटूँगा,

४न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने पपोटों को ऊँघने दूँगा

५जब तक रब के लिए मक़ाम और याकूब के सूरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।”

६हम ने इफ़्राता में अह्द के सन्दूक की खबर सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।

७आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाखिल हो कर उस के पाँओ की चौकी के सामने सिज्दा करें।

८ऐ रब, उठ कर अपनी आरामगाह के पास आ, तू और अह्द का सन्दूक जो तेरी कुदरत का इज़हार है।

९तेरे इमाम रास्ती से मुलब्स हो जाएँ, और तेरे ईमानदार खुशी के नारे लगाएँ।

१०ऐ अल्लाह, अपने खादिम दाऊद की खातिर अपने मसह किए हुए बन्दे के चेहरे को रद्द न कर।

११रब ने क्रसम खा कर दाऊद से वादा किया है, और वह उस से कभी नहीं फिरेगा, “मैं तेरी औलाद में से एक को तेरे तख्त पर बिठाऊँगा।

१२अगर तेरे बेटे मेरे अह्द के वफ़ादार रहें और उन अह्काम की पैरवी करें जो मैं उन्हें

सिखाऊँगा तो उन के बेटे भी हमेशा तक तेरे तख्त पर बैठेंगे।”

१३क्यूँकि रब ने कोह-ए-सिय्यून को चुन लिया है, और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमन्द था।

१४उस ने फ़रमाया, “यह हमेशा तक मेरी आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा, क्यूँकि मैं इस का आरज़ूमन्द हूँ।

१५मैं सिय्यून की खुराक को कस्रत की बरकत दे कर उस के शरीबों को रोटी से सेर करूँगा।

१६मैं उस के इमामों को नजात से मुलब्स करूँगा, और उस के ईमानदार खुशी से ज़ोरदार नारे लगाएँगे।

१७यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा,^a और यहाँ मैं ने अपने मसह किए हुए खादिम के लिए चराग तय्यार कर रखा है।

१८मैं उस के दुश्मनों को शर्मिन्दगी से मुलब्स करूँगा जबकि उस के सर का ताज चमकता रहेगा।”

भाइयों की यगान्गत की बरकत

133

दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का गीत।

जब भाई मिल कर और यगान्गत से रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।

२यह उस नफ़ीस तेल की मानिन्द है जो हारून इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक टपक कर उस की दाढ़ी और लिबास के ग़रेबान पर आ जाता है।

३यह उस ओस की मानिन्द है जो कोह-ए-हर्मून से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्यूँकि रब ने फ़रमाया है, “वहीं हमेशा तक बरकत और ज़िन्दगी मिलेगी।”

^aलफ़्ज़ी तर्जुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

रब के घर में रात की सताइश**134**

ज़ियारत का गीत।

आओ, रब की सताइश करो,
 ऐ रब के तमाम खादिमो जो रात के वक़्त रब
 के घर में खड़े हो।

२मक्दिस में अपने हाथ उठा कर रब की
 तम्जीद करो!

३रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमान-
 ओ-ज़मीन का खालिक़ तुझे बरकत दे।

अल्लाह की परस्तिश**135**

रब की हम्द हो! रब के नाम
 की सताइश करो! उस की
 तम्जीद करो, ऐ रब के तमाम खादिमो,

२जो रब के घर में, हमारे खुदा की बारगाहों
 में खड़े हो।

३रब की हम्द करो, क्योंकि रब भला है। उस
 के नाम की मदहसराई करो, क्योंकि वह प्यारा
 है।

४क्योंकि रब ने याक़ूब को अपने लिए चुन
 लिया, इस्राईल को अपनी मिलकियत बना
 लिया है।

५हाँ, मैं ने जान लिया है कि रब अज़ीम है,
 कि हमारा रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा
 अज़ीम है।

६रब जो जी चाहे करता है, ख़्वाह आसमान
 पर हो या ज़मीन पर, ख़्वाह समुन्दरों में हो या
 गहराइयों में कहीं भी हो।

७वह ज़मीन की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता
 और बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह
 हवा अपने गोदामों से निकाल लाता है।

८मिस्र में उस ने इन्सान-ओ-हैवान के तमाम
 पहलौठों को मार डाला।

९ऐ मिस्र, उस ने अपने इलाही निशान
 और मौजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब
 फिरऔन और उस के तमाम मुलाज़िम उन का
 निशाना बन गए।

१०उस ने मुतअद्दिद क्रौमों को शिकस्त दे
 कर ताक़तवर बादशाहों को मौत के घाट उतार
 दिया।

११अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का
 बादशाह ओज और मुल्क-ए-कनआन की
 तमाम सल्तनतें न रहीं।

१२उस ने उन का मुल्क इस्राईल को दे
 कर फ़रमाया कि आइन्दा यह मेरी क्रौम की
 मौरूसी मिलकियत होगा।

१३ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे
 पुश्त-दर-पुश्त याद किया जाएगा।

१४क्योंकि रब अपनी क्रौम का इन्साफ़ करके
 अपने खादिमों पर तरस खाएगा।

१५दीगर क्रौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं,
 इन्सान के हाथ ने उन्हें बनाया।

१६उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते,
 उन की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।

१७उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं
 सकते, उन के मुँह में साँस ही नहीं होती।

१८जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो
 जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे
 बेहिस्स-ओ-हरकत हो जाएँ।

१९ऐ इस्राईल के घराने, रब की सताइश कर।
 ऐ हारून के घराने, रब की तम्जीद कर।

२०ऐ लावी के घराने, रब की हम्द-ओ-सना
 कर। ऐ रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब की
 सताइश करो।

२१सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द
 हो जो यरूथलम में सुकूनत करता है। रब की
 हम्द हो!

**तख़लीक़ और क्रौम की तारीख़
 में अल्लाह के मौजिज़े****136**

रब का शुक्र करो, क्योंकि वह
 भला है, और उस की शफ़क़त
 अबदी है।

2खुदाओं के खुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

3मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

4जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

5जिस ने हिक्मत के साथ आसमान बनाया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

6जिस ने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर लगा दिया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

7जिस ने आसमान की रौशनियों को खल्क किया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

8जिस ने सूरज को दिन के वक़्त हुक्मत करने के लिए बनाया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

9जिस ने चाँद और सितारों को रात के वक़्त हुक्मत करने के लिए बनाया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

10जिस ने मिस्र में पहलौठों को मार डाला उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

11जो इस्राईल को मिस्रियों में से निकाल लाया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

12जिस ने उस वक़्त बड़ी ताक़त और कुदरत का इज़हार किया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

13जिस ने बहर-ए-कुल्जुम को दो हिस्सों में तक्सीम कर दिया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

14जिस ने इस्राईल को उस के बीच में से गुज़रने दिया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

15जिस ने फ़िरऔन और उस की फ़ौज को बहर-ए-कुल्जुम में बहा कर गर्क कर दिया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

16जिस ने रेगिस्तान में अपनी क्रौम की क्रियादत की उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

17जिस ने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

18जिस ने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

19जिस ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को मौत के घाट उतारा उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

20जिस ने बसन के बादशाह ओज को हलाक कर दिया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

21जिस ने उन का मुल्क इस्राईल को मीरास में दिया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

22जिस ने उन का मुल्क अपने खादिम इस्राईल की मौरूसी मिलकियत बनाया उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

23जिस ने हमारा खयाल किया जब हम खाक में दब गए थे उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

24जिस ने हमें उन के क़ब्ज़े से छुड़ाया जो हम पर जुल्म कर रहे थे उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

25जो तमाम जानदारों को खुराक मुहय्या करता है उस का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

26आसमान के खुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस की शपक़त अबदी है।

बाबल में जिलावतनों की आह-ओ-ज़ारी
137 जब सिय्यून की याद आई तो हम बाबल की नहरों के किनारे ही बैठ कर रो पड़े।

²हम ने वहाँ के सफ़ेदा के दरख्तों से अपने सरोद लटका दिए,

³क्योंकि जिन्होंने हमें गिरिप्रतार किया था उन्होंने ने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं उन्होंने ने खुशी का मुतालबा किया, “हमें सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!”

⁴लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह रब का गीत गाएँ?

⁵ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहना हाथ सूख जाए।

⁶अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को अपनी अज़ीमतरीन खुशी से ज़्यादा क़ीमती न समझूँ तो मेरी ज़बान तालू से चिपक जाए।

⁷ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने उस दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के क्रब्ज़े में आया। उस वक़्त वह बोले, “उसे ढा दो! बुन्यादों तक उसे गिरा दो!”

⁸ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है, मुबारक है वह जो तुझे उस का बदला दे जो तू ने हमारे साथ किया है।

⁹मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़ कर पत्थर पर पटख दे।

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

138 दाऊद का ज़बूर।
 ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तम्जीद करूँगा।

²मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ रुख करके सिज्दा करूँगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी के बाइस तेरा शुक्र करूँगा। क्योंकि

तू ने अपने नाम और कलाम को तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ किया है।

³जिस दिन मैं ने तुझे पुकारा तू ने मेरी सुन कर मेरी जान को बड़ी तक़वियत दी।

⁴ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह के फ़रमान सुन कर तेरा शुक्र करें।

⁵वह रब की राहों की मदहसराई करें, क्योंकि रब का जलाल अज़ीम है।

⁶क्योंकि गो रब बुलन्दियों पर है वह पस्तहाल का खयाल करता और मग़रूरों को दूर से ही पहचान लेता है।

⁷जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो तू मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना हाथ बढ़ा कर मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता है।

⁸रब मेरी खातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी शफ़क़त अबदी है। उन्हें न छोड़ जिन को तेरे हाथों ने बनाया है!

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

139 दाऊद का ज़बूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, तू मेरा मुआइना करता और मुझे ख़ूब जानता है।

²मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर से ही मेरी सोच समझता है।

³तू मुझे जाँचता है, ख्वाह मैं रास्ते में हूँ या आराम करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाकिफ़ है।

⁴क्योंकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए तू ऐ रब पहले ही उस का पूरा इल्म रखता है।

⁵तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ मेरे ऊपर ही रहता है।

⁶इस का इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है कि मैं इसे समझ नहीं सकता।

7 मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे से कहाँ फ़रार हो जाऊँ?

8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद है, अगर उतर कर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ तो तू वहाँ भी है।

9 गो मैं तुलू-ए-सुबह के परों पर उड़ कर समुन्दर की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,

10 वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क्रियादत्त करेगा, वहाँ भी तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।

11 अगर मैं कहूँ, "तारीकी मुझे छुपा दे, और मेरे इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए," तो भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

12 तेरे सामने तारीकी भी तारीक़ नहीं होती, तेरे हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि रौशनी और अंधेरा एक जैसे होते हैं।

13 क्योंकि तू ने मेरा बातितन बनाया है, तू ने मुझे माँ के पेट में तश्कील दिया है।

14 मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली और मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी जान यह ख़ूब जानती है।

15 मेरा ढाँचा तुझ से छुपा नहीं था जब मुझे पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की गहराइयों में तश्कील दिया गया।

16 तेरी आँखों ने मुझे उस वक्रत देखा जब मेरे जिस्म की शक़ल अभी नामुकम्मल थी। जितने भी दिन मेरे लिए मुकर्रर थे वह सब तेरी किताब में उस वक्रत दर्ज थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।

17 ऐ अल्लाह, तेरे खयालात समझना मेरे लिए कितना मुश्किल है! उन की कुल तादाद कितनी अज़ीम है।

18 अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ होता हूँ।

19 ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि खूँखार मुझ से दूर हो जाएँ।

20 वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे मुखालिफ़ झूट बोलते हैं।

21 ऐ रब, क्या मैं उन से नफ़रत न करूँ जो तुझ से नफ़रत करते हैं? क्या मैं उन से घिन न खाऊँ जो तेरे खिलाफ़ उठे हैं?

22 यक़ीनन मैं उन से सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।

23 ऐ अल्लाह, मेरा मुआइना करके मेरे दिल का हाल जान ले, मुझे जाँच कर मेरे बेचैन खयालात को जान ले।

24 मैं नुक्सानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी राह पर मेरी क्रियादत्त कर!

दुश्मन से रिहाई की दुआ

140 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से मट्फूज़ रख।

2 दिल में वह बुरे मन्सूबे बांधते, रोज़ाना जंग छेड़ते हैं।

3 उन की ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़ है, और उन के होंटों में साँप का ज़हर है। (सिलाह)

4 ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से मट्फूज़ रख, ज़ालिम से मुझे बचाए रख, उन से जो मेरे पाँओं को ठोकर खिलाने के मन्सूबे बांध रहे हैं।

5 मगरूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं, उन्हीं ने जाल बिछा कर रास्ते के किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)

6 मैं रब से कहता हूँ, "तू ही मेरा खुदा है, मेरी इत्तिजाओं की आवाज़ सुन!"

7ए रब क्रादिर-ए-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी नजात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफ़ाज़त करता है।

8ए रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उस का इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)

9उन्होंने ने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफ़त उन के हॉट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उन के अपने सरों पर आए!

10दहकते कोएले उन पर बरसें, और उन्हें आग में, अथाह गढ़ों में फैंका जाए ताकि आइन्दा कभी न उठें।

11तोहमत लगाने वाला मुल्क में क्राइम न रहे, और बुराई ज़ालिम को मार मार कर उस का पीछा करे।

12मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का दिफ़ा करेगा। वही ज़रूरतमन्द का इन्साफ़ करेगा।

13यक्रीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे, और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

हिफ़ाज़त की गुज़ारिश

141

दाऊद का ज़बूर।

ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो मेरी फ़र्याद पर ध्यान दे!

2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की कुर्बानी की तरह क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ शाम की ग़ल्ला की नज़र की तरह मन्ज़ूर हों।

3ए रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के दरवाज़े की निगहबानी कर।

4मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ माइल न होने दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिल कर बुरे काम में मुलव्वस हो जाऊँ और उन के लज़ीज़ खानों में शिक़त करूँ।

5रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तम्बीह करे। मेरा सर इस से इन्कार नहीं

करेगा, क्योंकि यह उस के लिए शिफ़ाबख़्त तेल की मानिन्द होगा। लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के खिलाफ़ दुआ करता हूँ।

6जब वह गिर कर उस चटान के हाथ में आएँगे जो उन का मुन्सिफ़ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान देंगे, और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी प्यारी हैं।

7ए अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की मानिन्द हैं जिस पर किसी ने इतने ज़ोर से हल चलाया है कि ढेले उड़ कर इधर उधर बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह तक बिखर गई हैं।

8ए रब क्रादिर-ए-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहती हैं, और मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। मुझे मौत के हवाले न कर।

9मुझे उस जाल से महफूज़ रख जो उन्होंने ने मुझे पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों से बचाए रख।

10बेदीन मिल कर उन के अपने जालों में उलझ जाएँ जबकि मैं बच कर आगे निकलूँ।

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

142

हिक्मत का गीत। दुआ जो दाऊद ने की जब वह ग़ार में था।

मैं मदद के लिए चीखता चिल्लाता रब को पुकारता हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से इल्लिजा करता हूँ।

2मैं अपनी आह-ओ-ज़ारी उस के सामने उंडेल देता, अपनी तमाम मुसीबत उस के हुज़ूर पेश करता हूँ।

3जब मेरी रूह मेरे अन्दर निढाल हो जाती है तो तू ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता हूँ उस में लोगों ने फंदा छुपाया है।

4मैं दहनी तरफ़ नज़र डाल कर देखता हूँ, लेकिन कोई नहीं है जो मेरा खयाल करे। मैं बच नहीं सकता, कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िक्र करे।

५ए रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं कहता हूँ, “तू मेरी पनाहगाह और ज़िन्दों के मुल्क में मेरा मौरूसी हिस्सा है।”

६मेरी चीखों पर ध्यान दे, क्योंकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ। मुझे उन से छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे हैं, क्योंकि मैं उन पर क़ाबू नहीं पा सकता।

७मेरी जान को क़ैदखाने से निकाल ला ताकि तेरे नाम की सताइश क़रूँ। जब तू मेरे साथ भलाई करेगा तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

बचाओ और क्रियादत्त की गुज़ारिश (तीबा का सातवाँ ज़बूर)

143

दाऊद का ज़बूर।

१ए रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इत्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और रास्ती की खातिर मेरी सुन!

२अपने ख़ादिम को अपनी अदालत में न ला, क्योंकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।

३क्योंकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके उसे खाक में कुचल दिया है। उस ने मुझे उन लोगों की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अर्से से मुर्दा हैं।

४मेरे अन्दर मेरी रूह निढाल है, मेरे अन्दर मेरा दिल दहशत के मारे बेहिस्स-ओ-हरकत हो गया है।

५मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे कामों पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों ने किया उस में मैं महव-ए-ख़याल रहता हूँ।

६मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी जान ख़ुशक ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)

७ए रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो ख़त्म होने वाली है। अपना चेहरा मुझ से

छुपाए न रख, वर्ना मैं गढ़े में उतरने वालों की मानिन्द हो जाऊँगा।

८सुब्ह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर सुना, क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्योंकि मैं तेरा ही आरज़ूमन्द हूँ।

९ए रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्योंकि मैं तुझ में पनाह लेता हूँ।

१०मुझे अपनी मर्ज़ी पूरी करना सिखा, क्योंकि तू मेरा ख़ुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर मेरी राहनुमाई करे।

११ए रब, अपने नाम की खातिर मेरी जान को ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को मुसीबत से बचा।

१२अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर! क्योंकि मैं तेरा ख़ादिम हूँ।

नजात और ख़ुशहाली की दुआ

144

दाऊद का ज़बूर।

१रब मेरी चटान की हम्द हो, जो मेरे हाथों को लड़ने और मेरी उंगलियों को जंग करने की तर्बियत देता है।

२वह मेरी शफ़क़त, मेरा क़िला, मेरा नजातदहिन्दा और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह लेता हूँ, और वही दीगर अक्वाम को मेरे ताबे कर देता है।

३ए रब, इन्सान कौन है कि तू उस का खयाल रखे? आदमज़ाद कौन है कि तू उस का लिहाज़ करे?

४इन्सान दम भर का ही है, उस के दिन तेज़ी से गुज़रने वाले साय की मानिन्द हैं।

५ए रब, अपने आसमान को झुका कर उतर आ! पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।

६बिजली भेज कर उन्हें मुन्तशिर कर, अपने तीर चला कर उन्हें दर्हम-बर्हम कर।

7 अपना हाथ बुलन्दियों से नीचे बढ़ा और मुझे छुड़ा कर पानी की गहराइयों और परदेसियों के हाथ से बचा,

8 जिन का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।

9 ऐ अल्लाह, मैं तेरी तम्जीद में नया गीत गाऊँगा, दस तारों का सितार बजा कर तेरी मदहसराई करूँगा।

10 क्योंकि तू बादशाहों को नजात देता और अपने खादिम दाऊद को मोहलक तलवार से बचाता है।

11 मुझे छुड़ा कर परदेसियों के हाथ से बचा, जिन का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।

12 हमारे बेटे जवानी में फलने फूलने वाले पौदों की मानिन्द हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के लिए तराशे हुए कोने के सतून की मानिन्द हों।

13 हमारे गोदाम भरे रहें और हर क्रिस्म की खुराक मुहय्या करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हज़ारों बल्कि बेशुमार बच्चे जन्म दें।

14 हमारे गाय-बैल मोटे-ताज़े हों, और न कोई ज़ाए हो जाए, न किसी को नुक़सान पहुँचे। हमारे चौकों में आह-ओ-ज़ारी की आवाज़ सुनाई न दे।

15 मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब कुछ सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम जिस का ख़ुदा रब है!

अल्लाह की अबदी शफ़क़त

145

दाऊद का ज़बूर। हम्द-ओ-सना का गीत।

ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करूँगा। ऐ बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की सताइश करूँगा।

2 रोज़ाना मैं तेरी तम्जीद करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की हम्द करूँगा।

3 रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लाइक़ है। उस की अज़मत इन्सान की समझ से बाहर है।

4 एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ सराहे जो तू ने किया है, वह दूसरों को तेरे ज़बरदस्त काम सुनाएँ।

5 मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और तेरे मोजिज़ों में महव-ए-खयाल रहूँगा।

6 लोग तेरे हैबतनाक कामों की कुदरत पेश करें, और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।

7 वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें और खुशी से तेरी रास्ती की मदहसराई करें।

8 रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है।

9 रब सब के साथ भलाई करता है, वह अपनी तमाम मख़्लूक़ात पर रहम करता है।

10 ऐ रब, तेरी तमाम मख़्लूक़ात तेरा शुक्र करें। तेरे ईमानदार तेरी तम्जीद करें।

11 वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र करें और तेरी कुदरत बयान करें

12 ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और तेरी बादशाही की जलाली शान-ओ-शौक़त से आगाह हो जाएँ।

13 तेरी बादशाही की कोई इन्तिहा नहीं, और तेरी सल्तनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

14 रब तमाम गिरने वालों का सहारा है। जो भी दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।

15 सब की आँखें तेरे इन्तिज़ार में रहती हैं, और तू हर एक को वक़्त पर उस का खाना मुहय्या करता है।

16 तू अपनी मुट्ठी खोल कर हर जानदार की ख़्वाहिश पूरी करता है।

17 रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने तमाम कामों में वफ़ादार है।

¹⁸रब उन सब के करीब है जो उसे पुकारते हैं, जो दियानतदारी से उसे पुकारते हैं।

¹⁹जो उस का ख़ौफ़ मानें उन की आर्जू वह पूरी करता है। वह उन की फ़र्यादें सुन कर उन की मदद करता है।

²⁰रब उन सब को महफूज़ रखता है जो उसे प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक करता है।

²¹मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम मख़लूकात हमेशा तक उस के मुक़द्दस नाम की सताइश करें।

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

146 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब की हम्द कर।

²जीते जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र भर अपने ख़ुदा की मदहसराई करूँगा।

³शुरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर जो नजात नहीं दे सकता।

⁴जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा खाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उस के मन्सूबे अधूरे रह जाते हैं।

⁵मुबारक है वह जिस का सहारा याकूब का ख़ुदा है, जो रब अपने ख़ुदा के इन्तिज़ार में रहता है।

⁶क्योंकि उस ने आसमान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है बनाया है। वह हमेशा तक वफ़ादार है।

⁷वह मज़लूमों का इन्साफ़ करता और भूकों को रोटी खिलाता है। रब क़ैदियों को आज़ाद करता है।

⁸रब अंधों की आँखें बहाल करता और खाक में दबे हुआँ को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़ को प्यार करता है।

⁹रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों और बेवाओं को क़ाइम रखता है।

लेकिन वह बेदीनों की राह को टेढ़ा बना कर कामयाब होने नहीं देता।

¹⁰रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिय्यून, तेरा ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब की हम्द हो।

काइनात और तारीख़ में

रब का बन्द-ओ-बस्त

147 रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा की मदहसराई करना कितना भला है, उस की तम्जीद करना कितना प्यारा और ख़ूबसूरत है।

²रब यरूशलम को तामीर करता और इस्राईल के मुन्तशिर जिलावतनों को जमा करता है।

³वह दिलशिकस्तों को शिफ़ा दे कर उन के ज़ख़मों पर मर्हम-पट्टी लगाता है।

⁴वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक का नाम ले कर उन्हें बुलाता है।

⁵हमारा रब अज़ीम है, और उस की कुदरत ज़बरदस्त है। उस की हिक्मत की कोई इन्तिहा नहीं।

⁶रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन बदकारों को खाक में मिला देता है।

⁷रब की तम्जीद में शुक्र का गीत गाओ, हमारे ख़ुदा की खुशी में सरोद बजाओ।

⁸क्योंकि वह आसमान पर बादल छाने देता, ज़मीन को बारिश मुहय्या करता और पहाड़ों पर घास फूटने देता है।

⁹वह मवेशी को चारा और कव्वे के बच्चों को वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचा कर माँगते हैं।

¹⁰न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अन्दोज़ होता, न आदमी की मज़बूत टाँगों से खुश होता है।

11रब उन ही से खुश होता है जो उस का खौफ़ मानते और उस की शपक़त के इन्तिज़ार में रहते हैं।

12ऐ यरूशलम, रब की मदहसराई कर! ऐ सिष्यून, अपने खुदा की हम्द कर!

13क्यूँकि उस ने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत करके तेरे दरमियान बसने वाली औलाद को बरकत दी है।

14वही तेरे इलाके में अमन और सुकून क्राइम रखता और तुझे बेहतरीन गन्दुम से सेर करता है।

15वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो उस का कलाम तेज़ी से पहुँचता है।

16वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहय्या करता और पाला राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।

17वह अपने ओले कंकरोँ की तरह ज़मीन पर फैंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दी बर्दाश्त कर सकता है?

18वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता है तो बर्फ़ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने देता है तो पानी टपकने लगता है।

19उस ने याक़ूब को अपना कलाम सुनाया, इस्राईल पर अपने अहकाम और आईन ज़ाहिर किए हैं।

20ऐसा सुलुक उस ने किसी और क़ौम से नहीं किया। दीगर अक्वाम तो तेरे अहकाम नहीं जानतीं। रब की हम्द हो!

आसमान-ओ-ज़मीन पर अल्लाह की तम्जीद

148 रब की हम्द हो! आसमान से रब की सताइश करो, बुलन्दियों पर उस की तम्जीद करो!

2ऐ उस के तमाम फ़रिश्तो, उस की हम्द करो! ऐ उस के तमाम लश्करो, उस की तारीफ़ करो!

3ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!

4ऐ बुलन्दतरीन आसमानो और आसमान के ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

5वह रब के नाम की सताइश करें, क्यूँकि उस ने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।

6उस ने नाक्राबिल-ए-मन्सूख फ़रमान जारी करके उन्हें हमेशा के लिए क्राइम किया है।

7ऐ समुन्दर के अज़दहाओ और तमाम गहराइयो, ज़मीन से रब की तम्जीद करो!

8ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुन्द और उस के हुक्म पर चलने वाली आँधियो, उस की हम्द करो!

9ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरखतो और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!

10ऐ जंगली जानवरो, मवीशियो, रेंगने वाली मख्लूक़ात और परिन्दो, उस की हम्द करो!

11ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो, सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस की तम्जीद करो!

12ऐ नौजवानो और कुंवारीयो, बुजुर्गो और बच्चो, उस की हम्द करो!

¹³सब रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत आसमान-ओ-ज़मीन से आला है।

¹⁴उस ने अपनी क्रौम को सरफ़राज़ करके^a अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है, यानी इस्राईलियों की शोहरत, उस क्रौम की जो उस के करीब रहती है। रब की हम्द हो!

सिय्यून रब की हम्द करे!

149 रब की हम्द हो! रब की तम्जीद में नया गीत गाओ, ईमानदारों की जमाअत में उस की तारीफ़ करो।

²इस्स्राईल अपने खालिक़ से खुश हो, सिय्यून के फ़र्ज़न्द अपने बादशाह की खुशी मनाएँ।

³वह नाच कर उस के नाम की सताइश करें, दफ़ और सरोद से उस की मदहसराई करें।

⁴क्योंकि रब अपनी क्रौम से खुश है। वह मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शान-ओ-शौकत से आरास्ता करता है।

⁵ईमानदार इस शान-ओ-शौकत के बाइस खुशी मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे लगाएँ।

⁶उन के मुँह में अल्लाह की हम्द-ओ-सना और उन के हाथों में दोधारी तलवार हो

⁷ताकि दीगर अक्वाम से इन्तिक़ाम लें और उम्मतों को सज़ा दें।

⁸वह उन के बादशाहों को ज़न्जीरों में और उन के शुरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे

⁹ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिस का फ़ैसला क़लमबन्द हो चुका है। यह इज़ज़त अल्लाह के तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

रब की हम्द-ओ-सना

150 रब की हम्द हो! अल्लाह के मक्दिस में उस की सताइश करो। उस की कुदरत के बने हुए आसमानी गुम्बद में उस की तम्जीद करो।

²उस के अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द करो। उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस की सताइश करो।

³नरसिंगा फूँक कर उस की हम्द करो, सितार और सरोद बजा कर उस की तम्जीद करो।

⁴दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो। तारदार साज़ और बाँसरी बजा कर उस की सताइश करो।

⁵झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द करो, गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।

⁶जिस में भी साँस है वह रब की सताइश करे। रब की हम्द हो!!

^aलफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी क्रौम का सींग बुलन्द करके।

अम्साल

किताब का मद्रसद

1 ज़ैल में इस्राईल के बादशाह सुलैमान बिन दाऊद की अम्साल क़लमबन्द हैं।
2इन से तू हिक्मत और तर्बियत हासिल करेगा, बसीरत के अल्फ़ाज़ समझने के क़ाबिल हो जाएगा, 3और दानाई दिलाने वाली तर्बियत, रास्ती, इन्साफ़ और दियानतदारी अपनाएगा। 4यह अम्साल सादालौह को होशयारी और नौजवान को इल्म और तमीज़ सिखाती हैं। 5जो दाना है वह सुन कर अपने इल्म में इज़ाफ़ा करे, जो समझदार है वह राहनुमाई करने का फ़न सीख ले। 6तब वह अम्साल और तम्सीलें, दानिशमन्दों की बातें और उन के मुअम्मे समझ लेगा।

7हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। सिर्फ़ अहमक़ हिक्मत और तर्बियत को हक़ीर जानते हैं।

ग़लत साथियों से ख़बरदार

8मेरे बेटे, अपने बाप की तर्बियत के ताबे रह, और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न कर। 9क्योंकि यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा और तेरे गले में गुलूबन्द हैं। 10मेरे बेटे, जब ख़ताकार तुझे फ़ुसलाने की कोशिश करें तो उन के पीछे न हो ले। 11उन की बात न मान जब वह कहें, “आ, हमारे साथ चल! हम ताक में बैठ कर किसी को क़ल्ल करें,

बिलावजह किसी बेकुसूर की घात लगाएँ। 12हम उन्हें पाताल की तरह ज़िन्दा निगल लें, उन्हें मौत के गढ़े में उतरने वालों की तरह एक दम हड़प कर लें। 13हम हर क्रिस्म की क्रीमती चीज़ हासिल करेंगे, अपने घरों को लूट के माल से भर लेंगे। 14आ, जुरअत करके हम में शरीक हो जा, हम लूट का तमाम माल बराबर तक्सीम करेंगे।”

15मेरे बेटे, उन के साथ मत जाना, अपना पाँओ उन की राहों पर रखने से रोक लेना। 16क्योंकि उन के पाँओ ग़लत काम के पीछे दौड़ते, खून बहाने के लिए भागते हैं। 17जब चिड़ीमार अपना जाल लगा कर उस पर परिन्दों को फाँसने के लिए रोटी के टुकड़े बिखेर देता है तो परिन्दों की नज़र में यह बेमक़सद है। 18यह लोग भी एक दिन फंस जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते हैं तो अपने आप को तबाह करते हैं, जब दूसरों की घात लगाते हैं तो अपनी ही जान को नुक़सान पहुँचाते हैं। 19यही उन सब का अन्जाम है जो नारवा नफ़ा के पीछे भागते हैं। नाजाइज़ नफ़ा अपने मालिक की जान छीन लेता है।

हिक्मत की पुकार

20हिक्मत गली में ज़ोर से आवाज़ देती, चौकों में बुलन्द आवाज़ से पुकारती है। 21जहाँ सब से ज़यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला

चिल्ला कर बोलती, शहर के दरवाज़ों पर ही अपनी तक्ररीर करती है, ²²“ऐ सादालौह लोगो, तुम कब तक अपनी सादालौही से मुहब्बत रखोगे? मज़ाक़ उड़ाने वाले कब तक अपने मज़ाक़ से लुत्फ़ उठाएँगे, अहमक़ कब तक इल्म से नफ़रत करेंगे? ²³आओ, मेरी सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं अपनी रूह का चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें अपनी बातें सुनाऊँगी।

²⁴लेकिन जब मैं ने आवाज़ दी तो तुम ने इन्कार किया, जब मैं ने अपना हाथ तुम्हारी तरफ़ बढ़ाया तो किसी ने भी तवज्जुह न दी। ²⁵तुम ने मेरे किसी मश्वरे की परवा न की, मेरी मलामत तुम्हारे नज़दीक़ क़ाबिल-ए-क़बूल नहीं थी। ²⁶इस लिए जब तुम पर आफ़त आएगी तो मैं क़हक़हा लगाऊँगी, जब तुम हौलनाक़ मुसीबत में फंस जाओगे तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाऊँगी। ²⁷उस वक़्त तुम पर दहशतनाक़ आँधी टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान की तरह तुम पर आएगी, और तुम मुसीबत और तकलीफ़ के सैलाब में डूब जाओगे। ²⁸तब वह मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उन की नहीं सुनूँगी, वह मुझे ढूँडेंगे पर पाएँगे नहीं।

²⁹क्यूँकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का ख़ौफ़ मानने के लिए तय्यार नहीं थे। ³⁰मेरा मश्वरा उन्हें क़बूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर सरज़निश को हक़ीर जानते थे। ³¹चुनाँचे अब वह अपने चाल-चलन का फल खाएँ, अपने मन्सूबों की फ़सल खा खा कर सेर हो जाएँ।

³²क्यूँकि सहीह राह से दूर होने का अमल सादालौह को मार डालता है, और अहमक़ों की बेपरवाई उन्हें तबाह करती है। ³³लेकिन जो मेरी सुने वह सुकून से बसेगा, हौलनाक़ मुसीबत उसे परेशान नहीं करेगी।”

हिक्मत की अहमियत

2 मेरे बेटे, मेरी बात क़बूल करके मेरे अहक़ाम अपने दिल में महफूज़ रख। ²अपना कान हिक्मत पर धर, अपना दिल समझ की तरफ़ माइल कर। ³बसीरत के लिए आवाज़ दे, चिल्ला कर समझ माँग। ⁴उसे यूँ तलाश कर गोया चाँदी हो, उस का यूँ खोज लगा गोया पोशीदा खज़ाना हो। ⁵अगर तू ऐसा करे तो तुझे रब के ख़ौफ़ की समझ आएगी और अल्लाह का इफ़ान हासिल होगा। ⁶क्यूँकि रब ही हिक्मत अता करता, उसी के मुँह से इफ़ान और समझ निकलती है। ⁷वह सीधी राह पर चलने वालों को कामयाबी फ़राहम करता और बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की ढाल बना रहता है। ⁸क्यूँकि वह इन्साफ़ पसन्दों की राहों की पहरादारी करता है। जहाँ भी उस के ईमानदार चलते हैं वहाँ वह उन की हिफ़ाज़त करता है।

⁹तब तुझे रास्ती, इन्साफ़, दियानतदारी और हर अच्छी राह की समझ आएगी। ¹⁰क्यूँकि तेरे दिल में हिक्मत दाखिल हो जाएगी, और इल्म-ओ-इफ़ान तेरी जान को प्यारा हो जाएगा। ¹¹तमीज़ तेरी हिफ़ाज़त और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। ¹²हिक्मत तुझे ग़लत राह और कजरौी बातें करने वाले से बचाए रखेगी। ¹³ऐसे लोग सीधी राह को छोड़ देते हैं ताकि तारीक़ रास्तों पर चलें, ¹⁴वह बुरी हरकतें करने से खुश हो जाते हैं, ग़लत काम की कजरवी देख कर ज़श्म मनाते हैं। ¹⁵उन की राहें टेढ़ी हैं, और वह जहाँ भी चलें आवारा फिरते हैं।

¹⁶हिक्मत तुझे नाजाइज़ औरत से छुड़ाती है, उस अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी बातें करती, ¹⁷जो अपने जीवनसाथी को तर्क करके अपने खुदा का अहद भूल जाती है। ¹⁸क्यूँकि उस के घर में दाखिल होने का अन्जाम मौत, उस की राहों की मन्ज़िल-ए-मक़सूद पाताल है। ¹⁹जो भी उस के पास जाए

वह वापस नहीं आएगा, वह ज़िन्दगीबख़्श राहों पर दुबारा नहीं पहुँचेगा।

²⁰चुनाँचे अच्छे लोगों की राह पर चल फिर, ध्यान दे कि तेरे क्रदम रास्तबाज़ों के रास्ते पर रहें। ²¹क्योंकि सीधी राह पर चलने वाले मुल्क में आबाद होंगे, आखिरकार बेइल्ज़ाम ही उस में बाक़ी रहेंगे। ²²लेकिन बेदीन मुल्क से मिट जाएंगे, और बेवफ़ाओं को उखाड़ कर मुल्क से खारिज कर दिया जाएगा।

अल्लाह के ख़ौफ़ और हिक्मत की बरकत

3 मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना। मेरे अहक़ाम तेरे दिल में महफूज़ रहें। ²क्योंकि इन ही से तेरी ज़िन्दगी के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा और तेरी खुशहाली बढ़ेगी। ³शफ़क़त और वफ़ा तेरा दामन न छोड़ें। उन्हें अपने गले से बांधना, अपने दिल की तख़्ती पर कन्दा करना। ⁴तब तुझे अल्लाह और इन्सान के सामने मेहरबानी और क़बूलियत हासिल होगी।

⁵पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और अपनी अक़ल पर तकिया न कर। ⁶जहाँ भी तू चले सिर्फ़ उसी को जान ले, फिर वह खुद तेरी राहों को हमवार करेगा। ⁷अपने आप को दानिशमन्द मत समझना बल्कि रब का ख़ौफ़ मान कर बुराई से दूर रह। ⁸इस से तेरा बदन सेहत पाएगा और तेरी हड्डियाँ तर-ओ-ताज़ा हो जाएँगी। ⁹अपनी मिलकियत और अपनी तमाम पैदावार के पहले फल से रब का एहतिराम कर, ¹⁰फिर तेरे गोदाम अनाज से भर जाएंगे और तेरे बर्तन मै से छलक उठेंगे।

¹¹मेरे बेटे, रब की तर्बियत को रद्द न कर, जब वह तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। ¹²क्योंकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता है, जिस तरह बाप उस बेटे को तम्बीह करता है जो उसे पसन्द है।

हकीक़ी दौलत

¹³मुबारक है वह जो हिक्मत पाता है, जिसे समझ हासिल होती है। ¹⁴क्योंकि हिक्मत चाँदी से कहीं ज़्यादा सूदमन्द है, और उस से सोने से कहीं ज़्यादा कीमती चीज़ें हासिल होती हैं। ¹⁵हिक्मत मोतियों से ज़्यादा नफ़ीस है, तेरे तमाम ख़ज़ाने उस का मुक़ाबला नहीं कर सकते। ¹⁶उस के दहने हाथ में उम्र की दराज़ी और बाएँ हाथ में दौलत और इज़ज़त है। ¹⁷उस की राहें खुशगवार, उस के तमाम रास्ते पुरअमन हैं। ¹⁸जो उस का दामन पकड़ ले उस के लिए वह ज़िन्दगी का दरख़्त है। मुबारक है वह जो उस से लिपटा रहे। ¹⁹रब ने हिक्मत के वसीले से ही ज़मीन की बुन्याद रखी, समझ के ज़रीए ही आसमान को मज़बूती से लगाया। ²⁰उस के इफ़्रान से ही गहराइयों का पानी फूट निकला और आसमान से शबनम टपक कर ज़मीन पर पड़ती है।

²¹मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास महफूज़ रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न होने दे। ²²उन से तेरी जान तर-ओ-ताज़ा और तेरा गला आरास्ता रहेगा। ²³तब तू चलते वक़्त महफूज़ रहेगा, और तेरा पाँओ ठोकर नहीं खाएगा। ²⁴तू पाँओ फैला कर सो सकेगा, कोई सदमा तुझे नहीं पहुँचेगा बल्कि तू लेट कर गहरी नींद सोएगा। ²⁵नागहों आफ़त से मत डरना, न उस तबाही से जो बेदीन पर ग़ालिब आती है, ²⁶क्योंकि रब पर तेरा एतमाद है, वही तेरे पाँओ को फंस जाने से महफूज़ रखेगा।

दूसरों की मदद करने की नसीहत

²⁷अगर कोई ज़रूरतमन्द हो और तू उस की मदद कर सके तो उस के साथ भलाई करने से इन्कार न कर। ²⁸अगर तू आज कुछ दे सके तो अपने पड़ोसी से मत कहना, "कल आना तो मैं आप को कुछ दे दूँगा।" ²⁹जो पड़ोसी बेफ़िक़र तेरे साथ रहता है उस के खिलाफ़ बुरे मन्सूबे मत बांधना। ³⁰जिस ने तुझे नुक़सान

नहीं पहुँचाया अदालत में उस पर बेबुन्याद इल्ज़ाम न लगाना।

³¹न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई राह इख्तियार कर। ³²क्यूँकि बुरी राह पर चलने वाले से रब घिन खाता है जबकि सीधी राह पर चलने वालों को वह अपने राज़ों से आगाह करता है। ³³बेदीन के घर पर रब की लानत आती जबकि रास्तबाज़ के घर को वह बरकत देता है। ³⁴मज़ाक़ उड़ाने वालों का वह मज़ाक़ उड़ाता, लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है। ³⁵दानिशमन्द मीरास में इज़ज़त पाएँगे जबकि अहमक़ के नसीब में शर्मिन्दगी होगी।

बाप की नसीहत

4 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान दो ताकि तुम सीख कर समझ हासिल कर सको। ²मैं तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ, इस लिए मेरी हिदायत को तर्क न करो। ³मैं अभी अपने बाप के घर में नाज़ुक लड़का था, अपनी माँ का वाहिद बच्चा, ⁴तो मेरे बाप ने मुझे तालीम दे कर कहा,

“पूरे दिल से मेरे अल्फ़ाज़ अपना ले और हर वक़्त मेरे अहक़ाम पर अमल कर तो तू जीता रहेगा। ⁵हिक्मत हासिल कर, समझ अपना ले! यह चीज़ें मत भूलना, मेरे मुँह के अल्फ़ाज़ से दूर न होना। ⁶हिक्मत तर्क न कर तो वह तुझे मट्फ़ूज़ रखेगी। उस से मुहब्बत रख तो वह तेरी देख-भाल करेगी। ⁷हिक्मत इस से शुरू होती है कि तू हिक्मत अपना ले। समझ हासिल करने के लिए बाक़ी तमाम मिलकियत कुर्बान करने के लिए तय्यार हो। ⁸उसे अज़ीज़ रख तो वह तुझे सरफ़राज़ करेगी, उसे गले लगा तो वह तुझे इज़ज़त बख़्शेगी। ⁹तब वह तेरे सर को ख़ूबसूरत सेहरे से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज से नवाज़ेगी।”

¹⁰मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले तो तेरी उम्र दराज़ होगी। ¹¹मैं तुझे हिक्मत

की राह पर चलने की हिदायत देता, तुझे सीधी राहों पर फिरने देता हूँ। ¹²जब तू चलेगा तो तेरे क्रदमों को किसी भी चीज़ से रोका नहीं जाएगा, और दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं खाएगा। ¹³तर्बियत का दामन थामे रह! उसे न छोड़ बल्कि मट्फ़ूज़ रख, क्यूँकि वह तेरी ज़िन्दगी है।

¹⁴बेदीनों की राह पर क्रदम न रख, शरीरों के रास्ते पर मत जा। ¹⁵उस से गुरेज़ कर, उस पर सफ़र न कर बल्कि उस से कतरा कर आगे निकल जा। ¹⁶क्यूँकि जब तक उन से बुरा काम सरज़द न हो जाए वह सो ही नहीं सकते, जब तक उन्होंने न किसी को ठोकर खिला कर खाक में मिला न दिया हो वह नींद से महरूम रहते हैं। ¹⁷वह बेदीनी की रोटी खाते और जुल्म की मै पीते हैं। ¹⁸लेकिन रास्तबाज़ की राह तुलु-ए-सुब्ह की पहली रौशनी की मानिन्द है जो दिन के उरूज तक बढ़ती रहती है। ¹⁹इस के मुक़ाबले में बेदीन का रास्ता गहरी तारीकी की मानिन्द है, उन्हें पता ही नहीं चलता कि किस चीज़ से ठोकर खा कर गिर गए हैं।

²⁰मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे अल्फ़ाज़ पर कान धर। ²¹उन्हें अपनी नज़र से ओझल न होने दे बल्कि अपने दिल में मट्फ़ूज़ रख। ²²क्यूँकि जो यह बातें अपनाएँ वह ज़िन्दगी और पूरे जिस्म के लिए शिफ़ा पाते हैं। ²³तमाम चीज़ों से पहले अपने दिल की हिफ़ाज़त कर, क्यूँकि यही ज़िन्दगी का सरचश्मा है। ²⁴अपने मुँह से झूट और अपने होंटों से कजगोई दूर कर। ²⁵ध्यान दे कि तेरी आँखें सीधा आगे की तरफ़ देखें, कि तेरी नज़र उस रास्ते पर लगी रहे जो सीधा है। ²⁶अपने पाँओ का रास्ता चलने के क़ाबिल बना दे, ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं। ²⁷न दाईं, न बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँओ को ग़लत क्रदम उठाने से बाज़ रख।

ज़िनाकारी से खबरदार

5 मेरे बेटे, मेरी हिकमत पर ध्यान दे, मेरी समझ की बातों पर कान धर। ²फिर तू तमीज़ का दामन थामे रहेगा, और तेरे हॉट इल्म-ओ-इफ़ान महफूज़ रखेंगे। ³क्योंकि ज़िनाकार औरत के हॉटों से शहद टपकता है, उस की बातें तेल की तरह चिकनी-चुपड़ी होती हैं। ⁴लेकिन अन्जाम में वह ज़हर जैसी कड़वी और दोधारी तलवार जैसी तेज़ साबित होती है। ⁵उस के पाँओ मौत की तरफ़ उतरते, उस के क्रदम पाताल की जानिब बढ़ते जाते हैं। ⁶उस के रास्ते कभी इधर कभी इधर फिरते हैं ताकि तू ज़िन्दगी की राह पर तवज्जुह न दे और उस की आवारगी को जान न ले।

⁷चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की बातों से दूर न हो जाओ। ⁸अपने रास्ते उस से दूर रख, उस के घर के दरवाज़े के करीब भी न जा। ⁹ऐसा न हो कि तू अपनी ताक़त किसी और के लिए सर्फ़ करे और अपने साल ज़ालिम के लिए ज़ाए करे। ¹⁰ऐसा न हो कि परदेसी तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि जो कुछ तू ने मेहनत-मशक्क़त से हासिल किया वह किसी और के घर में आए। ¹¹तब आखिरकार तेरा बदन और गोशत घुल जाएंगे, और तू आहें भर भर कर ¹²कहेगा, “हाय, मैं ने क्यों तर्बियत से नफ़रत की, मेरे दिल ने क्यों सरज़निश को हक़ीर जाना? ¹³हिदायत करने वालों की मैं ने न सुनी, अपने उस्तादों की बातों पर कान न धरा। ¹⁴जमाअत के दरमियान ही रहते हुए मुझ पर ऐसी आफ़त आई कि मैं तबाही के दहाने तक पहुँच गया हूँ।”

¹⁵अपने ही हौज़ का पानी और अपने ही कुएँ से फूटने वाला पानी पी ले। ¹⁶क्या मुनासिब है कि तेरे चश्मे गलियों में और तेरी नदियाँ चौकों में बह निकलें? ¹⁷जो पानी तेरा अपना है वह तुझ तक महदूद रहे, अजनबी उस में शरीक न हो जाए। ¹⁸तेरा चश्मा मुबारक हो। हाँ, अपनी बीवी से खुश रह। ¹⁹वही तेरी

मनमोहन हिरनी और दिलरुबा ग़ज़ाल¹ है। उसी का प्यार तुझे तर-ओ-ताज़ा करे, उसी की मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।

²⁰मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यों मस्त हो जाए, किसी दूसरे की बीवी से क्यों लिपट जाए? ²¹खयाल रख, इन्सान की राहें रब को साफ़ दिखाई देती हैं, जहाँ भी वह चले उस पर वह तवज्जुह देता है। ²²बेदीन की अपनी ही हरकतें उसे फंसा देती हैं, वह अपने ही गुनाह के रस्सों में जकड़ा रहता है। ²³वह तर्बियत की कमी के सबब से हलाक हो जाएगा, अपनी बड़ी हमाक़त के बाइस डगमगाते हुए अपने अन्जाम को पहुँचेगा।

ज़मानत देने, काहिली और झूट से खबरदार

6 मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का ज़ामिन बना है? क्या तू ने हाथ मिला कर वादा किया है कि मैं किसी दूसरे का ज़िम्मादार ठहरूँगा? ²क्या तू अपने वादे से बंधा हुआ, अपने मुँह के अल्फ़ाज़ से फंसा हुआ है? ³ऐसा करने से तू अपने पड़ोसी के हाथ में आ गया है, इस लिए अपनी जान को छुड़ाने के लिए उस के सामने औंधे मुँह हो कर उसे अपनी मिन्नत-समाजत से तंग कर। ⁴अपनी आँखों को सोने न दे, अपने पपोटों को ऊँघने न दे जब तक तू इस ज़िम्मादारी से फ़ारिग न हो जाए। ⁵जिस तरह ग़ज़ाल शिकारी के हाथ से और परिन्दा चिड़ीमार के हाथ से छूट जाता है उसी तरह सिरतोड़ कोशिश कर ताकि तेरी जान छूट जाए।

⁶ऐ काहिल, चियूँटी के पास जा कर उस की राहों पर ग़ौर कर! उस के नमूने से हिकमत सीख ले। ⁷उस पर न सरदार, न अप्सर या हुक्मरान मुकर्रर है, ⁸तो भी वह गर्मियों में सर्दियों के लिए खाने का ज़ख़ीरा कर रखती, फ़सल के दिनों में ख़ूब ख़ुराक इकट्ठी करती है। ⁹ऐ काहिल, तू मज़ीद कब तक सोया रहेगा,

¹लफ़्ज़ी तर्जुमा : पहाड़ी बकरी।

कब जाग उठेगा? ¹⁰तू कहता है, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि आराम कर सकूँ।” ¹¹लेकिन खबरदार, जल्द ही गुर्बत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह तुझ पर टूट पड़ेगी।

¹²बदमआश और कमीना किस तरह पहचाना जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता है, ¹³अपनी आँखों, पाँओ और उंगलियों से इशारा करके तुझे फ़रेब के जाल में फंसाने की कोशिश करता है। ¹⁴उस के दिल में कजी है, और वह हर वक़्त बुरे मन्सूबे बांधने में लगा रहता है। जहाँ भी जाए वहाँ झगड़े छिड़ जाते हैं। ¹⁵लेकिन ऐसे शख्स पर अचानक ही आफ़त आएगी। एक ही लम्हे में वह पाश पाश हो जाएगा। तब उस का इलाज नामुमकिन होगा।

¹⁶रब छः चीज़ों से नफ़रत बल्कि सात चीज़ों से घिन खाता है,

¹⁷वह आँखें जो गुरूर से देखती हैं, वह ज़बान जो झूट बोलती है, वह हाथ जो बेगुनाहों को क़त्ल करते हैं, ¹⁸वह दिल जो बुरे मन्सूबे बांधता है, वह पाँओ जो दूसरों को नुक़सान पहुँचाने के लिए भागते हैं, ¹⁹वह गवाह जो अदालत में झूट बोलता और वह जो भाइयों में झगड़ा पैदा करता है।

ज़िना करने से खबरदार

²⁰मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा रह, और अपनी माँ की हिदायत नज़रअन्दाज़ न कर। ²¹उन्हें यूँ अपने दिल के साथ बांधे रख कि कभी दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की तरह अपने गले में डाल ले। ²²चलते वक़्त वह तेरी राहनुमाई करें, आराम करते वक़्त तेरी पहरादारी करें, जागते वक़्त तुझ से हमकलाम हों। ²³क्यूँकि बाप का हुक्म चराग़ और माँ की हिदायत रौशनी है, तर्बियत की डाँट-डपट ज़िन्दगीबख़्श राह है। ²⁴यूँ तू बदकार औरत और दूसरे की ज़िनाकार बीवी की चिकनी-

चुपड़ी बातों से महफूज़ रहेगा। ²⁵दिल में उस के हुस्न का लालच न कर, ऐसा न हो कि वह पलक मार मार कर तुझे पकड़ ले। ²⁶क्यूँकि गो कस्बी आदमी को उस के पैसे से महरूम करती है, लेकिन दूसरे की ज़िनाकार बीवी उस की क्रीमती जान का शिकार करती है।

²⁷क्या इन्सान अपनी झोली में भड़कती आग यूँ उठा कर फिर सकता है कि उस के कपड़े न जलें? ²⁸या क्या कोई दहकते कोएलों पर यूँ फिर सकता है कि उस के पाँओ झुलस न जाएँ? ²⁹इसी तरह जो किसी दूसरे की बीवी से हमबिसतर हो जाए उस का अन्जाम बुरा है, जो भी दूसरे की बीवी को छेड़े उसे सज़ा मिलेगी। ³⁰जो भूक के मारे अपना पेट भरने के लिए चोरी करे उसे लोग हद से ज़्यादा हकीर नहीं जानते, ³¹हालाँकि उसे चोरी किए हुए माल को सात गुना वापस करना है और उस के घर की दौलत जाती रहेगी। ³²लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी के साथ ज़िना करे वह बेअक़ल है। जो अपनी जान को तबाह करना चाहे वही ऐसा करता है। ³³उस की पिटाई और बेइज़्ज़ती की जाएगी, और उस की शर्मिन्दगी कभी नहीं मिटेगी। ³⁴क्यूँकि शौहर ग़ैरत खा कर और तैश में आ कर बेरहमी से बदला लेगा। ³⁵न वह कोई मुआवज़ा क़बूल करेगा, न रिश्तत लेगा, ख्वाह कितनी ज़्यादा क्यूँ न हो।

बेवफ़ा बीवी

7 मेरे बेटे, मेरे अल्फ़ाज़ की पैरवी कर, मेरे अहक़ाम अपने अन्दर महफूज़ रख। ²मेरे अहक़ाम के ताबे रह तो जीता रहेगा। अपनी आँख की पुतली की तरह मेरी हिदायत की हिफ़ाज़त कर। ³उन्हें अपनी उंगली के साथ बांध, अपने दिल की तख़्ती पर कन्दा कर। ⁴हिक्मत से कह, “तू मेरी बहन है,” और समझ से, “तू मेरी क़रीबी रिश्तेदार है।” ⁵यही तुझे ज़िनाकार औरत से महफूज़ रखेगी, दूसरे की उस बीवी से जो

अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से तुझे फुसलाने की कोशिश करती है।

६ एक दिन मैं ने अपने घर की खिड़की^a में से बाहर झाँका 7 तो क्या देखता हूँ कि वहाँ कुछ सादालौह नौजवान खड़े हैं। उनमें से एक बेअक़ल जवान नज़र आया। ८ वह गली में से गुज़र कर ज़िनाकार औरत के कोने की तरफ़ टहलने लगा। चलते चलते वह उस रास्ते पर आ गया जो औरत के घर तक ले जाता है। ९ शाम का धुन्दल्का था, दिन ढलने और रात का अंधेरा छाने लगा था। १० तब एक औरत कस्बी का लिबास पहने हुए चालाकी से उस से मिलने आई। ११ यह औरत इतनी बेलगाम और खुदसर है कि उस के पाँओ उस के घर में नहीं टिकते। १२ कभी वह गली में, कभी चौकों में होती है, हर कोने पर वह ताक में बैठी रहती है।

१३ अब उस ने नौजवान को पकड़ कर उसे बोसा दिया। बेहया नज़र उस पर डाल कर उस ने कहा, १४ “मुझे सलामती की कुर्बानियाँ पेश करनी थीं, और आज ही मैं ने अपनी मन्नतें पूरी कीं। १५ इस लिए मैं निकल कर तुझे से मिलने आई, मैं ने तेरा पता किया और अब तू मुझे मिल गया है। १६ मैं ने अपने बिस्तर पर मिस्र के रंगीन कम्बल बिछाए, १७ उस पर मुर, ऊद और दारचीनी की खुशबू छिड़की है। १८ आओ, हम सुबह तक मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें, हम इश्कबाज़ी से लुत्फ़अन्दोज़ हों! १९ क्योंकि मेरा ख़ावन्द घर में नहीं है, वह लम्बे सफ़र के लिए रवाना हुआ है। २० वह बटवे में पैसे डाल कर चला गया है और पूरे चाँद तक वापस नहीं आएगा।”

२१ ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान को तरा़ीब दे कर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से वरगलाया। २२ नौजवान सीधा उस के पीछे यूँ हो लिया जिस तरह बैल ज़बह होने के लिए जाता या हिरन उछल कर फंदे में फंस जाता

है। २३ क्योंकि एक वक़्त आएगा कि तीर उस का दिल चीर डालेगा। लेकिन फ़िलहाल उस की हालत उस चिड़िया की मानिन्द है जो उड़ कर जाल में आ जाती और खयाल तक नहीं करती कि मेरी जान खतरे में है।

२४ चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की बातों पर ध्यान दो! २५ तेरा दिल भटक कर उस तरफ़ रुख़ न करे जहाँ ज़िनाकार औरत फिरती है, ऐसा न हो कि तू आवारा हो कर उस की राहों में उलझ जाए। २६ क्योंकि उन की तादाद बड़ी है जिन्हें उस ने गिरा कर मौत के घाट उतारा है, उस ने मुतअद्दिद लोगों को मार डाला है। २७ उस का घर पाताल का रास्ता है जो लोगों को मौत की कोठड़ियों तक पहुँचाता है।

हिक्मत की दावत और वादा

8 सुनो! क्या हिक्मत आवाज़ नहीं देती? हाँ, समझ ऊँची आवाज़ से एलान करती है। २ वह बुलन्दियों पर खड़ी है, उस जगह जहाँ तमाम रास्ते एक दूसरे से मिलते हैं। ३ शहर के दरवाज़ों पर जहाँ लोग निकलते और दाखिल होते हैं वहाँ हिक्मत ज़ोरदार आवाज़ से पुकारती है,

४ “ए मर्दो, मैं तुम ही को पुकारती हूँ, तमाम इन्सानों को आवाज़ देती हूँ।

५ ए सादालौहो, होशयारी सीख लो! ए अहमक्रो, समझ अपना लो!

६ सुनो, क्योंकि मैं शराफ़त की बातें करती हूँ, और मेरे होंट सच्चाई पेश करते हैं।

७ मेरा मुँह सच बोलता है, क्योंकि मेरे होंट बेदीनी से घिन खाते हैं।

८ जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है, एक भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।

९ समझदार जानता है कि मेरी बातें सब दुरुस्त हैं, इल्म रखने वाले को मालूम है कि वह सहीह हैं।

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : घर की खिड़की के जंगले।

10 चाँदी की जगह मेरी तर्बियत और खालिस सोने के बजाए इल्म-ओ-इफ्रान अपना लो।

11 क्योंकि हिकमत मोतियों से कहीं बेहतर है, कोई भी खज़ाना उस का मुक्राबला नहीं कर सकता।

12 मैं जो हिकमत हूँ होशयारी के साथ बसती हूँ, और मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।

13 जो रब का खौफ़ मानता है वह बुराई से नफ़रत करता है। मुझे गुरुर, तकब्बुर, ग़लत चाल-चलन और टेढ़ी बातों से नफ़रत है।

14 मेरे पास अच्छा मश्वरा और कामयाबी है। मेरा दूसरा नाम समझ है, और मुझे कुव्वत हासिल है।

15 मेरे वसीले से बादशाह सल्तनत और हुक्मरान रास्त फ़ैसले करते हैं।

16 मेरे ज़रीए रईस और शुरफ़ा बल्कि तमाम आदिल मुन्सिफ़ हुक्मत करते हैं।

17 जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती हूँ, और जो मुझे ढूँढते हैं वह मुझे पा लेते हैं।

18 मेरे पास इज़ज़त-ओ-दौलत, शानदार माल और रास्ती है।

19 मेरा फल सोने बल्कि खालिस सोने से कहीं बेहतर है, मेरी पैदावार खालिस चाँदी पर सबक़त रखती है।

20 मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वहीं जहाँ इन्साफ़ है।

21 जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं मीरास में दौलत मुहय्या करती हूँ। उन के गोदाम भरे रहते हैं।

हिकमत का तख़लीक़ में हिस्सा

22 जब रब तख़लीक़ का सिलसिला अमल में लाया तो पहले उस ने मुझे ही बनाया। क़दीम ज़माने में मैं उस के दीगर कामों से पहले ही वुजूद में आई।

23 मुझे अज़ल से मुक़र्रर किया गया, इब्तिदा ही से जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।

24 न समुन्दर की गहराइयाँ, न कस्रत से फ़ूटने वाले चश्मे थे जब मैं ने जन्म लिया।

25 न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर क़ाइम हुए थे, न पहाड़ियाँ थीं जब मैं पैदा हुई।

26 उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उस के मैदान, और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।

27 जब उस ने आसमान को उस की जगह पर लगाया और समुन्दर की गहराइयों पर ज़मीन का इलाक़ा मुक़र्रर किया तो मैं साथ थी।

28 जब उस ने आसमान पर बादलों और गहराइयों में सरचश्मों का इन्तिज़ाम मज़बूत किया तो मैं साथ थी।

29 जब उस ने समुन्दर की हदें मुक़र्रर कीं और हुक्म दिया कि पानी उन से तजावुज़ न करे, जब उस ने ज़मीन की बुन्यादेँ अपनी अपनी जगह पर रखीं

30 तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उस के साथ थी। रोज़-ब-रोज़ मैं लुत्फ़ का बाइस थी, हर वक़्त उस के हुज़ूर रंगरलियों मनाती रही।

31 मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंगरलियों मनाती और इन्सान से लुत्फ़अन्दोज़ होती रही।

32 चुनौचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, क्योंकि मुबारक हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।

33 मेरी तर्बियत मान कर दानिशमन्द बन जाओ, उसे नज़रअन्दाज़ मत करना।

34 मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़-ब-रोज़ मेरे दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना मेरी चौखट पर हाज़िर रहे।

35 क्योंकि जो मुझे पाए वह ज़िन्दगी और रब की मन्ज़ूरी पाता है।

36 लेकिन जो मुझे पाने से क़ासिर रहे वह अपनी जान पर जुल्म करता है, जो भी मुझ से नफ़रत करे उसे मौत प्यारी है।”

हिक्मत की ज़ियाफ़त

9 हिक्मत ने अपना घर तामीर करके अपने लिए सात सतून तराश लिए हैं।

2अपने जानवरों को ज़बह करने और अपनी मै तय्यार करने के बाद उस ने अपनी मेज़ बिछाई है। 3अब उस ने अपनी नौकरानियों को भेजा है, और खुद भी लोगों को शहर की बुलन्दियों से ज़ियाफ़त करने की दावत देती है,

4“जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।” नासमझ लोगों से वह कहती है, 5“आओ, मेरी रोटी खाओ, वह मै पियो जो मैं ने तय्यार कर रखी है। 6अपनी सादालौह राहों से बाज़ आओ तो जीते रहोगे, समझ की राह पर चल पड़ो।”

7जो लान-तान करने वाले को तालीम दे उस की अपनी रुस्वाई हो जाएगी, और जो बेदीन को डॉट उसे नुक्सान पहुँचेगा। 8लान-तान करने वाले की मलामत न कर वर्ना वह तुझ से नफ़रत करेगा। दानिशमन्द की मलामत कर तो वह तुझ से मुहब्बत करेगा। 9दानिशमन्द को हिदायत दे तो उस की हिक्मत मज़ीद बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे तो वह अपने इल्म में इज़ाफ़ा करेगा।

10रब का ख़ौफ़ मानने से ही हिक्मत शुरू होती है, कुदूस खुदा को जानने से ही समझ हासिल होती है। 11मुझ से ही तेरी उम्र के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा। 12अगर तू दानिशमन्द हो तो खुद इस से फ़ाइदा उठाएगा, अगर लान-तान करने वाला हो तो तुझे ही इस का नुक्सान झेलना पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

13हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है, वह कुछ नहीं जानती। 14उस का घर शहर की बुलन्दी पर वाक़े है। दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठी 15वह गुज़रने वालों को जो सीधी राह पर चलते हैं ऊँची आवाज़ से दावत देती है, 16“जो सादालौह है वह मेरे पास आए।”

जो नासमझ हैं उन से वह कहती है, 17“चोरी का पानी मीठा और पोशीदगी में खाई गई रोटी लज़ीज़ होती है।”

18लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त बीबी के घर में सिर्फ़ मुर्दों की रूहें बसती हैं, कि उस के मेहमान पाताल की गहराइयों में रहते हैं।

सुलैमान की हिक्मत भरी हिदायत

10 ज़ैल में सुलैमान की अम्साल क़लमबन्द हैं।

ज़िन्दगीबख़्श बातें

दानिशमन्द बेटा अपने बाप को खुशी दिलाता जबकि अहमक़ बेटा अपनी माँ को दुख पहुँचाता है।

2खज़ानों का कोई फ़ाइदा नहीं अगर वह बेदीन तरीक़ों से जमा हो गए हों, लेकिन रास्तबाज़ी मौत से बचाए रखती है।

3रब रास्तबाज़ को भूके मरने नहीं देता, लेकिन बेदीनों का लालच रोक देता है।

4ढीले हाथ गुर्बत और मेहनती हाथ दौलत की तरफ़ ले जाते हैं।

5जो गर्मियों में फ़सल जमा करता है वह दानिशमन्द बेटा है जबकि जो फ़सल की कटाई के वक़्त सोया रहता है वह वालिदेन के लिए शर्म का बाइस है।

6रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से आरास्ता रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर जुल्म का पर्दा पड़ा रहता है।

7लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे मुबारक कहते हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़ कर मिट जाएगा।

8जो दिल से दानिशमन्द है वह अहक़ाम क़बूल करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो जाएगा।

9जिस का चाल-चलन बेइज़ाम है वह सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा रास्ता इखतियार करे उसे पकड़ा जाएगा।

10 आँख मारने वाला दुख पहुँचाता है, और बकवासी तबाह हो जाएगा।

11 रास्तबाज़ का मुँह ज़िन्दगी का सरचश्मा है, लेकिन बेदीन के मुँह पर जुल्म का पर्दा पड़ा रहता है।

12 नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि मुहब्बत तमाम खताओं पर पर्दा डाल देती है।

13 समझदार के होंटों पर हिक्मत पाई जाती है, लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैग़ाम समझता है।

14 दानिशमन्द अपना इल्म मस्फूज़ रखते हैं, लेकिन अहमक़ का मुँह जल्द ही तबाही की तरफ़ ले जाता है।

15 अमीर की दौलत क़िलाबन्द शहर है जिस में वह मस्फूज़ है जबकि ग़रीब की गुर्बत उस की तबाही का बाइस है।

16 जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह ज़िन्दगी का बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी रोज़ी गुनाह करने के लिए इस्तेमाल करता है।

17 जो तर्बियत क़बूल करे वह दूसरों को ज़िन्दगी की राह पर लाता है, जो नसीहत नज़रअन्दाज़ करे वह दूसरों को सहीह राह से दूर ले जाता है।

18 जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट बोलता है, जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें फैलाए वह अहमक़ है।

19 जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह भी आ मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह दानिशमन्द है।

20 रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है जबकि बेदीन के दिल की कोई क़दर नहीं।

21 रास्तबाज़ की ज़बान बहुतों की परवरिश करती है,^a लेकिन अहमक़ अपनी बेअक़ली के बाइस हलाक हो जाते हैं।

22 रब की बरकत दौलत का बाइस है, हमारी अपनी मेहनत-मशक़क़त इस में इज़ाफ़ा नहीं करती।

23 अहमक़ ग़लत काम से अपना दिल बहलाता, लेकिन समझदार हिक्मत से लुत्फ़अन्दोज़ होता है।

24 जिस चीज़ से बेदीन दहशत खाता है वही उस पर आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आर्जू पूरी हो जाएगी।

25 जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नाम-ओ-निशान मिट जाता जबकि रास्तबाज़ हमेशा तक क़ाइम रहता है।

26 जिस तरह दाँत सिरके से और आँखें धुएँ से तंग आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता है जो सुस्त आदमी से काम करवाता है।

27 जो रब का खौफ़ माने उस की ज़िन्दगी के दिनों में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की ज़िन्दगी वक़्त से पहले ही ख़त्म हो जाती है।

28 रास्तबाज़ आख़िरकार खुशी मनाएँगे, क्योंकि उन की उम्मीद बर आएगी। लेकिन बेदीनों की उम्मीद जाती रहेगी।

29 रब की राह बेइल्ज़ाम शख्स के लिए पनाहगाह, लेकिन बदकार के लिए तबाही का बाइस है।

30 रास्तबाज़ कभी डाँवाँडोल नहीं होगा, लेकिन बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।

31 रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत का फल लाता रहता है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला जाएगा।

32 रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह को क्या पसन्द है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी बातें ही जानता है।

11 रब ग़लत तराजू से घिन खाता है, वह सहीह तराजू ही से खुश होता है।

23 जहाँ तकबुुर है वहाँ बदनामी भी क़रीब ही रहती है, लेकिन जो हलीम है उस के दामन में हिक्मत रहती है।

31 सीधी राह पर चलने वालों की दियानतदारी उन की राहनुमाई करती जबकि

^a लफ़्ज़ी तर्जुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुतों को चराते हैं।

बेवफ़ाओं की नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।

4 ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ाइदा नहीं जबकि रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाती है।

5 बेइल्ज़ाम की रास्तबाज़ी उस का रास्ता हमवार बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतें उसे गिरा देती हैं।

6 सीधी राह पर चलने वालों की रास्तबाज़ी उन्हें छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फंसा देता है।

7 दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती रहती है, जिस दौलत की तवक्क़ो उस ने की वह जाती रहती है।

8 रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है, और उस की जगह बेदीन फंस जाता है।

9 काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाता है।

10 जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर जश्न मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो खुशी के नारे बुलन्द हो जाते हैं।

11 सीधी राह पर चलने वालों की बरकत से शहर तरक्की करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह मिस्मार हो जाता है।

12 नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हक़ीर जानता है जबकि समझदार आदमी ख़ामोश रहता है।

13 तोहमत लगाने वाला दूसरों के राज़ फ़ाश करता है, लेकिन क़ाबिल-ए-एतमाद शख्स वह भेद पोशीदा रखता है जो उस के सपुर्द किया गया हो।

14 जहाँ क्रियादत की कमी है वहाँ क़ौम का तनफ़्जुल यक़ीनी है, जहाँ मुशीरों की कस्रत है वहाँ क़ौम फ़त्हयाब रहेगी।

15 जो अजनबी का ज़ामिन हो जाए उसे यक़ीनन नुक्सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से इन्कार करे वह मत्फ़ूज़ रहेगा।

16 नेक औरत इज़ज़त से और ज़ालिम आदमी दौलत से लिपटे रहते हैं।

17 शफ़ीक़ का अच्छा सुलूक उसी के लिए फ़ाइदामन्द है जबकि ज़ालिम का बुरा सुलूक उसी के लिए नुक्सानदेह है।

18 जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदिह है, लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उस का अज़्र यक़ीनी है।

19 रास्तबाज़ी का फल ज़िन्दगी है जबकि बुराई के पीछे भागने वाले का अन्जाम मौत है।

20 रब कजदिलों से घिन खाता है, वह बेइल्ज़ाम राह पर चलने वालों ही से ख़ुश होता है।

21 यक़ीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा जबकि रास्तबाज़ों के फ़र्ज़न्द छूट जाएंगे।

22 जिस तरह सूअर की थूथनी में सोने का छल्ला खटकता है उसी तरह ख़ूबसूरत औरत की बेतमीज़ी खटकती है।

23 अल्लाह रास्तबाज़ों की आर्जू अच्छी चीज़ों से पूरी करता है, लेकिन उस का ग़ज़ब बेदीनों की उम्मीद पर नाज़िल होता है।

24 एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह फ़य्याज़दिली से तवस्सीम करता है। दूसरे की गुर्बत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज़यादा कंजूस है।

25 फ़य्याज़दिल ख़ुशहाल रहेगा, जो दूसरों को तर-ओ-ताज़ा करे वह ख़ुद ताज़ादम रहेगा।

26 लोग गन्दुम के ज़खीराअन्दोज़ पर लानत भेजते हैं, लेकिन जो गन्दुम को बाज़ार में आने देता है उस के सर पर बरकत आती है।

27 जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की मन्ज़ूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में रहे वह ख़ुद बुराई के फंदे में फंस जाएगा।

28 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर जाएगा, लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह फलें फूलेंगे।

²⁹जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह मीरास में हवा ही पाएगा। अहमक़ दानिशमन्द का नौकर बनेगा।

³⁰रास्तबाज़ का फल ज़िन्दगी का दरख़्त है, और दानिशमन्द आदमी जानें जीतता है।

³¹रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज़्र मिलता है। तो फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यों न पाएँ?

12 जिसे इल्म-ओ-इफ़ान प्यारा है उसे तर्बियत भी प्यारी है, जिसे नसीहत से नफ़रत है वह बेअक़ल है।

²रब अच्छे आदमी से खुश होता है जबकि वह साज़िश करने वाले को कुसूरवार ठहराता है।

³इन्सान बेदीनी की बुन्याद पर क्राइम नहीं रह सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी नहीं जा सकतीं।

⁴सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है, लेकिन जो शौहर की रुस्वाई का बाइस है वह उस की हड्डियों में सड़ाहट की मानिन्द है।

⁵रास्तबाज़ के खयालात मुन्सिफ़ाना हैं जबकि बेदीनों के मन्सूबे फ़रेबदिह हैं।

⁶बेदीनों के अल्फ़ाज़ लोगों को क़त्ल करने की ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलने वालों की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।

⁷बेदीनों को खाक में यूँ मिलाया जाता है कि उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहता, लेकिन रास्तबाज़ का घर क्राइम रहता है।

⁸किसी की जितनी अक़ल-ओ-समझ है उतना ही लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन जिस के ज़हन में फ़ुतूर है उसे हक़ीर जाना जाता है।

⁹निचले तबक़े का जो आदमी अपनी ज़िम्मादारियाँ अदा करता है वह उस आदमी से कहीं बेहतर है जो नखरा बघारता है गो उस के पास रोटी भी नहीं है।

¹⁰रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी खयाल करता है जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही ज़ालिम है।

¹¹जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उस के पास कस़त का खाना होगा, लेकिन जो फ़ुज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह नासमझ है।

¹²बेदीन दूसरों को जाल में फंसाने से अपना दिल बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़ फलदार होती है।

¹³शरीर अपनी ग़लत बातों के जाल में उलझ जाता जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच जाता है।

¹⁴इन्सान अपने मुँह के फल से ख़ूब सेर हो जाता है, और जो काम उस के हाथों ने किया उस का अज़्र उसे ज़रूर मिलेगा।

¹⁵अहमक़ की नज़र में उस की अपनी राह ठीक है, लेकिन दानिशमन्द दूसरों के मश्वरे पर ध्यान देता है।

¹⁶अहमक़ एक दम अपनी नाराज़ी का इज़हार करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी छुपाए रखता है।

¹⁷दियानतदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई बयान करता है जबकि झूटा गवाह धोका ही धोका पेश करता है।

¹⁸गप्येँ हाँकने वाले की बातें तलवार की तरह ज़ख्मी कर देती हैं जबकि दानिशमन्द की ज़बान शिफ़ा देती है।

¹⁹सच्चे होंट हमेशा तक क्राइम रहते हैं जबकि झूटी ज़बान एक ही लम्हे के बाद ख़त्म हो जाती है।

²⁰बुरे मन्सूबे बांधने वाले का दिल धोके से भरा रहता जबकि सलामती के मश्वरे देने वाले का दिल खुशी से छलकता है।

²¹कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं आएगी जबकि दुख तक्लीफ़ बेदीनों का दामन कभी नहीं छोड़ेगी।

²²रब फ़रेबदिह होंटों से घिन खाता है, लेकिन जो वफ़ादारी से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन से वह खुश होता है।

²³समझदार अपना इल्म छुपाए रखता जबकि अहमक़ अपने दिल की हमक़त बुलन्द आवाज़ से सब को पेश करता है।

²⁴जिस के हाथ मेहनती हैं वह हुकूमत करेगा, लेकिन जिस के हाथ ढीले हैं उसे बेगार में काम करना पड़ेगा।

²⁵जिस के दिल में परेशानी है वह दबा रहता है, लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे खुशी दिलाती है।

²⁶रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर लेता है, लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा फिरने देती है।

²⁷ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़ सकता जबकि मेहनती शख्स कसत का माल हासिल कर लेता है।

²⁸रास्ती की राह में ज़िन्दगी है, लेकिन ग़लत राह मौत तक पहुँचाती है।

13 दानिशमन्द बेटा अपने बाप की तर्बियत क़बूल करता है, लेकिन तानाज़न परवा ही नहीं करता अगर कोई उसे डाँटे।

²इन्सान अपने मुँह के अच्छे फल से ख़ूब सेर हो जाता है, लेकिन बेवफ़ा के दिल में जुल्म का लालच रहता है।

³जो अपनी ज़बान क़ाबू में रखे वह अपनी ज़िन्दगी महफूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान को बेलगाम छोड़ दे वह तबाह हो जाएगा।

⁴काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन उसे कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शख्स की आज़ू पूरी हो जाती है।

⁵रास्तबाज़ झूट से नफ़रत करता है, लेकिन बेदीन शर्म और रुस्वाई का बाइस है।

⁶रास्ती बेइल्ज़ाम की हिफ़ाज़त करती जबकि बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती है।

⁷कुछ लोग अमीर का रूप भर कर फिरते हैं गो गरीब हैं। दूसरे गरीब का रूप भर कर फिरते हैं गो अमीरतरीन हैं।

⁸कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के लिए ऐसा तावान देना पड़ता है कि तमाम दौलत जाती रहती है, लेकिन गरीब की जान इस क्रिस्म की धमकी से बची रहती है।

⁹रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती^a जबकि बेदीन का चरागा बुझ जाता है।

¹⁰मगरूरों में हमेशा झगड़ा होता है जबकि दानिशमन्द सलाह-मश्वरे के मुताबिक़ ही चलते हैं।

¹¹जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द ही ख़त्म हो जाती है जबकि जो रफ़ता रफ़ता अपना माल जमा करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।

¹²जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह दिल को बीमार कर देती है, लेकिन जो आज़ू पूरी हो जाए वह ज़िन्दगी का दरख़्त है।

¹³जो अच्छी हिदायत को हक़ीर जाने उसे नुक़सान पहुँचेगा, लेकिन जो हुक़्म माने उसे अज़्र मिलेगा।

¹⁴दानिशमन्द की हिदायत ज़िन्दगी का सरचश्मा है जो इन्सान को मोहलक फंदों से बचाए रखती है।

¹⁵अच्छी समझ मन्ज़ूरी अता करती है, लेकिन बेवफ़ा की राह अबदी तबाही का बाइस है।

¹⁶ज़हीन हर काम सोच समझ कर करता, लेकिन अहमक़ तमाम नज़रों के सामने ही अपनी हमक़त की नुमाइश करता है।

¹⁷बेदीन कासिद मुसीबत में फंस जाता जबकि वफ़ादार कासिद शिफ़ा का बाइस है।

¹⁸जो तर्बियत की परवा न करे उसे गुर्बत और शर्मिन्दगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे की नसीहत मान जाए उस का एहतिराम किया जाएगा।

¹⁹जो आज़ू पूरी हो जाए वह दिल को तर-ओ-ताज़ा करती है, लेकिन अहमक़ बुराई से दरेग करने से घिन खाता है।

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : खुशी मनाती।

20जो दानिशमन्दों के साथ चले वह खुद दानिशमन्द हो जाएगा, लेकिन जो अहमक्रों के साथ चले उसे नुकसान पहुँचेगा।

21मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है जबकि रास्तबाज़ों का अज़ खुशहाली है।

22नेक आदमी के बेटे और पोते उस की मीरास पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत रास्तबाज़ के लिए मटफूज़ रखी जाएगी।

23गरीब का खेत कसत की फ़सलें मुहय्या कर सकता है, लेकिन जहाँ इन्साफ़ नहीं वहाँ सब कुछ छीन लिया जाता है।

24जो अपने बेटे को तम्बीह नहीं करता वह उस से नफ़रत करता है। जो उस से मुहब्बत रखे वह वक़्त पर उस की तर्बियत करता है।

25रास्तबाज़ जी भर कर खाना खाता है, लेकिन बेदीन का पेट खाली रहता है।

14 हिक्मत बीबी अपना घर तामीर करती है, लेकिन हमाक़त बीबी अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।

2जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर चलता है वह उसे हक़ीर जानता है।

3अहमक्र की बातों से वह डंडा निकलता है जो उसे उस के तकबुर की सज़ा देता है, लेकिन दानिशमन्द के होंट उसे मटफूज़ रखते हैं।

4जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी खाली रहती है, बैल की ताक़त ही से कसत की फ़सलें पैदा होती हैं।

5वफ़ादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूटे गवाह के मुँह से झूट निकलता है।

6तानाज़न हिक्मत को ढूँडता है, लेकिन बेफ़ाइदा। समझदार के इल्म में आसानी से इज़ाफ़ा होता है।

7अहमक्र से दूर रह, क्योंकि तू उस की बातों में इल्म नहीं पाएगा।

8ज़हीन की हिक्मत इस में है कि वह सोच समझ कर अपनी राह पर चले, लेकिन अहमक्र की हमाक़त सरासर धोका ही है।

9अहमक्र अपने कुसूर का मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन सीधी राह पर चलने वाले रब को मन्ज़ूर हैं।

10हर दिल की अपनी ही तलखी होती है जिस से सिर्फ़ वही वाकिफ़ है, और उस की खुशी में भी कोई और शरीक नहीं हो सकता।

11बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन सीधी राह पर चलने वाले का ख़ैमा फले फूलेगा।

12ऐसी राह भी होती है जो देखने में ठीक तो लगती है गो उस का अन्जाम मौत है।

13दिल हंसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है, और खुशी के इखतिताम पर दुख ही बाक़ी रह जाता है।

14जिस का दिल बेवफ़ा है वह जी भर कर अपने चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा जबकि नेक आदमी अपने आमाल के मीठे फल से सेर हो जाएगा।

15सादालौह हर एक की बात मान लेता है जबकि ज़हीन आदमी अपना हर क़दम सोच समझ कर उठाता है।

16दानिशमन्द डरते डरते ग़लत काम से दरेग़ करता है, लेकिन अहमक्र खुदएतिमाद है और एक दम मुशतइल हो जाता है।

17गुसीला आदमी अहमक्राना हरकतें करता है, और लोग साज़िशी शख्स से नफ़रत करते हैं।

18सादालौह मीरास में हमाक़त पाता है जबकि ज़हीन आदमी का सर इल्म के ताज से आरास्ता रहता है।

19शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा, और बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर आँधे मुँह होना पड़ेगा।

20गरीब के हमसाय भी उस से नफ़रत करते हैं जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।

21जो अपने पड़ोसी को हक़ीर जाने वह गुनाह करता है। मुबारक है वह जो ज़रूरतमन्द पर तरस खाता है।

२२बुरे मन्सूबे बांधने वाले सब आवारा फिरते हैं। लेकिन अच्छे मन्सूबे बांधने वाले शफ़क़त और वफ़ा पाएँगे।

२३मेहनत-मशक़क़त करने में हमेशा फ़ाइदा होता है, जबकि ख़ाली बातें करने से लोग ग़रीब हो जाते हैं।

२४दानिशमन्दों का अज़्र दौलत का ताज है जबकि अहमक़ों का अज़्र हमाक़त ही है।

२५सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूटा गवाह फ़रेबदिह है।

२६जो रब का ख़ौफ़ माने उस के पास महफूज़ क़िला है जिस में उस की औलाद भी पनाह ले सकती है।

२७रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का सरचश्मा है जो इन्सान को मोहलक फंदों से बचाए रखता है।

२८जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही बादशाह की शान-ओ-शौकत है। रिआया की कमी हुक्मरान के तनज़ज़ुल का बाइस है।

२९तहम्मूल करने वाला बड़ी समझदारी का मालिक है, लेकिन गुसीला आदमी अपनी हमाक़त का इज़हार करता है।

३०पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िन्दगी दिलाता जबकि हसद हड्डियों को गलने देता है।

३१जो पस्तहाल पर जुल्म करे वह उस के खालिक़ की तहक़ीर करता है जबकि जो ज़रूरतमन्द पर तरस खाए वह अल्लाह का एहतिराम करता है।

३२बेदीन की बुराई उसे ख़ाक में मिला देती है, लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह में पनाह लेता है।

३३हिक्मत समझदार के दिल में आराम करती है, और वह अहमक़ों के दरमियान भी ज़ाहिर हो जाती है।

३४रास्ती से हर क़ौम सरफ़राज़ होती है जबकि गुनाह से उम्मतें रुसवा हो जाती हैं।

३५बादशाह दानिशमन्द मुलाज़िम से खुश होता है, लेकिन शर्मनाक काम करने वाला

मुलाज़िम उस के गुस्से का निशाना बन जाता है।

15 नर्म जवाब गुस्सा ठंडा करता, लेकिन तुरश बात तैश दिलाती है।

२दानिशमन्दों की ज़बान इल्म-ओ-इफ़रान फैलाती है जबकि अहमक़ का मुँह हमाक़त का ज़ोर से उबलने वाला चश्मा है।

३रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे और भले सब पर ध्यान देती हैं।

४नर्म ज़बान ज़िन्दगी का दरख़्त है जबकि फ़रेबदिह ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।

५अहमक़ अपने बाप की तर्बियत को हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत माने वह दानिशमन्द है।

६रास्तबाज़ के घर में बड़ा ख़जाना होता है, लेकिन जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह तबाही का बाइस है।

७दानिशमन्दों के हॉट इल्म-ओ-इफ़रान का बीज बिखेर देते हैं, लेकिन अहमक़ों का दिल ऐसा नहीं करता।

८रब बेदीनों की कुर्बानी से घिन खाता, लेकिन सीधी राह पर चलने वालों की दुआ से खुश होता है।

९रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन रास्ती का पीछा करने वाले से प्यार करता है।

१०जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफ़रत करे वह मर जाएगा।

११पाताल और आलम-ए-अर्वाह रब को साफ़ नज़र आते हैं। तो फिर इन्सानों के दिल उसे क्यूँ न साफ़ दिखाई दें?

१२तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसन्द नहीं आती, इस लिए वह दानिशमन्दों के पास नहीं जाता।

१३जिस का दिल खुश है उस का चेहरा खुला रहता है, लेकिन जिस का दिल परेशान है उस की रूह शिकस्ता रहती है।

14समझदार का दिल इल्म-ओ-इफ़ान की तलाश में रहता, लेकिन अहमक़्र हमाक़्रत की चरागाह में चरता रहता है।

15मुसीबतज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन जिस का दिल खुश है वह रोज़ाना जश्र मनाता है।

16जो गरीब रब का ख़ौफ़ मानता है उस का हाल उस करोड़पती से कहीं बेहतर है जो बड़ी बेचैनी से ज़िन्दगी गुज़ारता है।

17जहाँ मुहब्बत है वहाँ सब्ज़ी का सालन बहुत है, जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े की ज़ियाफ़त भी बेफ़ाइदा है।

18गुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता जबकि तहम्मूल करने वाला लोगों के गुस्से को ठंडा कर देता है।

19काहिल का रास्ता काँटेदार बाड़ की मानिन्द है, लेकिन दियानतदारों की राह पक्की सड़क ही है।

20दानिशमन्द बेटा अपने बाप के लिए खुशी का बाइस है, लेकिन अहमक़्र अपनी माँ को हक़ीर जानता है।

21नासमझ आदमी हमाक़्रत से लुत्फ़अन्दोज़ होता, लेकिन समझदार आदमी सीधी राह पर चलता है।

22जहाँ सलाह-मश्वरा नहीं होता वहाँ मन्सूबे नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत से मुशीर होते हैं वहाँ कामयाबी होती है।

23इन्सान मौज़ूँ जवाब देने से खुश हो जाता है, वक़्त पर मुनासिब बात कितनी अच्छी होती है।

24ज़िन्दगी की राह चढ़ती रहती है ताकि समझदार उस पर चलते हुए पाताल में उतरने से बच जाए।

25रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन बेवा की ज़मीन की हुदूद मत्फूज़ रखता है।

26रब बुरे मन्सूबों से घिन खाता है, और मेहरबान अल्फ़ाज़ उस के नज़दीक पाक हैं।

27जो नाजाइज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर पर आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्तत से नफ़रत रखे वह जीता रहेगा।

28रास्तबाज़ का दिल सोच समझ कर जवाब देता है, लेकिन बेदीन का मुँह ज़ोर से उबलने वाला चश्मा है जिस से बुरी बातें निकलती रहती हैं।

29रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्तबाज़ की दुआ सुनता है।

30चमकती आँखें दिल को खुशी दिलाती हैं, अच्छी खबर पूरे जिस्म को तर-ओ-ताज़ा कर देती है।

31जो ज़िन्दगीबरख़्श नसीहत पर ध्यान दे वह दानिशमन्दों के दरमियान ही सुकूनत करेगा।

32जो तर्बियत की परवा न करे वह अपने आप को हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत पर ध्यान दे उस की समझ में इज़ाफ़ा होता है।

33रब का ख़ौफ़ ही वह तर्बियत है जिस से इन्सान हिक्मत सीखता है। पहले फ़रोतनी अपना ले, क्योंकि यही इज़ज़त पाने का पहला क़दम है।

16 इन्सान दिल में मन्सूबे बांधता है, लेकिन ज़बान का जवाब रब की तरफ़ से आता है।

2इन्सान की नज़र में उस की तमाम राहें पाक-साफ़ हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-पड़ताल करता है।

3जो कुछ भी तूकरना चाहे उसे रब के सपुर्द कर। तब ही तेरे मन्सूबे कामयाब होंगे।

4रब ने सब कुछ अपने ही मक्कासिद पूरे करने के लिए बनाया है। वह दिन भी पहले से मुक़र्रर है जब बेदीन पर आफ़त आएगी।

5रब हर मगरूर दिल से घिन खाता है। यकीनन वह सज़ा से नहीं बचेगा।

6शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का कफ़फ़ारा देती हैं। रब का ख़ौफ़ मानने से इन्सान बुराई से दूर रहता है।

7 अगर रब किसी इन्सान की राहों से खुश हो तो वह उस के दुश्मनों को भी उस से सुलह कराने देता है।

8 इन्साफ़ से थोड़ा बहुत कमाना नाइन्साफ़ी से बहुत दौलत जमा करने से कहीं बेहतर है।

9 इन्सान अपने दिल में मन्सूबे बांधता रहता है, लेकिन रब ही मुकर्रर करता है कि वह आखिरकार किस राह पर चल पड़े।

10 बादशाह के होंट गोया इलाही फ़ैसले पेश करते हैं, उस का मुँह अदालत करते वक़्त बेवफ़ा नहीं होता।

11 रब दुरुस्त तराजू का मालिक है, उसी ने तमाम बाटों का इन्तिज़ाम क़ाइम किया।

12 बादशाह बेदीनी से घिन खाता है, क्योंकि उस का तख़्त रास्तबाज़ी की बुन्याद पर मज़बूत रहता है।

13 बादशाह रास्तबाज़ होंटों से खुश होता और साफ़ बात करने वाले से मुहब्बत रखता है।

14 बादशाह का गुस्सा मौत का पेशख़ैमा है, लेकिन दानिशमन्द उसे ठंडा करने के तरीक़े जानता है।

15 जब बादशाह का चेहरा खिल उठे तो मतलब ज़िन्दगी है। उस की मन्ज़ूरी मौसम-ए-बहार के तर-ओ-ताज़ा करने वाले बादल की मानिन्द है।

16 हिक्मत का हुसूल सोने से कहीं बेहतर और समझ पाना चाँदी से कहीं बढ़ कर है।

17 दियातदार की मज़बूत राह बुरे काम से दूर रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे वह अपनी जान बचाए रखता है।

18 तबाही से पहले गुरूर और गिरने से पहले तकब्बुर आता है।

19 फ़रोतनी से ज़रूरतमन्दों के दरमियान बसना घमंडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने से कहीं बेहतर है।

20 जो कलाम पर ध्यान दे वह खुशहाल होगा, मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।

21 जो दिल से दानिशमन्द है उसे समझदार करार दिया जाता है, और मीठे अल्फ़ाज़ तालीम में इज़ाफ़ा करते हैं।

22 फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िन्दगी का सरचश्मा है, लेकिन अहमक़ की अपनी ही हमाक़त उसे सज़ा देती है।

23 दानिशमन्द का दिल समझ की बातें ज़बान पर लाता और तालीम देने में होंटों का सहारा बनता है।

24 मेहरबान अल्फ़ाज़ खालिस शहद हैं, वह जान के लिए शीरीं और पूरे जिस्म को तर-ओ-ताज़ा कर देते हैं।

25 ऐसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक लगती है गो उस का अन्जाम मौत है।

26 मज़दूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर मजबूर करता, उस की भूक उसे हाँकती रहती है।

27 शरीर कुरेद कुरेद कर ग़लत काम निकाल लेता, उस के होंटों पर झुलसाने वाली आग़ रहती है।

28 कजरौ आदमी झगड़े छेड़ता रहता, और तोहमत लगाने वाला दिली दोस्तों में भी रखना डालता है।

29 ज़ालिम अपने पड़ोसी को वरग़ला कर ग़लत राह पर ले जाता है।

30 जो आँख मारे वह ग़लत मन्सूबे बांध रहा है, जो अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने पर तुला हुआ है।

31 सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।

32 तहम्मूल करने वाला सूरमे से सबक़त लेता है, जो अपने आप को क़ाबू में रखे वह शहर को शिकस्त देने वाले से बरतर है।

33 इन्सान तो कुरआ डालता है, लेकिन उस का हर फ़ैसला रब की तरफ़ से है।

17 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा सुकून के साथ खाया जाए वह उस घर से कहीं बेहतर है जिस में लड़ाई-झगड़ा है,

ख्वाह उस में कितनी शानदार ज़ियाफ़त क्यूँ न हो रही हो।

2समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर क्राबू पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब भाइयों में मौरूसी मिलकियत तक्सीम की जाए तो उसे भी हिस्सा मिलेगा।

3सोना-चाँदी कुठाली में पिघला कर पाक-साफ़ की जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल करता है।

4बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोकेबाज़ तबाहकुन ज़बान पर तवज्जुह देता है।

5जो गरीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उस के खालिक़ की तह्कीर करता है, जो दूसरे की मुसीबत देख कर खुश हो जाए वह सज़ा से नहीं बचेगा।

6पोते बूढ़ों का ताज और वालिदेन अपने बच्चों के ज़ेवर हैं।

7अहमक़ के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौजूँ नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।

8रिश्वत देने वाले की नज़र में रिश्वत जादू की मानिन्द है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह खुल जाता है।

9जो दूसरे की गलती को दरगुज़र करे वह मुहब्बत को फ़रोग देता है, लेकिन जो माज़ी की गलतियाँ दोहराता रहे वह क़रीबी दोस्तों में निफ़ाक़ पैदा करता है।

10अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ूब सीख लेता है, लेकिन अगर अहमक़ को सौ बार मारा जाए तो भी वह इतना नहीं सीखता।

11शरीर सरकशी पर तुला रहता है, लेकिन उस के खिलाफ़ ज़ालिम क़ासिद भेजा जाएगा।

12जो अहमक़ अपनी हमाक़त में उलझा हुआ हो उस से दरेग कर, क्यूँकि उस से मिलने से बेहतर यह है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिस के बच्चे उस से छीन लिए गए हों।

13जो भलाई के इवज़ बुराई करे उस के घर से बुराई कभी दूर नहीं होगी।

14लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बन्द में रखना डालने के बराबर है। इस से पहले कि मुक़द्माबाज़ी शुरू हो उस से बाज़ आ।

15जो बेदीन को बेकुसूर और रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराए उस से रब घिन खाता है।

16अहमक़ के हाथ में पैसों का क्या फ़ाइदा है? क्या वह हिक्मत ख़रीद सकता है जबकि उस में अक़ल नहीं? हरगिज़ नहीं!

17पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता है, भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए पैदा हुआ है।

18जो हाथ मिला कर अपने पड़ोसी का ज़ामिन होने का वादा करे वह नासमझ है।

19जो लड़ाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह से मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाज़ा हद से ज़्यादा बड़ा बनाए वह तबाही को दाख़िल होने की दावत देता है।

20जिस का दिल टेढ़ा है वह खुशहाली नहीं पाएगा, और जिस की ज़बान चालाक़ है वह मुसीबत में उलझ जाएगा।

21जिस के हाँ अहमक़ बेटा पैदा हो जाए उसे दुख पहुँचता है, और अक़ल से खाली बेटा बाप के लिए खुशी का बाइस नहीं होता।

22खुशबाश दिल पूरे जिस्म को शिफ़ा देता है, लेकिन शिकस्ता रूह हड्डियों को खुश्क कर देती है।

23बेदीन चुपके से रिश्वत ले कर इन्साफ़ की राहों को बिगाड़ देता है।

24समझदार अपनी नज़र के सामने हिक्मत रखता है, लेकिन अहमक़ की नज़रें दुनिया की इन्तिहा तक आवारा फिरती हैं।

25अहमक़ बेटा बाप के लिए रंज का बाइस और माँ के लिए तल्खी का सबब है।

26बेकुसूर पर जुर्माना लगाना ग़लत है, और शरीफ़ को उस की दियानतदारी के सबब से कोड़े लगाना बुरा है।

27 जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह इल्म-ओ-इफ़्फ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल से बात करे वह समझदार है।

28 अगर अहमक़ ख़ामोश रहे तो वह भी दानिशमन्द लगता है। जब तक वह बात न करे लोग उसे समझदार करार देते हैं।

18 जो दूसरों से अलग हो जाए वह अपने ज़ाती मक़ासिद पूरे करना चाहता और समझ की हर बात पर झगड़ने लगता है।

2 अहमक़ समझ से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होता बल्कि सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर ज़ाहिर करने से।

3 जहाँ बेदीन आए वहाँ हिक़ारत भी आ मौजूद होती, और जहाँ रुस्वाई हो वहाँ तानाज़नी भी होती है।

4 इन्सान के अल्फ़ाज़ गहरा पानी हैं, हिक्मत का सरचश्मा बहती हुई नदी है।

5 बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का हक़ मारना ग़लत है।

6 अहमक़ के हॉट लड़ाई-झगड़ा पैदा करते हैं, उस का मुँह ज़ोर से पिटाई का मुतालबा करता है।

7 अहमक़ का मुँह उस की तबाही का बाइस है, उस के हॉट ऐसा फंदा है जिस में उस की अपनी जान उलझ जाती है।

8 तोहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुक्मों की मानिन्द हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

9 जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए, उसे याद रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।

10 रब का नाम मज़बूत बुर्ज है जिस में रास्तबाज़ भाग कर मट्फूज़ रहता है।

11 अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा क़िलाबन्द शहर और मेरी ऊँची चारदीवारी है जिस में मैं मट्फूज़ हूँ।

12 तबाह होने से पहले इन्सान का दिल मग़रूर हो जाता है, इज़ज़त मिलने से पहले लाज़िम है कि वह फ़रोतन हो जाए।

13 दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना हमाक़त है। जो ऐसा करे उस की रुस्वाई हो जाएगी।

14 बीमार होते वक़्त इन्सान की रूह जिस्म की परवरिश करती है, लेकिन अगर रूह शिकस्ता हो तो फिर कौन उस को सहारा देगा?

15 समझदार का दिल इल्म अपनाता और दानिशमन्द का कान इफ़ान का खोज लगाता रहता है।

16 तोहफ़ा रास्ता खोल कर देने वाले को बड़ों तक पहुँचा देता है।

17 जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश करे वह उस वक़्त तक हक़-ब-जानिब लगता है जब तक दूसरा फ़रीक़ सामने आ कर उस की हर बात की तहक़ीक़ न करे।

18 कुरआ डालने से झगड़े खत्म हो जाते और बड़ों का एक दूसरे से लड़ने का खतरा दूर हो जाता है।

19 जिस भाई को एक दफ़ा मायूस कर दिया जाए उसे दुबारा जीत लेना क़िलाबन्द शहर पर फ़त्ह पाने से ज़्यादा दुश्वार है। झगड़े हल करना बुर्ज के कुंडे तोड़ने की तरह मुश्किल है।

20 इन्सान अपने मुँह के फल से सेर हो जाएगा, वह अपने हॉटों की पैदावार को जी भर कर खाएगा।

21 ज़बान का ज़िन्दगी और मौत पर इख्तियार है, जो उसे प्यार करे वह उस का फल भी खाएगा।

22 जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली, और उसे रब की मन्ज़ूरी हासिल हुई।

23 ग़रीब मिन्नत करते करते अपना मुआमला पेश करता है, लेकिन अमीर का जवाब सख़्त होता है।

24कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे भी हैं जो तुझ से भाई से ज़्यादा लिपटे रहते हैं।

19 जो गरीब बेइल्जाम ज़िन्दगी गुज़ारे वह टेढ़ी बातें करने वाले अहमक़ से कहीं बेहतर है।

2अगर इल्म साथ न हो तो सरगर्मी का कोई फ़ाइदा नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता रहता है।

3गो इन्सान की अपनी हमाक़त उसे भटका देती है तो भी उस का दिल रब से नाराज़ होता है।

4दौलतमन्द के दोस्तों में इज़ाफ़ा होता है, लेकिन ग़रीब का एक दोस्त भी उस से अलग हो जाता है।

5झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, जो झूटी गवाही दे उस की जान नहीं छूटेगी।

6मुतअद्दिद लोग बड़े आदमी की खुशामद करते हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त है जो तोहफ़े देता है।

7ग़रीब के तमाम भाई उस से नफ़रत करते हैं, तो फिर उस के दोस्त उस से क्यूँ दूर न रहें। वह बातें करते करते उन का पीछा करता है, लेकिन वह ग़ाइब हो जाते हैं।

8जो हिक्मत अपना ले वह अपनी जान से मुहब्बत रखता है, जो समझ की परवरिश करे उसे कामयाबी होगी।

9झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही देने वाला तबाह हो जाएगा।

10अहमक़ के लिए ऐश-ओ-इश्रत से ज़िन्दगी गुज़ारना मौज़ूँ नहीं, लेकिन गुलाम की हुक्मरानों पर हुक्मत कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।

11इन्सान की हिक्मत उसे तहम्मूल सिखाती है, और दूसरों के जराइम से दरगुज़र करना उस का फ़ख़र है।

12बादशाह का तैश जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिन्द है जबकि उस की मन्ज़ूरी

घास पर शबनम की तरह तर-ओ-ताज़ा करती है।

13अहमक़ बेटा बाप की तबाही और झगड़ालू बीवी मुसलसल टपकने वाली छत है।

14मौरूसी घर और मिलकियत बापदादा की तरफ़ से मिलती है, लेकिन समझदार बीवी रब की तरफ़ से है।

15सुस्त होने से इन्सान गहरी नींद सो जाता है, लेकिन ढीला शख्स भूके मरेगा।

16जो वफ़ादारी से हुक्म पर अमल करे वह अपनी जान महफूज़ रखता है, लेकिन जो अपनी राहों की परवा न करे वह मर जाएगा।

17जो ग़रीब पर मेहरबानी करे वह रब को उधार देता है, वही उसे अज़ देगा।

18जब तक उम्मीद की किरन बाकी हो अपने बेटे की तादीब कर, लेकिन इतने जोश में न आ कि वह मर जाए।

19जो हद से ज़्यादा तैश में आए उसे जुर्माना देना पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर वर्ना उस का तैश और बढ़ेगा।

20अच्छा मश्वरा अपना और तर्बियत क़बूल कर ताकि आइन्दा दानिशमन्द हो।

21इन्सान दिल में मुतअद्दिद मन्सूबे बांधता रहता है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो जाता है।

22इन्सान का लालच उस की रुस्वाई का बाइस है, और ग़रीब दरोगो से बेहतर है।

23रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का मम्बा है। खुदातरस आदमी सेर हो कर सुकून से सो जाता और मुसीबत से महफूज़ रहता है।

24काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन में डाल कर उसे मुँह तक नहीं ला सकता।

25तानाज़न को मार तो सादालौह सबक़ सीखेगा, समझदार को डॉट तो उस के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।

26जो अपने बाप पर जुल्म करे और अपनी माँ को निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म और रुस्वाई का बाइस है।

27 मेरे बेटे, तर्बियत पर ध्यान देने से बाज़ न आ, वर्ना तू इल्म-ओ-इफ़्रान की राह से भटक जाएगा।

28 शरीर गवाह इन्साफ़ का मज़ाक उड़ाता है, और बेदीन का मुँह आफ़त की ख़बरें फैलाता है।

29 तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक़ की पीठ के लिए कोड़ा तय्यार है।

20 मैं तानाज़न का बाप और शराब शोर-शराबा की माँ है। जो यह पी पी कर डगमगाने लगे वह दानिशमन्द नहीं।

2 बादशाह का क्रहर जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिन्द है, जो उसे तैश दिलाए वह अपनी जान पर खेलता है।

3 लड़ाई-झगड़े से बाज़ रहना इज़्जत का तुर्रा-ए-इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक़ झगड़ने के लिए तय्यार रहता है।

4 काहिल वक्रत पर हल नहीं चलाता, चुनाँचे जब वह फ़सल पकते वक्रत अपने खेत पर निगाह करे तो कुछ नज़र नहीं आएगा।

5 इन्सान के दिल का मन्सूबा गहरे पानी की मानिन्द है, लेकिन समझदार आदमी उसे निकाल कर अमल में लाता है।

6 बहुत से लोग अपनी वफ़ादारी पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन क़ाबिल-ए-एतिमाद शख्स कहीं पाया जाता है?

7 जो रास्तबाज़ बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे उस की औलाद मुबारक है।

8 जब बादशाह तख़्त-ए-अदालत पर बैठ जाए तो वह अपनी आँखों से सब कुछ छान कर हर ग़लत बात एक तरफ़ कर लेता है।

9 कौन कह सकता है, "मैं ने अपने दिल को पाक-साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह से पाक हो गया हूँ"?

10 ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों से घिन खाता है।

11 लड़के का किरदार उस के सुलूक से मालूम होता है। इस से पता चलता है कि उस का चाल-चलन पाक और रास्त है या नहीं।

12 सुनने वाले कान और देखने वाली आँखें दोनों ही रब ने बनाई हैं।

13 नींद को प्यार न कर वर्ना ग़रीब हो जाएगा। अपनी आँखों को खुला रख तो जी भर कर खाना खाएगा।

14 गाहक दुकानदार से कहता है, "यह कैसी नाक्रिस चीज़ है!" लेकिन फिर जा कर दूसरों के सामने अपने सौदे पर शेखी मारता है।

15 सोना और कस्रत के मोती पाए जा सकते हैं, लेकिन समझदार होंट उन से कहीं ज़्यादा क्रीमती हैं।

16 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया है। अगर वह अजनबी का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उस ने दी थी।

17 धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी को मीठी लगती है, लेकिन उस का अन्जाम कंकरों से भरा मुँह है।

18 मन्सूबे सलाह-मश्वरे से मज़बूत हो जाते हैं, और जंग करने से पहले दूसरों की हिदायात पर ध्यान दे।

19 अगर तू बुह्तान लगाने वाले को हमराज़ बनाए तो वह इधर उधर फिर कर बात फैलाएगा। चुनाँचे बातूनी से गुरेज़ कर।

20 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उस का चरागा घने अंधेरे में बुझ जाएगा।

21 जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल जाए वह आखिर में बरकत का बाइस नहीं होगी।

22 मत कहना, "मैं ग़लत काम का इन्तिक्राम लूँगा।" रब के इन्तिज़ार में रह तो वही तेरी मदद करेगा।

23 रब झूठे बातों से घिन खाता है, और ग़लत तराजू उसे अच्छा नहीं लगता।

24 रब हर एक के क्रदम मुक़र्रर करता है। तो फिर इन्सान किस तरह अपनी राह समझ सकता है?

25 इन्सान अपने लिए फंदा तय्यार करता है जब वह जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद में ही मन्नत के नताइज पर गौर करने लगता है।

26 दानिशमन्द बादशाह बेदीनों को छान छान कर उड़ा लेता है, हाँ वह गाहने का आला ही उन पर से गुज़रने देता है।

27 आदमज़ाद की रूह रब का चरागा है जो इन्सान के बातिन की तह तक सब कुछ की तहक़ीक़ करता है।

28 शफ़क़त और वफ़ा बादशाह को मट्फूज़ रखती हैं, शफ़क़त से वह अपना तख़्त मुस्तहक़म कर लेता है।

29 नौजवानों का फ़ख़र उन की ताक़त और बुजुर्गों की शान उन के सफ़ेद बाल हैं।

30 ज़ख़म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं, ज़र्बे बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर देती हैं।

21 बादशाह का दिल रब के हाथ में नहर की मानिन्द है। वह जिधर चाहे उस का रुख़ फेर देता है।

2 हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में ठीक़ लगती है, लेकिन रब ही दिलों की जाँच-पड़ताल करता है।

3 रास्तबाज़ी और इन्साफ़ करना रब को ज़बह की कुर्बानियों से कहीं ज़्यादा पसन्द है।

4 मगरूर आँखें और मुतकब्बिर दिल जो बेदीनों का चरागा हैं गुनाह हैं।

5 मेहनती शख़्स के मन्सूबे नफ़ा का बाइस हैं, लेकिन जल्दबाज़ी गुर्बत तक पहुँचा देती है।

6 फ़रेबदिह ज़बान से जमा किया हुआ खज़ाना बिखर जाने वाला धुआँ और मोहलक फंदा है।

7 बेदीनों का जुल्म ही उन्हें घसीट कर ले जाता है, क्योंकि वह इन्साफ़ करने से इन्कार करते हैं।

8 कुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक शख़्स सीधी राह पर चलता है।

9 झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निस्वत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।

10 बेदीन ग़लत काम करने के लालच में रहता है और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस नहीं खाता।

11 तानाज़न पर जुर्माना लगा तो सादालौह सबक़ सीखेगा, दानिशमन्द को तालीम दे तो उस के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।

12 अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को ध्यान में रखता है, वही बेदीन को खाक में मिला देता है।

13 जो कान में उंगली डाल कर ग़रीब की मदद के लिए चीखें नहीं सुनता वह भी एक दिन चीखें मारेगा, और उस की भी सुनी नहीं जाएगी।

14 पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का गुस्सा ठंडा हो जाता, किसी की जेब गर्म करने से उस का सख़्त तैश दूर हो जाता है।

15 जब इन्साफ़ किया जाए तो रास्तबाज़ ख़ुश हो जाता, लेकिन बदकार दहशत खाने लगता है।

16 जो समझ की राह से भटक जाए वह एक दिन मुर्दों की जमाअत में आराम करेगा।

17 जो ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी पसन्द करे वह ग़रीब हो जाएगा, जिसे मै और तेल प्यारा हो वह अमीर नहीं हो जाएगा।

18 जब रास्तबाज़ का फ़िद्या देना है तो बेदीन को दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह बेवफ़ा को दिया जाएगा।

19 झगड़ालू और तंग करने वाली बीवी के साथ बसने की निस्वत रेगिस्तान में गुज़ारा करना बेहतर है।

20 दानिशमन्द के घर में उम्दा खज़ाना और तेल होता है, लेकिन अहमक़ अपना सारा माल हड़प कर लेता है।

21 जो इन्साफ़ और शफ़क़त का ताक़ुक़ब करता रहे वह ज़िन्दगी, रास्ती और इज़ज़त पाएगा।

22 दानिशमन्द आदमी ताकतवर फ़ौजियों के शहर पर हमला करके वह क़िलाबन्दी ढा देता है जिस पर उन का पूरा एतिमाद था।

23 जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी करे वह अपनी जान को मुसीबत से बचाए रखता है।

24 मगरूर और घमंडी का नाम 'तानाज़न' है, हर काम वह बेहद तकबुर के साथ करता है।

25 काहिल का लालच उसे मौत के घाट उतार देता है, क्योंकि उस के हाथ काम करने से इन्कार करते हैं।

26 लालची पूरा दिन लालच करता रहता है, लेकिन रास्तबाज़ फ़य्याज़दिली से देता है।

27 बेदीनों की कुर्बानी क़ाबिल-ए-घिन है, खासकर जब उसे बुरे मक्सद से पेश किया जाए।

28 झूटा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो दूसरे की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

29 बेदीन आदमी गुस्ताख़ अन्दाज़ से पेश आता है, लेकिन सीधी राह पर चलने वाला सोच समझ कर अपनी राह पर चलता है।

30 किसी की भी हिक्मत, समझ या मन्सूबा रब का सामना नहीं कर सकता।

31 घोड़े को जंग के दिन के लिए तय्यार तो किया जाता है, लेकिन फ़तह रब के हाथ में है।

22 नेक नाम बड़ी दौलत से क़ीमती, और मन्ज़ूर-ए-नज़र होना सोने-चाँदी से बेहतर है।

2 अमीर और ग़रीब एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, रब उन सब का ख़ालिक़ है।

3 ज़हीन आदमी खतरा पहले से भाँप कर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर उस की लपेट में आ जाता है।

4 फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल दौलत, एहतियार और ज़िन्दगी है।

5 बेदीन की राह में काँट और फंदे होते हैं। जो अपनी जान मत्फूज़ रखना चाहे वह उन से दूर रहता है।

6 छोटे बच्चे को सही राह पर चलने की तर्बियत कर तो वह बूढ़ा हो कर भी उस से नहीं हटेगा।

7 अमीर ग़रीब पर हुकूमत करता, और क़र्ज़दार क़र्ज़ख़वाह का गुलाम होता है।

8 जो नाइन्साफ़ी का बीज बोए वह आफ़त की फ़सल काटेगा, तब उस की ज़ियादती की लाठी टूट जाएगी।

9 फ़य्याज़दिल को बरकत मिलेगी, क्योंकि वह पस्तहाल को अपने खाने में शरीक़ करता है।

10 तानाज़न को भगा दे तो लड़ाई-झगड़ा घर से निकल जाएगा, तू तू मैं मैं और एक दूसरे की बेइज़्ज़ती करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा।

11 जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह का दोस्त बनेगा।

12 रब की आँखें इल्म-ओ-इफ़्फ़ान की देख-भाल करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों को तबाह होने देता है।

13 काहिल कहता है, "गली में शेर है, अगर बाहर जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़ खाएगा।"

14 ज़िनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है। जिस से रब नाराज़ हो वह उस में गिर जाता है।

15 बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है, लेकिन तर्बियत की छड़ी उसे भगा देती है।

16 एक पस्तहाल पर जुल्म करता है ताकि दौलत पाए, दूसरा अमीर को तोहफ़े देता है लेकिन ग़रीब हो जाता है।

दानिशमन्दों की 30 कहावतें

17 कान लगा कर दानाओं की बातों पर ध्यान दे, दिल से मेरी तालीम अपना ले! 18 क्योंकि

अच्छा है कि तू उन्हें अपने दिल में महफूज़ रखे, वह सब तेरे होंटों पर मुस्तइद रहें।¹⁹ आज मैं तुझे, हाँ तुझे ही तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब पर रहे।²⁰ मैं ने तेरे लिए 30 कहावतें क़लमबन्द की हैं, ऐसी बातें जो मश्वरों और इल्म से भरी हुई हैं।²¹ क्योंकि मैं तुझे सच्चाई की क़ाबिल-ए-एतिमाद बातें सिखाना चाहता हूँ ताकि तू उन्हें क़ाबिल-ए-एतिमाद जवाब दे सके जिन्होंने तुझे भेजा है।

-१-

²²पस्तहाल को इस लिए न लूट कि वह पस्तहाल है, मुसीबतज़दा को अदालत में मत कुचलना।²³ क्योंकि रब खुद उन का दिफ़ा करके उन्हें लूट लेगा जो उन्हें लूट रहे हैं।

-२-

²⁴गुसीले शख्स का दोस्त न बन, न उस से ज़्यादा ताल्लुक रख जो जल्दी से आग-बगूला हो जाता है।²⁵ ऐसा न हो कि तू उस का चाल-चलन अपना कर अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

-३-

²⁶कभी हाथ मिला कर वादा न कर कि मैं दूसरे के कर्ज़ का ज़ामिन हूँगा।²⁷ कर्ज़दार के पैसे वापस न करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर सके तो तेरी चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली जाएगी।

-४-

²⁸ज़मीन की जो हुदूद तेरे बापदादा ने मुकर्रर कीं उन्हें आगे पीछे मत करना।

-५-

²⁹क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो अपने काम में माहिर है? वह निचले तबक़े के लोगों की खिदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों की।

-६-

23 अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में शरीक हो जाए तो ख़ूब ध्यान दे कि तू किस के हुज़ूर है।² अगर तू पेटू हो तो अपने गले पर छुरी रख।³ उस की उम्दा चीज़ों का लालच मत कर, क्योंकि यह खाना फ़रेबदिह है।

-७-

⁴अपनी पूरी ताक़त अमीर बनने में सफ़र न कर, अपनी हिक्मत ऐसी कोशिशों से ज़ाए मत कर।⁵ एक नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल हो जाती है, और पर लगा कर उक्राब की तरह आसमान की तरफ़ उड़ जाती है।

-८-

⁶जलने वाले की रोटी मत खा, उस के लज़ीज़ खानों का लालच न कर।⁷ क्योंकि यह गले में बाल की तरह होगा। वह तुझ से कहेगा, "खाओ, पियो!" लेकिन उस का दिल तेरे साथ नहीं है।⁸ जो लुक़्मा तू ने खा लिया उस से तुझे कै आएगी, और तेरी उस से दोस्ताना बातें ज़ाए हो जाएँगी।

-९-

⁹अहमक़ से बात न कर, क्योंकि वह तेरी दानिशमन्द बातें हक़ीर जानेगा।

-१०-

¹⁰ज़मीन की जो हुदूद क़दीम ज़माने में मुकर्रर हुईं उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों के खेतों पर क़ब्ज़ा न कर।¹¹ क्योंकि उन का छुड़ाने वाला क़वी है, वह उन के हक़ में खुद तेरे खिलाफ़ लड़ेगा।

-११-

¹²अपना दिल तर्बियत के हवाले कर और अपने कान इल्म की बातों पर लगा।

-१२-

13 बच्चे को तर्बियत से महरूम न रख, छड़ी से उसे सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14 छड़ी से उसे सज़ा दे तो उस की जान मौत से छूट जाएगी।

-१३-

15 मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमन्द हो तो मेरा दिल भी खुश होगा। 16 मैं अन्दर ही अन्दर खुशी मनाऊँगा जब तेरे हॉट दिया नतदार बातें करेंगे।

-१४-

17 तेरा दिल गुनाहगारों को देख कर कुढ़ता न रहे बल्कि पूरे दिन रब का खौफ़ रखने में सरगर्म रहे। 18 क्योंकि तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल यकीनन अच्छा होगा।

-१५-

19 मेरे बेटे, सुन कर दानिशमन्द हो जा और सहीह राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर। 20 शराबी और पेटू से दरेगा कर, 21 क्योंकि शराबी और पेटू ग़रीब हो जाएंगे, और काहिली उन्हें चीथड़े पहनाएगी।

-१६-

22 अपने बाप की सुन जिस ने तुझे पैदा किया, और अपनी माँ को हक़ीर न जान जब बूढ़ी हो जाए।

23 सच्चाई ख़रीद ले और कभी फ़रोख़्त न कर, उस में शामिल हिक्मत, तर्बियत और समझ अपना ले।

24 रास्तबाज़ का बाप बड़ी खुशी मनाता है, और दानिशमन्द बेटे का वालिद उस से लुत्फ़अन्दोज़ होता है।

25 चुनाँचे अपने माँ-बाप के लिए खुशी का बाइस हो, ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार कि तेरी माँ ज़श्र मना सके।

-१७-

26 मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तेरी आँखें मेरी राहें पसन्द करें। 27 क्योंकि कस्बी गहरा गढ़ा और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है, 28 डाकू की तरह वह ताक लगाए बैठ कर मर्दों में बेवफ़ाओं का इज़ाफ़ा करती है।

-१८-

29 कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय करता और लड़ाई-झगड़े में मुलव्वस रहता है? किस को बिलावजह चोटें लगती, किस की आँखें धुन्दली सी रहती हैं? 30 वह जो रात गए तक मै पीने और मसालेदार मै से मज़ा लेने में मसरूफ़ रहता है। 31 मै को तकता न रह, ख़्वाह उस का सुख़ रंग कितनी ख़ूबसूरती से प्याले में क्यूँ न चमके, ख़्वाह उसे बड़े मज़े से क्यूँ न पिया जाए। 32 अन्जामकार वह तुझे साँप की तरह काटेगी, नाग की तरह डसेगी। 33 तेरी आँखें अजीब-ओ-ग़रीब मन्ज़र देखेंगी और तेरा दिल बेतुकी बातें हक़लाएगा। 34 तू समुन्दर के बीच में लेटने वाले की मानिन्द होगा, उस जैसा जो मस्तूल पर चढ़ कर लेट गया हो। 35 तू कहेगा, "मेरी पिटाई हुई लेकिन दर्द मत्सूस न हुआ, मुझे मारा गया लेकिन मालूम न हुआ। मैं कब जाग उठूँगा ताकि दुबारा शराब की तरफ़ रुख़ कर सकूँ?"

-१९-

24 शरीरों से हसद न कर, न उन से सोहबत रखने की आर्जू रख, 2 क्योंकि उन का दिल जुल्म करने पर तुला रहता है, उन के हॉट दूसरों को दुख पहुँचाते हैं।

-२०-

3 हिक्मत घर को तामीर करती, समझ उसे मज़बूत बुन्याद पर खड़ा कर देती, 4 और इल्म-ओ-इफ़ान उस के कमरों को बेशक़ीमत और मनमोहन चीज़ों से भर देता है।

-२१-

५दानिशमन्द को ताक़त हासिल होती और इल्म रखने वाले की कुक्कत बढ़ती रहती है, ६क्यूँकि जंग करने के लिए हिदायत और फ़तह पाने के लिए मुतअद्दिद मुशीरों की ज़रूरत होती है।

-२२-

७हिक्मत इतनी बुलन्द-ओ-बाला है कि अहमक उसे पा नहीं सकता। जब बुजुर्ग शहर के दरवाज़े में फ़ैसला करने के लिए जमा होते हैं तो वह कुछ नहीं कह सकता।

-२३-

८बुरे मन्सूबे बांधने वाला साज़िशी कहलाता है। ९अहमक की चालाकियाँ गुनाह हैं, और लोग तानाज़न से घिन खाते हैं।

-२४-

१०अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हार कर ढीला हो जाए तो तेरी ताक़त जाती रहेगी।

-२५-

११जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें छुड़ा, जो क़साई की तरफ़ डगमगाते हुए जा रहे हैं उन्हें रोक दे। १२शायद तू कहे, "हमें तो इस के बारे में इल्म नहीं था।" लेकिन यक़ीन जान, जो दिल की जाँच-पड़ताल करता है वह बात समझता है, जो तेरी जान की देख-भाल करता है उसे मालूम है। वह इन्सान को उस के आमाल का बदला देता है।

-२६-

१३मेरे बेटे, शहद खा क्यूँकि वह अच्छा है, छत्ते का खालिस शहद मीठा है। १४जान ले कि हिक्मत इसी तरह तेरी जान के लिए मीठी है। अगर तू उसे पाए तो तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल अच्छा होगा।

-२७-

१५ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक लगाए मत बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह न कर। १६क्यूँकि गो रास्तबाज़ सात बार गिर जाए तो भी हर बार दुबारा उठ खड़ा होगा जबकि बेदीन एक बार ठोकर खा कर मुसीबत में फंसा रहेगा।

-२८-

१७अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो खुश न हो, अगर वह ठोकर खाए तो तेरा दिल जश्न न मनाए। १८ऐसा न हो कि खब यह देख कर तेरा खव्या पसन्द न करे और अपना गुस्सा दुश्मन पर उतारने से बाज़ आए।

-२९-

१९बदकारों को देख कर मुश्तइल न हो जा, बेदीनों के बाइस कुढ़ता न रह। २०क्यूँकि शरीरों का कोई मुस्तक़बिल नहीं, बेदीनों का चरागा बुझ जाएगा।

-३०-

२१मेरे बेटे, ख और बादशाह का खौफ़ मान, और सरकशों में शरीक न हो। २२क्यूँकि अचानक ही उन पर आफ़त आएगी, किसी को पता ही नहीं चलेगा जब दोनों उन पर हम्ला करके उन्हें तबाह कर देंगे।

दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें

२३ज़ैल में दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें क़लमबन्द हैं।

अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात है। २४जो कुसूरवार से कहे, "तू बेकुसूर है" उस पर क़ौम लानत भेजेगी, उस की सरज़निश उम्मतें करेंगी। २५लेकिन जो कुसूरवार को मुजरिम ठहराए वह खुशहाल होगा, उसे कस्रत की बरकत मिलेगी।

२६सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिन्द है।

²⁷पहले बाहर का काम मुकम्मल करके अपने खेतों को तय्यार कर, फिर ही अपना घर तामीर कर।

²⁸बिलावजह अपने पड़ोसी के खिलाफ़ गवाही मत दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका देना चाहता है?

²⁹मत कहना, “जिस तरह उस ने मेरे साथ किया उसी तरह मैं उस के साथ करूँगा, मैं उस के हर फ़ेल का मुनासिब जवाब दूँगा।”

³⁰एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी के खेत और अंगूर के बाग़ में से गुज़रा।

³¹हर जगह काँटेदार झाड़ियाँ फैली हुई थीं, खुदरौ पौदे पूरी ज़मीन पर छा गए थे। उस की चारदीवारी भी गिर गई थी। ³²यह देख कर मैं ने दिल से ध्यान दिया और सबक़ सीख लिया,

³³अगर तू कहे, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि मैं आराम कर सकूँ” ³⁴तो खबरदार, जल्द ही गुर्बत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह तुझ पर आ पड़ेगी।

सुलैमान की मज़ीद कहावतें

25 ज़ैल में सुलैमान की मज़ीद कहावतें दर्ज हैं जिन्हें यहूदाह के बादशाह हिज़क्रियाह के लोगों ने जमा किया।

²अल्लाह का जलाल इस में ज़ाहिर होता है कि वह मुआमला पोशीदा रखता है, बादशाह का जलाल इस में कि वह मुआमले की तहक़ीक़ करता है।

³जितना आसमान बुलन्द और ज़मीन गहरी है उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं लगाया जा सकता।

⁴चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बर्तन बनाने में कामयाब हो जाएगा, ⁵बेदीन को बादशाह के हुज़ूर से दूर करो तो उस का तख़्त रास्ती की बुन्याद पर क़ाइम रहेगा।

⁶बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न कर, न इज़ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा जो बुजुर्गों के लिए मख़सूस है। ⁷इस से पहले कि शुरफ़ा के सामने ही तेरी बेइज़ज़ती हो जाए बेहतर है कि तू पीछे खड़ा हो जा और बाद में कोई तुझ से कहे, “यहाँ सामने आ जाँएँ।”

जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत में पेश करने में ⁸जल्दबाज़ी न कर, क्योंकि तू क्या करेगा अगर तेरा पड़ोसी तेरे मुआमले को झूटला कर तुझे शर्मिन्दा करे?

⁹अदालत में अपने पड़ोसी से लड़ते वक़्त वह बात बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी में तेरे सपुर्द की, ¹⁰ऐसा न हो कि सुनने वाला तेरी बेइज़ज़ती करे। तब तेरी बदनामी कभी नहीं मिटेगी।

¹¹वक़्त पर मौज़ूँ बात चाँदी के बर्तन में सोने के सेब की मानिन्द है। ¹²दानिशमन्द की नसीहत क़बूल करने वाले के लिए सोने की बाली और ख़ालिस सोने के गुलूबन्द की मानिन्द है।

¹³क्राबिल-ए-एतिमाद क़ासिद भेजने वाले के लिए फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक़ जैसा है, इस तरह वह अपने मालिक की जान को तर-ओ-ताज़ा कर देता है।

¹⁴जो शेख़ी मार कर तोहफ़ों का वादा करे लेकिन कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की मानिन्द है जो बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।

¹⁵हुक्मरान को तहम्मूल से क़ाइल किया जा सकता, और नर्म ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के क़ाबिल है।

¹⁶अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से ज़्यादा मत खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे क़ै आएगी।

¹⁷अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से अपने क़दमों को रोक, वर्ना वह तंग आ कर तुझ से नफ़रत करने लगेगा।

¹⁸जो अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूटी गवाही दे वह हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर जैसा नुक़सानदेह है।

¹⁹मुसीबत के वक्रत बेवफ़ा पर एतिबार करना खराब दौत या डगमगाते पाँओ की तरह तक्लीफ़दिह है।

²⁰दुखते दिल के लिए गीत गाना उतना ही गैरमौजू है जितना सर्दियों के मौसम में क्रमीस उतारना या सोडे पर सिरका डालना।

²¹अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला।
²²क्यूँकि ऐसा करने से तू उस के सर पर जलते हुए कोएलों का ढेर लगाएगा, और रब तुझे अज़ देगा।

²³जिस तरह काले बादल लाने वाली हवा बारिश पैदा करती है उसी तरह बातूनी की चुपके से की गई बातों से लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं।

²⁴झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निस्बत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।

²⁵दूरदराज़ मुल्क की खुशखबरी प्यासे गले में ठंडा पानी है।

²⁶जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने लगे, वह गदला चश्मा और आलूदा कुआँ है।

²⁷ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न ही ज़्यादा अपनी इज़ज़त की फ़िक्र करना।

²⁸जो अपने आप पर क़ाबू न पा सके वह उस शहर की मानिन्द है जिस की फ़सील ढा दी गई है।

26 अहमक़ की इज़ज़त करना उतना ही गैरमौजू है जितना मौसम-ए-गर्मा में बर्फ़ या फ़सल काटते वक्रत बारिश।

²बिलावजह भेजी हुई लानत फ़डफ़ड़ाती चिड़िया या उड़ती हुई अबाबील की तरह ओझल हो कर बेअसर रह जाती है।

³घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और अहमक़ की पीठ को लाठी से तर्बियत दे।

⁴जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब न दे, वर्ना तू उसी के बराबर हो जाएगा।

⁵जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब दे, वर्ना वह अपनी नज़र में दानिशमन्द ठहरेगा।

⁶जो अहमक़ के हाथ पैगाम भेजे वह उस की मानिन्द है जो अपने पाँओ पर कुल्हाड़ी मार कर अपने आप से ज़ियादती करता है।¹

⁷अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात मफ़्लूज की बेहरकत लटकती टाँगों की तरह बेकार है।

⁸अहमक़ का एहतिराम करना गुलेल के साथ पत्थर बांधने के बराबर है।

⁹अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात नशे में धुत शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी की मानिन्द है।

¹⁰जो अहमक़ या हर किसी गुज़रने वाले को काम पर लगाए वह सब को ज़ख़मी करने वाले तीरअन्दाज़ की मानिन्द है।

¹¹जो अहमक़ अपनी हमाक़त दोहराए वह अपनी क़ै के पास वापस आने वाले कुत्ते की मानिन्द है।

¹²क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आप को दानिशमन्द समझता है? उस की निस्बत अहमक़ के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।

¹³काहिल कहता है, "रास्ते में शेर है, हाँ चौकों में शेर फिर रहा है!"

¹⁴जिस तरह दरवाज़ा क़ब्ज़े पर घूमता है उसी तरह काहिल अपने बिस्तर पर करवटें बदलता है।

¹⁵जब काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन में डाल दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह तक वापस नहीं ला सकता।

¹⁶काहिल अपनी नज़र में हिक्मत से जवाब देने वाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा दानिशमन्द है।

¹⁷जो गुज़रते वक्रत दूसरों के झगड़े में मुदाख़लत करे वह उस आदमी की मानिन्द है जो कुत्ते को कानों से पकड़ ले।

¹लफ़्ज़ी तर्जुमा : ज़ियादती का प्याला पीता है।

18-19 जो अपने पड़ोसी को फ़रेब दे कर बाद में कहे, "मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था" वह उस दीवाने की मानिन्द है जो लोगों पर जलते हुए और मोहलक तीर बरसाता है।

20 लकड़ी के ख़त्म होने पर आग बुझ जाती है, तोहमत लगाने वाले के चले जाने पर झगड़ा बन्द हो जाता है।

21 अंगारों में कोएले और आग में लकड़ी डाल तो आग भड़क उठेगी। झगड़ालू को कहीं भी खड़ा कर तो लोग मुश्तइल हो जाएंगे।

22 तोहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुक़्मों जैसी हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

23 जलने वाले होंट और शरीर दिल मिट्टी के उस बर्तन की मानिन्द हैं जिसे चमकदार बनाया गया हो।

24 नफ़रत करने वाला अपने होंटों से अपना असली रूप छुपा लेता है, लेकिन उस का दिल फ़रेब से भरा रहता है। 25 जब वह मेहरबान बातें करे तो उस पर यक़ीन न कर, क्योंकि उस के दिल में सात मकरूह बातें हैं। 26 गो उस की नफ़रत फ़िलहाल फ़रेब से छुपी रहे, लेकिन एक दिन उस का ग़लत किरदार पूरी जमाअत के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।

27 जो दूसरों को फंसाने के लिए गढ़ा खोदे वह उस में खुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़का कर दूसरों पर फैंकना चाहे उस पर ही पत्थर वापस लुढ़क जाएगा।

28 झूठी ज़बान उन से नफ़रत करती है जिन्हें वह कुचल देती है, खुशामद करने वाला मुँह तबाही मचा देता है।

27 उस पर शेख़ी न मार जो तू कल करेगा, तुझे क्या मालूम कि कल का दिन क्या कुछ फ़राहम करेगा?

2 तेरा अपना मुँह और अपने होंट तेरी तारीफ़ न करें बल्कि वह जो तुझ से वाकिफ़ भी न हो।

3 पत्थर भारी और रेत वज़नी है, लेकिन जो अहमक़ तुझे तंग करे वह ज़्यादा नाक्राबिल-ए-बर्दाश्त है।

4 गुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की तरह इन्सान पर आ जाता है, लेकिन कौन हसद का मुक्राबला कर सकता है?

5 खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर है।

6 प्यार करने वाले की ज़र्बें वफ़ा का सबूत हैं, लेकिन नफ़रत करने वाले के मुतअहिद बोसों से खबरदार रह।

7 जो सेर है वह शहद को भी पाँओ तले रौंद देता है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ें भी मीठी लगती हैं।

8 जो आदमी अपने घर से निकल कर मारा मारा फिरे वह उस परिन्दे की मानिन्द है जो अपने घोंसले से भाग कर कभी इधर कभी इधर फड़फड़ाता रहता है।

9 तेल और बखूर दिल को खुश करते हैं, लेकिन दोस्त अपने अच्छे मश्वरों से खुशी दिलाता है।

10 अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने ज़ाती दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को। तब तुझे मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद नहीं माँगनी पड़ेगी। क्योंकि क़रीब का पड़ोसी दूर के भाई से बेहतर है।

11 मेरे बेटे, दानिशमन्द बन कर मेरे दिल को खुश कर ताकि मैं अपने हक़ीर जानने वाले को जवाब दे सकूँ।

12 ज़हीन आदमी खतरा पहले से भाँप कर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर उस की लपेट में आ जाता है।

13 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया है। अगर वह अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उस ने दी थी।

14जो सुब्ह-सवेरे बुलन्द आवाज़ से अपने पड़ोसी को बरकत दे उस की बरकत लानत ठहराई जाएगी।

15झगड़ालू बीवी मूसलाधार बारिश के बाइस मुसलसल टपकने वाली छत की मानिन्द है। 16उसे रोकना हवा को रोकने या तेल को पकड़ने के बराबर है।

17लोहा लोहे को और इन्सान इन्सान के ज़हन को तेज़ करता है।

18जो अन्जीर के दरख्त की देख-भाल करे वह उस का फल खाएगा, जो अपने मालिक की वफ़ादारी से खिदमत करे उस का एहतिराम किया जाएगा।

19जिस तरह पानी चेहरे को मुनअकिस करता है उसी तरह इन्सान का दिल इन्सान को मुनअकिस करता है।

20न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं, न इन्सान की आँखें।

21सोना और चाँदी कुठाली में पिघला कर पाक-साफ़ कर, लेकिन इन्सान का किरदार इस से मालूम कर कि लोग उस की कितनी क्रदर करते हैं।

22अगर अहमक्र को अनाज की तरह ओखली और मूसल से कूटा भी जाए तो भी उस की हमाक़त दूर नहीं हो जाएगी।

23एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की हालत पर ध्यान दे, अपने रेवड़ों पर खूब तवज्जुह दे। 24क्यूँकि कोई भी दौलत हमेशा तक क्राइम नहीं रहती, कोई भी ताज नस्त-दर-नस्त बरकरार नहीं रहता। 25खुले मैदान में घास काट कर जमा कर ताकि नई घास उग सके, चारा पहाड़ों से भी इकट्ठा कर। 26तब तू भेड़ों की ऊन से कपड़े बना सकेगा, बकरो की फ़रोख्त से खेत खरीद सकेगा, 27और बकरियाँ इतना दूध देंगी कि तेरे, तेरे खानदान और तेरे नौकर-चाकरों के लिए काफ़ी होगा।

28 बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि ताक्कुब करने वाला कोई नहीं

होता, लेकिन रास्तबाज़ अपने आप को जवान शेरबबर की तरह महफूज़ समझता है।

2मुल्क की खताकारी के सबब से उस की हुकूमत की यगान्गत क्राइम नहीं रहेगी, लेकिन समझदार और दानिशमन्द आदमी उसे बड़ी देर तक क्राइम रखेगा।

3जो गरीब गरीबों पर जुल्म करे वह उस मूसलाधार बारिश की मानिन्द है जो सैलाब ला कर फ़सलों को तबाह कर देती है।

4जिस ने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन की तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के ताबे रहता है वह उस की मुखालफ़त करता है।

5शरीर इन्साफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के तालिब सब कुछ समझते हैं।

6बेइल्जाम ज़िन्दगी गुज़ारने वाला गरीब टेढ़ी राहों पर चलने वाले अमीर से बेहतर है।

7जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार बेटा है, लेकिन अय्याशों का साथी अपने बाप की बेइज़्जती करता है।

8जो अपनी दौलत नाजाइज़ सूद से बढ़ाए वह उसे किसी और के लिए जमा कर रहा है, ऐसे शख्स के लिए जो गरीबों पर रहम करेगा।

9जो अपने कान में उंगली डाले ताकि शरीअत की बातें न सुने उस की दुआएँ भी क्राबिल-ए-घिन हैं।

10जो सीधी राह पर चलने वालों को ग़लत राह पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा, लेकिन बेइल्जाम अच्छी मीरास पाएँगे।

11अमीर अपने आप को दानिशमन्द समझता है, लेकिन जो ज़रूरतमन्द समझदार है वह उस का असली किरदार मालूम कर लेता है।

12जब रास्तबाज़ फ़तहयाब हों तो मुल्क की शान-ओ-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं।

13जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा, लेकिन जो उन्हें तस्लीम करके तर्क करे वह रहम पाएगा।

14 मुबारक है वह जो हर वक्रत रब का खौफ़ माने, लेकिन जो अपना दिल सख्त करे वह मुसीबत में फंस जाएगा।

15 पस्तहाल क्रौम पर हुकूमत करने वाला बेदीन गुर्रते हुए शेरबबर और हम्लाआवर रीछ की मानिन्द है।

16 जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ जुल्म होता है, लेकिन जिसे ग़लत नफ़ा से नफ़रत हो उस की उम्र दराज़ होगी।

17 जो किसी को क्रल्ल करे वह मौत तक अपने कुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा फिरेगा। ऐसे शख्स का सहारा न बन!

18 जो बेइल्ज़ाम जिन्दगी गुज़ारे वह बचा रहेगा, लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह अचानक ही गिर जाएगा।

19 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह जी भर कर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ुज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह गुर्बत से सेर हो जाएगा।

20 क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी को कस्रत की बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग भाग कर दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे वह सज़ा से नहीं बचेगा।

21 जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इन्सान रोटी का टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम बन जाता है।

22 लालची भाग भाग कर दौलत जमा करता है, उसे मालूम ही नहीं कि इस का अन्जाम गुर्बत ही है।

23 आखिरकार नसीहत देने वाला चापलूसी करने वाले से ज़्यादा मन्ज़ूर होता है।

24 जो अपने बाप या माँ को लूट कर कहे, "यह जुर्म नहीं है" वह मोहलक क़ातिल का शरीक-ए-कार होता है।

25 लालची झगड़ों का मम्बा रहता है, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे वह खुशहाल रहेगा।

26 जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह बेवुकूफ़ है, लेकिन जो हिक्मत की राह पर चले वह महफूज़ रहेगा।

27 ग़रीबों को देने वाला ज़रूरतमन्द नहीं होगा, लेकिन जो अपनी आँखें बन्द करके उन्हें नज़रअन्दाज़ करे उस पर बहुत लानतें आएँगी।

28 जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं, लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों की तादाद बढ़ जाती है।

29 जो मुतअहिद नसीहतों के बावजूद हटधर्म रहे वह अचानक ही बर्बाद हो जाएगा, और शिफ़ा का इम्कान ही नहीं होगा।

2 जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो क्रौम खुश होती, लेकिन जब बेदीन हुकूमत करे तो क्रौम आहें भर्ती है।

3 जिसे हिक्मत प्यारी हो वह अपने बाप को खुशी दिलाता है, लेकिन कस्बियों का साथी अपनी दौलत उड़ा देता है।

4 बादशाह इन्साफ़ से मुल्क को मुस्तहक़म करता, लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे तबाह करता है।

5 जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह उस के क्रदमों के आगे जाल बिछाता है।

6 शरीर जुर्म करते वक्रत अपने आप को फंसा देता, लेकिन रास्तबाज़ खुशी मना कर शादमान रहता है।

7 रास्तबाज़ पस्तहालों के हुकूक का खयाल रखता है, लेकिन बेदीन परवा ही नहीं करता।

8 तानाज़न शहर में अफ़ा-तफ़्री मचा देते जबकि दानिशमन्द गुस्सा ठंडा कर देते हैं।

9 जब दानिशमन्द आदमी अदालत में अहमक़ से लड़े तो अहमक़ तैश में आ जाता या क्रहक़हा लगाता है, सुकून का इम्कान ही नहीं होता।

10 खूँखार आदमी बेइल्ज़ाम शख्स से नफ़रत करता, लेकिन सीधी राह पर चलने वाला उस की बेहतरी चाहता है।

11 अहमक़ अपना पूरा गुस्सा उतारता, लेकिन दानिशमन्द उसे रोक कर क़ाबू में रखता है।

12जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उस के तमाम मुलाज़िम बेदीन होंगे।

13जब गरीब और ज़ालिम की मुलाक्रात होती है तो दोनों की आँखों को रौशन करने वाला रब ही है।

14जो बादशाह दिया नतदारी से ज़रूरतमन्द की अदालत करे उस का तख्त हमेशा तक क़ाइम रहेगा।

15छड़ी और नसीहत हिक्मत पैदा करती हैं। जिसे बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के लिए शर्मिन्दगी का बाइस होगा।

16जब बेदीन फलें फूलें तो गुनाह भी फलता फूलता है, लेकिन रास्तबाज़ उन की शिकस्त के गवाह होंगे।

17अपने बेटे की तर्बियत कर तो वह तुझे सुकून और खुशी दिलाएगा।

18जहाँ रोया नहीं वहाँ क्रौम बेलगाम हो जाती है, लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत के ताबे रहता है।

19नौकर सिर्फ़ अल्फ़ाज़ से नहीं सुधरता। अगर वह बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं देगा।

20क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने में जल्दबाज़ है? उस की निस्बत अहमक़ के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।

21जो गुलाम जवानी से नाज़-ओ-नेमत में पल कर बिगड़ जाए उस का बुरा अन्जाम होगा।

22ग़ज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता है, गुसीले शरख़ से मुतअद्दिद गुनाह सरज़द होते हैं।

23तकब्बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा जबकि फ़रोतन शरख़ इज़ज़त पाएगा।

24जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से नफ़रत रखता है। गो उस से हलफ़ उठवाया जाए कि चोरी के बारे में गवाही दे तो भी कुछ नहीं बताता बल्कि हलफ़ की लानत की ज़द में आ जाता है।

25जो इन्सान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फंस जाएगा, लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह महफूज़ रहेगा।

26बहुत लोग हुक्मरान की मन्जूरी के तालिब रहते हैं, लेकिन इन्साफ़ रब ही की तरफ़ से मिलता है।

27रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी राह पर चलने वाले से घिन खाता है।

अज़ूर की कहावतें

30 ज़ैल में अज़ूर बिन याक्रा की कहावतें हैं। वह मस्सा का रहने वाला था। उस ने फ़रमाया,

ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही। थ्यक्रीनन मैं इन्सानों में सब से ज़्यादा नादान हूँ, मुझे इन्सान की समझ हासिल नहीं। ३न मैं ने हिक्मत सीखी, न कुहूस खुदा के बारे में इल्म रखता हूँ।

4कौन आसमान पर चढ़ कर वापस उतर आया? किस ने हवा को अपने हाथों में जमा किया? किस ने गहरे पानी को चादर में लपेट लिया? किस ने ज़मीन की हुदूद को अपनी अपनी जगह पर क़ाइम किया है? उस का नाम क्या है, उस के बेटे का क्या नाम है? अगर तुझे मालूम हो तो मुझे बता!

5अल्लाह की हर बात आज़मूदा है, जो उस में पनाह ले उस के लिए वह ढाल है।

6उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वर्ना वह तुझे डाँटेगा और तू झूटा ठहरेगा।

7ऐ रब, मैं तुझ से दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे मरने से पहले इन से इन्कार न कर। 8पहले, दरोगोई और झूट मुझ से दूर रख। दूसरे, न गुर्बत न दौलत मुझे दे बल्कि उतनी ही रोटी जितनी मेरा हक़ है, 9ऐसा न हो कि मैं दौलत के बाइस सेर हो कर तेरा इन्कार करूँ और

कहूँ, “रब कौन है?” ऐसा भी न हो कि मैं गुर्वत के बाइस चोरी करके अपने खुदा के नाम की बेहुरमती करूँ।

¹⁰मालिक के सामने मुलाज़िम पर तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझे पर लानत भेजे और तुझे इस का बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

¹¹ऐसी नस्ल भी है जो अपने बाप पर लानत करती और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।

¹²ऐसी नस्ल भी है जो अपनी नज़र में पाक-साफ़ है, गो उस की गिलाज़त दूर नहीं हुई।

¹³ऐसी नस्ल भी है जिस की आँखें बड़े तकब्बुर से देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती है।

¹⁴ऐसी नस्ल भी है जिस के दाँत तलवारों और जबड़े छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को खा जाएँ, मुआशरे के ज़रूरतमन्दों को हड़प कर लें।

¹⁵जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा जो चीखते रहते हैं, “और दो, और दो”

तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होतीं बल्कि चार हैं जो कभी नहीं कहतीं, “अब बस करो, अब काफ़ी है,” ¹⁶पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन जिस की प्यास कभी नहीं बुझती और आग जो कभी नहीं कहती, “अब बस करो, अब काफ़ी है।”

¹⁷जो आँख बाप का मज़ाक़ उड़ाए और माँ की हिदायत को हक़ीर जाने उसे वादी के कच्चे अपनी चोंचों से निकालेंगे और गिद्ध के बच्चे खा जाएंगे।

¹⁸तीन बातें मुझे हैरतज़दा करती हैं बल्कि चार हैं जिन की मुझे समझ नहीं आती, ¹⁹आसमान की बुलन्दियों पर उकाब की राह, चटान पर साँप की राह, समुन्दर के बीच में जहाज़ की राह और वह राह जो मर्द कुंवारी के साथ चलता है।

²⁰ज़िनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती और फिर अपना मुँह पोंछ कर कहती है, “मुझ से कोई ग़लती नहीं हुई।”

²¹ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि चार चीज़ें बर्दाशत नहीं कर सकती, ²²वह गुलाम जो बादशाह बन जाए, वह अहमक़ जो जी भर कर खाना खा सके, ²³वह नफ़रतअंगेज़^a औरत जिस की शादी हो जाए और वह नौकरानी जो अपनी मालिकन की मिलकियत पर क़ब्ज़ा करे।

²⁴ज़मीन की चार मख़्लूक़ात निहायत ही दानिशमन्द हैं हालाँकि छोटी हैं। ²⁵च्यूँटियाँ कमज़ोर नस्ल हैं लेकिन गर्मियों के मौसम में सर्दियों के लिए ख़ुराक जमा करती हैं, ²⁶बिज्जू कमज़ोर नस्ल हैं लेकिन चटानों में ही अपने घर बना लेते हैं, ²⁷टिड्डियों का बादशाह नहीं होता ताहम सब परे बांध कर निकलती हैं, ²⁸छिपकलियाँ गो हाथ से पकड़ी जाती हैं, ताहम शाही महलों में पाई जाती हैं।

²⁹तीन बल्कि चार जानदार पुरवकार अन्दाज़ में चलते हैं। ³⁰पहले, शेरबबर जो जानवरों में ज़ोर-आवर है और किसी से भी पीछे नहीं हटता, ³¹दूसरे, मुर्गा जो अकड़ कर चलता है, तीसरे, बकरा और चौथे अपनी फ़ौज के साथ चलने वाला बादशाह।

³²अगर तू ने मगरूर हो कर हमाक़त की या बुरे मन्सूबे बांधे तो अपने मुँह पर हाथ रख कर खामोश हो जा, ³³क्यूँकि दूध बिलोने से मक्खन, नाक को मरोड़ने^b से खून और किसी को गुस्सा दिलाने से लड़ाई-झगड़ा पैदा होता है।

लमूल की कहावतें

31 ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमूल की कहावतें हैं। उस की माँ ने उसे यह तालीम दी,

२ए मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों से पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? ³अपनी

^aलफ़ज़ी तर्जुमा : जिस से नफ़रत की जाती है।

^bलफ़ज़ी तर्जुमा : दबाओ डालने।

पूरी ताक़त औरतों पर ज़ाए न कर, उन पर जो बादशाहों की तबाही का बाइस हैं।

4ए लमूएल, बादशाहों के लिए मै पीना मुनासिब नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की आर्जू रखना मौजूँ नहीं। 5ऐसा न हो कि वह पी पी कर क़वानीन भूल जाएँ और तमाम मज़्लूमों का हक़ मारें। 6शराब उन्हें पिला जो तबाह होने वाले हैं, मै उन्हें पिला जो ग़म खाते हैं, 7ऐसे ही पी पी कर अपनी गुर्बत और मुसीबत भूल जाएँ।

8अपना मुँह उन के लिए खोल जो बोल नहीं सकते, उन के हक़ में जो ज़रूरतमन्द हैं। 9अपना मुँह खोल कर इन्साफ़ से अदालत कर और मुसीबतज़दा और ग़रीबों के हुकूक़ मटफ़ूज़ रख।

सुघड़ बीवी की तारीफ़

10सुघड़ बीवी कौन पा सकता है? ऐसी औरत मोतियों से कहीं ज़यादा बेशक़ीमत है। 11उस पर उस के शौहर को पूरा एतिमाद है, और वह नफ़ा से महरूम नहीं रहेगा। 12उम्र भर वह उसे नुक्सान नहीं पहुँचाएगी बल्कि बरकत का बाइस होगी।

13वह ऊन और सन चुन कर बड़ी मेहनत से धागा बना लेती है। 14तिजारती जहाज़ों की तरह वह दूरदराज़ इलाक़ों से अपनी रोटी ले आती है।

15वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है ताकि अपने घर वालों के लिए खाना और अपनी नौकरानियों के लिए उन का हिस्सा तय्यार करे। 16सोच-बिचार के बाद वह खेत खरीद लेती, अपने कमाए हुए पैसों से अंगूर का बाग़ लगा लेती है।

17ताक़त से कमरबस्ता हो कर वह अपने बाजूओं को मज़बूत करती है। 18वह मट्सूस

करती है, "मेरा कारोबार फ़ाइदामन्द है," इस लिए उस का चराग़ रात के वक़्त भी नहीं बुझता। 19उस के हाथ हर वक़्त ऊन और कतान कातने में मसरूफ़ रहते हैं। 20वह अपनी मुट्ठी मुसीबतज़दों और ग़रीबों के लिए खोल कर उन की मदद करती है। 21जब बर्फ़ पड़े तो उसे घर वालों के बारे में कोई डर नहीं, क्योंकि सब गर्म गर्म कपड़े पहने हुए हैं। 22अपने बिस्तर के लिए वह अच्छे कम्बल बना लेती, और खुद वह बारीक कतान और अर्ग़वानी रंग के लिबास पहने फिरती है।

23शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुजुर्ग़ उस के शौहर से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और जब कभी कोई फ़ैसला करना हो तो वह भी शूरा में शरीक़ होता है।

24बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें फ़रोख़्त करती है, सौदागर उस के कमरबन्द खरीद लेते हैं।

25वह ताक़त और वक़ार से मुलब्सस रहती और हंस कर आने वाले दिनों का सामना करती है। 26वह हिक्मत से बात करती, और उस की ज़बान पर शफ़ीक़ तालीम रहती है। 27वह सुस्ती की रोटी नहीं खाती बल्कि अपने घर में हर मुआमले की देख-भाल करती है।

28उस के बेटे खड़े हो कर उसे मुबारक कहते हैं, उस का शौहर भी उस की तारीफ़ करके कहता है, 29"बहुत सी औरतें सुघड़ साबित हुई हैं, लेकिन तू उन सब पर सबक़त रखती है!"

30दिलफ़रेबी, धोका और हुस्न पल भर का है, लेकिन जो औरत अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह क़ाबिल-ए-तारीफ़ है। 31उसे उस की मेहनत का अज़्र दो! शहर के दरवाज़ों में उस के काम उस की सताइश करें!।

वाइज़

हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 ज़ैल में वाइज़ के अल्फ़ाज़ क़लमबन्द हैं, उस के जो दाऊद का बेटा और यरूशलम में बादशाह है,

²वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल, बातिल ही बातिल, सब कुछ बातिल ही बातिल है!” ³सूरज तले जो मेहनत-मशक्क़त इन्सान करे उस का क्या फ़ाइदा है? कुछ नहीं! ⁴एक पुश्त आती और दूसरी जाती है, लेकिन ज़मीन हमेशा तक काइम रहती है। ⁵सूरज तुलू और गुरूब हो जाता है, फिर सुरअत से उसी जगह वापस चला जाता है जहाँ से दुबारा तुलू होता है। ⁶हवा जुनूब की तरफ़ चलती, फिर मुड़ कर शिमाल की तरफ़ चलने लगती है। यूँ चक्कर काट काट कर वह बार बार नुक्ता-ए-आगाज़ पर वापस आती है। ⁷तमाम दरया समुन्दर में जा मिलते हैं, तो भी समुन्दर की सतह वही रहती है, क्योंकि दरयाओं का पानी मुसलसल उन सरचश्मों के पास वापस आता है जहाँ से बह निकला है। ⁸इन्सान बातें करते करते थक जाता है और सहीह तौर से कुछ बयान नहीं कर सकता। आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे, “अब बस करो, काफ़ी है।” कान कभी इतना नहीं सुनता कि और न सुनना चाहे। ⁹जो कुछ पेश आया वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया गया वही दुबारा किया जाएगा। सूरज तले

कोई भी बात नई नहीं। ¹⁰क्या कोई बात है जिस के बारे में कहा जा सके, “देखो, यह नई है?” हरगिज़ नहीं, यह भी हम से बहुत देर पहले ही मौजूद थी। ¹¹जो पहले ज़िन्दा थे उन्हें कोई याद नहीं करता, और जो आने वाले हैं उन्हें भी वह याद नहीं करेंगे जो उन के बाद आएँगे।

हिक्मत हासिल करना बातिल है

¹²मैं जो वाइज़ हूँ यरूशलम में इस्राईल का बादशाह था। ¹³मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि जो कुछ आसमान तले किया जाता है उस की हिक्मत के ज़रीए तफ़्तीश-ओ-तहक़ीक़ करूँ। यह काम नागवार है गो अल्लाह ने खुद इन्सान को इस में मेहनत-मशक्क़त करने की ज़िम्मादारी दी है।

¹⁴मैं ने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया जो सूरज तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला कि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। ¹⁵जो पेचदार है वह सीधा नहीं हो सकता, जिस की कमी है उसे गिना नहीं जा सकता।

¹⁶मैं ने दिल में कहा, “हिक्मत में मैं ने इतना इज़ाफ़ा किया और इतनी तरक्की की कि उन सब से सबक़त ले गया जो मुझ से पहले यरूशलम पर हुक्मत करते थे। मेरे दिल

ने बहुत हिक्मत और इल्म अपना लिया है।" 17मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिक्मत समझूँ, नीज़ कि मुझे दीवानगी और हमाक़त की समझ भी आए। लेकिन मुझे मालूम हुआ कि यह भी हवा को पकड़ने के बराबर है। 18क्योंकि जहाँ हिक्मत बहुत है वहाँ रंजीदगी भी बहुत है। जो इल्म-ओ-इफ़ान में इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा करता है।

दुनिया की खुशियाँ बातिल हैं

2 मैं ने अपने आप से कहा, "आ, खुशी को आज़मा कर अच्छी चीज़ों का तजरिबा कर!" लेकिन यह भी बातिल ही निकला। 2मैं बोला, "हंसना बेहूदा है, और खुशी से क्या हासिल होता है?" 3मैं ने दिल में अपना जिस्म मैं से तर-ओ-ताज़ा करने और हमाक़त अपना देने के तरीके ढूँड निकाले। इस के पीछे भी मेरी हिक्मत मालूम करने की कोशिश थी, क्योंकि मैं देखना चाहता था कि जब तक इन्सान आसमान तले जीता रहे उस के लिए क्या कुछ करना मुफ़ीद है।

4मैं ने बड़े बड़े काम अन्जाम दिए, अपने लिए मकान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए, 5मुतअद्दिद बाग़ और पार्क लगा कर उन में मुख्तलिफ़ क्रिस्म के फलदार दरख़्त लगाए। 6फलने फूलने वाले जंगल की आबपाशी के लिए मैं ने तालाब बनवाए। 7मैं ने गुलाम और लौडियाँ खरीद लीं। ऐसे गुलाम भी बहुत थे जो घर में पैदा हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ मिलीं जितनी मुझ से पहले यरूशलम में किसी को हासिल न थीं। 8मैं ने अपने लिए सोना-चाँदी और बादशाहों और सूबों के खज़ाने जमा किए। मैं ने गुलूकार मर्द-ओ-खवातीन हासिल किए, साथ साथ कसत की ऐसी चीज़ें जिन से इन्सान अपना दिल बहलाता है।

9यूँ मैं ने बहुत तरक्की करके उन सब पर सबक़त हासिल की जो मुझ से पहले यरूशलम में थे। और हर काम में मेरी हिक्मत

मेरे दिल में क्राइम रही। 10जो कुछ भी मेरी आँखें चाहती थीं वह मैं ने उन के लिए मुहय्या किया, मैं ने अपने दिल से किसी भी खुशी का इन्कार न किया। मेरे दिल ने मेरे हर काम से लुत्फ़ उठाया, और यह मेरी तमाम मेहनत-मशक्क़त का अज़र रहा।

11लेकिन जब मैं ने अपने हाथों के तमाम कामों का जाइज़ा लिया, उस मेहनत-मशक्क़त का जो मैं ने की थी तो नतीजा यही निकला कि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। सूरज तले किसी भी काम का फ़ाइदा नहीं होता।

सब का एक ही अन्जाम है

12फिर मैं हिक्मत, बेहुदगी और हमाक़त पर ग़ौर करने लगा। मैं ने सोचा, जो आदमी बादशाह की वफ़ात पर तख़्तनशीन होगा वह क्या करेगा? वही कुछ जो पहले भी किया जा चुका है।

13मैं ने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे से बेहतर है उसी तरह हिक्मत हमाक़त से बेहतर है। 14दानिशमन्द के सर में आँखें हैं जबकि अहमक़ अंधेरे ही में चलता है। लेकिन मैं ने यह भी जान लिया कि दोनों का एक ही अन्जाम है। 15मैं ने दिल में कहा, "अहमक़ का सा अन्जाम मेरा भी होगा। तो फिर इतनी ज़यादा हिक्मत हासिल करने का क्या फ़ाइदा है? यह भी बातिल है।" 16क्योंकि अहमक़ की तरह दानिशमन्द की याद भी हमेशा तक नहीं रहेगी। आने वाले दिनों में सब की याद मिट जाएगी। अहमक़ की तरह दानिशमन्द को भी मरना ही है।

17यूँ सोचते सोचते मैं ज़िन्दगी से नफ़रत करने लगा। जो भी काम सूरज तले किया जाता है वह मुझे बुरा लगा, क्योंकि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 18सूरज तले मैं ने जो कुछ भी मेहनत-मशक्क़त से हासिल किया था उस से मुझे नफ़रत हो गई, क्योंकि मुझे यह सब कुछ

उस के लिए छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी जगह आएगा।¹⁹ और क्या मालूम कि वह दानिशमन्द या अहमक होगा? लेकिन जो भी हो, वह उन तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो हासिल करने के लिए मैं ने सूरज तले अपनी पूरी ताक़त और हिक्मत सर्फ़ की है। यह भी बातिल है।

²⁰तब मेरा दिल मायूस हो कर हिम्मत हारने लगा, क्योंकि जो भी मेहनत-मशक्कत मैं ने सूरज तले की थी वह बेकार सी लगी।²¹ क्योंकि ख़्वाह इन्सान अपना काम हिक्मत, इल्म और महारत से क्यों न करे, आखिरकार उसे सब कुछ किसी के लिए छोड़ना है जिस ने उस के लिए एक उंगली भी नहीं हिलाई। यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत है।²² क्योंकि आखिर में इन्सान के लिए क्या कुछ क़ाइम रहता है, जबकि उस ने सूरज तले इतनी मेहनत-मशक्कत और कोशिशों के साथ सब कुछ हासिल कर लिया है? ²³उस के तमाम दिन दुख और रंजीदगी से भरे रहते हैं, रात को भी उस का दिल आराम नहीं पाता। यह भी बातिल ही है।

²⁴इन्सान के लिए सब से अच्छी बात यह है कि खाए पिए और अपनी मेहनत-मशक्कत के फल से लुत्फ़-अन्दोज़ हो। लेकिन मैं ने यह भी जान लिया कि अल्लाह ही यह सब कुछ मुहय्या करता है।²⁵ क्योंकि उस के बग़ैर कौन खा कर खुश हो सकता है? कोई नहीं! ²⁶जो इन्सान अल्लाह को मन्ज़ूर हो उसे वह हिक्मत, इल्म-ओ-इफ़ान और खुशी अता करता है, लेकिन गुनाहगार को वह जमा करने और ज़खीरा करने की ज़िम्मादारी देता है ताकि बाद में यह दौलत अल्लाह को मन्ज़ूर शरख़ के हवाले की जाए। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

हर बात का अपना वक़्त है

3 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती, आसमान तले हर मुआमले का अपना वक़्त होता है,

²जन्म लेने और मरने का,
³पौदा लगाने और उखाड़ने का,
³मार देने और शिफ़ा देने का,
⁴ढा देने और तामीर करने का,
⁴रोने और हँसने का,
⁵आहें भरने और रक्स करने का,
⁵पत्थर फैंकने और पत्थर जमा करने का,
⁶गले मिलने और इस से बाज़ रहने का,
⁶तलाश करने और खो देने का,
⁷महफूज़ रखने और फैंकने का,
⁷फाड़ने और सी कर जोड़ने का,
⁸खामोश रहने और बोलने का,
⁸प्यार करने और नफ़रत करने का,
⁹जंग लड़ने और सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारने का,

⁹चुनाँचे क्या फ़ाइदा है कि काम करने वाला मेहनत-मशक्कत करे?

¹⁰मैं ने वह तक्लीफ़दिह काम-काज देखा जो अल्लाह ने इन्सान के सपुर्द किया ताकि वह उस में उलझा रहे।¹¹ उस ने हर चीज़ को यूँ बनाया है कि वह अपने वक़्त के लिए खूबसूरत और मुनासिब हो। उस ने इन्सान के दिल में जाविदानी भी डाली है, गो वह शुरू से ले कर आखिर तक उस काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने किया है।¹² मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ नहीं है कि वह खुश रहे और जीते जी ज़िन्दगी का मज़ा ले।¹³ क्योंकि अगर कोई खाए पिए और तमाम मेहनत-मशक्कत के साथ साथ खुशहाल भी हो तो यह अल्लाह की बख़्शिश है।

¹⁴मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे वह अबद तक क़ाइम रहेगा। उस में न इज़ाफ़ा हो सकता है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ

इस लिए करता है कि इन्सान उस का ख़ौफ़ माने।¹⁵ जो हाल में पेश आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका है, और जो मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी पेश आ चुका है। हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे अल्लाह दुबारा वापस लाता है।

इन्सान फ़ानी है

¹⁶मैं ने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत करनी है वहाँ नाइन्साफ़ी है, जहाँ इन्साफ़ करना है वहाँ बेदीनी है।¹⁷ लेकिन मैं दिल में बोला, “अल्लाह रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत करेगा, क्योंकि हर मुआमले और काम का अपना वक़्त होता है।”

¹⁸मैं ने यह भी सोचा, “जहाँ तक इन्सानों का ताल्लुक है अल्लाह उन की जाँच-पड़ताल करता है ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिन्द हैं।¹⁹ क्योंकि इन्सान-ओ-हैवान का एक ही अन्जाम है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक सा दम है, इस लिए इन्सान को हैवान की निस्बत ज़्यादा फ़ाइदा हासिल नहीं होता। सब कुछ बातिल ही है।²⁰ सब कुछ एक ही जगह चला जाता है, सब कुछ खाक से बना है और सब कुछ दुबारा खाक में मिल जाएगा।²¹ कौन यक़ीन से कह सकता है कि इन्सान की रूह ऊपर की तरफ़ जाती और हैवान की रूह नीचे ज़मीन में उतरती है?”

²²गरज़ मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में खुश रहे, यही उस के नसीब में है। क्योंकि कौन उसे वह देखने के क़ाबिल बनाएगा जो उस के बाद पेश आएगा? कोई नहीं!

मुर्दों का हाल बेहतर है

4 मैं ने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे वह तमाम जुल्म नज़र आया जो सूरज तले होता है। मज़लूमों के आँसू बहते हैं, और तसल्ली देने वाला कोई नहीं होता। ज़ालिम उन से ज़ियादती करते हैं, और तसल्ली देने

वाला कोई नहीं होता।²³ यह देख कर मैं ने मुर्दों को मुबारक कहा, हालाँकि वह अर्से से वफ़ात पा चुके थे। मैं ने कहा, “वह हाल के ज़िन्दा लोगों से कहीं मुबारक हैं।²⁴ लेकिन इन से ज़्यादा मुबारक वह है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिस ने वह तमाम बुराइयाँ नहीं देखीं जो सूरज तले होती हैं।”

गुर्बत में सुकून बेहतर है

⁴मैं ने यह भी देखा कि सब लोग इस लिए मेहनत-मशक्कत और महारत से काम करते हैं कि एक दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।⁵ एक तरफ़ तो अहमक़ हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने आप को तबाही तक पहुँचाता है।⁶ लेकिन दूसरी तरफ़ अगर कोई मुट्ठी भर रोज़ी कमा कर सुकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके तो यह इस से बेहतर है कि दोनों मुट्ठियाँ सिरतोड़ मेहनत और हवा को पकड़ने की कोशिशों के बाद ही भरें।

तन्हाई की निस्बत मिल

कर रहना बेहतर है

⁷मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल है।⁸ एक आदमी अकेला ही था। न उस के बेटा था, न भाई। वह बेहद मेहनत-मशक्कत करता रहा, लेकिन उस की आँखें कभी अपनी दौलत से मुत्मइन न थीं। सवाल यह रहा, “मैं इतनी सिरतोड़ कोशिश किस के लिए कर रहा हूँ? मैं अपनी जान को ज़िन्दगी के मज़े लेने से क्यूँ महरूम रख रहा हूँ?” यह भी बातिल और नागवार मुआमला है।

⁹दो एक से बेहतर हैं, क्योंकि उन्हें अपने काम-काज का अच्छा अज़्र मिलेगा।¹⁰ अगर एक गिर जाए तो उस का साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा। लेकिन उस पर अप्रसोस जो गिर जाए और कोई साथी न हो जो उसे दुबारा खड़ा करे।¹¹ नीज़, जब दो सर्दियों के मौसम में मिल कर बिस्तर पर लेट जाएँ तो वह गर्म

रहते हैं। जो तन्हा है वह किस तरह गर्म हो जाएगा? ¹²एक शख्स पर क़ाबू पाया जा सकता है जबकि दो मिल कर अपना दिफ़ा कर सकते हैं। तीन लड़ियों वाली रस्सी जल्दी से नहीं टूटती।

क्रौम की क़बूलियत फ़ुज़ूल है

¹³जो लड़का ग़रीब लेकिन दानिशमन्द है वह उस बुजुर्ग लेकिन अहमक़ बादशाह से कहीं बेहतर है जो तम्बीह मानने से इन्कार करे। ¹⁴क्योंकि गो वह बूढ़े बादशाह की हुकूमत के दौरान गुर्बत में पैदा हुआ था तो भी वह जेल से निकल कर बादशाह बन गया। ¹⁵लेकिन फिर मैं ने देखा कि सूरज तले तमाम लोग एक और लड़के के पीछे हो लिए जिसे पहले की जगह तख़्तनशीन होना था। ¹⁶उन तमाम लोगों की इन्तिहा नहीं थी जिन की क्रियादत वह करता था। तो भी जो बाद में आएँगे वह उस से खुश नहीं होंगे। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का ख़ौफ़ मानना

5 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने क़दमों का खयाल रख और सुनने के लिए तय्यार रह। यह अहमक़ों की कुर्बानियों से कहीं बेहतर है, क्योंकि वह जानते ही नहीं कि ग़लत काम कर रहे हैं।

²बोलने में जल्दबाज़ी न कर, तेरा दिल अल्लाह के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी न करे। अल्लाह आसमान पर है जबकि तू ज़मीन पर ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम बातें करे। ³क्योंकि जिस तरह हृद से ज़्यादा मेहनत-मशक्क़त से ख़्वाब आने लगते हैं उसी तरह बहुत बातें करने से आदमी की हमाक़त ज़ाहिर होती है।

⁴अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर मत कर। वह अहमक़ों से खुश नहीं होता, चुनाँचे अपनी मन्नत पूरी कर।

⁵मन्नत न मानना मन्नत मान कर उसे पूरा न करने से बेहतर है।

⁶अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे गुनाह में फंसाए, और अल्लाह के पैग़म्बर के सामने न कह, “मुझ से ग़ैरइरादी ग़लती हुई है।” क्या ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से नाराज़ हो कर तेरी मेहनत का काम तबाह करे?

⁷जहाँ बहुत ख़्वाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ुज़ूल बातें और बेशुमार अल्फ़ाज़ होते हैं। चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मान!

ज़ालिमों का जुल्म

⁸क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो ग़रीबों पर जुल्म करते, उन का हक़ मारते और उन्हें इन्साफ़ से महरूम रखते हैं? ताज्जुब न कर, क्योंकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे की निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद मुलाज़िम मुकर्रर होते हैं। ⁹चुनाँचे मुल्क के लिए हर लिहाज़ से फ़ाइदा इस में है कि ऐसा बादशाह उस पर हुकूमत करे जो काश्तकारी की फ़िक़र करता है।

दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

¹⁰जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुत्मइन नहीं होगा, ख़्वाह उस के पास कितने ही पैसे क्यों न हों। जो ज़रदोसत हो वह कभी आसूदा नहीं होगा, ख़्वाह उस के पास कितनी ही दौलत क्यों न हो। यह भी बातिल ही है। ¹¹जितना माल में इज़ाफ़ा हो उतना ही उन की तादाद बढ़ती है जो उसे खा जाते हैं। उस के मालिक को उस का क्या फ़ाइदा है सिवाए इस के कि वह उसे देख देख कर मज़ा ले? ¹²काम-काज करने वाले की नींद मीठी होती है, ख़्वाह उस ने कम या ज़्यादा खाना खाया हो, लेकिन अमीर की दौलत उसे सोने नहीं देती।

¹³मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात नज़र आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए

महफूज़ रखी वह उस के लिए नुक्सान का बाइस बन गई।¹⁴क्योंकि जब यह दौलत किसी मुसीबत के बाइस तबाह हो गई और आदमी के हॉ बेटा पैदा हुआ तो उस के हाथ में कुछ नहीं था।¹⁵माँ के पेट से निकलते वक्रत वह नंगा था, और इसी तरह कूच करके चला भी जाएगा। उस की मेहनत का कोई फल नहीं होगा जिसे वह अपने साथ ले जा सके।

¹⁶यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह इन्सान आया उसी तरह कूच करके चला भी जाता है। उसे क्या फ़ाइदा हुआ है कि उस ने हवा के लिए मेहनत-मशक्कत की हो? ¹⁷जीते जी वह हर दिन तारीकी में खाना खाते हुए गुज़ारता, ज़िन्दगी भर वह बड़ी रंजीदगी, बीमारी और गुस्से में मुब्तला रहता है।

¹⁸तब मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन अल्लाह ने उसे दिए हैं खाए पिए और सूरज तले अपनी मेहनत-मशक्कत के फल का मज़ा ले, क्योंकि यही उस के नसीब में है।¹⁹क्योंकि जब अल्लाह किसी शख्स को माल-ओ-मता अता करके उसे इस काबिल बनाए कि उस का मज़ा ले सके, अपना नसीब क़बूल कर सके और मेहनत-मशक्कत के साथ साथ खुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बख्शिश है।²⁰ऐसे शख्स को ज़िन्दगी के दिनों पर गौर-ओ-खौज़ करने का कम ही वक्रत मिलता है, क्योंकि अल्लाह उसे दिल में खुशी दिला कर मसरूफ़ रखता है।

6 मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र आई जो इन्सान को अपने बोझ तले दबाए रखती है।

²अल्लाह किसी आदमी को माल-ओ-मता और इज़ज़त अता करता है। गरज़ उस के पास सब कुछ है जो उस का दिल चाहे। लेकिन अल्लाह उसे इन चीज़ों से लुत्फ़ उठाने नहीं देता बल्कि कोई अजनबी उस का मज़ा लेता है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत है।³हो सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा

हों और वह उम्ररसीदा भी हो जाए, लेकिन ख्वाह वह कितना बूढ़ा क्यों न हो जाए, अगर अपनी खुशहाली का मज़ा न ले सके और आखिरकार सहीह रुसूमत के साथ दफ़नाया न जाए तो इस का क्या फ़ाइदा? मैं कहता हूँ कि उस की निस्बत माँ के पेट में ज़ाए हो गए बच्चे का हाल बेहतर है।⁴बेशक ऐसे बच्चे का आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच करके चला जाता बल्कि उस का नाम तक अंधेरे में छुपा रहता है।⁵लेकिन गो उस ने न कभी सूरज देखा, न उसे कभी मालूम हुआ कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे मज़कूरा आदमी से कहीं ज़यादा आराम-ओ-सुकून हासिल है।⁶और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता रहे, लेकिन अपनी खुशहाली से लुत्फ़अन्दोज़ न हो सके तो क्या फ़ाइदा है? सब को तो एक ही जगह जाना है।

⁷इन्सान की तमाम मेहनत-मशक्कत का यह मक़सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस की भूक कभी नहीं मिटती।⁸दानिशमन्द को क्या हासिल है जिस के बाइस वह अहमक़ से बरतर है? इस का क्या फ़ाइदा है कि गरीब आदमी ज़िन्दों के साथ मुनासिब सुलूक करने का फ़न सीख ले? ⁹दूरदराज़ चीज़ों के आरज़ूमन्द रहने की निस्बत बेहतर यह है कि इन्सान उन चीज़ों से लुत्फ़ उठाए जो आँखों के सामने ही हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुकाबला कोई नहीं कर सकता

¹⁰जो कुछ भी पेश आता है उस का नाम पहले ही रखा गया है, जो भी इन्सान वुजूद में आता है वह पहले ही मालूम था। कोई भी इन्सान उस का मुकाबला नहीं कर सकता जो उस से ताक़तवर है।¹¹क्योंकि जितनी भी बातें इन्सान करे उतना ही ज़यादा मालूम होगा कि बातिल हैं। इन्सान के लिए इस का क्या फ़ाइदा?

¹²किस को मालूम है कि उन थोड़े और बेकार दिनों के दौरान जो साय की तरह गुज़र जाते हैं इन्सान के लिए क्या कुछ फ़ाइदामन्द है? कौन उसे बता सकता है कि उस के चले जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश आएगा?

अच्छा क्या है?

7 अच्छा नाम खुशबूदार तेल से और मौत का दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।

²ज़ियाफ़त करने वालों के घर में जाने की निस्बत मातम करने वालों के घर में जाना बेहतर है, क्योंकि हर इन्सान का अन्जाम मौत ही है। जो ज़िन्दा हैं वह इस बात पर ख़ूब ध्यान दें। ³दुख हंसी से बेहतर है, उतरा हुआ चेहरा दिल की बेहतरी का बाइस है। ⁴दानिशमन्द का दिल मातम करने वालों के घर में ठहरता जबकि अहमक़ का दिल ऐश-ओ-इश्रत करने वालों के घर में टिक जाता है।

⁵अहमक़ों के गीत सुनने की निस्बत दानिशमन्द की झिड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है। ⁶अहमक़ के क्रहक़हे देगची तले चटखने वाले काँटों की आग की मानिन्द हैं। यह भी बातिल ही है।

⁷नारवा नफ़ा दानिशमन्द को अहमक़ बना देता, रिश्वत दिल को बिगाड़ देती है।

⁸किसी मुआमले का अन्जाम उस की इब्तिदा से बेहतर है, सब्र करना मगरूर होने से बेहतर है।

⁹गुस्सा करने में जल्दी न कर, क्योंकि गुस्सा अहमक़ों की गोद में ही आराम करता है।

¹⁰यह न पूछ कि आज की निस्बत पुराना ज़माना बेहतर क्यूँ था, क्योंकि यह हिक्मत की बात नहीं।

¹¹अगर हिक्मत के इलावा मीरास में मिलकियत भी मिल जाए तो यह अच्छी बात है, यह उन के लिए सूदमन्द है जो सूरज देखते हैं। ¹²क्योंकि हिक्मत पैसों की तरह पनाह देती है, लेकिन हिक्मत का ख़ास फ़ाइदा यह है कि वह अपने मालिक की जान बचाए रखती है।

¹³अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो कुछ उस ने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा सकता है?

¹⁴खुशी के दिन खुश हो, लेकिन मुसीबत के दिन खयाल रख कि अल्लाह ने यह दिन भी बनाया और वह भी इस लिए कि इन्सान अपने मुस्तक़बिल के बारे में कुछ मालूम न कर सके।

इन्तिहापसन्दों से दरेग कर

¹⁵अपनी अबस ज़िन्दगी के दौरान मैं ने दो बातें देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी के बावुजूद तबाह हो जाता जबकि दूसरी तरफ़ बेदीन अपनी बेदीनी के बावुजूद उम्ररसीदा हो जाता है। ¹⁶न हद से ज़यादा रास्तबाज़ी दिखा, न हद से ज़यादा दानिशमन्दी। अपने आप को तबाह करने की क्या ज़रूरत है? ¹⁷न हद से ज़यादा बेदीनी, न हद से ज़यादा हमाक़त दिखा। मुकर्ररा वक़्त से पहले मरने की क्या ज़रूरत है? ¹⁸अच्छा है कि तू यह बात थामे रखे और दूसरी भी न छोड़े। जो अल्लाह का खौफ़ माने वह दोनों खतरों से बच निकलेगा।

¹⁹हिक्मत दानिशमन्द को शहर के दस हुक्मरानों से ज़यादा ताक़तवर बना देती है। ²⁰दुनिया में कोई भी इन्सान इतना रास्तबाज़ नहीं कि हमेशा अच्छा काम करे और कभी गुनाह न करे।

²¹लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न हो कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह तुझ पर करता है। ²²क्योंकि दिल में तू जानता है कि तू ने खुद मुतअहिद बार दूसरों पर लानत भेजी है।

कौन दानिशमन्द है?

²³हिक्मत के ज़रीए मैं ने इन तमाम बातों की जाँच-पड़ताल की। मैं बोला, "मैं दानिशमन्द बनना चाहता हूँ," लेकिन हिक्मत मुझ से दूर रही। ²⁴जो कुछ मौजूद है वह दूर

और निहायत गहरा है। कौन उस की तह तक पहुँच सकता है? ²⁵चुनौचे मैं रुख बदल कर पूरे ध्यान से इस की तहक्रीक-ओ-तफ़तीश करने लगा कि हिक्मत और मुख्तलिफ़ बातों के सहीह नताइज़ क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी की हमाक़त और बेहुदगी की दीवानगी मालूम करना चाहता था।

²⁶मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तल्ख़ वह औरत है जो फ़ंदा है, जिस का दिल जाल और हाथ ज़न्जीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मन्ज़ूर हो वह बच निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उस के जाल में उलझ जाएगा।

²⁷वाइज़ फ़रमाता है, “यह सब कुछ मुझे मालूम हुआ जब मैं ने मुख्तलिफ़ बातें एक दूसरे के साथ मुन्सलिक कीं ताकि सहीह नताइज़ तक पहुँचूँ। ²⁸लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह न मिला। हज़ार अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक ही दियानतदार मर्द मिला, लेकिन एक भी दियानतदार औरत नहीं।^a

²⁹मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो अल्लाह ने इन्सानों को दियानतदार बनाया, लेकिन वह कई क्रिस्म की चालाकियाँ ढूँड निकालते हैं।”

8 कौन दानिशमन्द की मानिन्द है? कौन बातों की सहीह तश्रीह करने का इल्म रखता है? हिक्मत इन्सान का चेहरा रौशन और उस के मुँह का सख़्त अन्दाज़ नर्म कर देती है।

हुक्मरान का इख़तियार

²मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल, क्योंकि तू ने अल्लाह के सामने हलफ़ उठाया है। ³बादशाह के हुज़ूर से दूर होने में जल्दबाज़ी न कर। किसी बुरे मुआमले में मुब्तलाना न हो जा, क्योंकि उसी की मर्ज़ी चलती है। ⁴बादशाह के फ़रमान के पीछे उस का इख़तियार है, इस लिए कौन उस से पूछे, “तू क्या कर रहा है?”

^a‘दियानतदार’ इज़ाफ़ा है ताकि आयत का जो ग़ालिबन मतलब है वह साफ़ हो जाए।

⁵जो उस के हुक्म पर चले उस का किसी बुरे मुआमले से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्योंकि दानिशमन्द दिल मुनासिब वक़्त और इन्साफ़ की राह जानता है।

⁶क्योंकि हर मुआमले के लिए मुनासिब वक़्त और इन्साफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत इन्सान को दबाए रखती है, ⁷क्योंकि वह नहीं जानता कि मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे यह नहीं बता सकता है। ⁸कोई भी इन्सान हवा को बन्द रखने के क़ाबिल नहीं।^b इसी तरह किसी को भी अपनी मौत का दिन मुक़र्रर करने का इख़तियार नहीं। यह उतना यक़ीनी है जितना यह कि फ़ौजियों को जंग के दौरान फ़ारिश नहीं किया जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं बचाती।

⁹मैं ने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन तमाम बातों पर ध्यान दिया जो सूरज तले होती हैं, जहाँ इस वक़्त एक आदमी दूसरे को नुक़सान पहुँचाने का इख़तियार रखता है।

दुनिया में नाइन्साफ़ी

¹⁰फिर मैं ने देखा कि बेदीनों को इज़ज़त के साथ दफ़नाया गया। यह लोग मक़्दिस के पास आते जाते थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उन की याद शहर में मिट गई। यह भी बातिल ही है।

¹¹मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती, इस लिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मन्सूबों से भर जाते हैं। ¹²गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द होते हैं, तो भी उम्ररसीदा हो जाता है।

बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों की ख़ैर होगी, उन की जो अल्लाह के चेहरे से डरते हैं। ¹³बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्योंकि वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िन्दगी के दिन ज़्यादा नहीं बल्कि साय जैसे आरिज़ी होंगे। ¹⁴तो भी एक और बात दुनिया में पेश आती है जो बातिल है,

^bएक और मुमकिनता तर्जुमा: कोई भी इन्सान अपनी जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है जो बेदीनों को मिलनी चाहिए, और बेदीनों को वह अज़ मिलता है जो रास्तबाज़ों को मिलना चाहिए। यह देख कर मैं बोला, “यह भी बातिल ही है।”

¹⁵चुनाँचे में ने खुशी की तारीफ़ की, क्योंकि सूरज तले इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ नहीं है कि वह खाए पिए और खुश रहे। फिर मेहनत-मशक्कत करते वक़्त खुशी उतने ही दिन उस के साथ रहेगी जितने अल्लाह ने सूरज तले उस के लिए मुकर्रर किए हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाक़ाबिल-ए-फ़हम है

¹⁶मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिक्मत जान लूँ और ज़मीन पर इन्सान की मेहनतों का मुआइना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे दिन रात नींद नहीं आती। ¹⁷तब मैं ने अल्लाह का सारा काम देख कर जान लिया कि इन्सान उस तमाम काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो सूरज तले होता है। ख्वाह वह उस की कितनी तहक़ीक़ क्यों न करे तो भी वह तह तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है कोई दानिशमन्द दावा करे, “मुझे इस की पूरी समझ आई है,” लेकिन ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच सकता।

9 इन तमाम बातों पर मैं ने दिल से ग़ौर किया। इन के मुआइने के बाद मैं ने नतीजा निकाला कि रास्तबाज़ और दानिशमन्द और जो कुछ वह करें अल्लाह के हाथ में हैं। ख्वाह मुहब्बत हो ख्वाह नफ़रत, इस की भी समझ इन्सान को नहीं आती, दोनों की जड़ें उस से पहले माज़ी में हैं। ²सब के नसीब में एक ही अन्जाम है, रास्तबाज़ और बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक के, कुर्बानियाँ पेश करने वाले के और उस के जो कुछ नहीं पेश करता। अच्छे शख्स और

गुनाहगार का एक ही अन्जाम है, हलफ़ उठाने वाले और इस से डर कर गुरेज़ करने वाले की एक ही मन्ज़िल है।

³सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर एक के नसीब में एक ही अन्जाम है। इन्सान का मुलाहज़ा कर। उस का दिल बुराई से भरा रहता बल्कि उम्र भर उस के दिल में बेहुदगी रहती है। लेकिन आख़िरकार उसे मुर्दों में ही जा मिलना है।

⁴जो अब तक ज़िन्दों में शरीक है उसे उम्मीद है। क्योंकि ज़िन्दा कुत्ते का हाल मुर्दा शेर से बेहतर है। ⁵कम अज़ कम जो ज़िन्दा हैं वह जानते हैं कि हम मरेंगे। लेकिन मुर्दे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद कोई अज़ नहीं मिलना है। उन की यादें भी मिट जाती हैं। ⁶उन की मुहब्बत, नफ़रत और ग़ैरत सब कुछ बड़ी देर से जाती रही है। अब वह कभी भी उन कामों में हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते हैं।

ज़िन्दगी के मज़े ले!

⁷चुनाँचे जा कर अपना खाना खुशी के साथ खा, अपनी मै ज़िन्दादिली से पी, क्योंकि अल्लाह काफ़ी देर से तेरे कामों से खुश है। ⁸तेरे कपड़े हर वक़्त सफ़ेद^a हों, तेरा सर तेल से महरूम न रहे। ⁹अपने जीवनसाथी के साथ जो तुझे प्यारा है ज़िन्दगी के मज़े लेता रह। सूरज तले की बातिल ज़िन्दगी के जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख़्श दिए हैं उन्हें इसी तरह गुज़ार! क्योंकि ज़िन्दगी में और सूरज तले तेरी मेहनत-मशक्कत में यही कुछ तेरे नसीब में है। ¹⁰जिस काम को भी हाथ लगाए उसे पूरे जोश-ओ-खुरोश से कर, क्योंकि पाताल में जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है, न मन्सूबा, न इल्म और न हिक्मत।

^aयानी खुशी मनाने के कपड़े।

दुनिया में हिक्मत की क्रूर नहीं की जाती

11 मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यक्रीनी बात नहीं कि मुकाबले में सब से तेज़ दौड़ने वाला जीत जाए, कि जंग में पहलवान फ़्रह पाए, कि दानिशमन्द को खुराक हासिल हो, कि समझदार को दौलत मिले या कि आलिम मन्ज़ूरी पाए। नहीं, सब कुछ मौक़े और इत्तिफ़ाक़ पर मुन्हासिर होता है। 12 नीज़, कोई भी इन्सान नहीं जानता कि मुसीबत का वक़्त कब उस पर आएगा। जिस तरह मछलियाँ ज़ालिम जाल में उलझ जाती या परिन्दे फंदे में फंस जाते हैं उसी तरह इन्सान मुसीबत में फंस जाता है। मुसीबत अचानक ही उस पर आ जाती है।

13 सूरज तले मैं ने हिक्मत की एक और मिसाल देखी जो मुझे अहम लगी।

14 कहीं कोई छोटा शहर था जिस में थोड़े से अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताक़तवर बादशाह उस से लड़ने आया। उस ने उस का मुहासरा किया और इस मक्त्सद से उस के इर्दगिर्द बड़े बड़े बुर्ज खड़े किए। 15 शहर में एक आदमी रहता था जो दानिशमन्द अलबत्ता ग़रीब था। इस शख्स ने अपनी हिक्मत से शहर को बचा लिया। लेकिन बाद में किसी ने भी ग़रीब को याद न किया। 16 यह देख कर मैं बोला, "हिक्मत ताक़त से बेहतर है," लेकिन ग़रीब की हिक्मत हक़ीर जानी जाती है। कोई भी उस की बातों पर ध्यान नहीं देता। 17 दानिशमन्द की जो बातें आराम से सुनी जाएँ वह अहमक़ों के दरमियान रहने वाले हुक्मरान के ज़ोरदार एलानात से कहीं बेहतर हैं। 18 हिक्मत जंग के हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक ही गुनाहगार बहुत कुछ जो अच्छा है तबाह करता है।

मुख्तलिफ़ हिदायात

10 मरी हुई मक्खियाँ ख़ुशबूदार तेल खराब करती हैं, और हिक्मत और इज़ज़त की निस्बत थोड़ी सी हमाक़त का ज़यादा असर होता है।

2 दानिशमन्द का दिल सहीह राह चुन लेता है जबकि अहमक़ का दिल ग़लत राह पर आ जाता है। 3 रास्ते पर चलते वक़्त भी अहमक़ समझ से ख़ाली है, जिस से भी मिले उसे बताता है कि वह बेवुकूफ़ है।^a

4 अगर हुक्मरान तुझ से नाराज़ हो जाए तो अपनी जगह मत छोड़, क्योंकि पुरसुकून रवय्या बड़ी बड़ी ग़लतियाँ दूर कर देता है।

5 मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नज़र आई जो अक्सर हुक्मरानों से सरज़द होती है। 6 अहमक़ को बड़े उल्दों पर फ़ाइज़ किया जाता है जबकि अमीर छोटे उल्दों पर ही रहते हैं। 7 मैं ने गुलामों को घोड़े पर सवार और हुक्मरानों को गुलामों की तरह पैदल चलते देखा है।

8 जो गढ़ा खोदे वह खुद उस में गिर सकता है, जो दीवार गिरा दे हो सकता है कि साँप उसे डसे। 9 जो कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग सकती है, जो लकड़ी चीर डाले वह ज़ख्मी हो जाने के खतरे में है।

10 अगर कुल्हाड़ी कुन्द हो और कोई उसे तेज़ न करे तो ज़यादा ताक़त दरकार है। लिहाज़ा हिक्मत को सहीह तौर से अमल में ला, तब ही कामयाबी हासिल होगी।

11 अगर इस से पहले कि सपेरा साँप पर क़ाबू पाए वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने का क्या फ़ाइदा?

12 दानिशमन्द अपने मुँह की बातों से दूसरों की मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन अहमक़ के अपने ही होंट उसे हड़प कर लेते हैं। 13 उस का बयान अहमक़ाना बातों से शुरू और खतरनाक बेवुकूफ़ियों से खत्म होता है।

^a इब्रानी ज़ुमानी है। दूसरा मतलब 'कि मैं बेवुकूफ़ हूँ' हो सकता है।

14ऐसा शरूख़ बातेँ करने से बाज़ नहीं आता, गो इन्सान मुस्तक्रबिल के बारे में कुछ नहीं जानता। कौन उसे बता सकता है कि उस के बाद क्या कुछ होगा? 15अहमक का काम उसे थका देता है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं जानता।

16उस मुल्क पर अप्रसोस जिस का बादशाह बच्चा है और जिस के बुजुर्ग सुबह ही ज़ियाफ़त करने लगते हैं। 17मुबारक है वह मुल्क जिस का बादशाह शरीफ़ है और जिस के बुजुर्ग नशे में धुत नहीं रहते बल्कि मुनासिब वक़्त पर और नज़म-ओ-ज़ब्त के साथ खाना खाते हैं।

18जो सुस्त है उस के घर के शहतीर झुकने लगते हैं, जिस के हाथ ढीले हैं उस की छत से पानी टपकने लगता है।

19ज़ियाफ़त करने से हंसी-खुशी और मै पीने से ज़िन्दादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा ही सब कुछ मुहय्या करता है।

20खयालों में भी बादशाह पर लानत न कर, अपने सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न भेज, ऐसा न हो कि कोई परिन्दा तेरे अल्फ़ाज़ ले कर उस तक पहुँचाए।

मेहनत का फ़ाइदा

11 अपनी रोटी पानी पर फैंक कर जाने दे तो मुतअद्दिद दिनों के बाद वह तुझे फिर मिल जाएगी। 2अपनी मिलकियत सात बल्कि आठ मुख्तलिफ़ कामों में लगा दे, क्योंकि तुझे क्या मालूम कि मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

3अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर बारिश ज़रूर होगी। दरख्त जुनूब या शिमाल की तरफ़ गिर जाए तो उसी तरफ़ पड़ा रहेगा।

4जो हर वक़्त हवा का रुख़ देखता रहे वह कभी बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता रहे वह कभी फ़सल की कटाई नहीं करेगा।

5जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम हैं, न यह कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह

तश्कील पाता है उसी तरह तू अल्लाह का काम नहीं समझ सकता, जो सब कुछ अमल में लाता है।

6सुबह के वक़्त अपना बीज बो और शाम को भी काम में लगा रह, क्योंकि क्या मालूम कि किस काम में कामयाबी होगी, इस में, उस में या दोनों में।

अपनी जवानी से लुत्फ़अन्दोज़ हो

7रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों के लिए कितना खुशगवार है। 8जितने भी साल इन्सान ज़िन्दा रहे उतने साल वह खुशबाश रहे। साथ साथ उसे याद रहे कि तारीक़ दिन भी आने वाले हैं, और कि उन की बड़ी तादाद होगी। जो कुछ आने वाला है वह बातिल ही है।

9ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है खुश रह और जवानी के मज़े लेता रह। जो कुछ तेरा दिल चाहे और तेरी आँखों को पसन्द आए वह कर, लेकिन याद रहे कि जो कुछ भी तू करे उस का जवाब अल्लाह तुझ से तलब करेगा। 10चुनाँचे अपने दिल से रंजीदगी और अपने जिस्म से दुख-दर्द दूर रख, क्योंकि जवानी और काले बाल दम भर के ही हैं।

12 जवानी में ही अपने खालिक़ को याद रख, इस से पहले कि मुसीबत के दिन आएँ, वह साल करीब आएँ जिन के बारे में तू कहेगा, "यह मुझे पसन्द नहीं।" 2उसे याद रख इस से पहले कि रौशनी तेरे लिए खत्म हो जाए, सूरज, चाँद और सितारे अंधेरे हो जाएँ और बारिश के बाद बादल लौट आएँ। 3उसे याद रख, इस से पहले कि घर के पहरेदार थरथराने लगें, ताक़तवर आदमी कुबड़े हो जाएँ, गन्दुम पीसने वाली नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम करना छोड़ दें और खिड़कियों में से देखने वाली खवातीन धुन्दा ला जाएँ। 4उसे याद रख, इस से पहले कि गली में पहुँचाने वाला दरवाज़ा बन्द हो जाए और चक्की की आवाज़ आहिस्ता

हो जाए। जब चिड़ियाँ चहचहाने लगेंगी तो तू जाग उठेगा, लेकिन तमाम गीतों की आवाज़ दबी सी सुनाई देगी। ⁵उसे याद रख, इस से पहले कि तू ऊँची जगहों और गलियों के खतरों से डरने लगे। गो बादाम का फूल खिल जाए, टिंडी बोझ तले दब जाए और करीर का फूल फूट निकले, लेकिन तू कूच करके अपने अबदी घर में चला जाएगा, और मातम करने वाले गलियों में घूमते फिरेंगे।

⁶अल्लाह को याद रख, इस से पहले कि चाँदी का रस्सा टूट जाए, सोने का बर्तन टुकड़े टुकड़े हो जाए, चश्मे के पास घड़ा पाश पाश हो जाए और कुएँ का पानी निकालने वाला पहिया टूट कर उस में गिर जाए। ⁷तब तेरी खाक दुबारा उस खाक में मिल जाएगी जिस से निकल आई और तेरी रूह उस खुदा के पास लौट जाएगी जिस ने उसे बख़्शा था।

⁸वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल! सब कुछ बातिल ही बातिल है!”

खातमा

⁹दानिशमन्द होने के इलावा वाइज़ क़ौम को इल्म-ओ-इफ़ान की तालीम देता रहा। उस ने मुतअद्दिद अम्साल को सहीह वज़न दे कर उन की जाँच-पड़ताल की और उन्हें तरतीबवार जमा किया। ¹⁰वाइज़ की कोशिश थी कि मुनासिब अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करे और दियानतदारी से सच्ची बातें लिखे।

¹¹दानिशमन्दों के अल्फ़ाज़ आँकुस की मानिन्द हैं, तरतीब से जमाशुदा अम्साल लकड़ी में मज़बूती से ठोंकी गई कीलों जैसी हैं। यह एक ही गल्लाबान की दी हुई हैं।

¹²मेरे बेटे, इस के इलावा ख़बरदार रह। किताबें लिखने का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं हो जाएगा, और हद से ज़्यादा कुतुबबीनी से जिस्म थक जाता है।

¹³आओ, इख़तिताम पर हम तमाम तालीम के खुलासे पर ध्यान दें। रब का ख़ौफ़ मान और उस के अहक़ाम की पैरवी करा। यह हर इन्सान का फ़र्ज़ है। ¹⁴क्योंकि अल्लाह हर काम को ख़्वाह वह छुपा ही हो, ख़्वाह बुरा या भला हो अदालत में लाएगा।

ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात

तू मेरा बादशाह है

1 सुलैमान की ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात।
2 वह मुझे अपने मुँह से बोसे दे, क्योंकि तेरी मुहब्बत मैं से कहीं ज़्यादा राहतबख़्श है।

3 तेरी इत्र की खुशबू कितनी मनमोहन है, तेरा नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है। इस लिए कुंवारीयाँ तुझे प्यार करती हैं।

4 आ, मुझे खँच कर अपने साथ ले जा! आ, हम दौड़ कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने कमरों में ले जाए, और हम बाग़ बाग़ हो कर तेरी खुशी मनाएँ। हम मैं की निस्बत तेरे प्यार की ज़्यादा तारीफ़ करें। मुनासिब है कि लोग तुझ से मुहब्बत करें।

मुझे हक़ीर न जानो

5 ऐ यरूशलम की बेटियों, मैं सियाहफ़्राम लेकिन मनमोहन हूँ, मैं क़ीदार के ख़ैमों जैसी, सुलैमान के ख़ैमों के पर्दों जैसी ख़ूबसूरत हूँ। 6 इस लिए मुझे हक़ीर न जानो कि मैं सियाहफ़्राम हूँ, कि मेरी ज़िल्द धूप से झुलस गई है। मेरे सगे भाई मुझ से नाराज़ थे, इस लिए उन्होंने मुझे अंगूर के बाग़ों की देख-भाल करने की ज़िम्मादारी दी, अंगूर के अपने ज़ाती बाग़ की देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

7 ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता कि भेड़-बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें दोपहर के वक़्त कहाँ आराम करने बिठाता है? मैं क्यों निक्काबपोश की तरह तेरे साथियों के रेवड़ों के पास ठहरी रहूँ?

8 क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सब से ख़ूबसूरत है? फिर घर से निकल कर खोज लगा कि मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ़ चली गई हैं, अपने मेमनों को गल्लाबानों के ख़ैमों के पास चरा।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

9 मेरी महबूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तश्बीह दूँ? तू फ़िरऔन का शानदार रथ खँचने वाली घोड़ी है!

10 तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी गर्दन मोती के गुलूबन्द से कितनी दिलफ़रेब लगती है।

11 हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे जिस में चाँदी के मोती लगे होंगे।

12 जितनी देर बादशाह ज़ियाफ़त में शरीक था मेरे बालछड़ की खुशबू चारों तरफ़ फैलती रही।

13मेरा मद्बूब गोया मुर की डिबिया है, जो मेरी छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।

14मेरा मद्बूब मेरे लिए मेहंदी के फूलों का गुच्छा है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बागों से लाया गया है।

15मेरी मद्बूबा, तू कितनी खूबसूरत है, कितनी हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

16मेरे मद्बूब, तू कितना खूबसूरत है, कितना दिलरुबा! सायादार हरियाली हमारा बिस्तर 17और देवदार के दरख्त हमारे घर के शहतीर हैं। जूनीपर के दरख्त तख्तों का काम देते हैं।

तू लासानी है

2 मैं मैदान-ए-शारून का फूल और वादियों की सोसन हूँ।

2लड़कियों के दरमियान मेरी मद्बूबा काँटदार पौदों में सोसन की मानिन्द है।

3जवान आदमियों में मेरा मद्बूब जंगल में सेब के दरख्त की मानिन्द है। मैं उस के साय में बैठने की कितनी आरजूमन्द हूँ, उस का फल मुझे कितना मीठा लगता है।

मैं इश्क के मारे बीमार हो गई हूँ

4वह मुझे मैकदे³ में लाया है, मेरे ऊपर उस का झंडा मुहब्बत है।

5किशमिश की टिकियों से मुझे तर-ओ-ताज़ा करो, सेबों से मुझे तकवियत दो, क्योंकि मैं इश्क के मारे बीमार हो गई हूँ।

6उस का बायाँ बाजू मेरे सर के नीचे होता और दहना बाजू मुझे गले लगाता है।

7ए यरूशलम की बेटियो, गज़ालों और खुले मैदान की हिरनियों की क्रसम खाओ

कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8सुनो, मेरा मद्बूब आ रहा है। वह देखो, वह पहाड़ों पर फलाँगता और टीलों पर से उछलता कूदता आ रहा है।

9मेरा मद्बूब गज़ाल या जवान हिरन की मानिन्द है। अब वह हमारे घर की दीवार के सामने रुक कर खिड़कियों में से झाँक रहा, जंगले में से तक रहा है।

10वह मुझ से कहता है, "ए मेरी खूबसूरत मद्बूबा, उठ कर मेरे साथ चल।

11देख, सर्दियों का मौसम गुज़र गया है, बारिशें भी खत्म हो गई हैं।

12ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत का वक्रत आ गया है, कबूतरों की गूँ गूँ हमारे मुल्क में सुनाई देती है।

13अन्जीर के दरख्तों पर पहली फ़सल का फल पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल खुशबू फैला रहे हैं। चुनाँचे आ मेरी हसीन मद्बूबा, उठ कर आ जा।

14ए मेरी कबूतरी, चटान की दराड़ों में छुपी न रह, पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि मुझे अपनी शक्ल दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुनने दे, क्योंकि तेरी आवाज़ शीरीं, तेरी शक्ल खूबसूरत है।"

15हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ लो, उन छोटी लोमड़ियों को जो अंगूर के बागों को तबाह करती हैं। क्योंकि हमारी बेलों से फूल फूट निकले हैं।

16मेरा मद्बूब मेरा ही है, और मैं उसी की हूँ, उसी की जो सोसनों में चरता है।

³मैकदे से मुराद ग़ालिबन महल का वह हिस्सा है जिस में बादशाह ज़ियाफ़त करता था।

17ए मेरे महबूब, इस से पहले कि शाम की हवा चले और साय लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ ग़ज़ाल या जवान हिरन की तरह संगलाख पहाड़ों का रुख़ कर!

रात को महबूब की आर्जू

3 रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो मैं ने उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है, मैं ने उसे ढूँडा लेकिन न पाया।

2मैं बोली, "अब मैं उठ कर शहर में घूमती, उस की गलियों और चौकों में फिर कर उसे तलाश करती हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।" मैं ढूँडती रही लेकिन वह न मिला।

3जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन्होंने मुझे देखा। मैं ने पूछा, "क्या आप ने उसे देखा है जो मेरी जान का प्यारा है?"

4आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो मेरी जान का प्यारा है। मैं ने उसे पकड़ लिया। अब मैं उसे नहीं छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी माँ के घर में न ले जाऊँ, उस के कमरे में न पहुँचाऊँ जिस ने मुझे जन्म दिया था।

5ए यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले मैदान की हिरनियों की क्रसम खाओ कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

दूल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6यह कौन है जो धुएँ के सतून की तरह सीधा हमारे पास चला आ रहा है? उस से चारों तरफ़ मुर, बख़ूर और ताजिर की तमाम खुशबूएँ फैल रही हैं।

7यह तो सुलैमान की पालकी है जो इस्राईल के 60 पहलवानों से घिरी हुई है।

8सब तलवार से लेस और तजरिबाकार फ़ौजी हैं। हर एक ने अपनी तलवार को रात के हौलनाक ख़तरों का सामना करने के लिए तय्यार कर रखा है।

9सुलैमान बादशाह ने ख़ुद यह पालकी लुबनान के देवदार की लकड़ी से बनवाई।

10उस ने उस के पाए चाँदी से, पुश्त सोने से, और निशस्त आर्गवानी रंग के कपड़े से बनवाई। यरूशलम की बेटियों ने बड़े प्यार से उस का अन्दरूनी हिस्सा मुरस्साकारी से आरास्ता किया है।

11ए सिय्यून की बेटियो, निकल आओ और सुलैमान बादशाह को देखो। उस के सर पर वह ताज है जो उस की माँ ने उस की शादी के दिन उस के सर पर पहनाया, उस दिन जब उस का दिल बाग़ बाग़ हुआ।

तू कितनी हसीन है!

4 मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत, कितनी हसीन है! निक्काब के पीछे तेरी आँखों की झलक कबूतरों की मानिन्द है। तेरे बाल उन बकरियों की मानिन्द हैं जो उछलती कूदती कोह-ए-जिलिआद से उतरती हैं।

2तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

3तेरे हॉट किर्मिजी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह कितना प्यारा है। निक्काब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिन्द दिखाई देती है।

4तेरी गर्दन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलरुबा है। जिस तरह इस गोल और मज़बूत बुर्ज से पहलवानों की हज़ार ढालें लटकी हैं उस तरह तेरी गर्दन भी ज़ेवरात से आरास्ता है।

5तेरी छातियाँ सोसनों में चरने वाले ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिन्द हैं।

6इस से पहले कि शाम की हवा चले और साय लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के पहाड़ और बख़ूर की पहाड़ी के पास चलूँगा।

7मेरी महबूबा, तेरा हुस्न कामिल है, तुझ में कोई नुक्स नहीं है।

दुल्हन का जादू

8आ मेरी दुल्हन, लुबनान से मेरे साथ आ! हम कोह-ए-अमाना की चोटी से, सनीर और हर्मून की चोटियों से उतरें, शेरों की मान्दों और चीतों के पहाड़ों से उतरें।

9मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू ने मेरा दिल चुरा लिया है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से, अपने गुलबन्द के एक ही जौहर से तू ने मेरा दिल चुरा लिया है।

10मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तेरी मुहब्बत कितनी मनमोहन है! तेरा प्यार मैं से कहीं ज़्यादा पसन्दीदा है। बल्सान की कोई भी खुशबू तेरी महक का मुकाबला नहीं कर सकती।

11मेरी दुल्हन, जिस तरह शहद छत्ते से टपकता है उसी तरह तेरे होंटों से मिठास टपकती है। दूध और शहद तेरी ज़बान तले रहते हैं। तेरे कपड़ों की खुशबू सूँघ कर लुबनान की खुशबू याद आती है।

दुल्हन नफ़ीस बाग़ है

12मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू एक बाग़ है जिस की चारदीवारी किसी और को अन्दर आने नहीं देती, एक बन्द किया गया चश्मा जिस पर मुहर लगी है।

13बाग़ में अनार के दरख़्त लगे हैं जिन पर लज़ीज़ फल पक रहा है। मेहंदी के पौदे भी उग रहे हैं।

14बालछड़, ज़ाफ़रान, खुशबूदार बेद, दारचीनी, बखूर की हर क्रिस्म का दरख़्त, मुर, ऊद और हर क्रिस्म का बल्सान बाग़ में फलता फूलता है।

15तू बाग़ का उबलता चश्मा है, एक ऐसा मम्बा जिस का ताज़ा पानी लुबनान से बह कर आता है।

16ए शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ जुनूबी हवा, आ! मेरे बाग़ में से गुज़र जा ताकि वहाँ से चारों तरफ़ बल्सान की खुशबू फैल जाए। मेरा महबूब अपने बाग़ में आ कर उस के लज़ीज़ फलों से खाए।

5 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, अब मैं अपने बाग़ में दाखिल हो गया हूँ। मैं ने अपना मुर अपने बल्सान समेत चुन लिया, अपना छत्ता शहद समेत खा लिया, अपनी मैं अपने दूध समेत पी ली है। खाओ, मेरे दोस्तो, खाओ और पियो, मुहब्बत से सरशार हो जाओ!

रात को महबूब की तलाश

2मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा। सुन! मेरा महबूब दस्तक दे रहा है,

“ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाज़ा खोल दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी, मेरा सर ओस से तर हो गया है, मेरी जुल्फ़ें रात की शबनम से भीग गई हैं।”

3“मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं किस तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने पाँओ धो चुकी हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह दुबारा मैला करूँ?”

4मेरे महबूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख में से अन्दर डाल दिया। तब मेरा दिल तड़प उठा।

5मैं उठी ताकि अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उंगलियाँ मुर की खुशबू से टपक रही थीं जब मैं कुंडी खोलने आई।

6मैं ने अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोल दिया, लेकिन वह मुड़ कर चला गया था। मुझे सख़्त सदमा हुआ। मैं ने उसे तलाश किया लेकिन न मिला। मैं ने उसे आवाज़ दी, लेकिन जवाब न मिला।

7जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन से मेरा वास्ता पड़ा, उन्होंने ने मेरी पिटाई करके

मुझे ज़रख्मी कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी छीन ली।

⁸ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि अगर मेरा मद्बूब मिला तो उसे इत्तिला दोगी, मैं मुहब्बत के मारे बीमार हो गई हूँ।

⁹तू जो औरतों में सब से हसीन है, हमें बता, तेरे मद्बूब की क्या खासियत है जो दूसरों में नहीं है? तेरा मद्बूब दूसरों से किस तरह सबक़त रखता है कि तू हमें ऐसी क़सम खिलाना चाहती है?

¹⁰मेरे मद्बूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है। हज़ारों के साथ उस का मुकाबला करो तो उस का आला किरदार नुमायों तौर पर नज़र आएगा।

¹¹उस का सर ख़ालिस सोने का है, उस के बाल खज़ूर के फूलदार गुच्छों^a की मानिन्द और कव्वे की तरह सियाह हैं।

¹²उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों की मानिन्द हैं, जो दूध में नहलाए और कस्रत के पानी के पास बैठे हैं।

¹³उस के गाल बल्सान की क्यारी की मानिन्द, उस के होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे हैं।

¹⁴उस के बाजू सोने की सलाखें हैं जिन में पुखराज^b जड़े हुए हैं, उस का जिस्म हाथीदाँत का शाहकार है जिस में संग-ए-लाजवर्द^c के पत्थर लगे हैं।

¹⁵उस की रानें मरमर के सतून हैं जो ख़ालिस सोने के पाइयों पर लगे हैं। उस का हुलया लुबनान और देवदार के दरख्तों जैसा उम्दा है।

¹⁶उस का मुँह मिठास ही है, गरज़ वह हर लिहाज़ से पसन्दीदा है।

ऐ यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा मद्बूब, मेरा दोस्त।

6 ऐ तू जो औरतों में सब से खूबसूरत है, तेरा मद्बूब किधर चला गया है? उस ने कौन सी सिम्त इखतियार की ताकि हम तेरे साथ उस का खोज लगाएँ?

²मेरा मद्बूब यहाँ से उतर कर अपने बाग़ में चला गया है, वह बल्सान की क्यारियों के पास गया है ताकि बाग़ों में चरे और सोसन के फूल चुने।

³मैं अपने मद्बूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है, वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी खूबसूरत है

⁴मेरी मद्बूबा, तू तिर्जा शहर जैसी हसीन, यरूशलम जैसी खूबसूरत और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है।

⁵अपनी नज़रों को मुझ से हटा ले, क्यूँकि वह मुझ में उलझन पैदा कर रही हैं।

तेरे बाल उन बकरियों की मानिन्द हैं जो उछलती कूदती कोह-ए-जिलिआद से उतरती हैं।

⁶तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

⁷निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिन्द दिखाई देती है।

⁸गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ और बेशुमार कुंवारियाँ हों ⁹लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ की वाहिद बेटि है, जिस ने उसे जन्म दिया उस की पाक लाडली है। बेटियों ने

^aइब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुब्हम सा है।

^btopas

^clapis lazuli

उसे देख कर उसे मुबारक कहा, रानियों और दाशताओं ने उस की तारीफ़ की,

10“यह कौन है जो तुलू-ए-सुबह की तरह चमक उठी, जो चाँद जैसी खूबसूरत, आप्रताब जैसी पाक और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है?”

महबूबा के लिए आर्जू

11मैं अखरोट के बाग़ में उतर आया ताकि वादी में फूटने वाले पौदों का मुआइना करूँ। मैं यह भी मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर की कोंपलें निकल आई या अनार के फूल लग गए हैं।

12लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ, मेरी आर्जू ने मुझे मेरी शरीफ़ क़ौम के रथों के पास पहुँचाया।

महबूबा की दिलकशी

13ऐ शूलम्मीत, लौट आ, लौट आ! मुड़ कर लौट आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलम्मीत को क्यूँ देखना चाहती हो? हम लश्करगाह का लोकनाच देखना चाहती हैं!

7 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का तेरा अन्दाज़ कितना मनमोहन है! तेरी खुशवज़ा रानें माहिर कारीगर के ज़ेवरात की मानिन्द हैं।

2तेरी नाफ़ प्याला है जो मैं से कभी नहीं महरूम रहती। तेरा जिस्म गन्दुम का ढेर है जिस का इहाता सोसन के फूलों से किया गया है।

3तेरी छतियाँ ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिन्द हैं।

4तेरी गर्दन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें हस्बोन शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम

के दरवाज़े के पास हैं। तेरी नाक मीनार-ए-लुबनान की मानिन्द है जिस का मुँह दमिशक़ की तरफ़ है।

5तेरा सर कोह-ए-कर्मिल की मानिन्द है, तेरे खुले बाल अर्गावान की तरह क्रीमती और दिलकश हैं। बादशाह तेरी जुल्फ़ों की ज़न्जीरों में जकड़ा रहता है।

महबूबा के लिए आर्जू

6ऐ खुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी हसीन है, कितनी दिलरुबा!

7तेरा क़द-ओ-क़ामत खज़ूर के दरख़्त सा, तेरी छतियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।

8मैं बोला, “मैं खज़ूर के दरख़्त पर चढ़ कर उस के फूलदार गुच्छों^a पर हाथ लगाऊँगा।” तेरी छतियाँ अंगूर के गुच्छों की मानिन्द हों, तेरे साँस की खुशबू सेबों की खुशबू जैसी हो।

9तेरा मुँह बेहतरीन मै हो, ऐसी मैं जो सीधी मेरे महबूब के मुँह में जा कर नर्मी से होंटों और दाँतों में से गुज़र जाए।

महबूब के लिए आर्जू

10मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मुझे चाहता है।

11आ, मेरे महबूब, हम शहर से निकल कर देहात में रात गुज़ारें।

12आ, हम सुबह-सवेरे अंगूर के बाग़ों में जा कर मालूम करें कि क्या बेलों से कोंपलें निकल आई हैं और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के दरख़्त खिल रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करूँगी।

13मर्दुमगयाह^b की खुशबू फैल रही, और हमारे दरवाज़े पर हर क्रिस्म का लज़ीज़ फल है, नई फ़सल का भी और गुज़री का भी। क्यूँकि मैं ने यह चीज़ें तेरे लिए, अपने महबूब के लिए महफूज़ रखी हैं।

^aइब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुहम सा है।

^bएक पौदा जिस के बारे में सोचा जाता था कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

काश हम अकेले हों

8 काश तू मेरा सगा भाई^a होता, तब अगर बाहर तुझे से मुलाक़ात होती तो मैं तुझे बोसा देती और कोई न होता जो यह देख कर मुझे हक़ीर जानता।

2 मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के घर में ले जाती, उस के घर में जिस ने मुझे तालीम दी। वहाँ मैं तुझे मसालेदार मै और अपने अनारों का रस पिलाती।

3 उस का बायाँ बाजू मेरे सर के नीचे होता और दायाँ बाजू मुझे गले लगाता है।

4 ऐ यरूशलम की बेटियो, क्रसम खाओ कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

महबूब की आखिरी बात

5 यह कौन है जो अपने महबूब का सहारा ले कर रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख़्त तले मैं ने तुझे जगा दिया, वहाँ जहाँ तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ उस ने दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो कर तुझे पैदा किया।

6 मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने बाजू पर लगाए रख! क्योंकि मुहब्बत मौत जैसी ताक़तवर, और उस की सरगर्मी पाताल जैसी बेलचक है। वह दहकती आग, रब का भड़कता शोला है।

7 पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा नहीं सकता, बड़े दरया भी उसे बहा कर ले जा नहीं सकते। और अगर कोई मुहब्बत को पाने के लिए अपने घर की तमाम दौलत पेश

भी करे तो भी उसे जवाब में हक़ीर ही जाना जाएगा।

महबूबा की आखिरी बात

8 हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम अपनी बहन के लिए क्या करें अगर कोई उस से रिश्ता बांधने आए?

9 अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी का क़िलाबन्द इन्तिज़ाम बनाएँगे। अगर वह दरवाज़ा हो तो हम उसे देवदार के तख़्ते से महफूज़ रखेंगे।

10 मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मज़बूत मीनार हैं। अब मैं उस की नज़र में ऐसी खातून बन गई हूँ जिसे सलामती हासिल हुई है।

सुलैमान से ज़्यादा दौलतमन्द

11 बाल-हामून में सुलैमान का अंगूर का बाग़ था। इस बाग़ को उस ने पहरेदारों के हवाले कर दिया। हर एक को उस की फ़सल के लिए चाँदी के हज़ार सिक्के देने थे।

12 लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग़ मेरे सामने ही मौजूद है। ऐ सुलैमान, चाँदी के हज़ार सिक्के तेरे लिए हैं, और 200 सिक्के उन के लिए जो उस की फ़सल की पहरादारी करते हैं।

मुझे ही पुकार

13 ऐ बाग़ में बसने वाली, मेरे साथी तेरी आवाज़ पर तवज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी आवाज़ सुनने दे।

14 ऐ मेरे महबूब, ग़ज़ाल या जवान हिरन की तरह बल्सान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।

^aलफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ ने दूध पिलाया होता।